

## भेट. जैन प्राचीन पूर्वाचार्यो विरचित स्तवन संप्रह.

तपगच्छनापुज्यपाद् सद्गुणानुरागी शान्तमुद्रा श्री १०८ गुरुणीजी महाराज श्री विजय श्री जीना शिष्या साध्वीजी श्री खान्तिश्रीजीना उपदेशथी छपावी प्रसिद्ध करनार.

श्री मुंबाइ निवासी झवेरी मोतीचंद रुपचंदनी अर्ध आर्थिक सहाय अने अर्ध आर्थिक सहाय सुरत्र कि की नारीवाला डायाभाइ कालीदास हस्तक-तरफथी बाबुभाइ अभेचंदना स्मरणाई भेडें

प्रत-१००० आवृत्ति १ ली.

सर्व हक स्वाधीन छे.

विक्रम संवत् १९७६.

सन् १९७८.

वीरसंवत् २४४५.

श्रीनिर्णयसागर प्रेस—मुंबाई.

Serving Jinshasan 🍅

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the "Nirnaya-Sagar" Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Shet. Motichand Rupchand Javeri, Javeri Bazar Kharakua, Bombay.

॥ ॐ अईम्॥ अवतरणिका ।

आ पुस्तकमां प्राचीन आचार्यवरो विरचित स्तवनोनो संग्रह करवामां आव्यो छे. जे खास करीने पठनीय साथे उत्तम भाव सूचक तेमज चित्तो छासता प्रगट थवामां साधनभूत होइ सर्व जैन धर्मानुरागी साधु-साध्वी–श्राद्धवरो तथा सुशीला श्राविकाओने कंठःस्थ करवा योग्य छे.

आधुनिक समयमां लगभग सर्वत्र नूतन पद्धतिथी रचायला स्तवनो देवालयोमां या धार्मिक अनुष्ठानोमां कहेवानो प्रचार विशेषतः थतो होय एम दृष्टि गोचर थाय छे परन्तु सांप्रत समयना नबीन स्टाइल (Style) ना बनावेला स्तवनो कहेवाथी आपणा मनो मंदिरमां उक्त जेवो चित्तोल्लास प्रगटवो जोइए तेवा आन्तरीक उल्लासनी उत्तम भाव सूचक स्फुरणाओ उद्भवती नथी यातो उत्तम भाव पण दृश्य थतो नथी किन्तु केवल शुष्कवत् अने असंबद्ध भासे छे ज्यां सुधी जिन मंदिरमां के धार्मिक अनुष्ठानोमां स्तवनो गावाथी आन्तरीक उल्लासनी स्फुरणा न थाय तेमज तेथी उद्भवतो उत्तम भाव पण न जणाय त्यां सुधी गमे तेटलो समय कंठ शुष्क करी करीने पण करेली किया यथार्थ साफ-स्यकारक थती नथी ए वात प्रत्येक सुज्ञ विद्वज्ञनो सुरीतिए समजे छे.

अत एव आवा पूज्यपाद प्रवर जैन धर्म धुरंधर प्राचीन आचार्यवरोकृत स्तवनो कहेवानो प्रचार सर्वत्र थवानी खास

शांतिना-थनाः आवश्यकता छे. आ स्तवनोमां लगभग बधां स्तवनो रिसक तेमज—मनोहर होवाथी भिन्न भिन्न राग युक्त गावाथी. चित्तमां परम आह्वाद उत्पन्न करे तेवा छे अने आपणा मनो मंदिरमां जिनेश्वर प्रति हृढ श्रद्धा उत्पन्न करावी इष्ट कार्य परम पदनी प्राप्ति करवामां साधन भूत छे माटे सर्वेने विज्ञप्ति करवामां आवे छे के आवा उत्तम आचार्यो कृत स्तवनो गावामां सर्वे ए लक्ष्य राखवुं जोइए स्तवनो कंठःस्थ करी मात्र प्रभु आगलके प्रतिक्रमण क्रियामां बोली जवा मात्रथी उद्देश साफल्य कारक थतो नथी परन्तु साथे स्तवनोमां रहेल उत्तम भाव—स्वरुप समजी हृदयमां उतारवाथीज अभीष्मित सिद्धि संपादन करी शकाय छे शास्त्रकारो ए कह्युं छे के "या हशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति ता हशी" (जेओना मनो मंदिरमां जेवी जेवी भावनाओ प्रवर्ते छे तेवी तेवी कार्य सिद्धि थाय छे) आनी अंदर पूर्वाचार्योकृत (४६) स्तवनो तथा (१) श्रीमहावीर तप नमस्कारनो समावेश करवामां आव्यो छे.

आ पुर्त्तक छपाववामां तपगच्छना पुज्यपाद १०८ श्री गुरुणीजीमहाराज श्रीविजयश्रीजीना शिष्या साध्वी जी श्रीखान्ति श्रीजीना उपदेशथी मुंबई निवासी झवेरी मोतीचंद रुपचंद तरफथी अर्ध आर्थीक सहाय अने अर्ध आर्थीक सहाय सुरत-निवासी कीनारीवाला डायाभाइ कालिदास अस्तक–तरफथी बाबुभाइ अभेचंदना स्मरणार्थे बन्ने श्रेष्ठि वरोए आर्थिक सहायता अर्पी छे जेथी तेओनो उपकार मानवामां आवे छे मळी छेअने आ प्रत सर्व साधु साध्वी अने ज्ञानभंडारने भेट आपवामां आवे छे.

पुस्तक मळवानुं ठेकाणुं झवेरी मोतीचंद रुपचंद मु० मुंबइ.

झवेरी ठाकोरभाइ मुलचंद मु॰ सुरत ठे॰ देशाइ पोळ. ली. श्री श्रमण संघोपासक.

पुरुषोत्तमदास जयमलदास महेता मुं० सुरत ठे० पंडोळनी पोळ.

अवतर-णिका.

11 2 11

#### अनुक्रमणिका.

नंबर	र स्तवननुं नाम		पत्र.
१	श्री शांतीनाथना पंच कल्याणकनुं स	तवन	१–१४
ર	श्री पंचकारण गर्भित श्री वीरजिन	त्तवन	१५–१८
ą	श्री गौतम स्वामी प्रश्लोत्तर रूप बार	आरार्नु	į
	स्तवन		१९–२३
૪	श्री अक्षयनिधि तपनुं स्तवन		२३–२७
પ	श्री शाश्वत् जीनवर स्तवन	••••	<b>२७</b> –३२
Ę	श्रोनिगोद स्तवन	••••	३२−३४
૭	श्री त्रिभुवन स्तवन	••••	३४–३८
۷	श्री महावीर स्वामीना पञ्चकल्याणकर्नुः	स्तवन	३८–४१
९	श्री चोवीस जिन कल्याणक स्तवन		४२–४५

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

•	-					
	नंबर	स्त	वननुं ना	ाम		पत्र.
	१० श्री	सम्यकत्व वि	चार गरि	भैत श्री मह	ावीर	
	जिन	न स्तवन	••••	••••	••••	४५–५२
		महावीर स्वा				५२–५७
	१२ श्री	सौभाग्य पञ्च	मी स्तवन	१-पहेळुं.	••••	५७–६२
	१३ श्री	ज्ञान पश्चमी	स्तवन :	≀–बीजुं. ँ		६२–६५
	१४	"		₹−त्रीजुं.		
	१५	"	۶	≀–चोथुं.	••••	<sup>*</sup> ६७–६९
	१६अल्प	। बहुत्वविचार	गर्भितश्र	ीमहावीर ि	जेन स्तव	वन६९-७१
	१७ श्री	आलोयणानुं	स्तवन	****	••••	७१–७३
	१८ श्री	षट् पर्वी अ	धिकार ग	र्म्भित श्री वि	वेरजिन	ſ
		ान <i></i> .	••••		••••	७४–७९

## शांतिना थनाः ॥ ३॥

नंबर	स्तवननुं नाम	पत्र.
१९ श्री	दश्विध पच्चक्खाण स्तवन	৩९–८१
२० श्री	उपधान विधिनुं स्तवन	८१–८ <b>३</b>
२१ श्री	समवसरणनुं स्तवन	८३–८ <b>६</b>
	कल्याणकनुं स्तवन ,.	८६–८९
	संवत्सरी दाननुं स्तवन्	
२४ श्री	'आदीश्वर <sub>'</sub> भगवाननातेर भवनुं स्तवन	न ९१ <b>–९</b> ४
२५ श्री	गोडी पार्श्वनाथजीननुं स्तवन	९५–१०३
२६ श्री	ं सीमंधर स्वामाी विनंति रूप स्तवन १	<b>छुं १०३</b> –१०५
	सिमन्धर स्वामीनुं स्तवन २ बीजुं	
२८ श्री	ं सिमंधरजीन स्तवन ३ त्रीजुं 🛴	१०८–१११
२९ श्री	अष्टमीनुं स्तवन	११२–११३
३० श्री	समकित पच्चीशीनुं स्तवन	११४–११८
३१ श्री	मौन एकादशीनुं स्तवन १ पहेलुं	११९–१२२
		१२२–१२५

नंबर	स्तवननुं न	ाम	पन्न.
३३ श्री बी			१२६–१२७
३४ श्री चो	वीस जिनना–अ	ांतरान <mark>ुं स्तवन</mark> .	१२७–१३०
३५ श्री शां	तिनाथ स्तुति गा	र्भित चतुर्दशः	<u>पु</u> ण
स्थानक	स्तवन	****	१३०–१३७
३६ श्रीदइ	ामताधिकारे वर्ध	मान जिन स	वन१ँ३७–१४२
३७ श्री वि	ोजय धर्मसूरि वि	सेस्य रत्नविजय	कृत
वर्ज्जमा	न तपनुं स्तवन	••••	१४३–१४५
३८ श्री कां	तेविज्यजी कृत श्री	ोसौभाग्य पंच	मी
५ स्तवः			मुं १४५–१५३
३९ श्री अड्	र् <u>द</u> ुदाचल उसत्ति <sup>द</sup>	वैत्यपरिपाटीनुं	-
स्तवन .	_		१५३–१६०
४० श्री ज्ञा	न पंचमीनुं स्तवन	६-छठुं .	१६०–१६२
४१ श्री पंडि	रेत उत्तमविजयर्ज	ीकृत संयमश्रेष	<b>गी</b> नुं
स्तवन	अर्थे सहित	•••	१६३–१८४

अनुक्रम<sup>्</sup> णिका

11 3 11

### स्व० बाबूलभाईनुं टुंक जीवन ।

आ व्यक्तिनो जन्म सुरतमां वीसाओसवाल ज्ञातिमां थयो हतो । मोटी उमरे पुत्र प्राप्तिनो योग मातापिताने स्वाभाविक आहाद जनक होय तेमन आ बालकनो जन्म तेना पिता अभयचन्दने पक उमरे आनन्ददायक थयो । मन्कुर अभयचंदनी आर्थिक स्थिति आ पुत्रना जन्म वस्ततथी सुघरवा लागी परंतु ते सद्भाग्यनो वैभव झाझीवार टक्यो नहीं । दश महिनानी लघु वयमां आ बालकने पितानो वियोग थयो, अने तेथी करीने तेने उछेरवानी तथा केळत्रवानी फरन तेनी पंदर वर्षनी विधवा माता तथा काका ऊपर आवी पढी । आ बालकमां तेना पिताश्रीनो नम्रता अने सुशीलतानो गुण मोटे अंशे उतरी आव्यो हतो ।

उत्तम जैन धर्मना संस्कारो नानपणर्थाज बालकोना कोमल हृदयपर सचोट जामे, अने हाल अपाती एकली इंग्लीश केळ-वणीथी केटलाक युवकोनां चित्त धर्मविमुख थई जाय छे ते न थाय एवा हेतुथी आ सुरत शहेरमां वे धर्मानुरागी विद्वान गृहस्थोना स्तुत्य प्रयासथी पूज्य पं श्री सिद्धिविजयजी गणी (हाल स्रिपदालंक्त) नी पंन्यास पदवी प्रसंगे स्थापन थयेली श्रीरत्नसागरजी जैन विद्याशाला—धार्मिक तथा व्यावहारिक केळवणी मफत आपती प्रथम संस्था-मां आ बालकने अभ्यास माटे मुकवामां आव्यो । आ शालामां शरुआतथी अंग्रेजी त्रिजा घोरण सुधीनुं तथा धार्मिक पंच प्रतिक्रमण विगेरेनुं शिक्षण अपातुं हुतुं ते पूर्ण करी सरकारी हाइस्कूलमां चोथा घोरणमां दाखल थया। तेमनो स्कूल अभ्यास प्रशंसा पात्र हुतो परंतु दुंक आयुष्यने लीघे सं. १९६८ना आधिन मासमां देहमुक्त थया तथी कंइ।विशेष करी शक्या नहीं । आ संसारमां दुंका आयुष्यवाळाओमां प्रायः चालाकी ।नेपुणता विवेक आदि गुणो झलकी रहेला दीठामां आवे छे तेमज आ व्यक्ति अंगे बन्युं छे ।

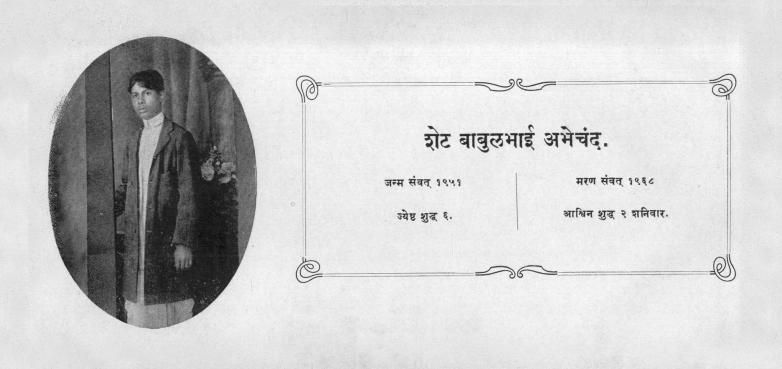
11 8 11

वाब्छ भाईना अकाल स्वर्गवासथी तेनी मातुश्रीने असह घा पड़्यो आशी तेओनुं चित्त संसारथी विरक्त थयुं अने परिणामें पोते अनेना गुरुणीजी श्रीमती सांतिश्री नी के नेओए पोते पण लघु वयमां आचार्य श्री विजयसिद्धिस्रीश्वरजीना उपदेराथी गुरुणीजी श्रीमती विजयश्रीजी पासे दीक्षा ग्रहण करी मनुष्यपणुं सार्थक कर्युं हतुं तेमनी पासे सं. १९७२ना वैशास सुदी
तेरसे दीक्षा ग्रहण करी पुत्र वियोगथी अन्य स्त्रियोनी माफक सदैव खेद करी आर्तध्यानमां काळ निर्गमी मोहनीय कर्मबंघ न करतां
उत्तम धर्मनुं अवलंबन करी, पुत्र अवसान बहुधा दुःखनो हेतु छतां तेने सुख साधन निमित्त बनाव्युं। वळी दीक्षा ग्रहण कर्या अगाउ
आ पुत्र पाछल तेमणे तथा मरनारना काका ठाकोरभाइये एक अहाइ महोत्सव तथा उद्यापन करी पोताना घरनी पासेना श्रीसुविधिनाथजीना देरासरमां प्रतिमाजी पधराव्यां छे, मृत पाछल बीना नकामां खर्च न करतां धर्मकार्यमां उद्यत थवुं एज उचित छे।

आ पुस्तक गुरुणीजी श्रीक्षांतिश्रीजीए अत्यंत श्रम उठावी तैयार कर्यं परन्तु टुंका वखतमां सिद्धक्षेत्रमां सं. १९७६ ना ज्येष्ठ वदी ६ने रोज तेमनो स्वर्गवास थवाथी ए तेमनी हयातीमां प्रगट थइ शक्युं नहीं ए सहज खेद जनक छे, तथापि तेमना सुशिष्या साध्वीजी तार श्रीजी तथा (आ बाबूलमाइना संसारी माता खीमकोर) जयन्तिश्रीजीए पोताना गुरुणीं साहेबनी पुस्तक प्रगटन इच्छा पार पाडी ए संतोषकारक छे.

उपरांत तेओए गुरुवर्य आचार्य श्री विजयसिहिस्तरिजीनी आज्ञानुसार निर्मम वृत्तिथी गुरुमिक्त निमित्ते पोताना गुरुणी-जीना नामथी सुरतना देशाइपीळना उपाश्रयमां एक लघु झानभंडार सोल्यो छे, बेमां स्व० क्षांतिश्रीजीए करेलो पुस्तकोनो संग्रह अपण करवामां आव्यो छे अने ते चतुर्विध संघना उपयोग माटे खुलो छे. शा० डाह्याभाई कालिदास किनारीवाला। ता० ३०-५-१९२३

1181



॥ ॐ नमः ॥

# " अथ श्री शांतिनाथनां पंच कल्याणकनुं स्तवन."



दुहा—हवे राणी अचिरा नित्य प्रतें, मजन करि जिनपूजा ॥ अप मंगलीक दूरें तजे, करम सबल मल धूज ॥ १ ॥ अति तीखुं कटुक मधु, कषाय अम्लक त्याग ॥ जेह जेहिव ऋतुओ होय; ते हुवुं सेवे सराग ॥ २ ॥ जब मसवाडा नव हुआ, तेरस वदि जेठ मास ॥ शुभ लग्नें सुत जनमीयों, सयल भुवन सुख वास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ राग काफी ॥ तप पदनें पूजीजे हो प्राणि ॥ तप ॥ ए देशी ॥ जिन वंदन कुं जइयें हो सहीयो जिन०। ए आकणि॥ छ पन्न दिग् कुमरि सिंहासन, 🕏 कुजर कानसम डाल ॥ अवाध नाण तव प्रयुंजी जाणी, हरखीत थइ एम बोलें हो ॥ स० जि० हैं। ॥ २ ॥ भोगंकरा भोगवती सुभोगा, भोग मालिनि सुवच्छा ॥ वत्सिमत्रा पुष्फमाला नंदिता, शांतिन थना.

11 3 1

るなみななるない

प्रणमें लिल लिल लिल हिन्हों से जिल ॥ ३ ॥ सूतिकायह तिन ईशान कुणें, प्रेरित पवन प्रचार ॥ पूहवी शुद्ध जोयण एक कीधि, स्तवित जिन ग्रण सार हो से जिल ॥ ४ ॥ मेघंकरा मेघवती सुमेघा, मेघमालिनी तोयधारा ॥ बलाहीक वारिषेण विचित्रा, दया ग्रणना मंडार हो से जिल ॥ ५॥ उर्ध्वलोकथी आठ ए देवी, वृष्टि करे आणंदा ॥ फुल मणी माणेक सोनैया, स्तवती उभी जिणंदा हो से जिल ॥ ६ ॥ नंदी उत्तरा नंदी आनंदी, नंदी वर्द्धनि विजैया ॥ विजयंति जयंती अपरा देवि, जिन ग्रणमें भिजैया हो से जिल ॥ ७ ॥

रुचक परवतथी सिव आवी, दर्पण लेइ स्थीर रहीया॥ जिन मुखजोति भव दुःख खोति, सिमन अति गह गहीयाहो स॰ जि॰ ॥८॥समाहारा सुप्रदत्ता ए देवी, सुप्रबद्धा यशोधरा ॥ लक्ष्मीवति विले शेषवती जे, चित्रगुप्ता वसुंधरा हो स॰ जि॰॥९॥ ते दक्षिण रुचक परवतथी, स्नान अर्थे नीर लावें॥ कलशधरी भरी मन संवरी, उभी जिन गुण गावे हो स॰ जि॰॥१०॥ इलासुराने पृथ्वी देवि, पद्मावित एक नासा॥ भद्राशीतावली नविमका, तुज दीठे फिल आसा हो स॰ जि॰॥११॥पश्चिम

पंच क० स्तवन.

11 8 11

रुचक परवतवासी, लेइ विंजणा सार॥ सन्मुख विंजणे विंजति वायु, करति नृत्य अपार हो स०जि०॥ १२॥ 🎇 अलंबुसा नामें मीत केशी, पुंडरिका वली वारुणी ॥ सर्व प्रभा हासा कुमरी जे, श्री ही थुणे हेत आणी हो स० जि०॥ १३॥ परवत उत्तर रुचक थी आवि, प्रणमें जिनवर पाया॥ चमर ढाले स्वपापमद गालें, टालें कर्म कषाया हो स० जि०॥ १४॥ चित्रादेवि वली चित्र कनकनां, सौदामनी शतेरा; विदिशि रुचक हस्तमें दीवि, प्रणमें जीन शुभ छेरा हो स० जि०॥१५॥ रुपशिका ने रुप सरुपा, रुपकावती तस नाम; रुचक द्वीपथी नाल शांइंनो, आविवीदारे तामहो स० जि०॥ १६॥ जन्म महोत्सव मिल एणी परें कीधो, सिधो आतम काजो; स्नान वीलेपन चीर पहेरावें, भूषण अंगें वीराजे हो स० जि०॥ १७॥ एह छपन्न दिग् कुमरि महोत्सव, करति जिनवर धाम; जोयण एक विमान शुभ विस्ती, पोहति निज निज ठाम हो स० जि०॥ १८॥ इति श्री छप्पन्न दिग् कुमरी कामोत्सव समाप्तं ॥ दुहा ॥ चल्या सिंहासन इंद्रना, जाण्यो जन्म जिणंद; घंटा तव वजडावतो, मघवा मन आणंद ॥ १ ॥ हरिण गमेषी मन उलटें, मोटे शब्दपोकार; सुणी देव हरिवत हुआ, करत सजाइ उदार

शांतिना थनाः

แลแ

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

॥ २ ॥ लक्ष जोयण वीमान रची, पालक देवे रसाल; छाग सिंह वाहन ठवी आवे गजपुरपाल ॥ ३ ॥ ढाल ॥ राग पूर्वी ॥ सिद्ध चक्र पद वंदो हो भवियां एदेसी ॥ जन्म महोच्छव इम कीजें। भवो भवनां दुःख छीजे हो भवियां जन्म०॥आं०॥जिनधरआवि जिनजननीनें, तीन प्रदक्षिणा दीजें; वांदि कहे हे रतन कुक्षी, जगमें सिव सुख लीजें हो भ० जन्म०॥ १॥ अवस्थापन निंद्रा तव दीधि, मुके प्रतिविम्ब पास; अरिहा हरी बेकर मध्ये धरीनें, करि पंचरुप उछास हो भ० जन्म०॥२॥ बहु यहें मघवा जिन ग्रहीनें, मेरु शिखर आवे रंगे; पांडुक कंबल शीलानि उपरें, श्री अरिहा लेइ अंकें हो भ० जन्म०॥३॥ दश वैमानीक वीस भवण वइ, बित्रस व्यंतर इंदा; एकसो बित्रीस मली रविचंदा, प्रणमें जिन अरविंदा हो भ० जन्म०॥ ४॥ सोहम ईशाननी अग्र महिषियो, अड अड संख्या धारो; चमर बलेंद्रनि पण पण कहीयो, नव नीकायनी बारा हो म० जन्म० ॥ ५॥ व्यंतर ज्योतिषीनी इंद्राणि अभिषेका च्यार च्यार; आतम तारण दुर्गति वारण, करें अभिषेक उदार हो भ० जन्म० ॥ ६॥ त्रायस्त्रिंशक सामानिक आनीक, एक एक तस विचार; अंगरक्षक परखदा पइन्ना, लोकपालनां

पंच क० स्तवन

11 2 11

च्यार हो भ० जन्म०॥ ७ ॥ एकसो चोराणुं मिल इंद्रें कीधा, इंद्राणी छेंतालिस; त्रायस्त्रिंशक शादि दश सेवकनां, करें अभिषेक जगीस हो भ० जन्म०॥८॥ मागध तीर्थ गंगानें पमुहा, पउम सरोवर पाणिः मेलवी सरसव फुल औषधीयो, अभियोगीक देव आणी हो भ० जन्म०॥९॥ एक कोडि साठ लाख व्रमाणो, आगम संख्या ए जाणो; पंडुर भृंगार श्रुचि नीर भरीया, सुरपति हीयडे धरीया हो भ० जन्म० ॥ १०॥ भवसायर निज तरवा काजें, हियडा आगल राखी; अथवा कर्ममल दुरें करवा, अनुभव सुखडी चाखी हो भ०जन्म०॥ ११ ॥ धूर अभिषेक अच्युत इंद्रनो, चरम करें राशिसूरो; इम अढीसें अभिषेक चित्त आणों, अडजाति पय पूरो हो भ० जन्म०॥१२॥च्यार वृषभ सुंदर अड शृंगे, पयधारा अभिषेका; अष्टमंगल चूरणादिक पूजा, उपगरणादि अनेकां हो भ० जन्म०॥१३॥ उतारि आरति मंगल दीवो, तुं प्रभु चिरण जीवो; इम कही माता पासें प्रभु मुके, सुर नंदीश्वर दीवो हो भ० जन्म०॥१४॥ दासी वधामणी दिइं प्रभातें, प्रसच्यो पुत्र रतन्नो; वीण मुगटा भूषण रायें दीधां, दारिद्र दुर तस कीधां हो भ०॥ १५॥ दंसुठण सुधीकुल रिति करतां, कुटुंब क्षत्रीय मलि जाति; गर्भ थकी शांत

शांतिना थनाः ॥ ३ ॥

दिधी देशना, ग्रण हीत नाम तस शांति हो भ० जन्म ॥ १६॥ "इति अढीसें अभिषेकमहोत्सव समाप्तम्" दूहा—चंद वदन नीत उछिसियो, दंत दाढिम समजाण; भुज भूंगल गजगित वली, श्वास कमले परिमाण ॥१॥ आठ वरसनां जब हुआ, कुमरपणें भगवंत, शुभ लग्नें शुभ मुहुर्त्त दिनें, पंडित घर ठवंत॥ २॥ अनध्ययनें ध्ययन सदा, नीईव्ये द्रव्य हुंत; अण भुषणे भुषण तदा, सो परमेश्वर संत॥३॥ ढाल—विवाह लानी देशी=हवे प्रभु हस्ती उपर जब चढीयां, मेघाडंबर अंबरे अडीआं; शुभ लग्न लेइ मायनें बापें, ग्रुण निधीनें नीसालें थापें ॥ १॥ पंडीत वरदान देवा सारुं, विविध प्रकारनां लेइ दीदारु; मणि माणीक भूषणादिक चीरा, सिव लीएं तस वडनर धीरा ॥ २ ॥ निशालिया अर्थे सिंघोडां खजुर, चारोली द्राक्ष श्रीफल प्रचूर; धाणि चणा सोपारि सुखडीयां, पाटी लेखण बरतणां खडिया ॥३॥ अनेक लेइ उपगरण भलेरां, स्नान मजन करे प्रभु केरां; बावन्ना चंदन चर्चे सुहालां, अलंकार पहेरावे सुकुमालां ॥ ४ ॥ सोवन विंटि कुंडल नवहारा, पंच वर्णनी माला सहकारा; आत-पत्र शीर सोहें चिहुं पासा, ढलकता चमर अमर उल्लासा ॥ ५ ॥ रमणीय अनेक वार्जीत्र वाजंते,

पंच क० स्तवन.

11 3 11

पगपगें वरपात्र नाचंते; इम माहा डंबरे प्रभुजी आव्या, सिंहासन पंडिते मंडाव्यां ॥ ६ ॥ पाठकर्ने आभुषण आपें, पंड्यानां दारिद्र दूरें कापें; निशिलीया कहे छुटी अपावो, प्रभु तुमनें जय मंगल थावो ॥ ७ ॥ इंद्रासन इंद्रनो थरहर चलीयो, अवधि ज्ञानशुं हरिमन भलीयो; तोरण आंबे बांध्युं निव छाजे, एतो अचरज वात हुइ आजे ॥ ८ ॥ एहवुं चिंतविरूप करे विप्र, पंडित स्थानें प्रभुजीनें खिप्र; पंडित मनहरि संदेह पूछे, टाल्यां संदेह सहुनां मन तुठे ॥ ९ ॥ हरी कहे सांभल विप्र सयाणी, बालक नहिं एछे शुद्ध नाणी; देवाधिदेवे उपदेश तस दीधुं जिनेंद्र व्याकरण प्रभुजी ए कीधुं ॥ १० ॥ प्रणिपत्य करी हरी ठामे पहोंता, ॥ भगवंतपण परिवारे सोहंता; नितनीत नवनवी किंडा करंता, मात पिता देखी हरख धरंता ॥ ११ ॥ एणी पेरें निशालगरणुं करशे, आवतां दुष्ट करममल हलसें; मोह महा मद कुमति गलसे, सेवतां शिव सुख भवि मलेशें ॥ १२ ॥

॥ इति श्री निशाल गरणुं संपूर्णम् ॥

दृहा—बालपणुं प्रभु निर्गम्युं, वर्ष सहस्स पणवीस; भोग समरथ थयां जाणिनें, चिंतित माय

शांतिना थनाः ॥ ४ ॥ मनईश ॥१॥ मंडपरायें मंडावीयो, विचित्रित सोवन वान; चिहुं दिश तोरण बारणें, जडित रयण स-मान॥२॥ढोळ नगारां गडगडे, सरणाइ भुंगळ सार; विवाह महोत्सव करे घणुं, हरख तणो नहिं पार॥३॥ ढाळ—राग धन्याश्री ॥ भरत नृप भाव स्युं ए ॥ ए देशी ॥ पणवीस सहस्स वरष वोल्या ए, कुमरपणें जगदीशः महोच्छव मंडावीयो ए । मातिपता देखी हरिवयां ए, हरेले सुरनर इशा म-होच्छव० ॥ १ ॥ आंकणी ॥ हथ्थिणा उर पुरमें हुआ ए, अचीरानंद मल्हार महो० जोवन वय विभु पामीया ए, नीगम्यो बालाचार महो०॥२॥ वात करे विवाह तणी ए, जुए राजकुमारी महो०; ए सरिवि कन्या जो मिले ए, तोहोए मन श्री कारी महो०॥३॥ महा मोटे आडंबरें ए, राजा हुई अपार महो०; मंडप सखर रचावियाए, अधीक सोहे सफार महो०॥ ४॥

पंच क० स्तवन

11 2 1

विविध वरणें चंद्रुआ किया ए, तोरण झाक झमाल महो० ॥ बालिभोलि सिणगार सजी ए, गावे गीत रसाल महो०॥ ८॥ स्नान मज्जन करावियां ए, भावतां कुंडल हार महो०॥ वेढ विंटि बहेरखा ए, फुलमाला सहकार महो०॥९॥ मंगल तिलक मांडिकरे ए, आणि हरख अपार महो०॥ वरघोडे प्रभु संचरयां ए, वाजां वाजे मनोहार महो० ॥ १०॥ राजकुमरि प्रभु परणीया ए, नामें यशो-मती नार महो०॥ ते साथे सुख अनुभवे ए, भोगवें भोग संसार महो०॥११॥ चक्र खपन राणि ए दिद्धं ए, चक्रायुध लीए नाम महो०॥ देश विदेश सवि भरतनां ए, सांध्या पद् खंड खाम 📡 महो०॥ १२॥ पून्य योगें सिव संपदा ए, ठामोठाम अनंत महो०॥ विनयथी राज्य नीति पालतां ए, टालतां भव दुःख संत महो० ॥ १३ ॥ जन्म कल्याणक सेवियें ए, लीजिएं सुख रसाल 📡 महो० प्रगटे क्षमा गुण ऋद्धि सिद्धी ए, तस घर मंगलमाल महो०॥ १४॥ इति द्वितीयस्य जन्म कल्याणकयोः समाप्तम् ॥

दृहा—पणविस सहस्स वरस भलां, पालतां राज्य उदार; संयम समय जणाववा, लोकांतिक

थनाः

सुखसार ॥ १ ॥ जयजय जग चिंतामणी, जयजय जगदाधार; प्रभु तीर्थ प्रगटावीएं, द्यो भिव सुख निरधार ॥ २ ॥ करुणाकर काने सुणी, देव कहीजें वाण; वरसी दान दीए तदा, समय काल तस जाण॥३॥ ढाल—कोइ ल्यो पखत धूंघलोरे लोल ॥ ए दे शी ॥ वरसी दान दीए घणुं रे लाल, त्रण सय अठासी रसाल रे हुं वारिलाल ॥ १ ॥ दान संवत्सरी दीजिये रे लाल ॥ आंकणी ॥ अन्न धन्न वस्न अथिधी घणि रे लाल, मांगे ते आपे अपार रे हुं० वारिलाल ॥ राज्यथापें निजनंदनें रे लाल, संयम भावना धार रे हुं० वारिलाल ॥ दान० ॥ २ ॥ संसारासार सारज नथी रे लाल, जन्म मरण दुःख पेख रे हुं० वारिलाल ॥ मघवादिक सिव देवता रे लाल, अवधी ज्ञानें तस देख रे हुं० वारिलाल ॥ अंगे लाल ॥ दान० ॥ ३ ॥ क्षीरसमुद्र पद्म द्रहनां रे लाल, लावे भरी भरी नीर रे हुं० वारिलाल ॥ अंगे चंदन विलेपतां रे लाल, पहेरतां प्रभु शुचि चीर रे हुं० वारिलाल ॥ दान० ॥ ४ ॥ भूपणें अंग अति दीपतां रे लाल, सुंदर सिव सिणगार रे हुं० वारिलाल ॥ सहस्स पुरुष वहे शीबिका रे लाल, चामर छत्र ध्वज सार रे हुं० वारिलाल ॥ दान० ॥ ५ ॥ अष्ट मंगल आगल वहे रे लाल, झाइरी

मादल ताल रे हुं० वारिलाल ॥ वीणा वाजिंत्र बहु वाजते रे लाल, सिरी मंडल कंसाल रे हुं० विरिलाल ॥ वारिलाल ॥ दान० ॥ ६ ॥ सूर मानव विद्या धरुं रे लाल, बोलतां जयजय कार रे हुं० वारिलाल ॥ क्रिक्स ज्येष्ठ सहसा वनें प्रभु आवियां रे लाल, उतारयां अलंकार रे हुं० वारिलाल ॥ दान० ॥ ७ ॥ कृष्ण ज्येष्ठ चौद्श दीनें रे लाल, भरणी रिख शुभ वार रे हुं० वारिलाल ॥ पंचमुष्टी लोच द्रव्यथी रे लाल, भाव सामायक धार रे हुं० वारिलाल ॥ दान० ॥ ८ ॥ स्वमुखें"नमो सिद्धाणं" जपे रे लाल, छठ तप करे चउवीहार रे हुं॰ वारिलाल ॥ देवें चिवर स्कंधे स्थापीया रे लाल, सहस स्युं संयम सार रे हुं० वारिलाल ॥ दान० ॥ ९ ॥ मनःपर्यव तव उपन्युं रे लाल, मित श्रुतअविधि श्रीकार रे हुं० वा रिलाल ॥ अप्रमादीपणें नित्य रहें रे लाल, जीव दया भंडाररे हुं० वारिलाल ॥ दान० ॥ १० ॥ धन्य धन्य विश्वसेन रायने रे लाल, धन्य धन्य अचिरा मात रे हुं० वारिलाल ॥ धन्य धन्य जिन-चकी पंचमो रे लाल, जायोजेणें शुभ जात रे हुं० वारिलाल ॥ दान० ॥ ११ ॥ इति श्री संवत्सरी दानदीक्षा वरघोडो महोत्सव संपूर्णम्॥

शांतिना-थनां-

แรแ

हवे उपसर्गादि अधिकार कहे छे ॥ दूहा ॥ सिंह समो दुईर थइ, करतां कर्म विदुर; मोह महामद दुर भयो, विहयो आणंदपूर ॥ १ ॥ पंच संवर मनमें धरी, पंचाश्रव करें त्याग; परिसह वर्गनें थोभतो, धरतो धरम सराग ॥ २ ॥ ढाल ॥ राग काफी ॥ सामली सुरत पर मेरो मन अटक्यो ॥ ए देशी ॥ सयण संबंधीने पूछी प्रभुजी, विचरे महीयलमांही जी; चक्रायुध नृप आंशु झरतां, नयणें निरखे त्यांहिं जी ॥ १ ॥ पंचमो चक्री सोलमो साहेब, करमनो करे वीनाश जी ॥ ॥ पं० ॥ आंकणी ॥ अण दीठे नृप पाछा वलीया, धरतां मन अति खेदें जी;बावन्ना चंदन चरचीत ए अंगे, षद् पद् शरीरने वेदे जी ॥ पं० ॥ २ ॥ स्त्रीयो पण भोगी कुंअर जाणि करें, अनुलोमा उप-सर्गें जी; तप मुद्गरे तस दुर विदारी, लेवा सुख अपवर्गे जी ॥ पं० ॥ ३ ॥ पारणुं प्रथम करावे 🟋 पयनुं, मंदीरपुर जिनराय जी; सुमित्र रायें सुपात्रे दीधुं, पंच दिव्य प्रगट सोहाय जी ॥ पं०॥४॥ अनुकुल देव मनुष्यनो जाणो, वलि तिर्यंचनां कीधां जी; उपसर्गनां वर्गथी निकली, शांति सु-धारस पीधां जी ॥ पं० ॥ ५ ॥ पण सुमति वली तीन ग्रुप्ती जे, क्रोधमान माय त्यागी जी, अलोभी

पंच क० स्तवन

11 & 11

अद्देषी अममत्व नि रागी, अभ्यंतर सोभागी जी ॥ पं०॥ ६ ॥ जयवंतो जीन शासन नायक, एणि परें संयमपालें जी; त्रीजुं कल्याणक दीक्षा केरुं, प्रभु विनयें दुःख गाले जी ॥ क्षमा ग्रण भवि भाले जी ॥ पं०॥ ७ ॥ इति श्री तृतीय कल्याणकं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री चतुर्थं केवल ज्ञान कल्याणकम् ॥

इम वीहरंता आंवीया, गजपुर गुण गंभीर; पावन करतां भव्य नें, सहसा वन सुधीर ॥ १ ॥ छद्मावस्था भोगवी, एक वरस भगवंत; अनुभव आतम गुण नीलो, शांतद्या गुणवंत ॥ २ ॥ पोष शुद्ध नवमी वासरे, तरू नंदीतले जाण; शुक्क ध्यान मनध्यावतां, निरुपम केवल नांण ॥ ३ ॥ ढाल ॥ गुणी जन वंदो रे ॥ ए देशी ॥ वंश विभूषण साहेबा रे, केवल नाण उपाय रे; समवसरण संक्षेपथी रे, वर्णवियो गुरुराय भवियण वंदो रे वंदोवंदोरे अचीरानंद ॥ परिमाणंदो रे ॥१॥ आंकणी॥ तीर्थंकरनाण उपजें रे, आवे इंद्र मनोभाव रे; निजनिज कर्मनें करवा थी रे, बहुमणी रयणनें लाव भ० ॥ २ ॥ वायूकुमार धूर वायरो रे, जोयण भूमीका शुद्धरे; कलेवर जीवनां दुर करीने,

शांतिना-थना.

11 9 11

आतम संवर छुद्ध ॥ भ० ॥ ३ ॥ मेह कुमार मनोहार थी रे, वृष्टी करे नीरधार रे; चंदन कर्पूरें वासीयोते रे, रज समावे उदार ॥भ०॥४॥ अग्नी कायनां देवता रे, उखेवे धूप रसाल रे; वाण व्यंतर रचे पीठिका रे, मणी रयण वीशाल भ० ॥ ५ ॥ पंच वरण पीठिका परें रे, भरतां जानु प्रमाण रे। उद्घे बिट रचना रचे रे, वाण व्यंतर ग्रुण खाण ॥ भ० ॥ ६ ॥ आवि सुरवर वंदिया रे, भक्ति भाव हैं उछ संत; समवसरण छव छेश ऋद्धि रे, पभणुं नीसुणो संत ॥ भ० ॥ ७ ॥ जीनजी जब नाण है पामीयां रे, आवे चोसठ इंद् रे; समवसरण मलीनें रचे रे, पामें अति आणंद् ॥ भ० ॥ ८ ॥ भवणवइ हवे देवता रे, रजत तणो रचे सार रे; कोसीसा हेमना कह्यां रे, सोभ तुं वृत्ताकार ॥ भ० ॥ ९ ॥ रवि शशी यह सूर जोशीया रे, गढ बीजुं रचे हेम रे; कोसीसा रयण ना कह्यां रे, आगम मांछे जेम ॥ भ० ॥ १० ॥ त्रीजुं गढ रयण नुं रचे रे, वैमानिक उत्तंग रे; मणी कोसीसा किराज तां रे, छागत मनशुं चंग ॥ भ० ॥ ११ ॥ उंचि, गढनी भिंति सवे रे, धनुष्य पंच प्रमाण रें विस्तार पण तेत्रीश धनुं रे, दुतीस अंग्रुल जाण भ० ॥ १२ ॥ गढ गढें थी अंतर भुइं रे, ते-

पंच क० स्तवन.

n o n

रसें धनु मोझार रे; पोहली कही पंचाराधनुं रे, सोपान मयी श्रीकार भ०॥१३॥ पावडियां दश सहस रे, उत्तंग छे निरधार रे; पंचावन्न रयण तणा रे, झलके चिहुं दिस बार ॥ भ०॥१५॥ वीस सहस शुं हुआ रे, संख्या ए मनोहार रे; उत्तंग भुंइ थकी कह्यो रे, अढि गाउ पायार ॥ भ०॥ १६॥ त्रण त्रण तारेण चिहुं दिसें रे; नील रयण मय चंग रें; मणी मय थंभ शुभ पूतली रे, करति नाटा रंभ भ०॥१७॥ दुहा—भुवन पति पमुहा वली, देवें दो देव राय; लोक अछेरा कारणें, उज्जो गयणें सोहाय॥१॥ जीवनां भव दुःख वारणे, रजत सुवन्न उदारः रयणादि गढ वीर चतां, कोसीस नाना प्रकार ॥ भ० हैं।॥२॥ त्रीजुं वैमानीक सूर रचे, पीठिका पोहिल सारः दुसय धनुं उंचि कही, शोभत वृत्ताकार ॥३॥ ढाल गुण रसीया ॥ ए देशी १ इशान कुणें देव छंदो कह्यो रे, छाजे तस्वर शोक रे; मन वसीया जीन तनु मान प्रमाण छे रे, सम्यग् लहे सुरलोक रे म०॥ १॥ चिहुं दीशें छत्र त्रण शोभतां, है हलकतां चमर रशाल रे म०॥ कौतुकें भिव मोह पामतां रे, श्री जिन ऋदि निहाल रे म०॥श॥

शांतिना- वण यर त्रण दीसें ठवे रे, पिंड स्व जिन हिर पूज रे; म०॥ अगर उस्वेवे ग्रण स्तवे रे, पामे भिव प्रति वूझ रे म०॥ ३॥ पूरवाभि मुखे तिष्ठतां रे, करतां प्रभु वस्ताण रे; म०॥ देवनर तिरि भवी बुझतां रे, जिन वाणि हेत आण रे म०॥ ४॥ जोयण एक प्रमाण छे रे, प्रभु वाणि विस्तार रे; म०॥ ग्रहिरी गाजित भाजित रे, करित भव निस्तार रे म०॥ ५॥ मुनि पुंठे वैमान देवी रे, अश्री क्रुण धूर जाण रे म०॥ व्यंतर भवण जोसी सुरी रे, नैस्त कुण सयाण रे म०॥ ६॥ वाण व्यंतर जोसी वली रे, जाणो भवना धीश रेम०॥ वायु कुणें एह देवता रे, सेवर्ता श्री जगदीश रे म० ॥ ७ ॥ वैमानीक नर राजीया रे, आतुर थइ करे सेव रे म० ॥ इशान कुणे उभा रही रे, जोतां जिन मुख देव रे म०॥ ८॥ एणिपरें बारे परषदा रे, निसुणे श्री जिन धर्म रे म०॥ अबाधा वयर होयें निहं रे, समजे धर्मनुं मर्म रे म०॥ ९॥ अण हुंते वाजां वाजते रे, सुरनर कोडि विचार रे म०॥ गगन मंडलमें गड गडे रे, फरकितं ध्वजा च्यार रे म०॥ १०॥ सहस जोयण उत्तंग भली रे, जिन शिर परें वीराज रे म०॥ मिणमय गढ बाहेर रचे रे, देव छंदो तस

जाण रे म०॥ ११ ॥ अनोपम सुर इशान कुणें रे, नित्य करतां ग्रण जाण रे म०॥ चिहुं दीसे जीन चिहुं शोभतां रे, तेजें दीपित भाण रे म०॥ १२ ॥ शांति सुधारस देशना रे, पिवे परषदा बार रे म०॥ वयर भाव भय दुर टलें रे, सयल जंतु हीतकार रे म०॥ १३॥ वाहन ठचे पहेले गढें रे, हिर करी महीषी छाग रे म०॥ जलयरथलयशर पंखिया रे, गढ बीजे शिव मांग रे म०॥ १४॥ देव मनुष्य त्रीजें गढें रे, सांभले जिनवर वाण रे म०॥ आवि अद्धषीणमें सही रे, बार जोयण भवि नांण रे म०॥ १५॥ चिहुं दीश वाव चिहु निरभरी रे, चौ खुणें दो दो वाव रे म०॥ पडि हार देव चउ तणां रे, जिन गुण नीत नीत गाय रे म०॥ १६॥ विजया जीत अपरा जीया रे तुंबरु कष दंग नाम रे म०॥ हथीयार नीज करमें यही रे, सेवा करे सारे काम रे म०॥ १७॥ दुहा—समवसरण शुमती करि, निरखे प्रभु मुख चंद; धन्य धन्य सुरनर नारीयो, नीत नीत नयना नंद ॥ १ ॥ उत्तम देश भरतनां, गाम नगर आगार; हथ्थीणा उर पूरें आवीया, नाठां lacksquareदुरीत प्रचार ॥ २ ॥ ढाल ॥ देश मनोहर मालवो ॥ ए देशी ॥ सोहं कर केवल पामियां, आवियां

For Private And Personal Use Only

शांतिना थना

11 9 11

चोसठ इंद छछना ॥ समवसरणरचना रची, छिछ छिछ प्रणमें जिणंद छछना ॥ १ ॥ केवछ प्रमहोत्सव सुर करें, कांइ आणी अधीक स्नेह छछना ॥ ए आंकणी ॥ आठप्राति हार्ये शोभतां, प्रमुखा तिशयें चार छछना, ग्रुप्त आहार निहार सदा, रुधीर गोखीर समधार छछना ॥ के० ॥ २ ॥ श्वास कमल अंगे खेद नहिं, करम खपावी इंग्यार ललना ॥ ए ग्रुण वीस अमर कीया, चोत्रीश अतिशय धार ललना ॥ के० ॥ ३ ॥ समव सरणमें वीराजतां, शांती जीणंद दयाल ललना ॥ ग्रण अनंत ग्रुण धारतां, वांछतां धर्म मयाल ललना ॥ के० ॥ ४ ॥ मेह मधुर गंभीर ध्वनी, पीवे चा-तुक भवि धार छलना ॥ सोलमा खामी चक्री पांचमो, पून्य प्रकृति नो नहिं पार छलना ॥ के० ॥ ५॥ दुषण समवसरण दीसा, लागत नहींअलगार ललना ॥ नर तिरि निरिया मरावली, 🖔 कोडा कोडि परिवार ऌ० ॥ के० ॥ ६ ॥ आत पत्र प्रभु शीर छाजे, भामंडऌ झलकंत ऌ० ॥ त्रण गढ नी रचना करी, च्यार स्वरूपें पेखंत छ०॥ ७॥ छोका छोक प्रकाशंती, गाजतिं नीशुणंत हुं छ०॥ अन्नाण तिमिर अनादि नो, दुःख सयल हरंत ल०॥ के०॥८॥ वन पालक श्रवणें सुणी,

पंच क० स्तवन.

11 9 11

दिए वधामणी नाथ छ०॥ हय गय रथ सिणगारीयां, छेइ अंते उर साथ छ०॥ के०॥ ९॥ राय समीपें आवियां, वंदीया हरख विशेष छ०॥ उचीत स्थान के बेसतां, प्रभुशुं नय ये उपदेश छ०॥के०॥१०॥ दुहा—संसार में भमतां थकां, दुःकृत नर भव लद्ध; ॥ निद्रा विकथा दुरत्यजि, आप सवारथ सिद्ध ॥ १ ॥ जन्म मरण गर्भ वासनां, दुःख छे अनंत अपार; सघला दुःख थी छुटिएं, सेवे प्रवर्ज्या सार ॥ २ ॥ संयम मारग आद्रि, शुद्ध छे मुक्ति पंथ; समता शुद्ध छे आतमा, तप निरमल नि-र्पंथ ॥ ३ ॥ ढाल ॥ राग धन्या श्री ॥ तप गच्छनंदन सुर तरु प्रगट्या, हिर वीजय गुरु राया रे ॥ ॥ ए देशी ॥ नृप सुणी धर्मनें सज थया सर्वे, जाणी अथीर स्वरूप रे; राज ठवे राय नीज पुत्र नें, भावता भावना भूपरें ॥ १ ॥ अमने कुण करत उपगार, सौभागी हितकार रे ॥ अमने० ॥ आं० पांत्रिसें नृप साथें पेखरिया, दीक्षा दीएं जगदीश रे; त्रिपदिनी सुणी प्रभु मुख थकी, गण धरादिक छत्तीस रे अमने०॥ २॥ बासठ सहस्स संयमि साधु भालो, साधवी संख्या धारो रे; हजार बासठ 🖫 पर चउ शत सही, वंदी करम निवारों रे ॥ अमने०॥३॥मनःपर्यव चउ सहस्स हुआ, केवली च्यार

शांतिना- िह्न हजारो रे; त्रण सय संख्या पूर धारिए, अवधि तीन हजारो रे ॥ अम० ॥ ४ ॥ वैकीय खट सहस 伏 एंच क० साधुछे, अडसय पूरव धारो रे; दोय लक्ष नेउ सहस्स कह्यां, ए श्रावक विचारो रे ॥ अम० ॥ ५ ॥ श्री श्री श्री कहीयां, ए सघलो परि- श्री वारो रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ चोथुं कल्याणक विनयथी पूजें, दुजें ज्ञान उदारो रे; खेम विजयनां भव हुःख छीजे, लीजे शीव निरधारो रे ॥ अम० ॥ सौभागी सीर दारो रे ॥ अम० ॥ ७ ॥ इति च-तुर्थं केवल ज्ञान कल्याणकं समाप्तम्

दूहा—हवे कल्याणक पांचमो, गावा हरख अपार; तनमन जिन ग्रण थूणतां, सफल होय अवतार ॥ १ ॥ ढाल ॥ राग सोरिट ॥ ऋषभजीनेश्वर प्रीतम माहरो रे ॥ ए देशी ॥ अनुक्रमें श्रीजीनवरजी आवीया रे, समेत शीखर गिरिराज ॥ पणवीस सहस संयंम पणें हुआ रे, साधे आतम
काज ॥ १ ॥ शांति जिनेश्वर जगमां सुयशथयो रे, ॥ आं० ॥ संपूरण पालीसहु आउखुं रे, लक्ष

वरस परिमाण; आयुनाम गोत्रवेदनी क्षयी रे, पाम्यां पद निर्वाण ॥ शांति० ॥ २ ॥ अजरामर पद ज्ञानविलासतां रे, अक्षय सुख अनंत; कर्ता अकर्ता तुंहीं प्रभु रे, निज ग्रणनें विलसंत ॥ शांति० ॥ ॥ ३ ॥ प्रगट्यो दरिशनज्ञान चरण घणुं रे, भांगे सादि अनंत; असंख्य प्रदेश आकाश एक दे-शर्मा रे, अनंत गुणो भगवंत ॥ ४ ॥ शां० ॥ निरमल सिद्ध शीलानें उपरें रे, जोयण एक लोगंत; 🧗 सादि अनंतस्थिति जिहां छे जेहनी रे, ते सिद्ध प्रणमोसंत॥५॥शां॥रुपातीत स्वभावछे जेहनां रे, केवल दंसण नाण; आतम ध्यानें सिद्ध ध्याता थकां रे, पामे सिद्ध सयांण ॥ ६ ॥ शां० ॥ एह प्रभु ध्येय समाप्पति हुइ रे, ध्याता ध्यान प्रमाण; केवल कमला विमला क्षेमथी रे, वरेसिद्ध गुण खाण॥ शां०॥ ७॥ दृहा—कर्म सयल दूरेंकरी, अक्षय सुख अनंत; अव्ययलील अनंतता, पाम्या श्री भगवंत ॥ १॥ ॥ ढाल ॥ जिंडुआनी देशी ॥ श्रुतदेवी समरी सदा रे, शांतिजीणंद दयाल रेजी रे ॥ पद निर-वाण प्रभु पामियांजी रे, अव्यय लील निहालरेजी रे॥१॥पद०॥ जरा मरण दुःख छेदीयांजी रे, तोड्यांते कर्मनां बंधरेजी रे॥ हरी इंद्रासन हालीयाजी रे, जाणीया सयल संबंधरेजी रे॥ पदणाशा शांतिना-थना-

11 33 11

अथमहीषीयो इंद्रनीजी रे, लोकपाला दिक साररेजी रे ॥ सपरिवारें शोभतांरे जीरे, जिनगुण गीत संभाररेजी रे, ॥ पद०॥३॥ जिहां भगवंतनुं शरीरछेजी रे, तिहां आवे सुरजातरेजी रे ॥ प्रदक्षिणा नमनादि केंजी रे, करतां आंशु पातरेजी रे ॥ पद०॥ ४॥ करजोडि करे सेवनाजी रे, सोहम जाणो ए धूररेजी रे ॥ इशान पण इणि परेंजी रे, ढलकतां आंशु पूररेजी रे ॥ पद०॥ ४॥ मनमें दुःख मायेनहींजी रे, सोहम आज्ञा जेमरेजी रे ॥ तदनंतर भवण वइजी रे, ब्यंतर जोसीआं तेम-रेजी रे ॥पद०॥६॥ वैमानिक सहुदेव ताजी रे, नंदनवन मन भावरेजी रे॥ गोशीर्ष चंदनादि केंजी रे, चयने कारणें लावरेजी रे॥ पद्०॥ ७॥ तिर्थंकर गणधर निजिरे, शेषकरे अणगार रेजी रे॥ चय-तेत्रण करतां थकां रेजी रे, आणि दुःख अपाररेजी रे ॥ पद० ॥ ८ ॥ आज्ञाकारि देवता कन्हेंजीरे ॥ रषीरनुं नीर आणावरेजी रे ॥ सोहमनीर जिनजी तनुं रेजी रे, स्नान मज्जन करावरेजी रे॥पद०॥॥९॥ बावन्ना चंदन छेपतांजी रे, प्रभु भूषण पहेरावरेजी रे॥ गणधरने अन्य देवताजी रे, मुनी अलंकार धरावरेजी रे ॥ पद०॥ १०॥ चित्रामण त्रण शीबिका जीरे, चित्रीत छें अभिराम रेजी रे ॥

पंच क० स्तवन

11 88 11

आंशुपात करतां थकां जीरे, जिन तनुठिवया तामरेजीरे ॥ पद० ॥ ११ ॥ गणधरादि एणि परेंजीरे वली मुनिनां शरीररेजीरे ॥ चयमें जीनतनु ठवतां जीरे, सोहम वडो सुधीररेजीरे ॥ पद० ॥ १२ ॥ अग्नि कुमारे विकुरव्योजीरे, अग्नि उच्छाहर रहीतरेजीरे ॥ वायु कुमारे वायरोजीरे, इमकरे निजनिज जीतरेजीरे ॥ पद् ॥ १३ ॥ अन्य देवा धणुं उलटेजीरे, अगर चंदनलेइ साररेजीरे ॥ काष्टमांहे नांखे तदाजीरे, सिंचित घृत मधू धाररेजीरे ॥ पद० ॥ १४ ॥ प्रभु शरीर ज्वलतां थकांजीरे, जोतां हरी स सनेहरेजीरे ॥ तिम गणधरनें मुनिवराजीरे, निरजीत हुइ तस देहरेजीरे ॥ पद० ॥ १५ ॥ 🖔 दूहा—अच्युत देव आदेशथीरे, मेघमाळी मनोहार ॥ नीर वरसावे यूक्तिथी, ओल्हवी चय तेणी-वार ॥ १ ॥ चतुर सनेही मोहनां ॥ ए देशी ॥ तद नंतर सोहमपति, देव राया शिरदारोरे ॥ वाम पासानी दाढाळीएं, उपरनी श्री कारोरे, मोक्ष कल्याणक भविसेवो, अनंत अनंत दुःख खेवोरे ॥मो०॥ ॥ आं० इशान इंद्र दाढाळीएं, वाम पासानी उपरनीरे ॥ जमणी पासा चमरेंद्रे, दाढाळीएं हेठ इं लनीरे ॥ मो० ॥ २ ॥ बळिंद्रलीएं वाम पासनी, अधो दाढा उछासरे ॥ अंगोपांग सहु हरीळीयें,

शांतिना थनां.

11 33 11

टाले कर्मनां पासरे ॥ मो० ॥ ३ इंद्र रतनमय थूभकरे, तीर्थंकर गण धारारे ॥ मुनितीन थूभ रची करी, नंदीश्वर जाए प्यारारे ॥ मो० ॥ ४ ॥ जंबु द्वीपथी आठमो, त्रीदश रमवानुं धामरे ॥ एकसो तेसठ कोडि चौरासी, लक्ष जोयण अभिरामरे ॥ मो० ॥ ५ ॥ मान विखंभ वलयांकित, शाश्वतां वेल जुहारोरे ॥ आनंद मंदीर सुखकरुं, तसवंदीत पाप नीवारोरे ॥ मो० ॥ ६ ॥ चिहुं दिशि चिहुं अंजनगिरी, उंचा चोरासी हजारोरे ॥ लांबां वीस्तार दशसहस्स छे, सहसभुमी मांहे धारोरे ॥ मो० ॥ ॥ ७ ॥ नंदोत्तरा नंदा आनंदा, नंदी वर्द्धनी वाविनामरे ॥ दश जोयण उंडीकही, चउ वनछे अभि-रामरे ॥ मो०॥ ८ ॥ थंभ तोरण धारादिकसवी, दधीमुख गीरी मांहेदीसेरे ॥ तेह उपरें जीन मंदीरां, शोभीत सुरनर दीसेरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ अंजन गिरी परिमाण छे, उंचा लांबा विस्तारोरे ॥ जिन मंदीर आठ उपरें, झह्ररी काराधारोरे ॥ मो०॥ १०॥ चौ बारा प्रासादछे, अंजन गिरि शिरजांणोरे ॥ तेरतेर प्रसाद चीहुं दीसे, बावन्न जिन घरमांनीरे ॥ मो०॥ १९ ॥ ऋषभ चंद्रानन शाश्वतां, वारीषेण वर्द्धमानोरे ॥ एकसो चोविश पंडिमावंदो, प्रभा रयण समानोरे ॥ मो०॥ १२ ॥

पंच क० स्तवन.

11 82 11

पंच कल्याणक वासरे, महोत्सव करे सुरराजोरे ॥ समकीत ग्रनी जनवीकसें, करसें आतम काजोरे॥ ॥ मो० ॥ १३ ॥ जंघा चारण वीद्या धरु, नरवर सुरवर रमणारे ॥ विद्याचारण मुनिवर आवे, टाले नमीभव गमणारे॥ मो०॥ १४ ॥ केइ प्राणी समकित लहें, श्री जिन भक्तिनिशानीरे॥ विदिशी गीरीनां च्यार छे, सोल छे तस राजध्यानिरे ॥ मो० ॥ १५ ॥ सुंदर जीनवर धाम छे, सोहम इशा-ननी देवी रे ॥ अष्टाइ महोत्सव तिहां करे, दशदिग्ग पालादि सेवी रे ॥ मो० ॥ १६ ॥ नंदीश्वर द्वीपनो बहु, विस्तार छे सयाणी रे ॥ जिवाभिगम ठाणांगमां, जोइकरो शुद्धनांणिरे ॥ मो० ॥ १७॥ दुहा-शांति जिनेश्वर गाइएं, ध्याइयें तत्त्वस्वरुप॥ परमाणंद् पद् पाइयें, अव्यय सुख अनुप॥ १॥ ॥ ढाल ॥ ४॥ राय बोलावे राणिनें हेत आणी रे ॥ ए देशी ॥ निज निज सूर सभाए गया, रूचीवं ताजी ॥ डाबडा मांहें तस मूके बुद्धिवंताजी ॥ पूष्प चंदन दाढा पूजे, रू० ॥ अवसर हरी निव चुके ॥ बू० ॥१॥ घूर सोहम देवलोय छे, रू० ॥ बत्तीस लक्ष वीमांन बू० ॥ सत्तावन्न कोडी उप रे रू० सठलक्ष बिंब सुजांण बू० ॥ २ ॥ ईशान देवलोयें बीजे रू० ॥ अडवीस लक्ष प्रासाद बू० ॥ लक्ष शातिना-थना. ्र चालीश पचाशकोडि रू० ॥ नमोबिंब टाली प्रमाद बू० ॥ ३ ॥ सनत कुमार विमान शुची, रू० ॥ द्वाद्श लक्ष प्रमाण बू० ॥ सठलक्ष एकवीस कोडि, रू० जिन बिंब नमो सयाण बू० ॥ ४ ॥ चोथे माहेंद्रें वीमान कह्यां रू० ॥ अडलक्ष छे विचार बू० ॥ चालीश लक्ष चउदें कोडि, रू० प्रणमो बिंब उदार 🖔 बू०॥ ५॥ चउलक्ष ब्रह्म पांचमें, रू० विमान सुंदर रसाल बू०॥ सप्तकोडि लक्ष जीनवीश, रू० पूजे श्री बिंब विशाल बू०॥ ६॥ पंचास सहस्र छठें कह्यां, रू० विमान लांतिक सूर बू०॥ लक्षनेवुं विंबरुअडां, रु०नमो आणंद भरपुर बू०॥७॥देवलोय शुक्र सातमें रू०॥ सहस चालीस वीमान बू०॥ जिनबिंब लक्ष बावत्तरी, रू०॥ हरी पूजे गुणजाण बू०॥ ८॥ सहसार देव आठमो भलो, रू० सहस छ विमान जोय बू०॥ दीगलक्ष एंसी सहसबिंब, रू० जिननमी दुर्मति खोय बू०॥ ९॥ आनत प्राणत देवता, रू० दुगदुग सय प्रासाद बू०॥ छत्तीस छत्तीस सहसछे, रू० टाली नमो हैं उन्माद बू०॥ १०॥ एकादश द्वादश शुची, रू० आरण अच्यूत नाम बू०॥ दुग दोढसो विमान सलां, रू० सहस सत्ताविस स्वाम बू०॥ ११॥ विजे एम परमांणछें, रू० श्रीजिनविंब जुहार बू०॥

पंच क० स्तवन.

॥ १३ ।

पहेले त्रिके प्रेवेयकें भला, रू० विमांन एकसो इग्यार बू० ॥ १२ ॥ तेर हजार वलीत्रणसें, रू० उपरें विस्तजिणंद बू० ॥ बीजे त्रीकें एकसोसात, रू० बीमान छे सुखकंद बू० ॥ १३ ॥ द्वाद्श सहस-अडसय, रू० चालिस विंव जुहार बू० ॥ एकसो वीमान त्रीजे त्रीकें, रू० जिनविंव वारहजार बु०॥ १४॥ विजयाय विजयंति जयंति, रू० अपराजीत चोथुं नाम बू०॥ सरवारथ विमान पण, रू० प्रणमो छसय स्वाम बू० ॥ १५ ॥ एकसो कोडि बावन्न कोडि, रू० चौराणुं लक्ष हजार बू०॥चूंआ लिश शत सयसठ, रू० उर्द्ध लोके विंबधार बू० ॥ १६ ॥ जिनविंब जिन दाढाहरी, रू० भावभावे मनोहार बू० ॥ अगर कपूर भूपउखेवे, रू० पूजे विविध प्रकार बू० ॥ १७ ॥ धनुष चाळीसनी देहडी रू० कंचन वरणी काय बू० ॥ छंछन मृग जस छाजतो, रू० गाजतो आणंद पाय बू० ॥ १८ ॥ से-वतो यक्ष गरुड भलो, रू० नितनित संघ समुदाय बू०॥ देवी निर्वाणी विघनवारे, रू० अहनीस जीनगुण गाय बु० ॥ १९ ॥ मोक्ष कल्याणक पांचमो, रू० ध्यावो शांति जिणंद बू० ॥ शुभलेश्या श्रीजिनथूणतां, क्र॰ पावो परमाणंद बू॰ ॥ २० ॥ जे नर नारि एथुणसें, रू॰ पामसे मंगल माल बू॰ 🕻

शांति तृष्टि पृष्टिसदा, रू०तस घर लछी विशाल बू०॥ २१॥ ढाल ॥ ५॥ राग धन्या श्री ॥ आज माहरे त्रिभुवन साहेब तुठो ॥ ए देशी ॥ पंच कल्याणक श्री शांतिनां, ग्रुरु कृपायें गायारे ॥ एह-कल्याणक त्रिविधें थूणतां, अनुभव रसमें पायारे ॥ १॥ त्रिभुवन नायक लायक तुठो, मोह माह-मह्न रुठोरे ॥ त्रि०॥ एआंकणी ०॥ दुरगतित्यागी पाप वीदारी, पावो शीव पटराणिरे ॥ जीनगुण वाणि अमीय समाणि, लहीयां अनुभव नाणीरे त्रि॰॥ २॥ श्रीतीर्थपती भवियण नीत्यध्यावे, शांति जिणं-दने गावोरे ॥ थाल भरिभरि शांतिविधावो, परममहोदय पावोरे त्रिभु० ॥ ३ ॥ आगम महोत्सव मांहेंरचना, स्तवना करी भलिभातेंरे; श्रावक श्राविका टोले मलीनें, निसुणे वाणि प्रभातेंरे त्रिभु०॥४॥ 🖟 संवतअढार छहोत्तेरा वरषे, चैत्रवदी रवि वारेंरे ॥ एकादशी दिवसें संथुणीयो, भवियण नें हीतकाररे त्रिभु० ॥ ५ ॥ तपगच्छ दीनकर तेजप्रतापी,सकल मुनि शिरताजेंरे ॥ श्री विजय सूरेंद्रसूरी ग्रुणगाजे, विजयाणंद गच्छछाजेरे त्रिभु० ॥ ६ ॥ वीरपमुहा बिंब स्थापनाकीधी, अढी लाख उदाररे ॥ दानसूरी-श्वर भविहीत करूं, तस परंपर साररे ॥ त्रिभु० ॥ ७ ॥ वेद वीचक्षण श्रुतधरवाणी, श्री जितविजय

गुरुरायारे ॥ तसपद्पकज श्री विनय विजयवर, खेमविजयपं ग्रण गायारे त्रिभु० मोहमाहा ॥८॥ कलश— श्रीशांति जिनवर तेज दीनकर मोह विदारण भयहरुं, सोलमा स्वामि मुक्ति गामि कल्याणक एह सुखकरुं ॥ बहु भक्तियुक्तें एकचितें आराधो भवि सुंदरु, सद्गुरु, संगें विनयरंगे खेमवीजय नीत-जयकरुं ॥ १ ॥ इतिश्री पंचमं निर्वाण कल्याणकं संपूर्णम् ॥

"अथ श्री पंचकारण गर्भित श्री वीरजिन स्तवनम्"

दूहा—सिद्धारथ, सुत वंदीए, जगदीपक जिन राज; वस्तु तत्त्व सिव जाणिएं, जस आगम थी
आज ॥ १ ॥ स्याद्वाद थी संपजें, सकल वस्तु विख्यात; सप्तभंग रचना विना, बंधन नें सें वात
॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजूआ, आप आपणे ठाम; पूरण वस्तु विचारतां, कोइन आवे काम ॥ ३ ॥
अंध परुपें एह गज, ग्रहि अवयव एकेक; दृष्टि वंत लहें पूर्णगज, अवयव मिली अनेक ॥४॥संगति
सकल नयें करी, जुगति जुग शुद्ध बोध; धन जिन शासन जग जयुं, जिहां नहीं किस्यों विरोध॥५॥

शांतिना थनाः ॥ १५ ॥ ढाल—पहेली ॥ धन धन्य संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन, शासन जग जयकारी, स्याद्वाद शुद्ध रूप रे; ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ श्री० ॥ ॥ १ ॥ कोइ कहे एक काल तणें वशे, सकल जगित गित होयरे; काले उपजे कालेविणसें, अवर न कारण कोय रे श्री० ॥ २ ॥ काले गर्भ धरे जग विनता, काले जन्मे पुत्र रे; कालें बोले कालें चालें, कालेंझ, छे घर सूत्र रे श्री० ॥ ३॥ काले दूध थकी दहीं नीपजे, कालें फल परि पाक रे, विविध पदारथ काले उपजे, अंते करें वे बाक रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिन चोवीसी ए बार चक्कवइ, वासु देव बलदेव, रे, कालें केवली कोइ न दीसें, जस करतां सुर सेवरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ उत्सर्पिणी अवस र्षिणी आरो, छे जू जुइ भांति रे; षड्डू ऋतु काल विशेष विचारो, भिन्न भिन्न दिन राति रे॥ श्री० ॥ ६॥ कालें बाल विलास मनोहर, जोवने, काला केस रे; घड पणें वली पली वपु, अति दुर्बल शक्ति नहीं लव लेश रे॥ श्री०॥ ७॥ ढाल—बीजी॥ झांझरीया मुनीनी देशी॥ तव स्वभाव वादी वर्देजी, काल किस्युं करे रंक; वस्तु स्वभावें 🕼

पंचक० स्तवनः

॥ १५ ।

निपजें जी, विणसे तिमज निःशंक ॥ १ ॥ सुविवेक विचारी जुओ जुओ वस्तु स्वभाव ॥ ए आंकणी ॥ 🕎 छतें योग योवन वती जी, वांझणी न जणें बाल; मूंछ नहीं महिला मुखें जी, कर तलें उगे न वाल ॥ २ ॥ सु० ॥ विण स्वभाव नवि संपजें जी, किमहीं पदारथ कोय; अंब न लागे लींबडे जी, वास वसंतें जोय सु० ॥ ३ ॥ मोरपीछ, क्रुण चीतरें जी, क्रुण करे संध्या रंग; अंग विविध सविजीव नां जी, सुंदर नयन क्ररंग ॥ ४ ॥ सु० कांटा बोर बब्बुलनां जी, कोण अणि आला कीध; रूप रंग 🕏 ग्रुण जूजूआजी, तरु फल फूल प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ५ ॥ विसहर मस्तक नित्य वसेंजी, मणी हरें विष तत्काल ॥ पर्वत स्थिर चल वायरो जी, ऊर्ड अग्निनी झाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मच्छ तुंब जलमां तरेंजी, बूडें काग पहाण ॥ पंखी जाति गयणें फिरेंजी, इंणि परे सहज विनाण सु० ॥ ७ ॥ वाय सुंठ घी उपसमें जी, हरडें करें विरेक; सीझे नहीं कण कांगडुं जी शक्ति स्वभाव अनेक सु॰ ॥८॥ 🖔 देश विशेषे काष्टनो जी, भोंयमां थाय पाषाण, शंख अस्थिनो नीपजें जी, क्षेत्र स्वभाव प्रमाण

शांतिना थनाः

11 38 11

सु० ॥ ९ ॥ रवि तातो शशी सीयलो जी, भव्यादिक षहु भाव; छें द्रव्य आप आपणा जी, न त्यजें कोइ स्वभाव सु० ॥ १० ॥

ढाल ॥ त्रीजी॥ प्रथम गोवाला तणें भवें जी ॥ ए देशी ॥ काल किस्युं करे बापडो जी, वस्तु स्वभाव अकज ॥ जो न होय भवितव्यताजी, तो किम सीझें काज़ रे, प्राणी म करो मन जंजाल ॥ ९ ॥ भावि भाव निहाल रे, प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ जलधि तरें जंगल फिरें जी, कोडि यतन करे कोय ॥ अण भावि होवें नहिं जी, भावि होय ते होय रे प्रा० ॥२६॥ आंबे मोर वसंतमां जी, डालिं डालिं केइ लाख; केइ खरया केइ खाखटी जी, केइ आंबा केइ शाख रे प्रा०॥ ३॥ वाउल जिम भिव तव्यताजी, जिण जिण दिसें उजाय ॥ परवरें मन माणस तणांजी, तृण जिम पुठें धाय प्रा०॥ ४॥ नियत वसें विन चिंतव्युं जी, आवि मिलें तत्काल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्युं जी,नियत करें विसराल रे प्रा०॥ ५॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणां जी, नयण हणें गोवाल ॥ दोय सहस जस देवता जी, देह तणां रख वाल रे, प्रा० ॥ ६ ॥ कोकूओ कोयल भणें जी, किम राखीश रे प्राण ॥ आहेडी

पंच क॰ स्तवन•

11 35 11

सरताकीओ जी, उपरभमें सिंचाण रे प्रा०॥ ७॥ आहेडी नागें डंस्यो जी, बाण लग्यो सिंचाण॥ कोकूहो उडी गयो जी, जूओ नियत प्रमाण रे प्रा०॥ ८॥ शस्त्र हण्यां संघाममां जी, राण पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांथी मानवि जी, राख्याहीन रहंत रे, प्रा० ॥ ९ ॥

ढाल चोथी॥ बेडलें भार घणो छे राज वातां केम करो छो॥ए देशी॥ काल स्वभाव नियत मति कुडी, कर्म करे ते थाय ॥ कर्में नरय–तिस्य नर सुर गति, जीव भवांतर जाय ॥ १ ॥ चेतन चेतीयें रे कर्म न छुटें कोय ॥ ए आंकणी ॥ कर्में राम वस्या वन वासें, सीता पामी आल ॥ कर्में है लंकापति रावण नुं, राज्य थयुं विसराल चे०॥२॥ कर्में कीडी कर्में कुंजर, कर्में नर ग्रणवंत॥ कर्में रोग सोग दुःख पीडित, जन्म जाए विलवंत ॥ चे०॥३॥ कर्में वरस लगें रीसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्में जिनने जूओ गमारे, खीला रोप्यां कन्न चे० ॥ ४ ॥ कर्में एक सुख पालें बेसें, सेवक सेवें पाय ॥ एक हय गय रथ चढ्या चतुर नर, एक आगल उजाय ॥ चे०॥ ५॥ उद्यम मांनी अंध तणी परें, जग हींडे हा हुतो ॥ कर्म बली ते लहें सकल फल, सुखभर सेजें सूतो शांतिना थनाः

11 99 11

चै०॥६॥ उंदर एकें कीधो उद्यम, करंडिओ कर कोलें ॥ मांहें घणां दिवसनो भूरव्यो, नाग रें रह्यो दुःखें डोलें चे०॥७॥ विवर करी मुषक तस मुखमां, दीए आपणुं देह॥ मार्ग लही वली नाग पधारुवा, कर्म वली जूओ एह॥ चे०॥८॥

ढाल ॥५ पांचमी ॥ राग जन्म जरा मरणे करीए,ए संसार असार तो ॥ हवें उद्यम वादी भणेंए, ए च्यारे असम च्छतो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, एक उद्यम समरच्छ तो ॥ १ ॥ उद्यम करतां मानवी ए, इयुं निव सीझें काजतो ॥ रामे रयणा यर तरी ए, लीधुं लंका राजतो ॥ २ ॥ कर्म नियत ते अनुसरें ए, जेहमां शक्ति न होयतो ॥ देउल वाघ मुख पंखीया ए, पिउ पेसंतां जोय तो ॥३॥.... विण उद्यम किम निकलें ए, तिल मांहेंथी तेलतो ॥ उद्यमथी उंची चढेंए, जुओ एकेंद्री वेलतो ॥ ४ ॥ उद्यम करतां एक समेए, जो निव सीझें काजतो ॥ तोफिरि उद्यम थी हुएए, जोनवि आवें व्याजतो ॥ ५ ॥ उद्यम करी करयां विनाए, निव रंधाए अन्नतो ॥ आवी न पडे कोलीओ ए, मुखमां पोषें न तन्नतो ॥ ६ ॥ कर्मे पूत उद्यम पीताए' उद्यम कीधां कर्मतो ॥ उद्यम थी दूरें टलें ए,

पंच क० स्तवन

11 8/9 11

जूओ कर्मनां मर्म तो ॥ ७ ॥ दृढ प्रहारी हत्या करीए, कीधां पाप अनंत तो ॥ उद्यमथी षट्र मासमां ए, आप थयां अरीहंततो ॥ ८ ॥ टीपें टीपें सर भरेए, कांकरे कांकरे पालतो ॥ गिरि जेहवां गढ नीपजें ए, उद्यम शक्ति निहाल तो ॥ ९ ॥ उद्यम थी जल बिंदुओ ए, करे पाहाणमां ठामतो ॥ उद्यमथी विद्या भणेंए, उद्यम जोडें, दामतो ॥१०॥ ढाल ॥६ छट्टी॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥ ए पांचे नय वाद करंता, श्री जिन चरणे आवे ॥ अमीय सरस जिन वांणी सुणिने, आणंद अंग न मावेंरे प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे प्रा० ॥ ते मिथ्या मित जाणोरे प्रा० ॥ ए आंकणी ॥१॥ ए पांचे समुदाय मिल्यां विण, कोइ काज नवि सीजे ॥ अंग्रुल योगें कर तणी परें, जेबूझें ते रीझेरे प्रा०॥ २॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दीएं वडाइ ॥ पण सेना मली सकल रणांगण, जितें सुभट लडाइ रे प्रा॰॥ ३॥ तंतु स्वभावें पट उपजावे, काल क्रमें रे, वणाय ॥ भवितव्यता होयतो नीपजे, नहीं तो विघन घणांय रे घा० ॥ ४ ॥ तंतु वाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सकल सहकारी ॥ इम पांचें मिलि सकल पदारथ, उत्पत्ति जूओ

शांतिना-थनाः भवादिक पांमी, सहगुरुने जइ मिलीओ रे प्रा०॥ ६॥ भव स्थिति नो परिपाक थयो जब, पंडित वीरज उछसीओ ॥ भव्य स्थावें शिव गित गांमी, शिवपूर जइने विसओ रे प्रा०॥ ७॥ वर्द्धमान जिन इंणी परें विनये, शासन नायक गायो; संघ सकल सुख होएं जेहथी, स्याद्वाद रस पायोरे प्रा०॥ ८॥

कलश—इंम धर्मनायक सुमितदायक वीर जिनवर संथुण्यो, सय संतर संवत विह्न लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सूरींद पटधर श्री विजय प्रभ सूरिंद ए, श्री किर्त्तीविजय वाचक शीश इणी परें विणय लहे आणंद ए ॥ ९ ॥

"इति वीरजिन स्तवनम् पंचकारणगर्भितम् समाप्तम्" श्रीकित्तींविजय ऊपाध्याय शिष्य श्रीविनयविजय उपाध्याय विरचित श्री

## अथ श्री गौतम स्वामि प्रश्नोत्तर रूप बार आरानुं स्तवन

दूहा—सरसति भगवति भारती,ब्रह्माणि करिसार; आराबार तणो वली, कि इयुं सोय विचार ॥१॥ वर्द्धमान जिनवर नमुं; जस अतिशय चोत्रीशः; समवसरण बेठां प्रभु, वाणी ग्रुण पांत्रीस ॥२॥ गौतम पुच्छे वीरने, पर उपगारा कांक्षिः अनेक बोल विवरी करी, भाखे त्रिभुवन स्वामि ॥३॥ ढाल ॥ १ ॥ चोपाइ ॥ स्वामी वचन कही सुकुमाल, कहीएं अवसर्पिणी काल; दस कोडा कोडि सागर जोय, तिहां षट्ट आरा गौतम होय ॥ ४ ॥ सुसम सुसमा पहेळुं सार, त्यारे युगळ धरे अव-तार; बीजो सुसम आरो कहुं, त्यारे युगल युगनी लहुं ॥ ५ ॥ सुसम दूसम त्रीजो वली, त्यारें युगल कहें केवली; अंति कुलगर हुआ सवि, नामि हुआ आदिश्वर तात ॥ ६ ॥ दूहा—आदि धर्म्म जिने स्थापी ओ; शिखव्यां पुरुष अत्यंत; तृतीय आरा मांहि वली, मुक्ति गया भगवंत ॥७॥ ढाल—॥ २॥ मनोहर हीरजी रे॥ ए देशी॥ राग परजी ओ॥ पछि वली गौतम चोथे आरे, हूआ त्रेवीस जिणंद; एकादश चक्रवर्त्ति तिहां होय, त्रीजें भरत निरं दो ॥ ८ ॥ गौतम सांभलो रे

शां.

दिन दिन पडतो काल, कोघ लोभ मद मत्सर वधरो, दे अणहुंता आल, गौतम सांभलो रे हैं।। आंचली ॥९॥ चक्री आठ गयां नर मुक्ति, बे चक्री सुर मोंटां; सुभुम राय ब्रह्म दत्त गया नरकें, पुण्य काज हुआ खोटा ॥ १० ॥ गौतम सांभलो रे० ॥ वासुदेव नव निश्चयें होरो, नरकतिण लही वाटो; जे भुपति संग्राम करतां, त्रण सयां ने साठों ॥ गौतम० ॥ ११ ॥ रह्मां प्रति वासुदेव नव नीका, निव छंडे धन नारि; वासुदेव तिण किर मरंता, ते नरक तणां अधिकारी गौ०॥ १२॥ नव बलदेव हुआ इणे आरे, नव नारद नर मोटां; सुर गित मुक्ति तणां भजनारा, शीयलें वज्रक छोटा॥ गौ०॥ १३॥ दुहा—गौतम अंतें हुं हुवो; तव काया कर सात; मुज शासन मां जेहवो, हिस ते भाखुं वात ॥ १४ ॥

हाल॥२॥ सुर सुंद्री किह शीर नामी ॥ ए देशी ॥ भाखें वीर जिणेसर खारे, में संयम लीधुं ज्यारे; वरस त्रण गयां त्यां निहालो, त्यारें क्विशिष्य मल्यो रे गोशालो ॥ १५ ॥ तेजो लेश्या ते पण यहतो दोय मुनिवर जिनने दहंतो; अंते पातिक तेह आलोइ, बारमे स्वर्गे सुरहोइ ॥ १६ ॥

दूहा—वीर कहे केवल पछी, विचमां एतो काल; चउदे वर्षे अवतरयो, निन्हव सोय जमाल॥ १७॥ तिष्य ग्रित बीजो सही, सोले वरसें जेह; अंते ते पाछो वलि, समकित पामे तेह ॥ १८॥ ढाल-॥ ३॥ भावि पटोधर वीरनो ॥ ए देशी ॥ दूसम आरोरे आगलें, वीसां सो वरस आय; छेडे होरो वर्ष वीरानुं, दोय हाथ नी काय ॥ १९ ॥ कहुं तुज गौतम गणधरुं ॥ ए आंकणी ॥ वली कहे वीर जिणेसरुं, माहरो सुधम्मी शीष्य रे; छेहडे होशे दुप्पसह मुनि, ते विल चउदया त्रेविश ॥ २० ॥ कहं ।। युग प्रधान जिने कह्यां, जस एका अवतार; पांचमें आरे ते हशे, दोय सहस ने च्यार कढुं० ॥ २१ ॥ युग प्रधान सरीखा ढुशे, मुनि लाख इग्यार; ते उपरि अंधिका कढुं, मुनिवर सोल हजार ॥ क० ॥ २२ ॥ जैन भुपति जगमां हर्शे, करशें धर्म उदार; लाख इग्यार ने उपरी, संख्या सोल हजार क० ॥ २३ ॥ विरपछी गौतम जरो, बारे वरसे मोक्ष; वीरो सिद्धि गति सुधर्म्मा, प्रणमें पातिक सोषि क०॥ २४॥ दृहा—वीर थिक वर्ष चउसठि, मुक्ति जंबु स्वामी; जंबु जातां सही जरो, दश वाना तिणे ठामि ॥२५॥

For Private And Personal Use Only

शांतिना थनाः

॥ २०॥

राग—आशाउरी ॥ ढाळ ॥ ४ ॥ काहान बजावे वांसळी ॥ ए देशी ॥ मनः पर्याप्ति आहारे नहीं, परम अविध ज्ञानः पुळाक ळब्धी आहारक तनु, क्षपक श्रेणि निधान ॥ २६ ॥ उपशम श्रेणि जिन कल्पश्युं, संयम त्रणे जायः केवळज्ञान नमुं रहे, तव मोक्ष पळाय ॥ २७ ॥ वीर कहे वरस मुज पछी, बिचउं त्तरि थायः प्रभव स्वामी त्रीजें पाटे, पर ळोके जाय ॥ २८ ॥ शय्यंभव सूरि मुनिवरुं, जे चोथे पाटेः वीरथी वर्ष अद्वाणुंए, ळिह शुभ गतिवाटि ॥ २९ ॥ वीरथी वर्ष गयां गणुं, एकसो अड ताळः यशोभद्र सुर ळोकमां, तव देतां फाळ ॥ ३० ॥ छिह पाटें संभूति विजय, हूआ पंडित जाणः वीरथी एकसो सीत्तरे, वरसे निर्वाण ॥ ३१ ॥ दूहा—तव पूरव ओछां थशे, सुण गौतम कहे वीरः भद्रबाहू ळगें तेह छे, जेहमां अर्थ गंभीर ॥ ३२ ॥

ढाल ॥ ५ ॥ सींह तणी परि एकलो ॥ ए देशी ॥ वरस बसें चउदे वली रे, निह्नव त्रीजो रे होय; आषाढा चार्य तणोरे, शिष्य कह्यो वली सोयरे, गौतम सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ ३३ ॥ निह्नव सोय टले सही, पामे समकित सार; विसें पनर वरसें वली, स्थूलिभद्र सूरनो अवतारोरे, गौ० ॥ ३४ ॥

पंच क० स्तवन•

11 20 1

पूर्व अनुयोग तिहां नहीं रे, सूक्षम महा प्रणिधान; पहिछुं संघयण थाकीउं रे, वली पहिछुं संस्था नो रे, गौतम सांभलो ॥ ३५ ॥ बसे विस वरस वली रे, निन्हव चोथो रे जेह; अश्वमित्रज नाम हक्यों रे, पाछो वलस्यें नर तेहो रे गौ० ॥ ३६ ॥ वीर पछी वरसज जक्यें रे, बिसें ने अद्वावीश; तव निन्हव हक्षें पांचमो रे, धनग्रसनो शीक्षो रे गौ० ॥ ३७ ॥

दूहा—गंगा चारज ने सही, ते तिम आणो ठाय; च्यार सयाने सिख रे, विरथी विक्रम राय गौ०॥ ३८॥ जे निज शक थापशे, पर दुःख भंजन हार; जैन शीरोमणि तेहछें, शूरवीर दातार ॥ ३९॥ पाट क्रुसुम जिन पूज परुपी ॥ ए देशी॥ ढाल ॥ ६॥ वीर कहें वरस मुजथी जाशे, ॥ ४०॥ पंचिसयां चिहुं आल; रोह ग्रप्त निन्हव होय छहे, भमश्ये ते बहु काल हो गौतम दिन दिन क्रमित वधशे॥ भुपित निह कोय संयम धारी, दान पचारी देशे हो गौ०॥ ४१॥ ए आंकणी॥ पंचसया चउंराशी वरसें, होशे गोष्टि माहिली; सप्तम निह्मव तेहनें किहए, चाले भुंडी चाल हो गौ०॥ ४२॥ पंचसया चौराशी गौतम, वरस गयां तुं जोय; दशपूर्व थाकशें त्यारे, वयरस्वामि

शांतिना-थना-

। २१ ॥

हुँ लगें होय हो गौ० ॥ ४३ ॥ वीरथी वर्ष छसें नव जाते, ताम दिगम्बर थाय; सर्व विसंवादी ए निन्हव, आठमो ते कहेवाय हो गौ० ॥ ४४ ॥ वरस छसें ने सोल जाअंतां, पूरव साडा नव छेद; दुर्बलिका पुत्रज लगी होवे, आगलि सोय निषेध हो गौ० ॥ ४५ ॥ दूहा—नवसें त्राणुं वर्ष गए, पूस्तका रूढज होय; चोथे पजुसण आणस्यें, कालिका चार्य सोय ॥ ४६ ॥

ढाल ॥ ७ ॥ शालिभद्र मोह्योरे शिव रमणी रसेंरे ॥ ए देशी ॥ वीरथी वरस हजार गयां पछीरे, पूरव होय तव छेद; तेर सयां रे वरसें मत हशेरे, बोले नव नवा भेदो रे ॥ ४७ ॥ इंद्रभूति मोह्यो रे वीर वचन रसेंरे, ए आंकणी ॥ दिन दिन काल पडंतो सहीथशे रे, पुण्यवंता नर किहांइ; नीचकुले नरपति बहु थशे रे, पाप तणा मित प्रांहि रे, इं० ॥ ४८ ॥ वासव वैराग ने वन थोडां थशेरे, नहीं मले मन्त्रे मन्त्रो रे; सु पुरुष सत्य सहु सगपण छांडश्यें रे, वाहलुं होश्यें धन्नो रे इं० ॥ ४९ ॥ कलीयुग मांहिं रे मुनी लोभी हशे, विरला कही व्यवहार; धर्म त्यजशें क्षत्री नर वली रे, ब्रह्म धरे हथीयारो रे, इं० ॥ ५० ॥

पंच क० स्तवनः

11 28 11

दूहा—गौतम वीर पछी जरो, वर्ष सयां ओगणीरा; पंच मासने उपरी, भाख्यां बारज दीरा ॥ ५१ ॥ ढाल—॥ ८ ॥ रामभणे हरी उठीएं ए ॥ ए देशी ॥ ताम कलंकि रे उपजें, कुल चांडाल असार रे; मात यशोदा रे बांभणी, होशे तिहां अवतार रे, दुर्गति गामि रे तेसही ॥ ए आंकणी ॥ ५२ ॥ चैत्र शुदि रे आठमने दिनें, विष्टी जनम ते होइरे; देह वरण तस उजलो, पीलां लोचन दोय रे, दुर्ग० ॥ ५३ ॥ रुद्र कलंकी चतुर्मुखी, ए होशे त्रण नामरे; बासी वर्षनुं आउखुं, पाटली पुर जस गाम रे दुर्ग० ॥ ५४ ॥ छट्ठो भागज भीखनो, लेश्ये कलंकी राय रे; षट्ट दरिशन मानेनहीं, दंड कुदंड ते थाय रे दु० ॥ ५५ ॥ इंद्र इहां पछी आवशे, धरशे विप्रनुं रुप रे; वेगें हणशे रे रायने, लेशे नरकनुं कूपरे दु० ॥ ५६ ॥

दूहा—तेहनो सुत सुंदर हरो, दत्त भूप अभिराम; शत्रुंजय उद्धार करावरो, राखरो जगमां नाम ॥५७॥ हैं ढाल—॥ ९ ॥ प्रणमी तुम सीमधरुं जी ॥ ए देशी ॥ आगले आरे पांचमें जी; दुप्पसह मुनिवर होय; सुर गतिमांथी आवरो जी, आगल सुरपति सोय, सोभागी छहेलो मुनिवर एह, छेहलो

शांतिना-भे संघ दुप्पसह तणो जी, आण न खंडे तेह, सोभागी छहे०॥ ए आंकणी ॥ वीस वर्षनुं आउखुं जी, बार थना. वरस घर सार; च्यार वरस मुनिवर पणुं जी,वरस च्यार गच्छ सार, सोभा०॥५९॥ फलगु सिरि जस साधवी जी, नागिल श्रावक जोय; सत्यश्री नामे श्रावीका जी, संघ चतुर्विध होय, सोभा०॥६०॥ सुविहित संघ छेहलो सही जी, अल्प आउखूंरे त्यांहि; संघ सूरिश्चत केवली जी, जाए पोहरज मांहि, सोभा० ॥६१॥ विमल वाहन नरपति जी, सुधर्म मंत्रि रे जेह; न्याय निति अग्नि जक्ये जी; वलि मध्यानें तेह सोभा०॥६२॥ दूहा—जैन धर्म एता लगें, पछें नाहीं पुण्य दान; वाय मेघ मुंडा हर्शें, सुणि गौतम तस मान ॥ ६३॥ ढाल—॥ १०॥ मगध देशको राजा राजेसर ए देशी ॥ मान प्रकाशे मेघज केरो, पहेलो जलधार; बीजो अग्नि तणो तिहां होसें, त्रीजो ते विष धार हो गौतम सुण तुं मधुरी, वाणी।। ए आंकणी।। ६४।। चोथो आंबिलनो घन वरसें, विजलिनो वरसाद; एकेको मेघज तिहां वरसें, वासर सातज सात हो गौ०॥ ६५॥ बहोतेर बिल वैताढ्यज केरां, छे वली शाश्वत त्यांहीं; नर नारी पंखी हय वारण, ते रहशे तेमांहि हो, गौ०॥ ६६॥ आगल छट्टो आरो होशे, दुःसम दुसमा नामें;

एकवीस सहस वरसनो जाणो, निहं नगरी निहं गाम हो, गौ० ॥ ६७ ॥ गर्भ धरे पट्ट वरसनी नारी, बिलवासी मछ खाय; छेहेले कालेय एक हाथनी होरो, सोल वरसनुं आय हो, गौ०॥ ६८॥ दुहा—आगल वली उत्सर्पिणि, तिहां षद् आरा जोय; पहिलो छट्टो सारिखो, दुसम दुसमा सोय ॥६९॥ ढाल-॥ ११ ॥ चांद्रायण नी ॥ ए देशी॥ आगल बीजो आरो सारो, त्यारें मेघ हशे वलि च्यारो पुष्करावृत क्षीर अमृत अपाधारो, चोथो वरसें घृत नीरधारो ॥ ७० ॥ फलइये वन वसइयें गामो, आगिल सात कुलगर तामो; दुसम सुसम तृतीय अभिरामो, त्रेविश जिननो तिहां ठामो ॥ ७१ ॥ नव नारद चकी इग्यारो, नव बलदेव हुशें तिहां सारो; वासुदेव नव तेणीवारो, नव प्रति वासुदेवज अपारो ॥ ७२ ॥ सुसम दुसम चोथो मांहि, एक जिनवर एक चक्री त्यांहि; अंते युगल हरो बहु ज्यांहि, आउ पल्योपम भद्रक प्राहि ॥ ७३ ॥ आगल सुसम पंचमो आरो, युगल देह वे गाउ धारो; छठो सुसम सुसमा संभारु, युगल देह त्रण गाउ विचारु ॥ ७४ ॥ पूछ्यां वचन कह्यां वली वीरे, चित्तमां धरीयां गौतम धीरे; भणतां सुणतां सुखह हशे, रिद्धी रमणी घर भरी विरे ॥७५॥ शांतिना थनाः ॥ २३ ॥ कलश—भले स्तवन कीधुं नाम दिधुं; गोतम प्रश्नोत्तर सिहः; संवत् सिद्धि मुनि अंग चंदे, (१६७८) भादवा शुदि द्वितीया तहीं ॥ ७६ ॥ तप गच्छ तिलक समान सोहें, श्री विजयाणंद सूरी सरु, सागणनो सुत ऋषभ श्रावक कहें गच्छ मंगल करुं ॥ ७७ ॥ ''इति श्री गोतम प्रश्नोत्तर रूप क्षे बार आरानुं स्तवन संपूर्णः"

" अथ श्री अक्षयनिधि तपनुं स्तवन "

दुहा—श्री शंखेश्वर शिर नमी, कहुं तप फल सुविचार; अक्षयनिधि तप भाखीयो, प्रवचन सारोद्धार ॥ १ ॥ तप तपता अरिहा प्रभु, केवल नाणने हेत; नाण लही तप तनें भिज कियो, शिव-रमणि संकेत ॥ २ ॥ तिम सुंदरी परें तपकरो, अक्षय निधि ग्रुणवान; श्रुत केवलिंएं जे रच्यो, कल्पसूत्र बहु मान ॥ ३ ॥

हाल—॥ १ ॥ रुडीने रढियालीरे वहाला तारी वांसली रे, ॥ ए देशी ॥ जंबु भरतेरे नयरी

पंच क० स्तवन.

11 23 11

मंडार ॥ सुंदर सेवोरे अक्षयनिधि तप भलो रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पुण्य संयोगरे प्रीया गरभें फली रे, तव तस वृत्तिचली घरबार; केइ व्यवहारी वणज करावतारे, वाध्यो होठ तणो व्यवहार ॥ सुं०॥ २॥ पुरण मासेंरे जन्मी कुमारिका रे, प्रगट्यो नाल निक्षेप निधान; लक्षणवंतीरे पुत्री प्रभावती रे' राय सुणी करतो बहुमान ॥ ३ ॥ सुं० ॥ पुत्रनीपरेंरे जन्मोत्सव कर्यो रे, सज्जन वर्ग नोतरीयां गेह; संवर सेठेंरे थाप्युं सुंदरी रे, नाम महोत्सव करी धरीनेह सुं०॥ ४॥ बाल स्वभावेंरें रमती सुंदरी रे, जिहां जिहां भूमी खणंती रमाय; पूर्व पुण्येरे मणि माणेक भर्यां रे, जिहां जिहां द्रव्यनिधि प्रगटाय सुं० ॥ ५ ॥ आणी आपेरे तातने सुंदरी रे, तिणें तेशेठ हुअ धनवंत; यौवन जागेंरे रंभा उर्वशिरे, देखी शेठ करे वरचिंत सुं० ॥६॥ शेठ समुद्र प्रिया धन गरमां रे, कमलसिरी नारी तस पूत्त; श्रीदत्त नामेंरे रूपकला भर्यो रे, तस परणावी ते धन जुत्त सुं०॥ ७॥ पुण्य पनोतीरे सासरे सुंदरी रे, आवी तत्क्षण निधि प्रगटाय; पग अंगुठेरे कांकरो काढतां रे, पुरण कलश धन लेती जाय सुं०॥८॥ मुसालें भाणेजीरे तेड्यां भोजनें रे, शांतिना थनाः

ા ૨૪ મ

तेहने घर पण लक्ष्मीन माय; इम जिहां बालारे सापगलां ठवेरे, निधि प्रगटें सहु सुखिया थाय सुं०॥९॥ वहुने मानेंरे ससरो भलीपरें रे, राजा पण चित्त विस्मय थाय; एकदिन आव्यां धर्मघोष सुरीवरा रे, राजा प्रमुख ते वंदन जाय सुं०॥ १०॥ सुंदरि पूछें कहो कुण कारणें रे, पग पग पामुं रुद्धि रसाल; सूरि कहें साचो पूर्वभवे तें कर्यों रे, अक्षयिनिधि तप थइ उजमाल सुं०॥११॥ ढाल-॥ २ ॥ माता जशोदा तमारो कान, मही वेचंतां मागे दान ॥ ए देशी ॥ अथवा चोपाइ नी देशी ॥ खेटक पुर संयम अभिधान, शेठ प्रिया ऋजुमति ग्रणवान; ऋजुमति तप राती रहें ज्ञान भक्ति सुख संपद लहें ॥ १ ॥ रयणावली कनकावली करें, एका वली विधिएं उचरे; पाडोशी वसुरोठें वरी, सोम सुंदरी बहू मत्सर भरी ॥ २ ॥ पुण्यवती तप रती बहु, ऋजु मती प्रशंसे सहु; सोमसुंदरी सुणी निंदा करे, डाकणि परें छल जोति फरें ॥ ३ ॥ भुख्यो ब्रह्म बगाचल ढोर, चांप्यो नाग नसंतो चोर; रांड भांडने मातो सांढ, ए सांतेथी उगारिए मांड ॥ ४ ॥ लाग्युं घर संयम तणुं, सोम सुंदरि चित्त हरव्युं घणुं, नारी प्रभावें नवली एक छडी, वलि एकदिन घर

पंच क० स्तवन.

ા રછા

घाडज पडी ॥ ५ ॥ पाडो शण मन चिंते इस्युं, पापी शेठनुं न गयुं किस्युं; देती श्रापने निर्धन थयां, ते दम्पति सुरलोकें गया॥६॥ सोम सुंद्री ग्रणी मत्सर भरी, अशुभ कर्म उपा-र्जन करी; पामी मरण सा कोइक गुणी,श्रावक मुख नवकारज सुंणी॥७॥ जित शत्रु मथुरांनो राय,चउ सुत उपर बेटी थाय; सर्व ऋद्धि नामज तस देइ, पंच धावशुं मोटी थइ ॥ ८ ॥ रात्रु सैन्य समुहें नड्यो, जित शत्रु रणयोगें पड्यो; छुंट पडी जब राजद्वार, कुमरी पण नाठी तेणी वार ॥ ९ ॥ उ-जाति एक अटवी पडी, रवि उदयें मारग शिर चडी; वन फल वृत्तें वने चर थइ, यौवन वेला निष्फल गइ ॥ १० ॥ एक विद्याधर देखी करी, परणि सा निज मंदिर धरी; तिणि वेला घर लागी गयुं, सर्व ऋद्धि पगलें थी थयुं ॥ ११ ॥ विद्या घरें फरि वनमां घरी, पछि पती एक भिछें हरी त्रीजें दिन घर तेहनुं बल्युं, नारि निंदन सह जन भल्युं ॥ १२ ॥ सार्थ वाह कर वेची तिणें, चाल्यो निज देशावर भणी; पंथ वचे छुंटाणो एह, सर्व ऋद्धि नाठी छेइ देह ॥ १३ ॥ वनमां सरोवर तीरें खडी, राजकुमारी करमें नडी; पुण्यें मुनि मलियां गुण गेह, मिठें वयणें बोलावी तेह ॥ १४ ॥

য়া ५

ढाल—॥३॥ छोरी जाटडी नी ॥ए देशी ॥ छोरीरे बेटी तुं तो रायनी, ॥ हे कांइ उभी सरोवर पालरे; इयुं दुख चिंतवे—सिरदार सहुनें सुख करें ॥ महाराज मुनि इम ज उचरे ॥ पूरव भव मच्छर करी, हे कांइ फली तह शाखा डाल रे—सोम सुंदरि भवें ॥ सि० म० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तात मरण पूर छुंटी उंहे, कांइ पिंड तुं अटवी मोझार रे; दुःख पामी घणुं खेचर इयुं, इणें भवें लह्यो, हां०॥ सुख संभोग एक वार रे; विल वनचर पणुं ॥ सि० ॥ २ ॥ म० ॥ ज्ञानी गुरु वयणां सुंणी हां०॥ राजकुमरि पुछाय रे ॥ ग्रुरु चरणें नमी ॥ आ दुःखथी किम छुटिएं हे० ॥ कहिएं करि सुपसाय रे, दुःख वेला खमी ॥ सि० म० ॥ ३ ॥ अक्षय निधि तप विधि करो, ॥ हे० ॥ ज्ञान भक्ति विस्तार हैं । इक्ति न गोपवी ॥ श्रावण वदी चोथें थकी, हे० ॥ संवत्सरी दिन सार रे; पूरण तप तपी ॥ सी० म० ॥ ४ ॥ चोथ भक्त एकासणें, हे० ॥ शक्ति तणें अनुसार रे; घट अक्षत भरो ॥ विधि एक गमथी आचरो ॥ हां० ॥ गुणणुं दोय हजार रे, पडिक्रमणां करो ॥ सि० म० ॥ ४ ॥ एक वरस जघन्यथी ॥ हां० ॥ तीन वरस उकिट रे; इणि विधि तप करो, शासन देवी कारणें ॥ हां० ॥ चोथे

वरस विषेस रे, विल ए आदरो ॥ सि० म० ॥ ६ ॥ तेह भव मन वांछीत फलें, हां० ॥ परभव ऋद्धि न माय रे; हिर चिकि परें ॥ इमिन सुंणी कुमरी तिहां ॥ हां० ॥ वंदी गुरूनां पाय रे; गइ गामांत रे सि० म०॥ ७॥ पर घर करतां चाकरी, ॥हां०॥ आजिविका निर्वाह रे॥ सुख दुःखमां करे, अल्प विधिएं तप तिणें कर्यो ॥ हां० ॥ प्रथम वरस फरी चाह रे, बीजें भली परें ॥ सि० म० ॥ ८ ॥ चोथें वरस तप मांडतां; ॥हां० कांइ कहुं ए धनवंत रे, एक दिन आवियो, विद्याधर कीडा वश्यें ॥हां०॥ क्रिं पूरव नेह उल संत रे, देखी निज प्रीया ॥ सि० म०॥९॥थापी लेइ अंते उरें, ॥हां०॥सा कहे शील क्रिं व्रत मुज रे; इणिं काया धरी ॥ शेष आयु अणसणें मरी ॥ हां०॥ संवर पुत्री तुज रे, कहुं सुंण सुंद्रि ॥ सि० म० ॥ १० ॥

ढाल—॥ ४ ॥ कोश्या वेश्या कहें रागी जी, मनोहर मन गमता ॥ ए देशी ॥ निज पूरव भव हैं सुंणी तेह जी, सुंदरी सुकुमाली ॥ जाति स्मरण वरें तेह जी ॥ सुं० ॥ तप फलें लहो ऋदि रसाल जी ॥ सुं० ॥ कहें धर्म घोष अणगार जी ॥ सुं०॥ कहें सुंदरी सर्वें साचुं जी ॥ सुं०॥ तुम ज्ञान मांहे नहिं

शांतिना-थना. ॥ २६॥ ॥ २६॥ ॥ सुं०॥ आवंती मांहें वखाण्यां जी॥ सुं०॥ तेहवामें तुमनें जांण्याजी॥ सुं०॥ २॥ सूरि वंदि हैं नेजघर आवें जी॥ सुं०॥ तप अक्षय निधि मंडावें जी॥ सु०॥ राजा रांणी तिणि वेळा जी॥ सुं०॥ शेठ सामंत सर्वे भेळां जी॥ सुं०॥ ३॥ पग पग प्रगटें जे निधांन जी,॥ सुं०॥ करे प्रभावना बहु मांनजी॥ सुं०॥ नाम सुंदरी ते विसरांणी जी॥ सुं०॥ तेतो अक्षयनिधि कहेवांणी जी॥ सुं०॥ शा॥ मन मोटें पूरण फळ ळीधुं जी॥ सुं०॥ पंचमीए पारणुं कीधुं जी॥ सुं०॥ ज्ञान भक्ति महोत्सव देखी जी ॥ सुं० ॥ देवी देव हुआ अनि मेषी जी ॥ सुं० ॥ ५ ॥ सुख विलसंतां संसार जी ॥ सुं० ॥ हुआ सुत चउ पुत्री च्यार जी ॥ सुं० ॥ लियो एने संयम भार जी ॥ सुं० ॥ धन धाती खपाव्यां च्यार जी ॥ सुं० ॥६॥ लही केंवल शीवपुर जावें जी ॥ सुं०॥ ग्रुण अगुरु लघु निपजावें जी ॥ सुं० ॥ अवगाहन छक्षण संता जी ॥सुं०॥ तिहां बीजां सिद्ध अनंता जी ॥ सुं०॥७॥ तस फरसित देश प्रदेसें जी ॥सुं०॥ 🖟 लक्षण सता जा गतुला तहा बाजा तिक जनता जा गांचु गति । सुंवा असंख्यगुणा सुविषेसे जी ॥सुंवा जुओ प्रथम उपांग ठामजी ॥ सुंव॥शुभ वीर करे प्रणांम जी ॥ सुंवाट॥ शुभ वीर करे प्रणांम जी ॥ सुंवाट॥ शुभ वाल—॥५॥ कोइ ल्यो पर्वत धुंघलोरे लोल॥ए देशी॥ वीर जिनेश्वर गुण नीलोरे लोल, ए भाख्यो

अधिकार रे सुंग्रुण नर; वर्ते शासन जेहनुं रे लोल, एकवीश वरस हजार रे; ॥ सुं० वी० ए आंकणी ॥ ९ ॥ जिहां सफल जिन गुंण थुंणी रे लोल॰, दीहा सफल प्रभुष्यांन रे; ॥सु॰॥ जन्म सफल प्रभु दरिसणें रे लोल; वांणी ए सफला कांन रे; सु० वी०॥ २॥ तास परंपर पाटवी रे लोल; श्री विजयसिंह सूरीश रे; सु०; सत्य विजय बुध तेहनां रे लोल०, कपुर विजय कवि शीष्य रे; सु० वी०॥३॥ खिमा विजय गुरु तेहनां रे लोल०, श्री जश विजय पन्यास रे; सु०॥श्री शुभ वीजय सुगुरु नमीरे लोल० सुरत रहि चउ मास रे; सु० वी० ॥ ४ ॥ चंद्र मुनी वसु हिमं करुं रे छोछ०, ( १८७१ ) वरसें श्रावण मास रे; सु० ॥ श्री शुभ वीरनें शासनें रे ळोळ०, होज्यो ज्ञांन प्रकाश रे; सु० वी० ॥ ५॥ कलश—ए पंच ढाल रसाल भक्तिं पंच ज्ञान आराधवा, काम प्रसाद किरिया पंच छंडी पंचमी गति साधवाः नभ कृष्ण पंचमी स्तवन रचियुं अक्षय निधि के कारणें, शुभ वीर ज्ञांने देव सुंदरि नाचवा घर बारणें ॥ ५१ ॥ इति अक्षय निधि तप स्तवनं संपूर्णं ॥

शांतिना थनाः

ા ૨૭ ા

अ नमः सिद्धेभ्यः "अथ श्री शाश्वत् जिनवर स्तवनम्"

॥दूहा॥ वीर जिणेसर पाय नमी, प्रणमी शारद माय; तास तणें सुपसाउ छे, गाइशुं श्री जिन राय ॥१॥अतीत अनागत वर्त्तमांन, चोवीशी त्रिहुं सार;बहुंत्तर तीर्थंकर नमुं, टाली पाप विकार ॥२॥ अतीत चोवीशी जे कही, पहेली जेह विशाल; सावधान थइ सांभलो, आणी भाव रसाल ॥३॥ ढाल १—॥ नमीय पाय जिन विरनां ए॥ ए देशी ॥ केवलज्ञानी पहिलो ए, निरवाणी जिन बीजो ए; त्रीजोए सागर जिनवर जाणीएं ए ॥ ४ ॥ महाजश चोथो जिनवर, विमलनाथ जिन सुखकर; दुःखहर स-र्वानु,-भूति चित्त आणीए ए ॥ ५॥ श्रीधर दत्त दामोदर, सुतेज स्वामि जिनवर; मनोहर मुनि सुव्रत नित्य वंदीएं ए ॥ ६ ॥ सुमति जिननें शिवगति, अस्ताघन मीसर जिनपति; शुभमति सोलसमो जिनवरगाइएं ए ॥ ७ ॥ अनिल यशोधर देवए, कृतार्थनें नित मेवए; सेवोए विंशतिमो जिणेसरूं ए ॥ ८॥ शुद्धमति ने शिवंकर, चंदन स्वामी जिनवर; शुभंकर चोविशे नित प्रणमीएंए॥ ९॥ ढाल—॥ २ ॥ सिद्ध चक्र पद वंदो ॥ ए देशी ॥ पद्मनाभ सूरदेव सुपास, शय्यंप्रभ पूरे मन

पंच क० स्तवनः

॥ २७ ।

आशः सर्वानुंभृति शिव वासरे, भविका वंदो जिन चोवीश ॥१०॥ ए आंकणी देवश्रुत उद्य पेढाल,पोटिल सत्कीर्ति सुविशालः सुव्रत देव द्याल रे ॥ भ०॥ ११॥ अमम निःकषाय जिणंद, जस द्रिशण दीठें आणंदः निष्पुलाक नित्य वंदो रे॥ भ०॥ १२॥ निर्मम चित्रग्रप्त समाधि, संवर यशोधर टाले व्याधिः विजय मह्नदेव शिव साधिरे ॥ भ०॥ १३॥ अनंतवीर्य फल भद्रकृत्सु जिनेश, ए अनागत जिन चोवीशः भविय नमो निशदीशरे॥ भ०॥ १४॥

ढाल—॥ ३ ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित संभव नमोजी, अभिनंदन जिनराय; सुमित अने पद्म प्रभूजी, श्री सुपास वरदाय, भिवकजन वंदो श्री जिनराय, जस नामें नव निधि थाय भ० ॥ १५ ॥ ए आंकणी ॥ चंद्रप्रभ सुविधि विधेंजी, शीतल अने श्रेयांस; वासुपूज्य विमल नमोजी, अनंत धर्म शुभवंश ॥ भ० ॥ १६ ॥ शांति कुंशुं अर संशुण्यो जी, मिल अने सुव्रत; नमी जिनवरनें नित्यनमोजी, नेमिनाथ संयुत ॥ भ०॥ १७ ॥ पार्श्वनाथ त्रेवीशमोजी, वर्द्धमान जिनचंद; के जिननां गुंण गावश्ये जी, तस घर नित्य आणंद् ॥ भ०॥ १८ ॥ वर्त्तमान जिन ए कह्यांजी, विहर-

शांतिना-थना-

॥ २८॥

मांन जिनवीश; सीमंधर स्वामी जयोजी, वंदो युगंधर इश ॥ भ० ॥ १९ ॥ बाहु सुबाहु जांणीएजी, सुजात शब्यंप्रभ नाम; ऋषभानन स्वामी नमोजी, अनंतवीर्य शुभ कांम ॥ भ० ॥ २० ॥ सूरप्रभ सुरतरु समोजी, विशाल वज्रधर सेव; चंद्रतणी परि उजलोजी, श्रीचंद्रानन देव ॥ भ० ॥ २१ ॥ चंद्रबाहु भुजंग नमोजी, इश्वर नेमीप्रभ नामि; वीरसेन महाभद्र जयोजी, देवजस अनंतवीर्य स्वामि ॥ भ० ॥ २२ ॥ विहरमांन जिन वंदतांजी, पातिक जाए सिव दूरें; मन मांनी वली संपदाजी, पामीजें भरपूर रे ॥ भ० ॥२३॥ पांच भरत पांच एरवतेंजी, महाविदेह विचार; उत्कृष्टे काले नमुंजी, सित्तरि सो जिनसार ॥ भ० ॥ २४ ॥

हाल—॥४॥ ऋषभनो वंश रयणायरुं॥ ए देशी॥ ऋषभसेन चंद्राननो, वारिषेण वर्द्धमांनरे; ए चिहुं-भू नामे शाश्वता, भविअणधरो ध्यांन रे ॥२५॥ शाश्वता जिनवर गाइयें, ॥ ए आंकणी॥ गातां आनंद थायरे; दे नामे नवनिधि संपजे, दरिसण पाप पलायरे;॥ शा०॥ २६॥ नंदीश्वर द्वीपादिकें, तिर्यगुलोक विशालरे;

पंच क० स्तवन

11 26 1

बावन चैत्ये बिंबछे, चोसठिसय अडयाल रे; ॥ शा० ॥२७॥ मनोहर कुंडल द्वीपमां, प्रासाद च्यार नि-हालोरे; च्यारसें छत्नु विंबनें, वंदु हुं नित्य भावें रे; ॥ शा० ॥२८॥ रुचक द्वीप जाणिएं, प्रासाद च्यार प्रासाद सोळते कहिएं रे; ओगणीस सय विस आगळे, पूजीनें सुख ळहीएं रे०, ॥ शा० ॥ ३० ॥ मेंरु- 🖔 वनें अंसी देहरा, छन्नं सय बिंब वंदोरें; चूलिकाएं पंच जिन घरे, छसें विंब सुख कंदो रे; ॥शा०॥३१॥ गयदंते वीश देहरां, चोवीश सय जिनवंदों रे, दशचैत्य देव उत्तर कुरुएं, बारसें जिन चंदोरे; ॥ शा० ॥ ३२ ॥ इषुकारें च्यार जिनघरे, प्रतिमा च्यारसें अंसी रे; च्यार चैत्य मानुषोत्तरे, बिंब चारसें अंसी रे; ॥ शा० ॥ ३३ ॥ वक्षारा गिरिए जाणीएं, अंसी जिन प्रासाद रे; छन्नु संय विंब वंदीएं, सम-स्वां आपें सार रे॰, ॥ शा॰ ॥ ३४ ॥ त्रीश प्रासाद कुलगिरिवरे, बिंबछसय त्रिण सहस रे; प्रासाद चाळीश दिग्गजे, बिंब आठसें चार सहस रे; ॥ शा० ॥ ३५ ॥ दीर्घ वैताढ्ये देहरां, एकसो सित्तेर मांण रे; च्यारसें वीश सहस वली, वंदो भविअण जांण रे; शा०॥॥ ३६॥ जंबु वृक्ष प्रमुखें दशे,

शांतिना थनाः इग्यारसें सिंत्तरि जांण; रे; एक लाख चालीश सहस विंब, च्यारसें इम मन आण रे; ॥ शा० ॥३०॥ कांचनिगरि जिनवर कह्यां, सहस एक प्रासाद रे; एक लाख वीस सहस उपरें, वंदिलहें सुप्रसाद रे; ॥शा० ॥ ३८ ॥ सित्तरि देहरां महानदी, बिंब सय चोराशी रे; हृदे अंसी छे देहरां, छन्नुसें बिंब राशी रे; ॥ शा० ॥ ३९ ॥ कुंडे त्रणसे एंसी वली, प्रासाद वीशाल रे; पणयाल सहस उपरिं, छसें बिंब विशाल रे०,॥शा० ॥ ४० ॥ वृत्त वैताल्यें वीशछें, प्रासाद इयुं श्रृंग रे; चोवीससें जिन वंदतां, लहीएं सुख संग रे; ॥शा० ॥ ४१ ॥ वीश प्रासाद यमक गिरि, चोवीससें जिन वंदो रे; ध्यांन धरी मनमां सदा, भवभय दूरित निकंदो रे; ॥ शा० ॥ ४२ ॥ बत्रीस सय उग्रण सट्टीवली, प्रासाद तिर्यग् लोकेरे; त्रण लाख सहस एकाणुंअ, त्रणसय वीशछे थोके रें; ॥ शा० ॥ ४३ ॥

ढाल—॥ ५ ॥ भरत क्षेत्र मोझार रे ॥ ए देशी ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहि, असंख्यात जिनघर; जिनपडिमां तिम जाणीएं ए ॥ ४४ ॥ हवें पातालह लोक, असुर कुमारमां; चोसठि लाख जिन देहरां ए ॥ ४५ ॥ जिनवर एकसो कोडी, पन्नर कोडी उपरें; एकवीश लाख तिम वंदीएं ए ॥ ४६ ॥

पंच क० स्तवन

॥ २९॥

नाग कुमारे जांण, लाख चोरासीअ०, देहरां अतिहिंदीपताएं;॥ ४७ ॥ प्रतिमां एकसो कोडी, तिम एकावन्न; वीश लाख उपरिं कहीएं ए ॥ ४८ ॥ वहोंत्तेर लाख प्रासाद, सुवर्ण कुमारमां; एकसो कोडि जिन वंदीएं ए ॥ ४९ ॥ ओगणत्रीश वली कोडि, साठि लाख उपरें; भावधरी नित्य वंदीएं ए ॥ ५० ॥ विद्युत अग्निकुमार, द्वीपकुमार तिम; उद्धि कुमार वखाणीएं ए ॥ ५१ ॥ दिग्नुकुमार वळी सार, स्तनित कुमारमां; ए छ स्थांनक जिन कहेंए ॥ ५२ ॥ बहोत्तेर बहोत्तेर ळाख, एक एक स्थानकें; जिन देहरां नित्य वंदीएं ए ॥ ५३ ॥ एकसो कोडि सार, छत्रीस कोडि उपरिं; एंसी लाख; जिन वंदीएं ए ॥ ५४ ॥ छन्नुं लाख प्रासाद, वायु कुमारमां; एकसो कोडि वखाणिएं ए ॥ ५५ ॥ उपरिं बहोंतेर कोडि, अंसी लाख तिम; जिन पडिमा नित्य वंदीएं ए ॥ ५६ ॥ सात कोडि बहोंतेर लाख, सुवनपतिमां; जिन देहरां जिनजी कह्यां ए ॥५७॥ तेरसें नव्यासी कोडी, साठि लाख उपिरं माणिक जिन नित्य वंदीएं ए ॥ ५८ ॥ डाल—॥ ६॥ देश मनोहर मालवो ॥ ए देशी ॥ उर्द्ध लोक सुधर्म सुंणो, देहरां बत्रीश लाख शांतिना थनाः

॥ ३० ॥

🥍 ललना; बिंब सत्तावन कोडीतीहां, साठि लाख उपरिं भाख० ललनां ॥ ५९ ॥ उर्द्धलोकें जिनवर् भण्यां ॥ ए आंकणी ॥ इशान देव लोके देहरां, अठावीश लाख विशाल-ललनाः अंचाश-लाख कीडि चालीश, जिन वंदुं नित्य भाल–छलना० उर्द्ध०॥ ६०॥ सनत्कुमार बार लाख कह्यां, देहरां अति उत्तंग—ळळना; एकवीश कोडि साठि ळाखवळी, बिंब नमुं मन रंग—ळळना० उर्द्ध० ॥६१॥ चोथे आठ लाख देहरां, प्रतिमा चउद कोडि जांण-ललना०; लाख च्यालीशज उपरिं, वंदीजे सुविहाण-कलना० ॥ उर्द्ध० ॥६२॥ ब्रह्म देवलोक पांचमें, देहरांते चार लाख०-ललना; सात कोडि वीश लाख नमो, श्रीजिन-वरनी भाख छलना० उर्द्ध० ॥६३॥ छठें सुरलोके सुंणो, देहरां सहस पंचाश–छलना० नेवुं लाख जिन-वंदीएं, आंणिमन उह्यास–ललना० उर्द्ध०॥६४॥ शुक्र देवलोक सातमें, देहरां सहस चालीश–ललना०; बहोंतेर लाख बिंब तिहां कह्यां, वंदीजें निशदिश—ललना० उर्द्ध० ॥ ६५ ॥ सहस्रार आठमे सांभलो, देहरां छ हजार–ललना; द्श लाख अंसी सहसवली, वंदो भाव अपार–ललना० ॥ उर्छ ॥६६॥ नवमें 🎉 दशमें देवलोकें, च्यारसें देहरां जांण-ललना; बहोत्तेर सहस प्रतिमां तिहां, प्रणमो नित्य सुविहाण-

पंच क० स्तवन.

11 30 1

**ळळना०; उर्द्ध० ॥६७॥ आरण अच्युत त्रणसें, देहरां** श्री जिनराय−ळळना० चोपन सहस जिनेसरुं, वंदे सुरपति राय-ललना० उर्द्ध० ॥६८॥ यैवेयकें पहिलें त्रिके, देहरां एकसो इग्यार-ललना; तेर सहस त्रणसें वली,वीश अधिक जुहार—ललना० उर्द्ध० ॥६९॥ मध्यम ग्रैवेयकें त्रिकें,देहरां एकसो सात—ललना०; बार सहस बिंब अडसय च्यालीश,वंदो जिन सुप्रभात–ललना० उर्द्ध० ॥७०॥ उपला प्रैवेयक त्रिकें, देह-्रांसो सुखकार–**ळळना० बार सहस विंब तिहां कह्यां,दीठें** शिवसुख सार–ळळळा०उर्द्ध०॥७९॥पंच विमान अञ्चत्तरें,देहरां पंच प्रधांन—ललना०; छसें बिंब तिहां भलां,भविय धरो नित्य ध्यांन—ललना० उर्द्ध०॥७२॥ उर्द्ध लोक देवल सवे,लाख चौराशी वखांण-ललना०; सहस सत्ताणुं उपरें,त्रेवीश अधिक वली जांण-ललना॰ उर्द्ध॰॥७३॥ एकसो कोंडी बावन्न कोडी, चोराणुं लाख सहस चुम्माल-ललना॰; सातसें साठि अधिक सही, भविय नमो नित्य भाल-ललना० उर्द्ध०॥ ७४॥ इम त्रिभुवन मांहि सवे, आठकोडि सत्तावन्न लांब-ललना०ः बसें अंसी आगल्यां, देहरां श्री जिन साख-ललना उर्द्ध०॥७५॥पनरसें कोडि

## शांतिना-थना.

॥ ३१ ॥

बिंब नमो, बेंतालीश कोडी वलि जांण-ललना॰; अडावन्न लाख सहस छत्रीश, अंसी अधिक जिनवांणि— ललना॰ उर्छे॰ ॥ ७६ ॥

ढाल--॥७॥ भरत तृप भावर्युं ए॥ तथा आवो जमाइ प्राहुणा ॥ए देशी ॥ मनुष्य क्षेत्र जिन जाणिएं मालंतडी, शत्रुंजय गिरनार, सुण सुंदरी; सम्मेत शिखर अष्टापदें ए-मा०, अर्बुद देव जुहार-सुण सुंद्री॥७७॥ श्रीशंखेश्वर पास जी ए-मा०, जीरावलो जगजांण-सु०; अंतरीक्ष अवनी तले ए-मा०. थंभण पास वखाण–सु०॥७८॥ कलिकुंड कूकडे सरेए–मा०, श्रीकर हाटक देव–सु०; मक्षी मालव जांणी-एंए-मा० सुरनर सारे सेव-सु०॥७९॥राणकपुर रिलआमणो ए-मा०,जिहांछे धरण विहार-सु०; बंभण-वाड प्रमुख भलांए-मा०, भविजननें हितकार-सु०॥ ८० ॥गोडी मंडण जागतोए-मा०, वंदो मुहरी पास-सु॰; श्रीअजावरो अमीझरोए-मा॰, चिंतामणि लिल विलास-सु॰ ॥८१॥ इम त्रिभुवनमां तीरथ भलांए-मा०,असंख्यात अनंत-सु०;तिहां जिन पंडिमा वंदीएं ए-मा०,जांणी लाभ अनंत-सु० ॥८२॥ संवत सत्तर चउदोत्तरे-मा०, कार्तीक श्रुदि ग्रुरुवार-सु०; दशमी दिनमें गाइया ए-मा०, समीनयर

गंच क० स्तत्रनः

11 38 11

मोझार—सु० ॥ ८३ ॥ पढे गणेजे सांभले ए—मा०, तसघर नवनिधि थाय—सु०; ऋद्धि वृद्धि सुख संप दाए—मा०, पामे पुण्य पसाय—सु० ॥ ८४ ॥ कलश—इम शासय जिनवर सयल सुखकर संथुण्यों है त्रिभुवन धणि, भवमोह वारण सुखकारण वंखित पूरण सुरमणी; तपगच्छ नायक सुखदायक विजय प्रभ सूरि दिनमणी, कवि देव विमल विनय माणिक विमल सुख संपत् घणी ॥ ८५ ॥ "इति श्रीशाश्वत जिनवर स्तवनं संपूर्णम्"

"अथ श्री निगोद स्तवनम्"

ढाल-पहेली ॥ क्रीडा करी घेर आवीयो ॥ ए देशी ॥ वर्छमांन जिन विनवुं, साहिब साहि स धीरो जी; तुम दर्शण विण हुं भम्यो, चिहुं गतिमां वड वीरो जी ॥ १ ॥ प्रभुं नरक तणां क्र दुःख दोहिला ॥ ए आंकणी ॥ में सद्या काल अनंतो जी; शोर कियां नवि कोइ सुंणें, एकविना भगवंतो जी-प्रभुं० ॥ २ ॥ पाप करीनें प्राणीओ, पोहत्यां नरक मोझारो जी; कठिन कुभाषा सांभली, नयनाश्रवण दुःखकारो जी-प्र० ॥ ३ ॥ शीतल योनीय उपजें, रहवें तपतें ठामो जी; जानुं शांतिना-थना-

॥ ३२ ॥

प्रमांण रूधिरनां, किच कह्यां बहु तामा जी-प्र० ॥४॥ तव मन मांहें चिंतवें, जाइयें किणहि दिशें नासो जी; परवश पिंडयो प्राणियो, करतो कोडि विषासो जी-प्र० ॥५॥ चंद्र न तिहां सूरिज नहीं, घोर घंपट अंधारो जी, स्थानक अति असुहांमणां, फरस जिहां जिस्यो पूर धारो जी-प्र०॥ ६॥... नवो नगरमां उपजें, जाणें असुर ते वारो जी; कोप करी आवे तिहां, हाथ धरी हथिआरो जी ॥प्र०॥७॥ करिय कतरनी देहनां, करतां खंडोखंड जी; रीव अतीव करे बहुं, पामें दुःख प्रचंडो जी-प्र०॥ ८॥ ढाल-बीजी-वैरागी थयो-ए देशी॥ भांजे काया भांजतो रे, मारें फिचा मांहि; उंधे माथें अग्नीएं दहेंए; उंचा बांधे पायो रे; जिनजी सांभलोजी, कडुआ कर्म विपाको रे; जि ॥१॥ ए आंकणी ॥ एवैतरणी 🕻 तटणी तणां, जलमें नांखे पास; करियें कुहाडें तरु पररें, छेदें अधिक उल्लासो रे; जि०॥२॥ उंचा जोयण पांचरों रें, उछालें आकारों रें; श्वानरूप करडें तिहां रें, मृगजिम पाडें पास रें; जि॰ ॥ ३ ॥ पन्नरें भेंदे सुर मिली रें, करवत दीयेंरे कपाल रें; आरोपें शूली द्यारिरें, भांजें जिमतरु डालों रें; जि॰ ॥४॥ वें बोलें ताता तेलमां, तिल करि काढें ताम; वली भोंभरमां खेपवें रें, विरुआ तास विरामोरे; जि॰

पंच क० स्तवन•

11 32 11

11 42 11

॥ ५ ॥ छाल उतारे तेहनी रें, आमीष दियें आहार रे; बहु अरडाटां पाडतां रे, तन विच घाले क्षारोरे: जि॰ ॥ ६ ॥

ढाल-त्रीजी-राग मारुं-मृत कारीज करी रायनांरे ॥ ए देशी ॥ तापें करी ते भूमीकारे, वनसु सितल जांण; आवी बेरों तरूवर छांहिडेरें, पडतां भांजेप्राण ॥१॥ चतुर मत राच ज्योरे, ॥ ए आंकणी ॥ विरुआ विषय विलास; सुख थोडां दुःख बहुला जेहथी रे, लहीएं नरक निवास—च०॥ २॥ कुंभी मांहें पाक करें तस देहनो रे, तिल जिम घांणी मांहिं; पिली पिलीनें रस काढें तेहनां रे, महिर न आवें तास-च०॥३॥ नाठां जायें त्रीजी नर्कमां रे, मन धरतां भय श्रांत; पछिं परमांधामी सुर मिलें रे. जेहवां काल कृतांत–च० ॥ ४ ॥ दांतां विचे देह दश आंग्रलांजी, फिरी फिरी लागें पाय; वेदना सहतां काल गयो घणोजी, हवें सही न जायजी–च० ॥५॥ जिहां जायें तिहां उठें मारवा रे, 🎼 कोइ न पूछें सार; दुःखभिर रोवें शोर करें घणो रे, निपट महा निरधार-च०॥६॥ ढाल चोथी—हांरे जीव जीन धर्म किजीएं रे, ॥ऐ देंशी॥ एहनें रे परमाधामी सुर कहें, सांभल तुं भाइ,

शांतिना-थनाः ॥ ३३॥ ॥ ३३॥ अभक्ष्य अथाणां आचर्यां, पातिकनो नहीं पार; पर०॥ ४॥ मात पिता ग्रुरु ओलञ्यां, किथां कोध अपार; मांन माया लोभ मन धर्यां, मतीहिन ग्रमांर; पर०॥ ४॥

ढाल-पांचमी-श्रावण शुद दिन पंचमीए ॥ ए देशी ॥ एम कही सरवे वेदनाए, वलीय उदीरें तेहितो; शिला कंटाला वज्रतणांष, तिहां पछाडे साहितो ॥ १ ॥ तित्ररसें तातो तरूप, मुखमांहे नामें तामतो; अग्नी वर्णे करे पूतलीए, आिंगन दे जांमतो ॥ २ ॥ सयल वदन कीडा भरेए, जीभ करें संत खंडतो; ए फल निश्चि भोजन तणांए, जाणें पाप अखंड तो ॥ ३ ॥ उनो अति आंकरोए, हैं।। ३३ ॥ आणें ए तातो नीरतो; ते घाले तस आंखमांए, कानें भरें कथीरतो ॥ ४ ॥ काल अधीक बिहामणां हैं।। ३३ ॥ ए, ढूंडक जे संठाण तो; दिसे दिन द्यामणाए, वली निरश्वास प्रांणतो ॥ ५ ॥

ढाल—छट्टी—सुणो प्राणीरे सामायक ब्रतसार ॥ ए देशी ॥ इणिपरें बहु वेदन सही, चिंत्त चेत्तो रे, वसतां नरक मोझार—चि० ज्ञानीविन जांणे न कोइ—चि०, कहेतां नावे पार—चि० ॥ १ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो, चि०, लाध्यो नरभव सार—चि०; पाम्यों एलें म हारिज्यो—चि०; करज्यों एह विचार—चि०॥२॥ शुद्धो संयम आदरो—चि०, टालो विषय विकार—चि०; पांचे इंद्रीय वश करो—चि०, जिम होवें लुटक बार—चि० ॥३॥ निंद्रा विकथा परिहरो— चि०, आराधो श्री जिनधर्म—चि०; समकित रल हृद्यें धरो—चि०, भांजो मिथ्या श्रम—चि० ॥ ४ ॥ वीर जिणंद पसाउलें—चि०, अहिपुर नगर मोंझार—चि०; स्तवन रच्यो रलीयामणो—चि०, परम कृपाल उदार—चि० ॥ ५ ॥

" इति श्रीनिगोद स्तवनं संपूर्णम् "

" अथ श्री त्रिभुवन स्तवनम्"

दुहा—परम पुरुष परमातमा, प्रणमुं पास जिणंद; केवल कमछा वछहो, चिदानंद सुखकंद

शांतिना थनाः

॥ ३४॥

स्वर्ग मर्त्य पातालमां, शाश्वत जिनवर गेह; शाश्वत जिन संख्या कहुं, सुंणजो ते धरीनेह ॥ ३ ॥ ढाल—॥१॥ थारां मोहलां उपिरं मेह झरुखें वीजली हो ॥ ए देशी ॥ आठमें द्वीप नंदीश्वर बावन देहरां होलाल॰बावन देहरां होलाल,चोसठसें अडतालीस जिन विंब सुखकरां होलाल॰ जिनविंब॰; कुंडल द्वीपें च्यार प्रासाद मनोहरुं होलाल॰ च्यार प्रासाद॰, च्यारसें छन्नुं बिंब जिननां सुखकरुं होलाल॰ किनना॰ ॥१॥ रुचक द्वीपें च्यार जिनघर आखिएं होलाल॰ जिनघर॰, च्यारसें छन्नुं जिनवर मूरित भाखिएं होलाल॰ मूरित॰॥ राजधानीमां सोल जिणहर वंदिए होलाल, जिणहर॰, ओगणीससें जिन बिंबथी पाप नीकंदिएं होलाल० पाप०॥२॥ मेंरुवनें अशीति प्रासाद् जाणीएं होलाल, प्रासाद०, छन्नुंसें जिन विंव किं 🌠 दिलमां आणीएं होलाल० दिलमां०;चूलिका पांच प्रासाद किं जग जन मोहतां होलाल०जगजन०, श्रीजि-नवरनां विंव छसें तिहां सोहतां होलाल० छसें०॥३॥गजदंतें मंदिर वीश किं जिननां जय करुं होलाल० जि-ननां॰, चोविससें जिन बिंब किं दरिशण दुःख हरुं होलाल॰ दरिसण॰; देवकुरू उत्तर कुरूमां जिनहर दस सहि होलाल॰जिनहर॰,जिन मूर्तिसें बार नमुं मन गहगही होलाल॰नमु०।४।इश्लुकारें च्यार प्रासाद अनो!

पंच क० स्तवन

11 38 11

मप सिरिंधरा होलाल० अनोपम०, च्यारसें ऐंसी जिन बिंब नमें तिहां सुरवरा होलाल० नमें०; मानुषोत्तर पर्वत च्यार प्रासाद पडवडां होलाल० प्रासाद०, जिनवर बिंबसें च्यार ऐंसीति अतिवडां होलाल० ऐंसीति०॥ ५॥ वक्षारें एंसी प्रासाद छन्नुसें जिनपति होलाल० छन्नुसें, कुलगिरि त्रीश प्रासाद 💃 छत्रीशसें मूरति होलाल० छत्रीससें० दिग्गजें दश प्रासाद अडतालीससें जिननां होलाल० अडतालीस०, वृत्त वैताढ्यं विसघर चोवीससें जिनां होलाल० चोवीससें ॥६॥ दीर्घ वैताढ्यें जिनघर एकसो सित्तरी होलाल० एकसो०, नमुं बिंब वीश सहस च्यारसें दिल धरी होलाल० च्यारसें०; जंबु प्रमुख द्रश वृक्ष उपिरं जिनघरां होलाल० उपिरं०, सहस एकशत एक सित्तरि सुखकरां होलाल० सित्तरि० ॥ ७ ॥ तिहां एक लाख च्यालीश सहस च्यारसें होलाल० सहस०, थुणतां ते जिनराय किं चित्तडुं उछसें होलाल॰ चित्तडुं॰; ॥ सहस एक प्रासाद्किं कांचनगिरिअ छें होलाल॰ कांचन॰, इक लाख वीस सहस जिनथी दुःख गच्छें होलाल० जिनथी०॥ ८॥ महानदी सित्तेर प्रासाद चोरासीसें जिनवरुं होलाल॰ चोरासीसें॰,द्रहें प्रासाद असीति छहुंसें तिर्थंकरुं होलाल॰ छन्नुसें॰; त्रणसे एंसी प्रासादकें कुंडें छे

शांतिना थनाः

ग ३५ ॥

सदा होलाल कुंडेंछे , पिस्तालीश सहस छसें जिन संपदा हो । छसें ।। ९॥ यमक गिरिएं वीश प्रासाद छें शाश्वता होलाल प्रासाद , चोवीसमें जिन बिंब अनोपम छाजतां होलाल अनोपम ; इणिपरें सकल संख्याए तिर्यगू लोकमां होलाल तिर्यग् छत्रीसमें ओगणसि प्रासाद अनुपमा होलाल प्रासाद ॥ १०॥ तिहां त्रिण लाख एकाणुं सहस त्रणमें होलाल सहस उपिं वीश जिनेश्वर बिंब ते दिल वमें होलाल बिंब ; तिमवली व्यंतर ज्योतिषी द्वीप समुद्रमां होलाल द्वीप असंख्यातां जिन बींबथी भवमां निव भमें होलाल भवमां ॥ ११ ॥

ढाल—॥ २ ॥ इंडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ हवें पाताल लोकमां रे, असुर कुमार भवणिंद; तिहां प्रासाद छें शाश्वतां रे; चोसठ लाख सुखकंद—चतुरनर वंदो ते जिनराय ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकसो कोडि उपरें रे, पन्नर कोडि विश लाख; सासय जिण पडिमा भणी रे, आगमनी छें साख— च० ॥ २ ॥ नाग कुंमार निकायमां रे, जिन घर चोराशी लाख; एकसो कोडि एकावन्न रे, कोडी बिंब वीश लाख—च० ॥ ३ ॥ सुवर्ण कुंमार मांहिं वलीरे, प्रासाद बहोंतेर लाख; जिन बिंब कोडी पंच क० स्तवनः

n 34 n

एकसो रे, ओगण त्रीश साठ लाख-च० ॥१॥ विद्युत् कुमार माहिं वली रे, अग्नी द्वीप कुमार; उर्देधि दिशिं कुमारमां रे, स्तिनिंत कुमार मोझार-च० ॥ ५ ॥ प्रासाद एह छ माहिछें रे, बहोंतेर बहोंतेर लाख; इहां एके स्थानकें रें, जिन बींबनी सुंणो भाख-च० ॥ ६ ॥ एकसो कोडि छत्रीश कोडी रे, एंसी लाख आह्वाद; ॥ वायु कुमार माहि वलि रे, छन्नु लाख प्रासाद-च० ॥ ७ ॥ जिन बींब एकसो कोडि तिहां रे, बहोंतेर कोड एंसी लाख; पाताल माहि इणि परें रे, सूत्र तिण छें साखि-च०॥ ८ ॥ भवन पितमां देहरां रे, बहोतेर लाख सात कोडि; जिन बिंब तेर कोडिसें रे, साठि लाख नव्यासी कोडि-च०॥ ९ ॥

ढाल—॥ ३ ॥ निंदरडी वेरण हुइरही ॥ ए देशी ॥ प्रासाद उर्द्ध लोकमां, पहेलें स्वगें हो लाख क्रि बत्रीश कें;सत्तावन कोडि मूरति,साठ लाख हो कहें जगदीशकें-प्रा०॥१॥ए आंकणी–बीजें इशान देवलोकें, अठावीश हो लाख प्रासादकें; पंचाश कोडी जिन मूरति, लाख च्यालीश हो सोहें घंटा नादकें-प्रा० ॥ २ ॥ त्रीजें सनत् कुमारमां, सुप्रासाद हो तिहां लाख बारकें; साठि लाख इकवीश कोडी, जिन शांतिना-थना-

॥ ३६ ॥

बिंब हो जपतां जयकारकें-प्राणा ३॥ चोथें माहेंद्र देवलोकें, आठ लाख हो प्रासाद जगदीशकें; लाख च्यालीश मूरती, कोडी चउद हो निमंए निशिदशकें-प्राण्णा ४॥ पांचमें ब्रह्म देवलोकें, च्यार लाख हो प्रासाद छें सारकें; तिहां सात कोडि सोहतां, वीश लाख हो जिन बिंब उदारकें-प्राण्णा सहस पंचाश प्रासाद छें, छठें स्वर्गें हो लांतक मोझारकें; तिहां नेवुं लाख निर्मलां, जिन बिंब हो आपें भव पारकें–प्रा०॥ ६॥ सातमें शुक्र देवलोकें, सहस च्यालीश हो प्रासाद विशालकें; बहोंतेर लाख जिंन विंब छें, पूजी प्रणमी हो थाय देव खुसालकें-प्रा०॥ ७॥ आठमें सहस्रार देवलोकें, जिन मंदिर हो छ सहस प्रमाणकें०, दश लाख ऐंसी सहस, जिन मंदिर हो तिहां गुण खांणकें-प्रा० ॥ ८ ॥ नवमें आनत देवलोकें, बसें देहरां हो बिंब छत्रीश हजार कें; दशमें प्राणत देवलोकें, पहज पाठ हो जाणो निरधारकें–प्रा०॥ ९॥ आरण इग्यारमें देवलोकें, अच्युत स्वर्गें हो जांणो अविशे-षकें; दोढसो दोढसो प्रासाद, जिन विंबहो सत्तावीश सहसकें-प्रा०॥ १०॥ हेठलें त्रण प्रैवेयकें, शत एकहो प्रासाद इग्यारकें; तेर सहसनें त्रणसें, वीश बिंब हो जिननां मनोहारकें-प्रा०

पंच क० स्तवन

11 38 11

॥ ११ ॥ मांहिलें त्रण प्रैवेयकें, शत एक हो सात जिननां गेहकें; बार सहसनें आठसें, जिन बिंब हो च्यालीश अषेसकें-प्रा॰॥ १२ ॥ उपलें त्रण भैवेयकें, शत एक हो प्रासाद अछेह कें; बार सहस जिन विंबनां, पाय प्रणमुं हो मन आणि नेहकें-प्रा०॥ १३॥ पोढा पांच प्रासाद छें,पंचानुत्तर हो विमान मोझार कें; छसें जिन बिंब तिहां भलां, एह सर्व हो रयणामय सारकें–प्रा० ॥ १४ ॥ एवं उर्द्ध लो-कमां, चउराशी हो लाख प्रासादकें; सत्ताणुं सहस त्रेवीश छें; अति उंचा हो मांडि गयणसुं वादकें-प्रा० ॥ १५॥ एकसो कोडी बावन्न कोडि, चोराणुं हो विल लाख होय कें; सहस चुम्मालीश सातसें जिन विंव हो शाठि शाश्वतां जोयकें-प्रा० ॥१६॥ त्रिभुवनमां हवें सांभलो, आठ कोडि हो सत्तावन्न लाखकें; बसें चोराशी प्रासाद छे, तेह शाश्वता हो इम आगम भाखकें–प्रा० ॥ १७ ॥ जिन बिंब पन्नरसें कोडि, बेंतालीश हो कोडि मनोहारकें; अडावन्न लाख उपिरं, छत्रीश हो सहस एंसी सारकें प्रा० ॥ १८ ॥ चउ कुंडल चउ ऋचकमां, नंदिश्वरमां हो भुवन बावन्नकें; एसाठि भांख्यां चउ बारां, त्रण द्वारां हो सहस जिन भुवनकें-प्रा० ॥ १९ ॥ उत्सें धांगुल मानथी, अधो उर्द्ध हो

शांतिना-थना.

.

सात हाथ मानकें; तिर्यग्रमां नित्य बिंबनुं, पांचरो धणुंसें हो परिमाण प्रधांनकें-प्रा०॥ २०॥ ढाल—॥ ४॥ कुंमति कांप्रतिमा उत्थापी॥ ए देशी॥ अतित अनागत वर्त्तमांन, चउित्री जिनजेह;विहरमान जिन वीश संप्रति, प्रय उठी प्रणमुं तेहरे-॥ प्राणी ते वंदो जिनराय, जिम सुख संपत्ति थाय रे-प्रा०॥१॥ ए आंकणी॥ सुर नर रिचयां तीरथ बहुलां, शत्रुंजय गिरनार; अष्टापद अर्बुद् गिरि मांहि, समेत शीखरे सार रे-प्रा०॥ २॥ नागद्रह जीराओलि पास, कर हैडें मांगरोल; घृत कल्लोलें दीव घोघें, किळकुंड पंचासरे ठोर रे–प्रा० ॥ ३ ॥ संखेश्वरोने थंभण पास, सेंरीसो वरकांणो; सेस तीफल वृद्धि गोडी पास, पाल्हण विहार जांणो रे–प्रा० ॥ ४ ॥ अंतरीक अंजारो पास, लोढण 🖔 कछारो दादो; विजय चिंतामणी सोम चिंतामणी, भजीएं तजी उन्माद रे-प्रा०॥ ५॥ उंबरवाडी किश्वारा दादा; विजय वितासिया तास वितासिया, स्वया उत्ता उत्ता उत्ता उत्ता उत्ता उत्ता विवास केश्वारा विद्या विद्या

पंच क० स्तवनः

1130 11

फेरा रे–प्रा० ॥ ८ ॥ तीर्थ मालाए सुरत माहिं, भाखी श्रुत आधार; सत्तरसें पंच्योत्तेर वरसें, दी-वाली दीवसें सार रें–प्रा० ॥ ९ ॥ तप गच्छ नायक वंछित दायक, श्री विजय ऋद्धि सूरी राजेंः, भाव धरीने भणिआं जिनवर, संघ सकल सुख काजें रें–प्रा० ॥ १० ॥

कलश—इय निमय नरवर निखिल सुरवर किन्नर विज्ञा हरा, मइ भित्त जुत्ति ज हसतें थुण्यां क्षिति जिल्ला हरा, मह भित्त जुित्त ज हसतें थुण्यां क्षित्र जिल्ला हिंस विजय बुध सद्गुरु, श्रीश धीर विजयें सदा सुजयें भिवअण पंकज दिनकरुं ॥ ११ ॥

इति श्रीशाश्वत जिन तीर्थमाला संपूर्णः

"अथ श्री महावीर स्वामिनां पंश्व कल्याणकनुं स्तवनम्"

दुहा—शासन नायक शिवकरण, वंदु वीर जिणंद; पंच कल्याणक जेहनां, गाशुं धरी आणंद ॥१॥ हु सुणतां थूणतां प्रभुतणां, गुण गिरुआ एकतार;ऋद्धि सिद्धी सुख संपजे, सफल हुए अवतार ॥२॥ ढाल—॥ १॥ बापलीए जीभडली, तुंकां निवें बोले मीटुं॥ ए देशी ॥सांभलजो सस्नेही सयणां, शांतिना थना ॥ ३८॥

प्रभुनुं चरीत्र उहासे; जे सांभलशे प्रभु गुण तेहनुं, समकीत निर्मल थाशे रे—सां०॥३॥ ए आंकणी किं जंबूद्वीपे दक्षिण भरतें, माहण कुंड यामें; ऋषभदत्त ब्राह्मण तस नारी, देवानंदा नाम रे—सां०॥४॥ आशाढ शुदी छट्टें प्रभुजी, पुष्फोत्तरथी चवीयां; उत्तरा फाल्युनी योगें आव्यो, तस कुले अवतरी-यारे-सां०॥५॥ तेणी रयणी सादेवानंदा, सुपन गजादिक निरखें रे; प्रभातें सुंणी कंत ऋषभदत्त, हीयडा मांहें हरखे रे–सां०॥६॥ भाखे भोग अर्थ सुख होशें, होश्ये पुत्र सुजांण; ते निसुंणी सा देवानंदा, किधुं वचन प्रमांण रे–सां०॥ ७॥ भोग भलां भोगवतां वीचरे, एहवे अचरीज होवें शतकृत जीव सुरेसर हरख्यों, अवधिएं प्रभुने जोवें रे–सां०॥८॥ करी वंदनने इंदो सन्मुख, सात आठ पग आवें; शक्रस्तव विधि सहीत भणीनें, सींहासण सोहावेरे–सां० ॥ ९ ॥ संशय प डीयो एम विमासें, जिन चक्री हरी रांम; तुच्छ दलीद्र मांहण कुल नांवे, उम्र भोगवीण धांम सां०॥ १०॥ अंतीम जिन माहण कुल आव्यां, एह अछेरं कहीएंः उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अनंती, जातें एहवुं लहीये रे–सां०॥ ११॥ इणी अवसर्पिणी दश अछेरां, थयां ते कहीए एह; गर्भ हरण

पंच क० स्तवन•

11 30 11

गौशालो उपसर्ग, निष्फल देशनां जेहरे-सां०॥ १२॥ मुल वीमाने रवी शशी आव्यां, चमरांनो उत्पातः, ए श्रीवीर जिणेश्वर वारें, उपन्यां पांच वीख्यात रे-सां०॥१३॥ स्त्री तीरथ मछी जिन वारे, शीतलने हरी वंशः ऋषभ ने अठोत्तर सो सिद्धा, सुविधी असंजति सेसरें-सां०॥१४॥ संख शब्दें मी-लिया हरी हरिश्युं, नेमी सरने वारेंः तिमप्रभु निच कुलें अवतरियां, सुरपति एम विचारें रे-सां०॥१५॥

ढाल—॥ २॥ नदी यमुनाकें तीर उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥ भव सत्तावीस थुल मांहि त्रीजें भवें, मरीची कीयो कुल मद भरत यदा स्तवें; निच गोत्र कर्म बांधीउं तिहां तेवती, अवत-रीया माहण कुल अंतिमां जिनपति ॥ १ ॥ अति अघटतुं एह थयुं थाशे नहीं, जे प्रसवे जिन चकी नीच कुले नहीं; एह अमारो आचार धरुं उत्तम कुलें, हरिणगमेषी देव तेडाव्यों तत्क्षणें ॥ २ ॥ कहे माहणकुंड नयर जइ उचीत करों, देवानंदा नी कुखेंथी प्रभुने संहरो; नयरी क्षत्रीय कुंड राय सिद्धार्थ गेहिनी, त्रीशला नामे धरो प्रभु कुंखे तेहनी ॥ ३ ॥ त्रीशला गर्भ लेइने धरो माहाणी उयरें, ब्यासी रात व्यतीत कहे तेम सुर करें; माहणी देखें सुपन जाणुं त्रीशला हर्यां, त्रीशलां सुपन लहे शांतिना-थना-

॥ ३९ ॥

तिहां चउदे अलंकर्यां ॥ ४ ॥ है।थी व्रेषभ सीहै लक्ष्मी मालां सुंदेरुं, शशी रॅवि ध्वज कुंभे पद्मैं सरोवेरे सागरुं; देववीमाने रयण पूर्ज्ये अग्नी विमर्लं हवे, देखी त्रिशला मातके पीउनें विनवें ॥ ५ ॥ हरखे राय सुपन पाठक तेडावीयां, राजभोग सुत फल सुंणीनें वधावीयां; त्रीशला राणी विधिइयुं गर्भ सुखेंवहें, मायतणे हीत हेतके प्रभु निश्चल रहे ॥ ६ ॥ मायधरे दुःख जोर वीलाप घणां करें, कहें में कीयां पाप अघोर भवांत रें; गर्भ हरयो मुज केणें हवें कीम पामिएं, दुःखनुं कारण जांणी वीचारयुं स्वामी एं ॥ ७ ॥ अहो अहो मोह वीटंबण जांणी जगतमां, अणदीठे दुःख एवडुं उपन्युं पलकमें; ताम अभियह धस्त्रो प्रभुंजी ए ते कहुं, मातपीता जीवंतां संजम नवी यहुं ॥ ८॥ करुणां अणी अंग हलाव्युं जीन पती, बोली त्रीशला मात हीए घणुं हरखंती; अहो मुज जाग्यां भाग्य गर्भ मुज सलसल्यों, सेव्यो श्रीजिन धर्मके सुर तरु जीम फल्यों ॥ ९ ॥ सखी कहे सीखांमण सामण सांभलो, हल्लुए हल्लुएं बोल हसी रंगे चल्यों; अंम वीधीशुं विचरंता दोहलां पुरतां, नव महीनां ने साढा सात दीवस थतां ॥ १० ॥ चैत्र शुदी तेरस नक्षत्र उत्तरां, योगे जन्म्यां वीर के

पंच क० स्तवन.

11 39 11

सहुविकसी धरां; त्रीभुवन थयो रे उद्योत के रंग वधामणां, सोनां रुपानी दृष्टी करे घर सुर घणां ॥ ११ ॥ आवी छप्पन कुमारीका ओच्छव प्रभु तणो, चल्युं रे सिंहासन इंद्रके घंटा रणझणें; मिल सुरनी कोडी के सुरवर आवीयां, पंचरूप करी प्रभुनें सुरगीरी लावीयां ॥ १२ ॥ एककोडि साठ लाख कलश जल शुंभर्यां, किम सहशे लघु वीरके इंद्र संशय धर्यों; प्रभु अंग्रुठे मेरं चांप्यो अति धडधडें, गडगडे पृथ्वी लोक जगतनां लडथले ॥ १३ ॥ अनंत वल प्रभु जांणी इंद्रे खमावीयां, च्यार वृषभनां रूप करी जल नांमीयां०,पूजी अरची प्रभुनें माय पासें धरे,धरयुं अंग्रुठे अमृत गयां नंदी खरें ॥१४॥ हाल—॥ ३ ॥ हमचडी ॥ ए देशी ॥ करी महोत्सव सिद्धारथ नृपें, नाम धर्यं वर्द्धमान; दिन दिन

ढाल—॥ ३ ॥ हमचडी ॥ ए देशी ॥ करी महोत्सव सिद्धारथ नृपें, नाम धर्युं वर्द्धमानः दिन दिन वाधें प्रभु सुरतरु जीम, रूपकला असमांन रे हमचडी ॥ १ ॥ एक दीन प्रभुजी रमवा कारण, पूर बाहीरज आवेंः इंद्र मुखें प्रशंसा सुणीनें, मिथ्यात्वी सुर आवे रे हमचडी ॥ २ ॥ अहीरूप वीटाणो तरुशुं, प्रभुनांखे उछालीः सात ताडनुं रूप कर्युं जब, मुठें नांख्यो वाली रे हमचडी ॥ ३ ॥ पाए लागीने ते सुर खमावें, नाम धर्युं महावीरः जेहवां इंद्रे वखाण्यां स्वामि, तेहवां साहस धीर रे

शांतिना थनाः ॥ ४० ॥ हमचडी ॥ ४ ॥ मात पीता नीशाले मुकें, आठ वर्षणां जांणिः इंद्रतणां तिहां संशय टाल्यां, नवुं क्षेत्रियां व्याकरण वखाणी रे हमचडी ॥ ५ ॥ अनुक्रमें योवन पाम्यां प्रभुजी, वर्या जशोदा रांणीः अठावीशे के वरसें प्रभुनां, मातपीता निर्वाणी रे हमचडी ॥ ६ ॥ दोय वरस भाइनें आग्रहें, प्रभु घरवासें वसीयांः क्षेत्रियां प्रभ पंथ देखाडो इमकहे, लोकांतिक उल्लसीयां रे हमचडी ॥ ७ ॥ एक कोडी आठ लाख सोनैयां, दिनदिन प्रभुजी आपें; इम संवच्छरी दांन देइनें, जगनां दालीद्र कापें रे हमचडी॥ ८॥ छंडयुं राज अंतेउर प्रभुजी, भाइएं अनुमती दीधी; मागशीर शुद दशमी उत्तराए, वीरे दीक्षा लीधी रे हमचडी० ॥ ९ ॥ चउ नांणी तेणें दिनथी प्रभुजी, वरस दीवस झाझें रे; चीवर धरी ब्राह्मणनें दीधुं, खंड खंड वे फेरी रे हमचडी ॥ १० ॥ घोर परीसह साढेबारें, वरसें जे जे सहीयां; घोर अभीयह जे जे धरीयां, ते नवीजायें कहीयांरे हमचडी ॥ ११ ॥ शुल पाणीनें संगम देवा, चंडकोशी गोशालें; दीधां दुःखने पायसराध्युं, पग उपर गोवालें रे हमचडी ॥ १२ ॥ कानें गोपें खीलां मारयां, काढतां पाडी चीस; जे सांभलतां त्रीभुवन कंप्यां, पर्वत शीला फाटि रे हमचडी ॥ १३ ॥ ते ते दुष्ट सह

पंच क० स्तवनः

11 80 11

उद्धरीयां, प्रभुजी पर उपगारी; अडद तणां बाकुलां लेइने, चंदन बाला तारीरें हमचडी ॥ १४॥ दोय छ मासी नव चउमासी, अढीमासी त्रणमासी; दोढमासी वे वे कीधां, छ कीधां वे मासी रे हमचडी ॥ १५ ॥ बारमासीनें पख बहोतेंर, छठ बसें ओगणत्रीश वखाणुं; बार अठम भद्रादीक प्रतिमा, दीन दोय च्यार दश जांणु रे हमचडी ॥ १६ ॥ इमतप कीधां बारे वरसें, वीण पाणी उछासें; तेह मांहें पारणां प्रभुजीए कीथां, त्रणसें ओगण पंचाश रे हमचडी ॥ १७॥ कर्म खपावी वैशाख मासें, शुद दशमी सुहजांण; उत्तरा जोगे शाल वृक्षतलें, पाम्यां केवल ज्ञान रे हमचडी ॥१८॥ 🎤 इंद्रभूती आदें प्रति बोंध्यां, गणधर पदवी दीधी; साधु साध्वी श्रावक श्रावीका, संघस्थापना कीधी 🥻 रे हमचडी ॥ १९ ॥ चउद सहस अणगार साधवी, सहस छत्रीश कहीजे; एक लाखने सहस ओगण साठ, श्रावक शुद्ध लहीजें रे हमचडी ॥ २० ॥ त्रण लाखनें सहस अढार वली, श्रावीका संख्या जांण; त्रणसें चउदस पूरव धारी, तेरसें ओही नांणी रे हमचडी ॥ २१ ॥ सातसें तो केवल नांणी, लब्धी धारी पण तेता; वीपुलमती पांचशें कहीएं, च्यारसे वादी तेता रे हमचडी ॥ २२ ॥ सातसें 🖔

अंतेवासी सीद्धां, साधवी चउदसय सार; दीन दीन तेज सवायुं दीपें, ए प्रभुनो परीवार रे हम-चडी ॥ २३ ॥ त्रीश वरस ग्रहवासें वसीयां, बार वरस छद्मस्थ; त्रीश वरश केवल बेंतालीश, वरस तें खमणावंते रे हमचडी ॥ २४ ॥ वरस बहोत्तेंर केहं आयुं, वीर जिणंदनुं जांणो; दिवाली दिन स्वाती नक्षत्रें, प्रभुजीनुं निर्वाण रे हमचडी ॥ २५ ॥ पांच कल्याणक इम वखाण्यां, प्रभुजीनां उन् ह्यासे; संघतणां आयहे हरख भरि, सुरत रही चोमासुं रे हमचडी ॥ २६ ॥

कलश—इम चरम जीनवर सयल सुखकर थुण्यों अती उल्लट भरी, आषाढ उजल पंचमी दिन संवत सत्तर त्रिहोत्तरें; श्रीवीमल विजय उवझाय पंकज भमर सम सुभ शीशए, रांम वीजय जीन वरनें नामें लही अधीक जगीशए॥ २७॥

" इति श्री महावीर स्वामि पश्च कल्याणक स्तवनम्"

## "अथ श्री चोवीश जिन कल्याणक स्तवनम्"

दुहा ॥ प्रणमी जिन चोवीशने, कहुं कल्यांणक तासः मास अमावास्यां तणी, रिति धरी सुवि-लास ॥ १ ॥ जेहनां नाम स्मरण थकी, नाशें भव भव पापः तिणें कल्याणकनें दिनें, कीजें प्रभुनो जाप ॥ २ ॥ च्यवनें परमेष्ठी नमः, जन्मे अहते नमः ॥ नाथाय नमः दिक्षापदें, ग्रणीएं नीज ग्रंण कांम॥३॥ सर्वज्ञाय नमः केवले, मोक्षे पारंगतायः आंबील पौषधनें वली, एकासणें पण थाय ॥ ४ ॥

ढाल—॥ १ ॥ प्रभु चित्त धरीनें अवधारो मुज वात ॥ ए देशी ॥ आशो शुदि पूनिंम दिनें जी, चवीआ निम जिनराय; विद पांचम दिन केवली जी, संभव जीनवर थाय; भवी भाव धरीनें गावो जिन कल्याण ॥१॥ ए आंकणी॥ बे कल्याणक बारसें जी,नेमिजी च्यवन प्रमांण; पद्म प्रभुजि जनमीयां जी, तेरसें दीक्षा मंडाण; ॥ ०भवीभा० ॥ २ ॥ वीर अमासें शीवगयां जी, हवे कार्त्तिक शुदि जांण; त्रीजें सुविधि केवली जी, बारसें अरजीन नांण; ०भविभा० ॥ ३ ॥ कार्त्तींक वदी पांचम दीनें जी, सुविधी जन्म इंम होय; छहें व्रत सुविधी लीएं जी, दशमें वीर व्रत जोय; ०भविभा० ॥ ४ ॥अग्यारश दिन

शांतिना थना-

शिवलह्यां जी, जीन उत्तम महाराज; पद्म प्रभुनें प्रणमंतां जी, लहीएं अवीचल राज; भवीभा॥ ५॥ हाल—॥ २॥ प्रथम गोवाला तणें भवेंजी॥ ए देशी॥ मागशीर शुदि दशमी दिनें जी, कल्याणक छेरें दोय; अरजिन जन्मनें शीवलह्यां जी, ते प्रणमो सहु कोयरे भवीका; प्रणमो श्रीजिन-चंद ॥ जस प्रणमें वासव चंद रे भवीका०॥१॥ ए आंकणी॥ अग्यारश दिन मोटीको जी, जे दीन पंच कल्यांणः मही जन्म व्रत केवली जी, अरव्रत निमजीन नांण रेः भवीका०॥ २॥ जनम्यां संभव चौद्रों जी, पुनमें वली व्रत लीध; वदि द्शमीथी चौद्रा लगेंजी, लागट छेंप्रसिद्ध; भवीका० ॥३॥ पास जन्म विल व्रत लीएं जी, चंद्र जन्म व्रत सार; शीतल केवल पामीयां जी, हवें पोशशुदि अव-धार रे; भविका०॥ ४॥ विमल केवल छठि दिनें जी, नवमीए शांतीने नांण; अजीत नांण अगी-यारसें जी, लोकालोक सुजांण रे; भवीका० ॥ ५ ॥ चौद्दों केवल उपन्युं जी, अभिनंदन जिनभाण; 🖔 धर्म केविल पूनमें जी, हवें विदनुं मंडाण रे; भवीका०॥६॥ छठें पद्म चवन भछुं जी, बारसनें हैं दिन दोय; शितल जन्म मूनि थयां जी, तेरसें ऋषभ शीव होय रे; भवीका०॥७॥ अमावास्यां

पंच क० स्तवनः

दीन पामीयाजी, श्रेयांस केवल नाण; जीन उत्तम पद पद्मनेंजी, प्रणमो भवीक सुजाण रे भ-वीका० सुंदर ॥ ८ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ होसुंद्र ॥ ए देशी ॥ सुंद्र माह शुदिमां हवे जाणिएं, वे कल्याणक बीज हो; सुंदर ॥ अभिनंदन प्रभु जन्मीयां, केवल वासु पूज्यहो; सुंदर ॥ कल्याणक दिन गाइयें ॥ ए आं-कणी ॥ १ ॥ सुंदर त्रिज दीनें पण दोय कह्यां, जनम वीमलनें धर्म्म हो; सुंदर० चोथे वीमल जिन व्रत लहीएं, आठमें अजीतनो जन्महो; सुंद्ररर्कः ॥ २ ॥ सुं० नोमे अजीत दीक्षा लीएं, बारसें व्रत अभीनंदनहो; सुं०; तेरसें धर्म चारित्रीआ, विदमां सुंणि सुख कंदहो; सुं० क० ॥ ३ ॥ सुं० छट्टें सुपा-सजी केवली, सातमें दोय कल्याणहो; सुं०; शिव पोहतां सुपासजी, चंद्रप्रभु लहें नाणहो; सुं० क० ॥ ४ ॥ सुं॰ नोमदीनें सुविधि चव्यां, एकादशी आदि नांणहो; सुं॰; बारसें दोय श्रेयांस जण्या मुनी सुत्रत नांण जाणीहो; सुं० क० ॥५॥ सुं० तेरसें श्रेयांस व्रतिखे, जाया चौदशें वासु पूज्यहो;सुं० अमावास्या वासु पूज्य व्रती, फागुष्प श्रुदि हवें बीजहो; सुं० क० ॥ ६ ॥ सुं० अरचव्या चोथे मही

शांतिना<sup>.</sup> थना. चर्चां, संभव आठमें च्यवनहों; सुं० ॥ बारसें दोय सुव्रत व्रती, मछीमोक्ष करो नमनहों; सुं० क० ॥ ७ ॥ सुं० विद चोथें दोय जाणीएं, पास च्यवननें नाणहों; सुं० पांचमें च्यवन चंद्रवली, आठमें दोय कल्याणहों; सुं० क० ॥ ८ ॥ सुं० ऋषभजी जन्मनें व्रतलीएं, च्यार मुष्टी करी लोचहों; सुं०; ॥ तसपद पद्म नम्यां थकी, निवआवें भव शोचहों; सुं० क० ॥ ९ ॥

ढाल—॥ ४ ॥ माली केरा बागमां ॥ ए देशी ॥ चैत्रशुदी त्रीजें सुणो, कुंथुजिन नाणरे लोल० अहो कुंथु० ॥ त्रण पांचमे नंतअजीतजी, संभव नीवांणरे लोल० अहो सं० ॥ १ ॥ नवमी सुमती जिन शीव वरयां, अग्यारशें लह्यां नाणरे लोल० अहो अ० ॥ तेरसें वीरजी जन्मीयां, राता पद्म विन्नाणरे लोल० अहोरा० ॥ २ ॥ वदी पडवे कुंथु शिव लह्यां, बीजें शीतल सीद्धांरे लोल० अहोवी०॥ कुंथुं दीक्षा लेइ पांचमें, नीज कारज कीधांरे लोल० अहो नी० ॥ ३ ॥ चवीया शीतल छठ दीनें, नमी शिवपद दशमेंरे लोल० अहोन० ॥ अनंत जन्म वली तेरसें, त्रण छें चउ दशमें रे लोल० ॥ अहो त्र० ॥ ४ ॥ दीक्षा केवल इंणे दीने, पाम्या श्री अनंतरे लोल० अहो पा० ॥ तीमकुंथुं जीन

पंच क० स्तवनः

ા કરા

जनमीयां, प्रणमो भवी संतरे लोल० अहो प्र०॥ ५॥ वैशाख ग्रुदी चोथनें दिनें, अभीनंदन चिवीयांरे लोल० अहो अ० चवीया धर्म ते सातमें, आठमें दोय चिवआरे लोल० अहो आ०॥ ६॥ अभिनंदन शिव पामीयां, सुमती जीन जायारे लोल० अहो सु०॥ नविम सुमित व्रत वीरजी, दशमें नांण पायारे लोल० अहो द०॥ ७॥ बारसें विमल च्यवन थयुं, हवें तेरसें इठरे लोल० अहो ह०॥ अजित चव्यां वदी सांभलो, चव्यां श्रेयांस छहेंरे लोल० अहो च०॥ ८॥ आठमें सूव्रत जन्मीआ, नवमी मोक्ष पधार्यारे लोल० अहो न०॥ तेरसें दो शांतीजन्मीआ, तिम सिद्धि सिधा-व्यारे लोल० अहो ति०॥ ९॥ शांति व्रत लेइं चौदशें, त्यजि सर्व उपाधिरे लोल० अहो त्य०॥ तस पद पद्मने प्रणमतां, लह्यो अव्या वाधरे लोल० अहो ल०॥ १०॥

ढाल—॥ ५ ॥ वाडी फुली अति भली, मन भमरोरे ॥ ए देशी ॥ जेठ ग्रुदि पांचमनें दिनें, जिन नमीएं रे, मोक्ष गयां धर्मनाथ भवीक जिन नमीएं रे; चविया, वासु पूज्य नवमीएं,जिनन०, जेतारे यही हाथ; भविक०; ॥ बारसें सुपासजी जण्या; जिन०, तेरसें लीधी दीक्षा; भवि०; वदि चोथें

चव्या ऋषभजी, जिन०, सातमें विमलनें मोक्ष; भवी० ॥ २ ॥ नमी जिन दिक्षा नवमिएं; जिन० एँ पंच क० आषाढ शुदि छठ दिन्न; भवि०; ॥ वीर च्यवन ते आठमें, जीन०, मोक्ष अरिष्ट नेमी जिन; भवि० स्तवनः ॥ ३॥ वासु पूज्य शीव चौद्शें, जीन०, विद त्रीजें हवें धार; भवि०॥ सिद्धी श्री श्रेयांसनें, जीन०, प्राम्या भवोदिध पार; भवि०॥ ४॥ अनंतनाथ चव्यां सातमें, जिन० आठमें निम जिन जन्म भवि०॥ कुंथुं चव्या नवमी तेहनां जीन० प्रणमो पाद पद्म; भवि०॥ ४॥

ढाल-॥६॥ सुण मेरी सजनी रजनी नजाएंरे ॥ ए देशी ॥ सुमति चव्यां श्रावण शुदि बीजेंरे, नेमि जन्म पांचिम दीन लीजेंरे; छिठ दीन दीक्षा नेमजीए लीधीरें, पास आठिम दीन वरीआ सिद्धीरे ॥ १ ॥ पूनिमें मुनि सुत्रत प्रभु चवीआं रे, विद सातम दो कल्याणक मवीआरे; शांति च्यवननें चंद्र नीर्वांणरे, आठमें चिवआ सुपास जिन भाणरे ॥ २ ॥ भाद्रवाद्युदि नवमी सुवीधी नीर्वांणरे, वदि अमावास्या अरिष्ट नेमि नाणरे; इंणी परें श्री जिन उत्तम गायांरे, पद्मविजय कहें भव फल पायारे ॥ ३ ॥

राग—धन्यां श्री—गिरुआरे गुण तुम तणां ॥ ए देशी ॥ कल्याणक दिन गाइएं, भविहर्ष धरी बहु मानोरे; ॥ प्रभु गुण स्मरण नित्य करी, तप करीएं थइ सावधानोरे; कल्या०॥ए आंकणी ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ तेह कल्याणकनुं गणो, विले गणणुं दोय हजारोरे; वर्त्तमान चोवीशीएं, कल्याणक दिन अति सारोरे; क० ॥ २ ॥ इंम अनंत चोवीशी धारीएं, तो अनंत कल्याणक थायरे; उजमणुं पण कीजिएं, धरी भक्ति शक्ति निरमायरे; क० ॥ ३ ॥ संवत अढारसें साडित्रशनां, माहवदि बिजनें शिनवारेंरे; शोभन योगें शोभन थयुं, प्रभु गाया हरख अपारोरे; क० ॥ ४ ॥ पाटण चोमासुं रही, लही जिन उत्तम सुपसायारे,० पद्मविजय पूण्यें करी, इम थूणीआं श्री जिनरायारे; क० ॥ ४ ॥ "इति श्री चोवीश जिन कल्याणकस्तवनम् संपूर्णम्"

"अथ श्री सम्यक्त विचार गर्भित श्री महावीर जिन स्तवनम्" ॥ दोहाः—प्रणमी पद जिनवर तणां, जे जगनें अनुकुलः, जास पसायें में लखुं, समकित रयण अमृल ॥ १॥ ते जीम वीरें उपदिक्युं, परखदा माहिं अनूपः, तिम हुं वर्णवीश हवे, समकित शुद्ध स्वरूप ॥२॥ शांतिना-थनाः

II 84 I

名本名本名本名

ढाल—॥ १ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥ इगविध दुविध त्रिविध चउविध वली, पण-विध दशविध जाणो; ए समकित शिवतरुनुं बिजक, संप्रति परिं मन आणोरे; प्राणी समकित शुद्ध आराधो, जिम शिव मारग साधोरे; प्रा०॥ सम०॥ १॥ ए आंकणी॥ इगविध तुज आणा रुचि दुविहा, द्रव्य भावथी कहिये; निश्चयनें व्यवहारें अथवा, समकित दुविध सद्दहीये रे; प्रा०॥ २॥ सद्दहणा सूधी तुज आगम, परमारथ नवि जाणे; समकित द्रव्य थकी तस कहीएं, भावथी तत्त्व वखाणेंरे; प्रा० ॥ ३ ॥ मिथ्या पुद्गल शुद्धनुं वेदन, समकित द्रव्य कहावे; भावथी तत्त्व रुचि पण तिमहीज, तत्त्व रुचि परि भावेंरे; प्रा०॥ ४ ॥ पुद्गल रूपी अरुपी अपुद्गल, ए पण द्विविध तुं देखे; क्षयोपशमिक वेदक पुहल, शेष अपुहल लेखेरे; प्रा०॥ ५॥ निश्चय समकित शुभ आतमनो, ज्ञा-नादिक परिणाम; अथवा आतम समिकत कहीएं, गुण गुणी मेद न गमरे; प्रा०॥६॥ मिथ्या दृष्टी तणी संस्तवना, त्यागादिक व्यवहार; वलीय निसर्गापर अधिगमथी, बिहुं भेदे निरधाररे; प्राठ ।। ७ ॥ जिम कोई मारग भूलो पंथी, भमतो मारग आवे; कोईक उपदेशादिक योगें, कोईक थाग

पंच क० स्तवन

ા ૪૬ ા

न पावेरे; प्रा०॥ ८॥ ज्वर पण सहेजे औषध योगें, जाये एक न जाय; मारंग ज्वर द्रष्टांतें सम-कित, इणिपरें द्विविधें थाय रे; प्रा०॥ ९॥ जाती स्मरण प्रमुख थकीजे, तास निसर्ग विचारो; ग्ररु-उपदेशादिकथी आव्युं, ते अधिगम चित्त धारोरे; प्रा०॥ १०॥ कारक रोचक दीपक भेदें, त्रिविधे पण ए भोरूयुं; अथवा उपराम क्षायोपरामिक, क्षायिक भेदे दारूयुं रे; प्रा० ॥ ११ ॥ तें जिम भारूयुं ते तिम कीधुं, ते कारक तस खास; तुज धर्मोपरि रुचिथी रोचक, नहीं किरिया अभ्यासरे; प्रा० ॥ १२ ॥ मिथ्या दृष्टी थको पण पोतें, धर्म कथादिक सारे; दीपक परे परने दीपावें, ते दीपक उप-चारें रे; प्रा० ॥ १३ ॥ ते समकित जिम फरस्युं जीवे, तिम तुज आगळ दाखुं; तुज आगम नय न्याय शुद्धो द्धि, परमार्थ रस जिम चाखुंरे; प्राणी समकित सुद्ध आराधो ॥ १४ ॥

ढाल—॥ २ ॥ देव तुज सिद्धांत मीठो ॥ ए देशी ॥ वीर जिणेसर साहिब सुणजो, निजसेवक अरदासरे; दीन द्याकर ठाकुर आपो, तुह्म चरणे मुज वासोरे ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लोकाकाशि रह्यो अविनाशी, भाव अनादि अनंतरे; ए भव चक्र तणां दुःख बहुलां थना.

भोगवियां भगवंत रे ॥ वी० ॥ २ ॥ सुक्ष्म निगोद वस्यो छे हुं स्वामी, अनादि वणस्सइ पंच क० नामरे; तिहांमें कीघ अनंता पुद्रल, परावर्त्त विण स्वामिरे॥ वी० ॥ ३ ॥ अव्यवहार राशि स्तवन इम विसओ, काल अनंतो भोगेरे; कर्म परिणाम नृपित आदेशे, तादृश भव्यता योगेरे ॥वी०॥ ४॥ विहां एकण सासो सासमें कीघां, भवसत्तरे झाझेरारे; ए दुःख तुजविण कुण छोडावे, स्वामी मुज भव फेरारे ॥ वी० ॥ ५ ॥ व्यवहार राशि लइ उत्कर्षे, काल अनंत अनंतोरे; स्थूल निगोदने पृथ्वी पाणी, तेज अनिल त्रस जंतोरे ॥ वी० ॥ ६ ॥ तिहांपण हुं विसयो तुम पाखें, मिथ्या मतनें जोरेरे; हरिहर देवकरी में मान्या, तुं न चढ्यो मन मोरेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥ तिणे में छेदन भेदन ताडन, भुख तृषा ग्रुरु भाररे; गर्भवासने जन्म जरा दुःख, भोगवीयां निरधाररे॥वी०॥ ८ ॥ इम चउ गइ भवनां दुःख फरसी, वार अनंती अनाणीरे; पाला दृष्टांते इक पुद्गल, परावर्त्त स्थिति आणीरे ॥वी० ॥ ९ ॥ भव्य पणादिक ने परिपाके, गिरिसरि दुपल न्यायेंरे; अध्यवसाय विशेष करणजे, अनाभोगथी थायेरे॥ वी०॥ १०॥ ते त्रिविधे भाख्युं तिहां पहेल्लं, यथा प्रवृत्त करण वली बीजुंरे; करण अपूर्व नामें

कहीएं, अनिवृत्त करण ते त्रीजुंरे ॥ वी० ॥ ११ ॥ यथा प्रवृत्तकरणे आयुविण, सात कर्म करी खीणरे-कोडा कोडि सायर इग पळयनो, असंख्य भाग तिणें हीणरें॥वी०॥ १२॥ इहां कर्कश निविड ग्रपि: छ जिम ग्रंथी, भेदन दुक्कर कामरे; कर्मपरिणाम जनित घन जीवनो, राग द्वेष परिणामरे॥वी० ॥१३॥ ते ग्रंथी नविभेदी जीवें, पहेलि इणे संसारेरे; वार अनंती अभव्य पण आवे, ग्रंथी लिंगे निर-धाररे॥वी०॥ १४॥ भव्य अभव्य रहे तिहां यंथि, संख्य असंख्यो कालरे; अरिहंता दिकनी ऋद्धि देखी, संयमंने उजमाल रे॥ वी०॥ १५॥ तिहां लहें श्रुत सामायिक द्रव्यें, शेष लाभ नहीं तासरे; जेहनें भवनो पाररे; निशित कुठार धारें जिम तत्क्षण, भेदे बल मनोहाररे ॥ वी० ॥ १७ ॥ करण अपूर्व परम विशुद्धे, तिम ते प्रंथी आयरे; भेदीनें अंतर मुहूर्त्तमां, अनिवृत्ति करणें जायरे ॥ वी० ॥ १८ ॥ मिथ्या मोह तणी स्थिति तेहनुं, अंतरमुहूर्त एकोरे; उदय क्षण उपरें ओलंघी, ते सम-रथ सुविवेकोरे ॥ वी० ॥ १९ ॥ अनिवृत्ति करण विशेषे अंतर, मुहूर्त्त काल अनूपोरे; अंतर करण करे

तिहां वेद्यजे, दिलक अभाव सरूपोरे ॥ वी० ॥ २० ॥ जिमवनदवदम्धे घन उखर, पामी ठाम, अंतरकारण ओल्हायरे; तिम मिथ्या वेदन वनदव सम, अंतर करणे थायरे ॥ वी० ॥ २१ ॥ अंतरकरण करे मि- स्तवन थ्यात्वनी, स्थितियुग कहे जिन न्यानेरे; अंतरकरण थकी स्थिति हेठी, पहेली मुहूर्त मानेरे ॥ वी० ॥ २२ ॥ तेहथी उपली स्थिति बीजी, तिहां प्रथम स्थिति जाणोरे; मिथ्यादिलकनुं वेदन तेहथी मिथ्यादृष्टी वखाणोरे ॥वी०॥ २३ ॥ अंतरमुहूर्त्त ते स्थिति नारो, नही मिथ्याद्छ वेदोरे; अंतरकरण नो प्रथम समये तिहां, छहे उपशम निरवेदोरे ॥ वी० ॥ २४ ॥ परमानंद मगन होइ भट जिम, जीती कटक अशेषरे; न्यायवंत हरखे जिम गाढे, न्याय धनागम पेखरे; वीर जिणेसर साहिब सुणजो ॥२५॥ ढाल-॥ ३ ॥ सहीरे समाणी ॥ ए देशी ॥ इणीपरें तुजथी समकित फरस्युं, जेहथी भवजल तरस्युंरे; धन्य धन्य तुम सेवा; ॥ एहथी मन वंछित फल लेवां, तेकरवां मुजं हेवारे; ध० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तिहां कोइ देश विरति तस सरसी, सर्व विरति छहे हरिसीरे; ४० ॥ मिच्छा मयण कोद्रवा सरिखुं, उपराम औषध परखुंरे; ४० ॥ २ ॥ जल वस्त्रादिकनें दृष्टांते, तुज आगम कहे

खांतेरे; घ० ॥ मिथ्या पुंज करे त्रणशोधी, उपशम करि शुभ बोधीरे; घ० ॥ ३ ॥ शुद्धने अर्घ विशु-द्धते बीजो, अविशुद्धें मत रीझोरे; घ० उपशमथी पडिओ मनवामे, क्षायोपशमिक पामरे; घ०॥ ४ ॥ मिश्र तथा मिथ्यात्वनें फरसे, कर्ममती इम हरषेरे; ध० ॥ बीजुं क्षायोपशमिक कहीये, उपशम परे-पण लहीयेंरे; घ० ॥ ५ ॥ मिच्छा पुंज करी त्रण नीणें, कोई अपूर्व करणेरे; घ० शुद्ध पुंजतो तिहां वेदतो ज्ञानी, जिन वचनामृत पानीरे; ४०॥ ६॥ उपशम पाम्यांविण तुज नामे, क्षायोपशमिक पामेरे; ध० ॥ यथा प्रवृत्ति करण त्रय क्रमथी, अंतरकरणे तुजथीरे; ध० ॥ ७ ॥ जेलहें उपशम भवजल तरवा, तस त्रण पुंजन करवांरे; घ०॥ आलंबन अलहंती ईयल, जिमसठाणं न मूकेरे; घ०॥ ८॥ मिश्र पुंज अणलाभी उपशमी, तिम मिथ्याने ढांकेरे; ध० ॥ उपशम समकीतथी तिणे पडिओ जइ मिथ्या गुण अडिओरे; ४०॥ ९॥ इम सिद्धांती निज मत खोलें, कला भाष्यपण बोलेरे; ४०॥ ते त्रण पुंजनो संक्रम भाखुं, जिनवयणे मन राखुंरे; ४०॥ १०॥ मिथ्या दलिकथी पुद्रल खिंची, समिकत दृष्टि विंचीरे; घ० ॥ संक्रमावे समिकत मीसें, ग्रुभ परीणामें हींसेरे; घ० ॥ ११ ॥ समिकति शांतिना-थना.

🖫 दृष्टी मीस आकर्षी, समकित मांहि हर्षीरे; ४० संक्रमावे मिथ्यादृष्टी, मिथ्यामां गुण पुष्टीरे; ४०॥१२॥ समिकत पुद्रल मिथ्यामांहें, पण मीश्रे निव चाहेरे; घ०॥ मिच्छाखीण नही छे जेहनें, ते त्रण हैं पुंजछे तेहनेरे; घ०॥ १३॥ मिच्छाखीण थये दोय पूंजी, मीस खये एक पुंजीरे; घ०॥ क्षायक हैं समिकत पुद्रल नारों, जिन आगम इम भाषेरे; घ०॥ १४॥ शोधित मयण कोद्रवा थानें, समिकत पुद्रल मानेरें; ४०॥ तेहनें विरुद्ध तैलादिक पारो, ग्रुद्धपणुं तस नारोरे; ४०॥ १५॥ तिमज कुशास्त्र कुतीर्थ कुसंगे, तस किरिया मन रंगेरै; घ०॥ मिथ्या मिश्रित समकीत जाये, तत्क्षण मिथ्या थायरे, घ०॥ १६॥ समकितथी पडिओं जो पाछुं, वली समकित लहे आछुंरे; घ०॥ ते त्रण पुंज करे तिहां फेरी, मिच्छ अपूर्वे वेरीरे; ध०॥ १७॥ अनिवृत्ति करण बलें ते रसीओ, समिकत पुंजे, वसीओरे; ध० ॥ समकित परिजिहां विरतिने पावें, आद्य करण वे आवेरे; ध० ॥ करण अपूर्व कालने वसीओर; घ०॥ समाकत पाराजहा विरातन नान, जान नान मान आगे, विराति छही तिहां जागेरे; घ०॥ १८॥ अंतर मुहूर्त्तमां तस छाधे, निज परिणामे बांधेरे; ध०॥ उंचो नियम नहिं तिहां कोई, वृद्धि हाणी सम होयरे; घ०॥ १९॥ अनाभोग परिणामनी

पंच क० स्तवन.

11 26 11

हाणे, गइ विरति नवि जाणे रे; घ०॥अक्टत करणथको ते प्राणी, फिरी छहे विरति सुहाणी रे; घ०॥२०॥ आभोगे जे विरतिथी खसीया, तिमज मिथ्याग्रणे वसियारे; घ०॥ अंतरमुहूर्त्तमां छहे आछी, जघन्यथकी फिरि पाछीरे; **घ० ॥ २१ ॥ उत्कर्षे बहु कालें भाखी**, आद्य करणछे साखी रे; घ० ॥ इणीपरे कर्मप्र-कृति वृतिमाहिं, तिहां जोज्यो उच्छाहिंरे; ४० ॥ २२ ॥ कोइ विराधित समकित फेरी, ते लहेमिथ्या **बे**रीरे; घ० II छद्टीनरक लगें ते जाए, समय मतें कहेवायरे; घ० II २३ II आउ बंधविना उच्छाहि, फिरि समिकत अवगाहेरे; ४०॥ वैमानिकविण आउ न बांधे, कर्म मती मत सांधे रे; ४०॥ २४॥ समिकत पतित कहे मतबांधे, उत्कृष्टी स्थिति बांधे रे; ४०॥ भिन्नग्रंथीनें आगम ज्ञानें, स्थिति उत्कर्ष न मानेरे; ४०॥ २५॥ इणी परें भेद मतांतर जाणे, पण संदेह न आणेरे; ४०॥ निःशंकित तुज वयण आराधे, न्यायें तस ग्रुण वाधेरे; ध० ॥ २६ ॥

ढाल—॥ ४ ॥ विनयवहो सुखकार ॥ ए देशी ॥ दुर्शन मोह विनाशथीजी, जे निर्मल गुण-ठाण; ते समकित ओघे कह्युंजी, ते भवियण हित आणरे॥ जिनजी तुज आणाइयुंरे रंग, मुज नगमे 11 83 11

मिथ्यां संगरे ॥जि०,॥१॥ ए आंकणी ॥ मिच्छा दरिशण मोहनीजी, उपशमि उपशमजाणो; धुरयंथि भेदे कह्युंजी, उपशमश्रेणि प्रमाणरे ॥ जि० ॥ २ ॥ नाश उदीरण मिच्छनोजी, अनुदीरण समठाम; क्षयउपशमथी उपजेजी, क्षायोपशमिका नामरे ॥जि० ॥३॥ त्रिविधें मोह विनाशथीजी, त्रीजुं क्षायिक-नाम; क्षपकश्रेणि चढतां हुएजी, जेहथी शिवपुर ठामरे॥ जि०॥ ४॥ विपाकप्रदेशे वेदवुंजी, द्विविध उदय वीष्कंभ; उपशमतुं तेहने कहेंजी, आगममां स्थिर स्थंभरे॥ जि०॥ ५॥ नाश विपाकोदय थकीजी, वेदन तेहनुरे नाम; उपशमि ते निव संभवेंजी, क्षायोपशमिकठामरे ॥ जि० ॥ ६ ॥ मिच्छा पुद्गल वेदवाजी, शुद्ध अशुद्ध तिहां दोय; विपाक प्रदेशोदय थकीजी, अनुक्रमें समजी जोयरे॥ जि० ॥ ७ ॥ अण चउ दुग मिच्छा तणांजी, पुंज खपावीरे होय; शुद्ध पुंज खपतां तिहांजी, अंतिम पुद्गल होय रे॥ जि॰ ॥ ८॥ तस वेदन तेहने कह्युंजी, वेदक चोथुंरे नाम; उपशम वमतां पांचमुंजी, सास्वाद्न ग्रण धामरे॥ जि०॥ ९॥ अंतर्मुहूर्त एकनीजी, उपशम स्थिति उवेख; उत्कर्षे षट् आव-लीजी, जघन्य समय हुये शेषरे॥ जि०॥ १०॥ अशुद्धपुंज जावा तणीजी, इच्छाए तिहां तास;

पंच क० स्तवनः

11 88 11

अण कसाय उद्यें हुइजी, जेहथी उपराम नासरे॥जि०॥ ११॥ उपरामथी पडतां थकांजी, नगयो मिच्छारे जाव; तावत् सास्वादन कह्युंजी, उपशम स्वाद सुहावरे॥ जि०॥ १२॥ अंतर्मुहूर्त्त काळ-नीजी, उपशम स्थिति ग्रुणखाण; साम्बादन पट्टू आवलीजी, वेदक समय प्रमाणरें ॥ जि॰ ॥ १३ ॥ स्थिति सागर तेत्रीशनीजी, साधिक क्षायिक जाणि; बमणी स्थिति एहथी कहीजी, क्षायोपशिम एक ठाणरे ॥ जि०॥ १४ ॥ उपराम सास्वादन कह्युंजी, आभव वेळारे पांच; वेदक एक वेळा हुएजी तिमहिज क्षायक संचरे ॥ जि०॥ १५ ॥ वार असंख्य उत्कर्षथीजी, क्षायोपशमिक होय; हवें तस गुणठाणा कहुंजी, सांभळजो सहु कोइरे॥जि०॥१६॥ उपराम अडगुण ठांणमांजी, अविरत गुण पद्रेख; क्षायिक ग्रुणठाणें सवेजी, आदिम त्रण विणशेषरे॥जि०॥ १७॥ अविरति ग्रुणठाणा थकी-जी, जावत सत्तम ठाण; एक वेदक बीजुं इहांजी, क्षायो पशमिक जाणरे ॥ जि० ॥ १८ ॥ सास्तादन 🕻 सास्वादनेजी, भाखे अंग उवंग; न्यायें शिव सुख ते लहेंजी, जसतुजआण अभंगरे ॥ जि० ॥ १९ ॥ ढाल-॥ ५॥ शांतिसुधारस कुंडमां, तुंरमे मुनिवर०॥ ए देशी॥ धन्य धन्य शासन ताहरुं, थना.

माहरुं जिहांमन लीनरें; क्षण पण तसविण नविरहें, जिमजल भर विण मीनरें; धन्य धन्य शासन पंच क० ताहरुं० ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ देशविरति दरिशणथकी, पलिय पुहुत्तमां जाणिरें; अनुक्रमें चरणश्रेणि स्तवनः बिहं, संख्यसायरे गुण खाणिरे; धन्यधन्य०॥ २॥ तेहज भवेंद्रुए तेहनें, जेहनें सत्तग खीणरे; चउँतिय भव उत्कर्षथी, पुवबद्धाउने पीणरे; धन्यधन्य०॥ ३॥ बद्ध आउ सुर नरकतुं, तेहनेतिय भव तंतरे; आउ असंख्यनर तिरितणुं, तसपण चउभवें अंतरे; धन्यधन्य० ॥ ४ ॥ समकित स्थिति होयें ओघथी, अंतरमुहूर्त्त एकरेः; साहिय खओवसमासिरी, सायरछासठिछेकरे, धन्यधन्य ॥ ५ ॥ इग अथवा बहु आसरी ॥ दरसणनो उपयोगरे; जघन्य उत्कृष्ट थकी कह्यो, अंतरमुहुर्त्त भोग रे; धन्यधन्य० ॥ ६ ॥ दर्शनलब्धि शुभ सुरलता, क्षायोपशमादिकरुपरे; अंतरमुहूर्त्त माननी, जघन्यथी-कहे जिनभूपरे; धन्यधन्य०॥७॥छासठिसायर सविमिली, नरभव हिय उत्कृष्टरे; तेहथी उर्द्ध जो न विदिये, कहे जिनभूपर; धन्यधन्य गाणाछासाठसायर सायानका, गरमनाखन उठ्या, स्व समिकत रयणने पुष्टिरे; धन्यधन्य ॥ ८ ॥ तो ते निश्चय शिवपदलहें, ए एकजीवनें योगरे, जीवना-नाश्चित सर्वदा, दरसणनो उपयोगरे; धन्यधन्य० ॥ ९ ॥ अंतरमुहूर्त एकतुं, जघन्य अंतरमन आणरे;

अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनुं, तस उत्कृष्ट परिमाणरे; धन्य धन्य शासन ताहरं० ॥ १० ॥ जीव नानाश्रीत निव होयें, समकित अंतर लेशरे; तत्र आवश्यक वृत्तिमां, ए अधीकार विशेषरे ॥ धन्यधन्य० ॥ ११॥ दश्विध सहेज उपदेशथी, उपशम प्रमुख जे पंच रे, अहव निसग्गरुइ भेदथी, दशविध तस पर-पंचरे; धन्यधन्य ।। १२ ॥ निसग्ध १ एस २ आणारुइ ३, सुत्त ४ बीयरुई ५ अभिरामरे; अभिगमा ६ भोग ७ किरियारुई ८, संखेव ९ धम्म रुई नाम रे; धन्यधन्य०॥ १३॥ गुरुउपदेशविण सहजेथी, जिनवयणे परतीतरे; जेहनें तेहनें जाणज्यो, प्रथम निसर्ग रुचि रीतिरे; धन्यधन्य०॥ १४॥ तेसर्वि गुरु उपदेशथी, सद्दहे जे जण आपरे; ते उपदेशरुचि नर कह्यो, इम तुज आगम थाप रे; धन्यधन्य० ॥ १५ ॥ कारण प्रमुख अजाणतो, मुज जिन आणजखेमरे; तइय आणारुचि तुं कहें, माष तूषादिक जेमरे; धन्यधन्य०॥ १६॥ सूत्र भणतो समकित छहे, प्रसन्न प्रसन्न परिणामरे; गोविंद वाचकनी-पेरें, सुत्तरुइ तसनामरे; धन्यधन्य०॥ १७॥ देशरुइ खउवसमथी, सबरुइ विस्तारिरे; उदकमां तैल बिंदु परें, बीयरूइ भवतारिरे; धन्यधन्य०॥ १८॥ अभिगमरूइ सुअनाणनें, अर्थथकी अवगा- शांतिना-थना-

ાં પશ

हिरे; अंगपयन्ना प्रमुखजे, शास्त्र सबेनिरवाहेरे; धन्यधन्य०॥ १९॥ द्रव्यनां भाव जाण्याजिणे, सबि प्रमाणे अशेषरे; सर्वनयेतिम तसकद्धुं, विच्छार रुइ अकलेशरे; धन्यधन्य०॥२०॥ दंसणनाण चारित्त वली, तिमतिन उत्तम कामरे; सुमति ग्रितिकिरियारुचें, तेकिरिया रुइनामरे; धन्यधन्य०॥ २१॥ आगम कोविद नविद्धुएं, कुमय कुदिठी विजुत्तरे; संखेवरूइ तेहने कद्धुं, जिमचिलातीय पुत्तरे; धन्यधन्य०॥ २२॥ धम्म अधम्म प्रमुख दक्ष, चरण सुय धम्मनां भेदरे; जेजिन भाषित सहहे, तेधम्मरुइ निरवेदरे; धन्यधन्य०॥ २३॥ ए दशविध दरशणकद्धुं, उत्तराध्ययन मोझाररे; अध्ययनें ते अडवीसमें, न्यायसागर सुखकाररे; धन्यधन्य०॥ २४॥

हाल—॥ ६ ॥ माइ धन्नसुपनतुं ॥ ए देशी० ॥ जडजलपण पोतें, सिंच्युंकाठन बोलें, तससंगति लोहुं, तेहनेंपणतस तोलें; तिमहुं ग्रण हीणो, तोपण दास तुमारो, अवग्रण उवेखी, प्रभुजी पारउ-तारो ॥ १ ॥ तुंग्रणमणि दरिओ, उद्धरिओ जगजेणे; मुझने कांइ न तास्त्रो, तुज संगतिनहीं तिणें; अलगो तिहें वलगो, तुंमुज दिलथी देव, अविचल पद आपो; ढीलतणी शीटेव ॥ २ ॥ निहेंतो मुझ- पंच क० स्तवनः

11 48 11

द्वि, निहंमुकुं करुंशोर; झाली दिलभीतर, घाली करश्युं जोर; जाश्यो किम दीधां; विणशिवसुख जिनराज,० सहेजे जो देशो, तो रहेशे तुमलाज ॥ ३ ॥ अविनयमुज खमज्यो, हुं छुं मूढअयाण; करतांनिव आवे, वीनंतडी जिनभाण; ॥ बालकजिम बोलें, कालो गहिलो बोल; ते मातिपतामन, लागे अमृत तोलें ॥ ४ ॥ इणीपरेंप्रभु स्तवीओ, समिकतलेश विचारे; आगम अनुसारें, मुजमितने अनुहारे; संवत्ऋतु रसमुनिचंद्र ॥ १७६६ संवत्सर जाणि; भाद्रवे मासें, सित्तपंचमी गुणखाणि॥५॥ श्रीतपगच्छनायक, श्रीविजयरबसुरिंद,० सुरगुरुजस आगलें, करजोडिमित मंद; ॥ तसराजेपंडित, उत्तमसागर सीस०, कहे न्यायसागरप्रभु; पूरोसंघजगीश ॥ ६ ॥

" इति श्री सम्यक्त्व विचार गर्भित श्रीमहावीरिजन स्तवनम् "

" अथ श्री महावीर खामिनां सत्तावीश भवनुं स्तवन "

दुहा—विमल कमल दल लोयणां, दीसे वदन प्रसन्न; आद्रीयाणें श्री वीर जिन, वांदी करुं स्तवन ॥ १ ॥ श्रीग्ररु तणां पसाउ लें, स्तवशुं वीर जिणंद; भव सत्तावीश वर्णवुं, सुणजो सहु आणंद थना.

🕍 ॥२॥सांभलतां सुख उपजें, समकित निर्मल होय; करतां जिननी संकथा, सफल दहाडो होय ॥ ३ ॥ 🎉 एंच क० ढाल—॥ १ ॥ उलालो ॥ ए देशी ॥ महाविदेह पश्चिम जाणुं, नयसार नामें वखाणुं; गाम तणो ते छे राणो, अटवी गयो सपराणो ॥४॥ जिमवा वेला ए जाणी, भगती रसवती आणी; दाननी तिहां वासना मन आवी, तपसी जोइ ते भावी ॥ ५ ॥ मारग भूळा ए हेव, मुनि आञ्यां ततखेव; आहार दीए पाये लागी, ऋषिनी तृषा भुख भांगी ॥ ६॥ धर्म सुंणि तिहां मन रंगें, समकित पाम्युं ए चंगें; ऋषिने चालतां जाणी, हैयडे उलट आंणी ॥ ७॥ मारग देखाड्यो वहेतो, पाछो वली ए इम कहेतो; पहेंछें भवें धर्मं पावें, अंते देवगुरु ध्यावें ॥ ८ ॥ पंच परमेष्ठि नें ध्यानें, जावें सौधर्में विमानें; आउखुं एक पल्योपम, सुख भोगवें अनूप ॥ ९ ॥ भव बीजें त्रीजे आयो, भरत कुलें सुत जायो; ओच्छव मंगलीक कीधो, नाम ते मरीचि दिधुं ॥ १० ॥ वाधे ते सुरतरु सरिखो, आदिजिन देखी नें हरख्यो; आदीश्वर देशना दीधी, भावें दीक्षाएणे लीधी ॥ ११ ॥ ज्ञान भणें सुविशेषे, विहार करे देश विदेशे; दीक्षा लेइ ए नजरें, अलगो खांमिथी वीचरें ॥ १२ ॥ महाव्रत भार ए मोटो, हुंपण

पुण्यें ए छोटो; भगवुं कापड ते करवुं, माथे छत्रनें धरवुं ॥ १३ ॥ पाए पावडी धरइयुं, स्नान सर्वें 🤌 जले करइयुं; प्राणी स्थुल न मारुं, शिरमुंड चोटी ए धारुं ॥ १४ ॥ जनोइ सोवन केरी, शोभा 🖔 चंदने प्रेरी, हाथें त्रिदंडीओ लेवुं, मनमांहे चिंतवे एहवुं ॥ १५ ॥ लिंग कुलिंगीनुं रचिउं, सुख कारणे एह्बुं मचीउं; ग्रण साधुनां वखाणें, दीक्षा योग्य जे जाणें ॥ १६ ॥ आणी मुनीनें आपें, सिधो मारग स्थापें; समोसरण रचिउं जांणी, वदे भरत विनांणी ॥ १७ ॥ बारे परषदा राजें, पूछें भरत ए आजे; कोइं छें तुम सारीखो, दाख्यो मरीचि नींको ॥ १८ ॥ पहिलो वासुदेव थाझें, चक-वर्त्ति मृकाए वासे; चोवीशमो एह जिनवर, वर्द्धमान निमए जयंकर ॥ १९ ॥ उलस्युं भरतनुं हैयुं जइनें मरीचिनें कहीउं; तातें पदवी ए दाखी, हरिचकी जिनपती भाषी॥ २०॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ, वंदन विधिशुंकरेय; स्तवना करतो तेम, पूत्र त्रीदंडी नहीं जेम, वांदुछुं नहीं एह मर्म ॥ २१ ॥ थारो जिनपति चरिम; इम कही पाछो ए वलीओ, गरवे मरीयचि गलीओँ॥ २२॥ ढाल—॥ २ ॥ पांडव पांच प्रगट हुआ ॥ ए देशी ॥ इक्ष्वाक कुले हुं उपन्यो, माहरे चक्रवर्ति

शांतिना थनाः

॥ ५३॥

तात जी; अहो उत्तम कुळ माहरुं, हुंपण त्रिजग विख्यात जी,० अहोउ० ॥ एआंकणी ॥ २३ ॥ अहो हैं उत्तम कुळ माहरुं, अहो मुज अव तारजी; नीच गोत्र तिहां वाधीउं, जुओ जुओ कर्म प्रचार जी,० हैं अहोउ० ॥ २४ ॥ आभरतें पोतनपुरी, त्रिपृष्ट हरि अवतार जी; महाविदेह क्षेत्र मुकापुरी, चक्री प्रियमित्र नाम जी ॥ २५ ॥ अहोउ० ॥ चरिम तीर्थंकर थायद्युं, होरों त्रिगढ ओसार जी; सुर नर सेवा सारशे, धन्य धन्य मुज अवतार जी० अहोउ० ॥ २६ ॥ रे महिमा तुं एणीपरें, एक दिनें रोग अतीव जी; मुनिजन सार को नवि करे, शिष्य वांछे निज जीव जी० अहोउ०॥ २७॥ कपिल नामें कोइ आवीओ, प्रतिबोधि निज वाणि जी; साधु समीपें दीक्षा धरुं, धर्मं छे तेणे ठाणे जी; अहोउ० ॥ २८ ॥ साधु समीपें मोकलें, नविजाएं तेह अयोगी जी; चिंतवे इम मरीचि निज मनें, दीसे छें मुज योग्य जी; अहोउ० ॥ २९ ॥ तवते वलतुं बोलीओ, तुम्ह वादेइयुं होय जी; भो भो भू धर्म ते इंहांअ छे, उत्सूत्र भाख्युं सोय जी; अहोउ०॥ ३०॥ तेणें संसार वधारीओ, सागर कोडा कोडि जी; लाख चोराशि पूरव तणुं, आयु त्रीजें भवें जोडि जी; अहोउ०॥ ३१॥ चोथें भवे स्वर्ग

पंच क० स्तवन.

11 EP 11

पांचमें, सागरदश स्थिति जाणों जी; कौशिक द्विज पंचमें भवें, लाख एंसी पूरव मान जी; अहोउ० 🖔 ॥ ३२ स्थूणां नयरीए द्विज थयो, पूरव लाख बहुत्तरि सार जी; हूओ त्रिदंडी छट्टें भवे, सातमे सोहम अवतार जी; अहोउ० ॥ ३३ ॥ अग्नीद्योत आठमें भवे, चोसिंह लाख पूर्व आयु जी; त्रिदंडी थइ विचरें वली, नवमें इशाने जाय जी; अहोउ० ॥ ३४ ॥ अग्नीमृती दशमें भवे, मंदरपुरि द्विज होय जी; छप्पन्न लाख पूरव आउखुं, त्रिदंडी थइ मरे सोय जी; अहोउ०॥ ३५॥ इग्यारमें भवें 🕏 ते थयो, सनत कुमार देवो जी,० नयरी श्वेतांबी अवतरियो, बारमें भवे द्विज हेवो जी ॥ अहोउ० ॥ ३६॥ चुम्मालीश लाख पूरव आउखुं, भारद्वीज जसु नाम जी; त्रिदंडि थइ विचरें वली, माहेंद्र तेरमें भवें ठामजी; अहोउ० ॥ ३७ ॥ राजग्रह नयरि भव चउदमें, स्थावर बाह्मण दाखी जी; लाख चोत्रीश पूरव आउखुं, त्रिदंडी लिंग ते भाखें जी; अहोउ०॥ ३८॥ अमर थयो भव पन्नरमें, सन-कुमार देवो जी; संसारभिम भव सोलमें, विश्वभूती क्षत्री होय जी, अहोउ०॥ ३९॥ ढाल—॥ ३ ॥ सरसति अमृत वरसती ॥ ए देशी ॥ विशाखभूति धारणी नो बेटो, भुजबलि

शांतिन थनाः ॥ ५४ ॥ कुठस मूल समेटिनुं; संभृति ग्रह तिणें भेट्यो ॥ ४० ॥ सहस वरस तिहां चारित्र पाली, लेइ दीक्षा 🖔 आतम् अजुआली; तपकरी काया गाली ॥ ४१ ॥ एक दिन गाय धसी सीयाली, पडिओ भूमि तस भाइ भाली; तेहर्युं बल संभाली ॥ ४२ ॥ गारवेंरीस चढि वीकराली, सिंग धरी आकारो स्छाली; तसबल शंका टाली ॥ ४३ ॥ तिहां अणसणें निआणुं कीधुं, तप वेची बल मांगी लीधुं उर्द्ध पीयाणुं कीधुं ॥ ४४ ॥ सत्तरमें भवें शुक्रें सुरवर च्यवी, अवतरीओ तिहां पोतनपुर; प्रजापती मृगावती क्रुयर ॥ ४५ ॥ चोराशी लाख वरषानुं आयु, सात सुपन सुचित जायो; त्रिपृष्ट वासुदेव गायो ॥ ४६ ॥ ओगणीशमें भवे सातमी नरकें, तेत्रीश सागर आयु अभंगी,० भोगवियुं ततु संगें ॥ ४७ ॥ विसमें भवे सिंह हिंसा करतो, एकवीसमें चोथी नरक फिरंतो; विचे भव घणां भमंतो ॥ ४८ ॥ बाविशमें भवि सरल स्वभावी, सुख भोगवतां यश गवरावी; पुण्यें शुभ मतिआवी ॥ ४९॥ त्रेवीशर्मे भवे मूकापुरीए, धनंजयधारणीनां कुखे; नर अवतरीओ सुखें ॥ ५०॥ तिहां चक्रव-र्तिनी पदवी साधी, पोटिलाचार्यशुं शुभ मति वाधी; शुभ तप किरिया साधी ॥ ५१ ॥ क्रोड वरस

पंच क० स्तवन.

11 48 11

दिक्षान् मान, चोराशी लाख पूरव प्रमाण; आउखुं पूरुं जाणि ॥ ५२ ॥ चोविशमें भवें शुक्र सुरवर, सुख भोगवीयां सत्तर सागर; तिहांथी चवीओ अमर ॥ ५३ ॥

ढाल—॥ ४॥ राग मल्हारा ॥ लालनी ॥ ए देशी ॥ आभरतें छत्रिका पुरी, जितशत्रु विजया नारि; मेरे लाल ॥ पचवीसमें भवे उपनो, नंदन नामें उदार; मेरे लाल ॥ ५४ ॥ तीर्थंकर पद बांधीउं,॥ ए आंकणी ॥ लेइ दीक्षा सुविचार, मेरे लाल; वीश स्थानक तप आदयों, हूओ तिहां जय-जय कार, मेरे लाल; तीर्थंकर० ॥ ५५ ॥ राज्य त्यजी दीक्षा लीएं, पोटिला चारज पास, मेरेलाल; मास खमण पारणुं करे, अभिग्रह वंत उछास, मेरेलाल; तीर्थंकर० ॥ ५६ ॥ लाख वरस इम तप कर्यों, आलस नहींअ लगार, मेरे लाल ॥ परिघल धर्म्मं पोतें कर्यों, निकाचित जिनपद सार, मेरे लाल०॥ ५७॥ तीर्थंकर०॥ मास खमण संख्या कडुं, लाख इग्यार एंसी सहस, मेरे लाल०॥ छसें पीसतालीश उपरें, पंचिद्वसें अधिक कहेत, मेरे लाल० तीर्थंकर०॥ ५८॥ पचवीश लाख पूर्व आउखुं, मास संछेखना कीघ, मेरे छाछ०॥ खमी खमावीते चव्यां, दशमें खर्ग फल लीघ,

शां. १०

शांतिना थना.

11 44 11

3 11

मेरे लाल॰ तीर्थंकर॰ ॥ ५९ ॥ पुफोत्तरा वतंस कें, विमाने सागर वीश, मेरे लाल॰ ॥ सुर चवीओ सुख भोगवी, हुआ ते भव छबीस, मेरे लाल॰ तीर्थंकर॰ ॥ ६० ॥ ढाल—॥ ५ ॥ भमारुलीनी ॥ ए देशी ॥ सत्तावीशमो भव सांभलो तो, भमरूली, रुअडं माह-

णकुंड गामतो; ऋषभदत्त ब्राह्मण वसे तो, भमरूली, देवानंदा धारणी नाम तो ॥ ६१ ॥ कर्म रह्यं लव लेश हजी तो, भमरूली, मरीचिना भवनुं जेह तो; प्राणत कल्प थकी च्यवी तो, भमरूली, द्विजकुलें अवतरिया तेह तो ॥ ६२ ॥ चउद सुपन माता लहे तो, भमरुली, आणंद होय रे बहुत तो इंद्रे अविध ए जोइउं तो, भमरुली, एह अछेरा भूत तो ॥ ६३ ॥ ब्यासी दिन तिहां कणे रह्यां तो, भमरुली, इंद्र आदेशी देवतो; सीखारथ त्रिशला कूखे तो, भमरुली, गर्भ पालट्यो ततखेव तो ॥ ६४ ॥ चउद सुपन त्रिशला लहे तो, भमरुली, शुभ दोहलें जण्यो जाम तो; जन्म महोच्छव तिहां करे तो, भमरुली, इंद्र इंद्राणी ताम तो ॥ ६५ ॥ वर्द्धमान तस नाम दीउं तो, भमरुली, देव दीयुं महावीरतो; हरखेरुयुं परणावीयां तो, भमरुली, सुख विलसें घरे वीर तो ॥ ६६ ॥ माय-

पंच क० स्तवनः

11 44 1

बाप सुरलोंके गया तो, भमरुली, जिन साधें निज काम तो; लोकांतिक सुर तिहां कहे तो, भम-रुली, लिओ दीक्षा महाराज तो ॥ ६७ ॥ वरसी दान देइ करी तो, भमरुली, लीधुं संयम भार तो; एकाकी जिन विहार करेतो, भमरुली, उपसर्ग नो नहीं पार तो ॥ ६८ ॥ तप चउविहार घणां-कर्यां तो, भमरुली, एक छमासी विचारतो; बीजो छमासी कर्यों तो, भमरुली, पंचदिन उण उदार तो 🗓 ॥ ६९ ॥ नव ते चउमासी कर्यों तो, भमरुली, वे त्रण मासी जांण तो; अढीमास वे वार कर्यां तो, भूमरुली, बेमासी छ वार वखाणि तो ॥ ७० ॥ दोढमास बे वार कस्यां तो, भमरुली, मासखमण कीयां बार तो; बहोंतेर पास खमण कर्यां तो, भमरुली, छठ बसें ओगणत्रीश सार तो ॥ ७१॥ बारे वरसे पारणां तो भमरुली, त्रणसें ओगण पंचारातों; निद्रा वे घडीनी करे तो, भमरुली, बेठा नहीं बारवरस तो ॥ ७२ ॥ कर्म खपावी केवल लह्युं तो, भमरुली, त्रिगडे परषदा बार तो,० गण-धर इंग्यारे स्थापीया तो, भमरुली, जगे हुओ जय जय कार तो ॥ ७३ चउद सहस हुआ साधु भलां तो, भमरुली, साधवी सहस छत्रीश तो ॥ सातसें वैकिय लुब्धि धरा तो, भमरुली, च्यारसें

शांतिना- कि वादी इश तो ॥ ७४ ॥ अवधिज्ञानी तेरसयां तो, भमरुली, सातसें केवली जोय तो; मणपज्जव धर कि थना. पांचशे तो, भमरुली, चउद पूरवी त्रणसें होय तो ॥ ७५ ॥ दोढ लाख नव सहस वली तो, भम- स्तवन- रुली, श्रावक समिकत धारतो;॥त्रिण लाख अढार सहस वलीतो, भमरुली० श्राविका ए परिवार तो॥७६॥ ब्राह्मण मात पिता हुआ तो, भमरुळी, मोकल्यां मुक्ति मोझार तो;॥ सुपुत्र आवी इम करे तो, भमरुळी, सेवकनी करो सार तो ॥ ७७ ॥ त्रीसला देवी सुरवर थयां तो, भमरुली; ॥ सिधारथ थया देव तो, त्रीश वरस ग्रहवासें वस्या तो, भमरुली, बार वरस छद्मस्थ तो;॥ त्रीश वरस केवल धर्युं तो, भम-रुली, बहोंतेर वरस समस्त तो ॥ ७८ ॥ इणि परें पाली आउखुं तो, भमरुली, दिन दीवाली जेह तो;॥ 🕌 महानंद पद पामीयां तो, भमरुळी, समरुं हुं नित्य तेह तो ॥ ७९ ॥ संवत् सोळसें बासठो तो, भमरुळी, विजया दशमी उदार तो; छाळ विजय भक्तें कहे तो, भमरुळी, वीरजिन भव जळ तारे तो ॥ ८० ॥ है । ढाळ—॥ ६ ॥ आद्र जीवक्षमा ग्रण आदर॥ ए देशी ॥ समवसरणें सुखसंपत्ति मिळें, फळें मनोरथ कोडि जी; ॥ रोग वियोग सवि टलें, नहिं शरीरे खोडि जी ॥ ८१ ॥ आद्रीयाणा पुर मंडणो,

॥ए आंकणी, ॥ खंडाणा पापनां पूरो जी; जे भवियण सेवा करे, सुख पामें भर पूरोजी॥ आद्रीयाणा, ॥ ८२ ॥ मूरित मोहन वेलडी, दीठें अति आणंदो जी; सिंहासण सोहे सदा, गगने जैसा रवि— चंदो जी ॥ आद्रीयाणा ॥ ८३ ॥ प्रतिमा दीठे सुख सदा, प्रणमुं जोडी हाथो जी; त्रण प्रदक्षिणा देइ करी, माग्रं मुक्तिनो साथो जी ॥ आद्रीयाणा ॥ ८४ ॥ श्रावकें अति उद्यम करी, कीधो जिन प्रासादो जी; काढीयो पाप ठेली करी, पुण्ये जगे जस वाधो जी ॥ आद्रीयाणा, ॥ ८५ ॥ कलश—श्रीवीर पाटे परंपरा गते, आणंद विमल सूरीसरो; श्री विजय दान सूरि तास पाटे, हीर विजय सूरि गणधरो; श्रीविजयसेन सूरि तास पाटें, विजयदेव सूरि हित धरो; कल्याण विजय प्रविद्या जय करो ॥ ८६ ॥

" इति श्री वर्द्धमान जिन सत्तावीश भव स्तवनम् सम्पूर्णम् "

" अथ श्री सौभाग्य पश्चमी स्तवन "

ढाल—॥ १ ॥ इंडर आंबा आंबलीरे ॥ ए देशी ॥ श्री ग्रंह चरणे नमी करी रें, प्रणमि सर-

शांतिना सित पायः पश्चमी तप विधिद्युं करो रे, निर्मल ज्ञान उपायः भविक जन कीजें ए तप सार, जन्म सफल निरधार, लहीएं सुख श्रीकार, भ०॥ ए आंकणी॥ १॥ समवसरण देवे रच्युं रे, बेठां नेम जिणंद; बारे परखदा आगलें रे, भाखे श्री जिन चंद; भ०॥ २॥ ज्ञान वडो संसारमां रे, शिव पुरनो दातार; ज्ञान रुप दिवो कह्यो रे, प्रगट्यो तेज अपार,० भ०॥ ३॥ ज्ञान लोचन जब निरखे रे, तव देखे लोक अलोक; पशुअ परें ते मानवी रे,ज्ञान वीना सवि फोक,० भ०॥ ४ ॥ ज्ञानी श्वासो श्वासमां रे, कर्म करे जे नाश; नारकीनां ते जीवने रे, कोडि वरस विलास,० भ०॥ ५॥ आराधक अधिको कह्यो रे, भगवति सूत्र मोझार; क्रीयावंत ते आगलें रे, ज्ञानी सकल सिरदार,० भ० ॥६॥ कष्ट किया तो सह करें रे, तेहथी न कोइ सिध,० ज्ञानिकया जब दो मिलें रे, तब पामे बहु ऋद्ध; भ०॥ ७॥ कोणे आराधी एह वीरे, कोने फली तत्काल; तेह उपर तुमें सांभलो रे, एहनी कथा रसाल,० भ०॥ ८॥ जंबूद्वीप सोहामणो रे, भरत क्षेत्र अभीराम; ॥ पद्मपुर नगरें शोभंतो रे; अजीतसेन राय नाम,० भ०॥ ९॥ शील सौभाग्यें आगली रे, यशोमती राणी नारी;॥ वरदत्त

बेटो तेहनो रे, मूरखमां शिरदार,० भ०॥ १०॥ मातिपता मन रंगइयुं रे, मुकें अध्यापक पास; ॥ पण तेहनें निव आवडे रें, विद्या विनय विद्धास,० भ०॥ ११॥ जिम जिम यौवन जागतो रे, तिम तिम तनु बहु रोग; ॥ कोढ थयो विल तेहनें रे, विषमा कर्मनां भोग,० भ०॥ १२॥ आदरीएं आदर करी रें, सौभाग्य पंचमी सार; सुख सघलां सहेजे मिलें रे, पामे ज्ञान अपार,० भ०॥ १३॥

दुहा—तिलकपूरे शेठ वसे तिहां, सिंहदास ग्रणवंतः जैनधर्म करतो लहें, कंचन कोडि अनंत ॥ १४ ॥ कपूर तिलका सुंदरी, चाले कुल आचारः तेहनी कुखें अवतरी, ग्रणमंजरी वर नारि ॥१५॥ मृगी थइ ते बालिका, वचन वदे निहं एकः जिम जिम अति औषध करें, तिम तिम तनुबहु रोग ॥१६॥ सोल वरस तेहने थयां, परणे निहं कुमारिः एहने कोइ वंछे नहीं, खजनादिक परिवार॥१७॥

ढाल—॥२॥ बन्यो रे कुयर जिरो सेहरो ॥ ए देशी ॥ एहवे आवी समोसर्यां, श्रीवीजयसेन सूरींद रे; सुंदरि; ज्ञानी गुरुने वांदवा, पुत्र सहित भुप बृंद रे, सुंदरि ॥ १८ ॥ सहग्रुरु दीएदेशना रे, सांभलो चतुर सुजाण रे—सुंदरि; ज्ञान भणो भवि भावशुं,जिम लहो कोडि कल्याण रे—सुं०; सहग्रुरु ॥ए आंकणी॥ शांतिना थनाः

II 46 II

॥ १९ ॥ सिंहदास सुत आपणो रे, आविनम्यो कर जोडि रे; सुं० ॥ विधिश्युं वांदि देशनारे, सांभ-लवा कोडि रे; सुं० सहग्रह ॥ २० ॥ ज्ञान आशातन जे करे, ते लहे दुःख अनेक रे; सुं०; वाचा पण निव उपजें, बाल परे विवेक रे; सुं० सहग्रह ॥ २१ ॥ इह भव पग पग दुःख लहें, दुष्ट कुष्टादिक रोग रे; सुं०; परभवे पुत्र न संपजे, कलत्रादिक वियोग रे; सुं० सहग्रह ॥२२॥ सिंहदास पुळे हवें, निज बेटीनी वात रे; सुं०; श्येकर्मे रोग उपन्यो, ते कहो सकल अवदात रे; सुं० सहग्रह ॥२३॥ ग्रह कहे शेठजी सांभलो, पूर्व भव विरतं रे; सुं०; धातकीखंड मध्य भरतमां, खेटक नगर निरखंत रे; सुं० सहग्रुरु ॥२४॥ जिनदेव वणिक वसे तिहां, सुंदरी नामें नार रे; सुं०; पांच बेटा ग्रण आगला, चार सुता मनो हार रे सुं० सहग्रह ॥ २५ ॥ एक दिन भणवा मुकीयां, द्वंस धरी मन मांहि रे सुं०; ॥ चपलाइ करे चउगुणी, नभणे हर्ष उच्छांहि रे; सुं० सहग्ररु॥२६॥ शिखामण पंड्यो दीएं, आवी ऋए माता पास रे; सुं०; ॥ कोप करी वलतु कहें, बेठां रहो घर वास रे; सुं० सहग्रह ॥२७॥ चुला मांहि नांखीयां, पुस्तक पाटी सोय रे; सुं०; ॥ रीसें धम धमती कहें, आखर मरसें सहु कोय रे; सुं०॥ २८॥ कंथ कहे नारि प्रत्ये, को न दीए

पंच क० स्तवन•

11 45 11

कन्या दान रे; सुं०॥मूर्ख ग्रण घहेनहीं, नलहे आदर मान रे; सुं० सहग्रह ॥२९॥ बिहुंजण मांहि बोलतां, कोधवशे वीकराल रे, सुं० ॥ जिनदेवें मार्थं मुशलुं, मरण पामि तत्काल रे, सुं० सहग्रह ॥३०॥ तेह मरी प्रणमंजरी,अवतरी ताहरे गेहरे; सुं० ॥ जातिसारण उपन्युं,प्रगटी पुन्यनी गेह रे; सुं० सहग्रह ॥३१॥ साचुं साचुं सहु कहें,ज्ञान भणो ग्रण खाण रे;सुं०॥ तपनो जो उद्यम करो,तो लहो केवल नाण रे; सुं० सहग्रह॥३२॥

दुहा—पांसठ महीना कीजीए, मासमास उपवास; पोथी स्थापो आगलें, स्वस्तिक पुरो सास ॥ ३३॥ पांच पांच फल मुकीएं, पांच जातीनां धान्य; पांच वाटी दिवो करो, पांच ढोको पक्वान्न ॥ ३४॥ कुसुम भलां आणी करी, धूप पूजा करी सार; नमो नाणस्स गुणणुं गणो, उत्तर दिशी एक हजार ॥ ३५॥ भक्ती करे साहमी तणी, शक्ति तणे अनुसार; जिनवर जुगति पूजतां, पामे मोक्ष द्वार ॥ ३६॥ बार उपवास न करी शकें, वरस मांहिं दिन एक; जाव जिव आराहिएं, आणि परम विवेक ॥ ३७॥

ढाल—॥ ३ ॥ चुडले यौवन झल रह्यो ॥ ए देशी ॥ राजन मुनीवर दीएं धर्म देशना,सुणीएं देइ कान

शांतिन थना ॥रा०;॥ आलस मुकी आद्रों,अजुआलो निज ज्ञान ॥ रा० मुनीवर ॥ए आंकणी॥३८॥राय पुछें हरखे करी, सांभलो ग्रुरु गुणवंत॥रा०॥वरद्त्ते कर्म किञ्चां कर्यां,कोढे अंग गलंत ॥रा०मुनीवर ॥३९॥ भविक जिव हीत कारणें, ग्रुरु कहे मधुरी वाणी ॥रा०;॥ पूर्व भवनी वारता,सांभलो चतुर सुजाण ॥ रा० मुनीवर ॥४०॥ जंबु-द्वीप भरत क्षेत्रमां, श्रीपुर नगर विशाल ॥ रा०; ॥वसुशेठनां सुत बे भला, वसुसार वसुदेव निहाल ॥ रा० मुनीवर ॥४१॥ वन रमतां ग्रुरु वांदीयां,श्रीमुनि सुंद्र सुर ॥रा०;॥ सांभलतां संजम लीएं,तप करे आनं-द्वपूर ॥ रा० मुनीवर ॥ ४२ ॥ सकल कला ग्रुण आगलो,लघुभाइ अति सार ॥रा०;॥ वसुदेवने कीधो पाटवी, पंचसयां सिरदार॥ रा० मुनीवर॥४३॥ पग पग पुछें तेहनें, सूत्र अर्थ निरधार॥ रा०; पलक एक उंघे नहीं, तव चिंते अणगार ॥ रा० मुनीवर ॥४४॥ पाप लाग्युं मुज कीहां थकी,एवडो स्यो कंठ शोष ॥ रा०; मुंढ मुरख संसारमां, काया करे निज पोष ॥ रा० मुनीवर ॥४५॥ बारदिवस मौनि रह्यों, प्रगट थयो तव पाप रा॰; ॥ जेहवां कर्म जे को करे,ते छहे सघछां आप ॥ रा॰ मुनीवर ॥४६॥ तुज कुळें आवि अवतयों,दीपाव्यो तुज वंश ॥ रा॰; इद्धभाइ मरी उपन्यो, मान सरोवर हंस ॥ रा॰ मुनीवर ॥४७॥ सयछ कथा सुणतां छद्यो,

पंच क० स्तवन.

11 49 11

जाती स्मरण बाल ॥रा०;॥ धन्य धन्य ग्रह ज्ञानि मिल्यां,रोग थयां आल माल ॥रा० मुनीवर ॥४८॥ विधि साथे पंचिम करे, राजादिक परिवार ॥ रा०; ॥रोग गयां सिव तहनां,जिम जाएं तडकें ठार ॥ रा० मुनीवर ॥ ४९ ॥ स्वयंवर मंडप मांडीओ, परणी एक हजार ॥ रा०; ॥ हरख्यो वरदत्त इम कहें, जैन धर्म जगसार ॥ रा० मुनीवर ॥५०॥ राज्य स्थापि निज पुत्रने, साधें शिवपुर साथ ॥ रा० ॥ अजितसेन चारित्र लीएं, साचां श्री ग्रह हाथ ॥ रा० ॥ ५१ ॥ सुख विलसें संसारनां, वर्तावे निज आण ॥ रा;० ॥ पुत्र जन्म एहवें थयो, उग्यो अभिनव भाण ॥ रा० मुनीवर ॥ ५२ ॥

दुहा—ग्रुणमंजरी सुंदर भएं, परणी सा जिनचंद; चारित्र साधी नीर्मछं, पामे वैजयंत सुरिंद हैं। ५३॥ वरदत्त मनमां चींतवी, आपे सुतनें राज; हवे हुं संजम आद्रुं, साधुं आतम काज॥ ५४॥ ६३॥ अशुभ ध्यांन दूरें करी, धरतो जिनवर ध्यान; काल धर्म पामी उपन्यो, पुष्कलावती विजय प्रधान॥५५॥

ढाल—॥ ४ ॥ सिहयां हे पिउ चालीओ ॥ ए देशी ॥ सौभाग्य पश्चमी आदरो, जिमपामो हें हैं सुख सघलां वडवीर तो; चोथी करी शुदी पंचमी, व्रतथरबुं हें सुइं सुबुं धीरतो ॥ ५६ ॥ सौ० ॥

शांतिन थनाः ए आंकणी ॥ त्रण काल देव वांदीएं, कीजें दीजे हो ग्रुरुनें बहु मान तो; पिडक्रमणां दोय वारनां, जिम व्यापें हो उत्तम ग्रण ज्ञान तो; सौ० ॥ ५७ ॥ नयरी पुंडरी गणी सोहती, विराजे हो अमरिंन भूपाल तो; तस घरणी शीलें सती, ग्रंणवती कुखे हो अवतरीओ बालतो; सौ० ॥ ५८ ॥ सजन संतोषी सांमटां, नाम स्थापें हो सूरसेन अभिराम तो; चंदकला जिम वाधती, तीम साधे हो वाधे निज नाम तो; सौ० ॥ ५९ ॥ यौवन वय जाणी पीता, सो कन्या हें परणावी सार तो; राज देइ निज पुत्रनें, अमरसेन पोहतो हैं परम लोक मोझारतो; सौ०॥ ६०॥ सीमंधर आव्यां सांभली, वांदवाने हैं आवे तीहां भूपतो; ज्ञान आराधन देशना, देखांडे हें वरदत्त खरूप तो; सौ०॥ ६१॥ सूरसेन हवे वीनवें, प्रभु प्रकाशो हें ते कुण वरदत्त तो; सकल वात मांडी कही, तप मांड्यो हें कीजें रंग रत्ततो; सौ०॥ ६२॥ जीनवर वांदी आवीओ, संवेगे हें मुके घर भारतो; सिंहतणी परें आदरी, जिणें लहीएं हें भवजल नो पारतो; सौ०॥ ६३॥ पंच महाव्रत आदरो, सहस वरस हें पांमे केवल ज्ञान तो;॥ अविचल सुख एणें लह्यां, निसुणि हें आराहो ज्ञान तो; सौ०॥ ६४॥

पंच क० स्तवन.

11 60 11

जंबूद्वीप मांहि वर्ली, वीजय रमणी हे नगरी चोसाल तो; अमरसेन अमरावती, पुण्ये प्रगट्यो है आव्यो ए बाल तो; सौ० ॥ ६५ ॥ गुणमंजरी जीव उपन्यो, राजानें हे हुओ ओच्छव रंगतो; राज करे नीज तातनुं, प्रेमे परणे हे कन्या सुख संग तो; सौ० ॥ ६६ ॥ एक दीन मनमां चिंतवे, हुं तो सार्धुं हो निज आतम काज तो; च्यार सहस बेटा थयां, पाट आपे हो निज सुत शिरताज तो; सौ० ॥ ६७ ॥ सिंह तणी परे नीकलें, लाख पूरव हो संयम शिरताज तो; तप तपे अती आकरा, केवल पामी हो लहे शिवराज तो; सो० ॥ ६८ ॥

ढाल—॥५॥ मी ॥ देशी बजानानी राग धन्या श्री ॥तप उजमणुं इणीपरे सुणीए, वित सारुं धन खरचो जी; पंचमी दिन पामी कीजे, ज्ञानादिकनें आचरोजी; पांच प्रत सीखांतनी सारी, पाठां पांच ऋमाल जी; खिडयो लेखण पाटी पोथी, ठवणी कवली द्यो लाल जी ॥६९॥स्नात्र महोत्सव विधीशुं कीजे, राती जगे गीत गायो जी; चैत्या दिकनी पूजा करता, जीनवरनां गुण गाओजी; गुणमंजरी वरदत्त तणी परे, कीजे त्रिकरण शुद्ध जी; ए वीध करतां थोडे काले, लहीए सघली सीद्ध जी ॥७०॥

वासकुंपी वली आपो, झरमर पांच मंगावो जी; गुरु वांदी पुस्तकनें पूजी, सामी सामिणो नोतरावो जी; गुरुने तेडी बेकर जोडी, आदरशुं वहोरावो जी; पारणुं कीजे लाहो लीजे, पांचिम तप उजमावो जी ॥ ७१ ॥ नेमि जिणेश्वर अति अलवेशर, केशर वर सम कायाजी; ए उपदेश सुणीनें समज्या, ज्ञान लोचन देखाया जी; वरदत्त गणधर आगें कहीओ, लहीओ भवीजन प्राणी जी; सौभाग्य पंचमी तप आराहो, निसुणी जिनवर वाणी जी ॥ ७२ ॥ देह निरोग सोभागी थाओ, पाओ रंग रसाला जी; मूर्ख पणु दुरे छांडो, मांडो ज्ञान विशाला जी; सौभाग्य पंचमी जे नर करशें, ते वर-स्यें मंगल मालाजी; गजरथ घोडा सुंदिर मंदिर, मणिमय झाक झमाला जी ॥ ७३ ॥ संवत् सत्तर अठावन्ना मांहि, सिद्ध पुर रही चोमासुं जी; कार्तिकशुदी पांचिम दीने गायो, सफल फली मुज आशजी; श्री जिनशासन मांहि राजे, श्री विजयप्रभ सुरिंदाजी, श्री विजयरब सूरीश्वर राजे, प्रणमें प्रमानंदानी ॥ ७२ ॥ परमानंदाजी ॥ ७४ ॥

कलश—इम नेमि जिनवर सयल सुखकर उपदिशे भवि हितकरो, तप गच्छ नायक सुखदायक

लायक मांहि पुरंदरो; श्रीलाल कुशल विबुध सुलकर वीर कुशल पंडित् वरो, सौभाग्य कुशल सुग्रह सेवक केशर कुशल जय करो ॥ ७५ ॥

" इति श्री सौभाग्य पश्चमी स्तवनम् सम्पूर्णम् "

" अथ श्री ज्ञान पश्चमी स्तवनम् "

ढाल—पहेली ॥ १ ॥ देशी रिसयानी ॥ प्रणमी पास जिनेश्वर प्रेमद्युं, आणी आणंद अंग चतुर नर; पंचमी तप मिहमा महील अति घणो, कहेशुं सुणज्यो रे रंग ॥ चतुरनर; भाव भलें पंचमी तप कीजीए ॥ए आंकणी॥१॥ इम उपिद्शे हो श्रीनेमिसहं, पंचमी करज्यो रे तेम चतुरनर; गुणमंजरी वर-द्त तेणी परे, आराधे फल जेम, चतु० भावभलें ॥२॥ जंबुद्दीपे रे भरत मनोहहं, नयर पद्मपुर खास चतु०; राजा अजित सेनाभिध तिहां कणे,राणि यशोमित तास,चतु०भावभलें ॥३॥ वरदत्त नामे हो कुंअर तेहनो, कोढे व्यापी रे देह, चतु०; ॥ ज्ञान विराधन कर्म जे बांधी उं, उद्ये आव्युं रे तेह, चतु० भावभलें ॥४॥ तिण नयरे सिंहदास गृही वसे, कपूरतिलका तस नारि; चतु०; ॥ तसबेटी गुणमंजरी रोगणी, वचनें मुंगी

शांतिनाः थनाः ॥ ६२ ॥

असार, चतु॰; भावभलें ॥ ५ ॥ चउनाणी विजयसेन सूरीसरु, आव्या तिण पुर जाम, चतु॰; ॥ राजा शेठ प्रमुख वंदन गया, सांभली देशना ताम, चतु॰; भावभलें ॥ ६ ॥ पूछें तिहां सिंहदास गुरु प्रत्यें, उपन्यो पूत्रीनें रोग; चतु॰; ॥ थइ मुंगी वली परणे को निहं, ए शाकर्मनां भोग, चतु॰ भावभलें ॥ ७ ॥ गुरु कहे पूर्वभव तुमे सांभलो, खेटक नयर वसंत, चतु॰; ॥ साह जिन देव छे व्यवहारिओ, सुंदरी घरणीनो कंत चतु॰ भावभलें ॥ ८ ॥ बेटा पांच थयां छे तेहनें, पूत्री अति भली पूर्व च्यार चतु॰; ॥ भणवा मुंक्यां पांचे पुत्रनें, पण ते चपल अपार चतु॰ भावभलें ॥ ९ ॥

ढाल—॥ बीजी ॥ २ ॥ सीरोहीनो सेलो हो के उपर योध पुरी ॥ ए देशी ॥ ते सुत पांचे हो के पठन करे निहं, रांमित करतां होके दिन जाये वही; शीखवे पंडित हो के छात्रनें रीस करी, आवी मातनें होके कहे सुत रुदन करी ॥ १० ॥ माता अध्यारु हो के अमनें मारघणो, काम अमारुं हो के निहं भणवा तणुं; संखणी माता हो के सुतनें शिख दीयें, भणवा मत जाओ हो के शुंकंठ सोसवे ॥ ११ ॥ तेडवा तुमनें हो के अध्यारु आवें, तो तस हणज्यों होके पुनरिप जिम नावे; शीख देइ

पंच क० स्तवन•

ા દર ા

इम हो के सुंद्रीए तिहां, पाटी पोथी हो के अग्निमां नांखी दीयां ॥ १२ ॥ ते वात सुणीनें हो के जिनदेव इस्युं बोले, फिटरे सुंद्री हो के काम कर्युं किस्युं; मूर्ख राख्यां हो के ए सर्वे पुत्र तुमे, नारी बोली हो के निवजाणुं अमे ॥ १३ ॥ मूर्ख मोटा हो के पुत्र थयां ज्यारें, नदीए कन्या हो के कोइ तेहनें त्यारें; कंत कहे सुणज्यो हो के ए करणी तुम तणी, वयण न मान्यां हो के ते पहेलां अमतणां ॥ १४ ॥ एम सूणीनें होके सुंद्री कोधे चढी, प्रीतम साथे हो के प्रेमदा अतिशें वढी; कंते मारी हो के तिहांथी काल करी, ए तुज बेटी होके थइ गुणमंजरी, ॥ १५ ॥ पूर्वभव इणे होके ज्ञान विराधिउं, पुस्तक बाली हो के कर्म जे बांधियुं; उदयें आव्युं हो के देहे रोग थयो, वचने मुंगी हो के एफल तास लहा। ॥ १६ ॥

ढाल—॥ त्रीजी ॥ ललनानी देशी ॥ नीज पूर्व भव सांभली, गुणमंजरी पण त्यांहि ललना; पूर् जाति समरण पामीउं, गुरुने कहे उत्छांह ललना; भविका ज्ञान अभ्यासियें ॥ ए आंकणी ॥ १७ ॥ ज्ञान भल्लुं गुरुजी तणुं, गुणमंजरी कहे एम ललना; ॥ शेठ पुछे गुरुने तिहां, रोग जाए कही केम

शांतिना है | ठलना; भविका; ॥ १८ ॥ युरु कहे हवे विधि सांभलो, जे कह्यो शास्त्र मोझार ललना; शुदी पंचमी दिने, पुस्तक आगल सार ललना; भविका; ॥ १९ ॥ दीवो पंच दीवेट तणो, कीजिए स्रतिक पास छछना; नमो नाणस्स गणणु गणो, चउवीहार उपवास छछना; भविका; ॥ २० । पडिक्रमणां दोय किजिए, देव वंदन त्रण वार छछना; पंच वरस पंच मासनी, कीजीए पंचमी सार छछना; भविका; ॥ २१ ॥ हवे उजमणा ने कारणे, सांभछो विधिनो प्रपंच छछना; पुस्तक आ-गल मुकवां, सघलां वानां पंच ललनाः भविकाः ॥ २२ ॥ पुस्तक ठवणी पुंजणी, नवकार वाली प्रत ललना; लेखण खडीयां दावडा, पाटी कवली संयुक्त ललना; भविका; ॥ २३॥ धान्य फलादिक ढोकिए, कीजीए ज्ञाननी भक्ति ललना; पूस्तकनी पूजा करो, भावर्युं जेहवी शक्ति ललना; भविका; ॥ २४ ॥ ग्रुरु वाणी इम सांभली, पंचमी कीधी तेह ललना; ग्रुणमंजरी मुंगी टली, निरोगी थइ देह ललनाः भविकाः ॥ २५॥

ढाल—॥चोथी॥ यादवराय जइ रह्यो गढगीरनार ॥ए देशी॥ राजा पुछे साधुने रे, वरदत्त कुमरने अंग;

कोढ रोग ए, किम थयो रे, मुज भाखो भगवंत; सद् गुरुजी धन्य तुमारुं ज्ञान ॥ ए आंकणी ॥ ॥ २६ ॥ गुरु कहे जंबु द्वीपमां रे, भरते श्रीपुर गाम;वसुनामें व्यवहारीओ रे,दोय पुत्र अभिराम; सद् गुरुजी; ॥ २७ ॥ वसुसारनें वसुदेवजी रे, दीक्षा लीए गुरु पास; लघु बंधव वसु देवनें रे, पदवी दीए गुरु तास; सद्गुरुजी ॥ २८ ॥ दोय सहस अणगारने रे, आचार्य वसुदेव; शास्त्र भणावे खां-तद्युं रे, नहीं आलस नीत्य मेव; सद्गुगुजी, ॥ २९ ॥ एक दिन सूरी संथारिया रे, पूछे पद एक साध; अर्थ कहे ग्रुरु तहनें रे, वली आव्यो बीजो साध; सद्गुरुजी; ॥ ३० ॥ इम बहु मुनी पद पुछवा रे, एक आवे एक जाय; आचार्य ने उंघमां रे, थाए अति अंतराय; सद्गुरुजी; ॥ ३१ ॥ सूरि तिहां इम चिंतवे रे, कीहां लाग्युं मुज पाप; जो में शास्त्र अभ्यासीयां रे, तो एटलो संताप; सद्-गुरुजी; ॥ ३२ ॥ पद न कहुं हवे केहनें रे, संघछुं मूकुं विसार; ज्ञान उपर इम आणीओ रे, त्रिक-भ्यानें ते मरीरे, तुज सुत ए अविवेक; सद्गुरुजी; ॥ ३४ ॥ रण क्रोध अपार; सद्गुरुजी; ॥ ३३ ॥ बार दिवस अण बोलीयां रे, अक्षर न कह्यो एक; अशुभ

शांतिना थना.

॥ ६८ ॥

ढाल—पांचमी ॥ तुमेपीतांबरपहें स्वांजी ॥ए देशी॥ ते सुणी वरद्त्रेगुरुवाणी जी,जाति स्मरण लच्छुं; पूर्व निज भव दिठो जी, जेम ग्रुरु ए कच्छुं; वरदत्त कहे तव ग्रुरुनें जी, रोग ए किम जावे; सुंद्र काया होवे जी, विद्या किम आवे ॥ ३५ ॥ भाखे ग्रुरु भले भावे जी, पंचमी तप करो; ज्ञान आराधो रंगे जी, उजमणुं करो; वरदते ते विधि किधी जी, रोग दूरे गयो; भूक्त भोगी राज्य पाली जी, अंते साधु थयो ॥ ३६ ॥ ग्रुणमंजरी परणावी जी, साह जिन चंद्रनें; सुख भोगवी पछी लीधुंजी, चारित्र शुभ मनें; ग्रुणमंजरी वरद्त्र जी, चारित्र पालीनें; विजय विमानें पहोता जी, पाप प्रणाली नें ॥३७॥ भोगवी सुर सुख तिहांजी, चवीया दोय सूरा; पाम्या जंबु विदेहेजी, मानव अवतारा; भोगवी राज्य उदाराजी, चारित्र ल्यें सारा; हुआ केवल ज्ञानीजी, पाम्या भव पारा ॥ ३८ ॥

ढाल—॥६॥छठी॥ गिरथी नदीयां उत्तरीरेलो॥ए देशी॥ जगदीश्वर नेमीश्वरे रे लोल, ए भारूयो संबंध रे सोभागीलाल; बारे पर्षदा आगलें रे लोल०, ए सघलो प्रबंध रे सोभागीलाल; नेमीश्वर जिन जयकर्ह रे लोल ॥ ए आंकणी ॥ ३९ ॥ पंचमी तप करवां भणी रे लोल०, उत्सुक थयां बहु लोक पंच क० स्तवन•

ા ६૪ ા

रे सोभागीलाल; ॥ महा पुरुषनी देशना रे लोल०,ते निव होवे फोक रे सोभागीलाल; नेमीश्वर; ॥४०॥ कार्त्तिक शुद्धि जे पंचमी रे लोल०, सौभाग्य पंचमी नाम रे सोभागीलाल;॥ सौभाग्य लहीए एहथी रे लोलं, संघले बहु सुख धाम रे सोभागीलाल; नेमीश्वर; ॥४१॥ समुद्रविजय कुल सेहरो रे लोलं, ब्रह्मचारी शिरदार रे सोभागोलाल; ॥ मोहनगारी मानिनी रे लोल०,रुडीराजुल नारीरे सोभागीलाल; नेमीश्वर;॥ ४२ ॥ ते नवि परणी सुंद्री रे छोल, पण राख्यो जेणे रंगरे सोभागीलाल; मुक्ति मोहोलमां बेहु मिल्या रे लोल, अविचल जोडी अभंग रे सोभागीलाल; नेमीश्वर; ॥ ४३ ॥ तेणे ए माहात्म्य भाखी उंरे लोल०, पंचमीनुं परगट रे सोभागीलाल; ॥ जे सांभलतां भावशुं रे लोल०, श्रीसंघने गह गहरे सोभागीलाल, नेमीश्वर;॥ ४४॥ कलश—इम प्रणत सुरनर सयल नेमीश्वरुं, तपगच्छ राजा वड दिवाजा विजयाणंद सूरीश्वरुं; तस चरण पद्म राग मधुकर गौविंद कुमर विजय तणो, तस शिष्य पंचमी स्तवन भणतां ग्रणविजय रंगे थुण्यो ॥ १ ॥ ॥ "इति श्री ज्ञान पश्चमि स्तवनम् संपूर्णम्"॥

शांतिना थनाः

६५॥

॥ "अथ श्री ज्ञान पञ्चमि स्तवनम्"॥

ढाल—॥ १ ॥ ली ॥ फागनी ॥ प्रणमी श्रीगुरु पदकज, ज्ञाननी प्राप्ति उपाय; पंचमी तप महिम कहुं, सुणजो भवि समुदाय ॥ त्रिगडे बेठा मीठा, गिरुआ वीर जिणंद; दिए उपदेश अनेकधा, नि-सुणे सुरनर वृंद ॥ १ ॥ ज्ञान लोचन सुविलासे, लोकालोक प्रकाशे; भत्ति सुक्ति दातार छे, ज्ञान परम सुख वास; ज्ञान विना पद्यु कहीए, लहीए कांइ न भेद; ज्ञान दीपक सम ज्ञांनी, सर्वा राधक भेद् ॥ २ ॥ देश आराधक क्रिया, ज्ञान विनाते अंध; ज्ञान सहित जे क्रिया, ते सोनुंने सुगंध; द-क्षिणा वर्त्तक संखह, दुधे भरीओ तेह; ज्ञानी श्वासो श्वासमां, कठिन कर्म करे छेह ॥ ३॥ ज्ञान सहित कृत किया, ते तरिया भव सिंधु; महा निशिथमां अक्षर, पंचमी ज्ञान प्रबंध; भगवती प्रमुख आगम मांहिं, ज्ञान तणां बहुमान; पहेळुं ज्ञानजो अनुभवे, क्रिया तास प्रधान ॥ ४ ॥

ढाल—॥ २ ॥जी॥ साहेलडीनी ॥ए देशी॥ पंचमी तप विधि सांभळो साहेलडी रे, जिम पांमो भवपार हैं तो; जिन गणधर मुनि उपदिशे साहेलडीरे०, भवियण ने हित कार तो ॥५॥ मृगशीर्ष माहा फाग्रण भला

पंच क० स्तवन

॥ ६५॥

साहेलडीरे॰,जेठ आषाढ वैशास तो;षट्कार्तिक वली लीजीए साहेलडीरे॰,शुभ दिन सहग्रह साख तो॥६॥ देहरे देव जुहारीए साहेलडीरे॰, गीतारथ ग्रह वंदन तो; पोथी शक्ति पूजीए साहेलडीरे॰, प्रभावना मांडी नांद तो ॥७॥ उभय टंक आवश्यक साहेलडीरे॰,देव वंदन त्रण्य वार तो; ब्रह्मचर्यने पालीए साहेलडीरे॰, आरंभ सचित्त परिहार तो॥८॥पंचमी स्तवन स्तुति कहे साहेलडीरे॰, पचरखे चोथ उपवास तो; त्रिविध च- उविध ग्रहने मुखें साहेलडीरे॰,अथवा पौषध खास तो ॥९॥ गीतारथ पासे पछी साहेलडीरे॰,मन धरे तास उपगार तो; जावजीव उत्कृष्ट पदे साहेलडीरे॰, पांच वरस पंचमास तो ॥१०॥ जघन्य पदे ए जाणीए साहेलडीरे॰, अथवा वली एक वर्ष तो; उजमणें आराधीए साहेलडीरे॰, जिम पोहचें मन हरषतो ॥१९॥

हाल—॥ ३॥ जी॥ सारद बुध दाइनी॥ निज शक्तिने सारुं—उजमणुं करो वारु, वित्त खरचो है मोटे मने—प्रतिमा भरावो चारु; ज्ञान दर्शन चारित्र त्रीकाल—त्रण्ये ज्ञान पूजे, स्थापन पूजीने—एरु पुर काउस्सग कीजे॥ १२॥ त्रूटक—पांच एकावन लोगस्स केरो पंच पंच वस्तु धोवे, पाठा प्रत केमाल लेखण वासकुंपीने जोवे; पाटी पोथी ठवणी कवली पूंजणी नोकरवाली, दोरा चावित स्थापना

शांतिना<sup>.</sup> थनाः

॥ ६६ ॥

चारिज तिम मुहपत्ती सुहाली ॥ १३ ॥ ढाल पूर्वनी-कागलने काठा खडीया वरतणां कांबी, झरमर चंद्रुआ वालाकुंची लांबी; आरती धूप धाणा-मंगल दीपतें गार, प्रासादनें प्रतिमा-तेहनां वलि शिणगार ॥ १४ ॥ त्रृटक—सार सार जे वस्तु जगतमां ज्ञान दर्शन उपगरणां, केसर सुकड अगर कपूरह वाती ध्वज अंग लूहणां; पंच अथवा सगति पंच वीसह पंच वाटीनो दीवो, फल पकवान धान्य बहु मेवा कुसुम प्रमुख बहु छेवा ॥१५॥ ढाल पूर्वनी–पूर्व अघ उत्तर–दिशि विदिशि इशान–नमो नाणस्स पद्नें–ध्याओ थइ शावधान; साह्मी वत्सल कीजे–गीतगानें जागीजे, ए करणी करतां–ज्ञाननें आरा-धीजे ॥ १६ ॥ त्रृटक—साधीजे इम शिवपद साचुं, जिम ग्रुणमंजरी वरदत्तः; लहे सौभाग्य वली ज्ञान आराध्युं करी निज निर्मल चित्तः; ते संबंध कथाथी कह्यो छह्यो वंछित काज, ज्ञान विमल ग्रुरु आण पसाये अधिक उदय होय आज ॥ १७ ॥

॥ "इति श्री ज्ञान पश्चमी स्तवनम् सम्पूर्णम्" ॥

पंच क० स्तवन.

।। इह ॥

## ॥ " अथ श्री ज्ञान पश्चमी स्तवनम्" ॥

दुहा सारद मात पसाउले, निज ग्रह चरण निमय; पंचिम तप विधिशुं भणुं, हयडे हरख धरेवि ॥ १ ॥ राजुल वर श्री नेमजी, करुणा रस भंडार; आणंद भविअण आपता, महिअल करे विहार ॥ २ ॥ द्वारावती नगरी भली, जिहां केशव नरदेव; अनुक्रमे तिहां जिन आवीयां, सुरनर करतां सेव ॥ ३ ॥ वासुदेव वसुधा पित, वंदन आवे ताम; बारह पर्षदा सांभले, देशना अति अभिराम ॥ ४ ॥ वरद्त्र गणधर हरखद्युं, पूछे तव कर जोडि; पंचिम तप महिमा घणो, कहो प्रभु मुजछे कोड ॥ ५ ॥

ढाल—॥ १॥ रांग वेलीनो॥ कहो प्रभु मुजछे कोड बहु तेरो, ए पंचमी तप नाण करवानीः विधि सघली कुणी परे, कहो जिन तिहुअण भाण॥ ६॥ वाणी अमिअ समाणी जिनकी, नीकी-परे ए जाणीः; बारह पर्षदा सदु सांभलतां, पंचिम नेमी वखाणी॥ ७॥ अजुआली पंचिम तप मांडो, छंडो दुरित मिथ्यात्वः; चोथ छट्ठे एकासणुं कीजे, लीजे प्रासुक भात॥ ८॥ ए तपनुं कीजे मास

शां. १२

उपोषण, पोषण पुण्यनुं जेह; शील धरीजे भोइं सूइजे, नीकी त्रण दिन एह ॥ ९ ॥ फूल चंगेरी भावे में भलेरी, पूज जिनवर देव; सावद्य आरंभ सहु परिहर हुं, की जे साधुनी सेव ॥ १० ॥ भणुं भणावुं ए स्तवन- पंचमी दिन, गुणे आवतुं ज्ञान; जिन गुण गाओ तप आराहो, कीजे उत्तम ध्यांन ॥ ११ ॥ पंच परिमट गुणणुं कीजे, दीजे भावे दान; साहमी साहमिणि घणुं संतोषो, पिककमणुं शुभ ध्यांन ॥१२॥ वार त्रण विधिशुं देव वंदन, तप करो पइसिट मास; पोसह पण कीजे अहोरत्तो, यथाशिक उल्लास है है ॥ १३ ॥ कोध मान माया लोभ छांडो, माडो धर्मनी वात; ए तप मनशुद्धे आराधे, ते हुए जग विख्यात ॥ १४ ॥ विकथा च्यार ते परिहरवी, धरवी जिननी आण; ए तय ज्ञान तणुं आराधन, समजी छेजो जाण ॥ १५ ॥ ढाळ—॥ २ ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके ॥ ए देशी ॥ निसुणो हवे जग ग्रुरुनी वाणी, क्षेत्री सौभाग्य पंचमी जेम वर्खाणी; आणंद आणी अतिघणोए; वरदत्त ग्रुणमंजरी चरित्त, सुणतां होवे जन्म पवित्रः आ भवे तप जेहनें फल्युं ए ॥ १६ ॥ पद्मपुरी जितसेन निरंद, यशोमती शुं करे आणंदः सुत र्रे वरदत्त तस मूरलो एः मुखें अक्षर एक न चडे तास, कोढे करी विणद्धं वपु जासः ज्ञान विराधना इम

करे ए ॥ १७ ॥ तिणे पुरे सिंहदास व्यवहारी, कपूरतिलका तस धर नारि; मूंगी गुणमंजरी सुताए; कर्मवशे सा रोगेपूरी, तेणे वंद्या श्री विजयसेन सूरि; राजा वली व्यवहारिए ए ॥१८ ॥ निज निज पुत्रपुत्री दुःख कारण, कहो गुणवंत गुरु छो चित्तठारण; प्राप किस्युं एणे आचरियुंए; गुरु कहे ज्ञान आशातना पाप, आशातना ना ए संताप; मकरो ज्ञान आशातना ए ॥ १९ ॥ वरदे च हत गच्छाधीश, पूर्व भव वसुदेव सुरीश; ज्ञान आशातना तिहां करी ए; तेहज कर्म तणां ए भोग, मूर्ख पणुं अने कुष्ट रोग; हवेसुणो गुणमंजरी कथा ए ॥ २० ॥ पूर्व भव जिनदेव घरणी, सुंदरिनामें करे शुभ करणी; पुत्र तस पंच पंडवाडाए; भणतां तस कीधो अंतराय, पुस्तक बाल्युं वसुदेव माय; कहे मूखे मूर्ख पणुं भहुंए ॥ २१ ॥ गुणमंजरि ए इम दुःख पामी, हवेछुटे किम दुःख सामि; तिहांगुरु पंचमी उपदेशे ए; मासें जो उपवास नथाय, करे कार्त्तिकशुद पंचमी भाय; नमो नाणस्स सहस वे गुणे ए ॥ २२ ॥ ए उपवास करे चउविहार, पूर्व विधि पंचिम तपसार; इम करतां सही सुख मिलेए; गुरु मुख तेणे पंचमि व्रतलीधुं,ज्ञान आराधन इयुंपरे कीधुं; सिधुं वंछित वे तणुंए॥ २३॥ विधिशुं 🥂 शांतिना थनाः

॥ ६८ ॥

जे पंचमी आराहे, एहनी परे ते सुखिआ थाय; छेवटे सिद्धिवधु वरेए; वरदत्त गुणमंजिर गया रोग, पुण्य पसाये पूरा भोग; पाम्युं ज्ञान तेणे परगडु ए॥ २४॥ ढाळ—॥ ३॥ कनक कमल पगलां ठवे ए॥ ए देशी॥ पंचिम तप जगमां वडु ए, जाणी करो भिवलोक; होये सुख संपदा ए; मेंरु महीधर जग वडु ए, तिम ए तप जग माहिं; उच्छाहे आदरो ए॥ २५॥ रिद्धि वृद्धि बहु संपदा ए, आपदा दूरे जाय; थाय शिवपुर धणी ए; मनमान्या भोग ते लहे ए, न दीसे इक दीन कलेस; को सहु नमे तेहनें ए ॥२६॥ बुद्धि हुए तेहनी दीपती ए, जीपती सुरगुरु तेजके; हेज सहू धरे ए; ज्ञान हुवे तेहनें परगडुए, अतिवडो ते संसारि के; मारे न परभवे ए;॥२७॥एतप महिमा अति घणो ए; नेमि जिन कहियुं आय; सुणी सहु हरखे आवेए; उजमणा विधीअती घणी ए, कीजे बहु विध प्रमाणके; ग्रुरुने पूछी करी ए॥ २८॥ कलश—उच्छांह आणी लाभ जाणी सुग्रह वाणी मन धरो, ए ज्ञान पंचमी ज्ञाननी विधि ज्ञान है दूषण परिहरो; ए तप करता सुख लह्यां बहु करशे ते लहशे वली, आगम वांणी ए मन जाणी कि कहं प्राणी मनहली ॥ २९ ॥ ए तपह कीजे लाभ लीजे वंदिजे तप गच्छ धणी, प्रत्यक्ष गौतम

पंच क० स्तवन•

n &c 1

स्वामि सरिखां करिति हीरसूरी तणी; तस गच्छ पंडित ज्ञान मंडित पाप छंडित तुंजयो, बुध कल्याण हैं कुशल ग्रुरु सेव करतां दयाकुशल आणंद थयो ॥ ३० ॥ ''इतिश्री ज्ञान पञ्चमि स्तवनम् सम्पूर्णम्''

"अथ श्री अल्प बहुत्व विचार गर्प्रित श्री महावीर जिन स्तवनम्"

॥ ढाळ ॥ १ ॥ सूरती महिनानी देशी ॥ शासन नायक लायक शिववधु कंत मुनीश, क्षायिक भावें भोगवें ऋद्धि अनंत जगीरा; सिद्ध बुद्ध अविनाशी अनोपम अव्याबाध, अरारीरी अणाहारी वीर-नमुं निरुपाधि ॥ १ ॥ भीम भवोद्धि भमिओ काल अनंत, जिनवर आणा वर्जित पाम्यो दुःख अत्यं-त; सर्व जंतुनो भाख्यो सूत्रे अल्प बहुत्व, अठाणुं भेदें करी ते विनवुं सुपवित्त ॥ २ ॥ थोवा गप्नय मणुआ १ संखगुणी तसनारि, २ बायरपज्ज अनल ३ अनुत्तर दो असंख गुणधारि ४; संखगुणा सत्त उवरिम ५ मझिम ६ हेडिम ७ जोय, अच्युत ८ आरण ९ पाणय १० आणय ११ पर्यंत होय ॥ ३ ॥ 🧗 चउद असंखगुणा हवे माघवती १२ मन आणि, मघा १३ सहस्सार १४ महाशुक्र १५ ने रिष्टानरक

१६ वखाणि; लांतक १७ अंजण १८ बंभने १९ वालुक २० माहिंद २१ जाणि, २२ सनत्कुमारसक्करपह है पंच क० २३ समुच्छिमनर २४ दुखखाण ॥ ४॥ इशान देवलगें २५ हवे संख ग्रणा त्रणबोल, इशान देवी है स्तवन. २६ सोहमदेव २७ देवी २८ रंगरोल; असंख भवणवइ २९ संखगुणी तसदेवी माण ३०, असंखगुणा रयणप्पह ३१ तिम खग पुरिस प्रमाण ३२॥ ५॥ संखगुणी खयरी ३३ थल ३४ थलयरी ३५ जल-चर ३६ इमजलयरी, ३७ व्यंतर ३८ व्यंतरी ३९ जोइस देवता ४० तेम ज्योतिषी देवी; ४१ नपुं-न्म ४२ थल ४३ जलचरना जीव ४४, पज्ज चउरिंदी ४५ संखंगुणा ए तेर सदैव ॥ ६॥ पज्ज पर्णिर्द ४६ बीअ ४७ तिअइंदी जीव ४८, अधिक असंख अपज पणिंदि ४९ चउ ५० तिअ ५१ विअ; ५२ समधिक त्रसलगें सवि बावर्न भेदमांहिं ए भमंत, निजस्बरूपथी खसीओ वसीओ उत्तम चित्त ॥७॥ 🕏

ढाल—॥ २॥ वारी जाउं हुं अरीहंतनी ॥ ए देशी ॥ स्थावर भेदने वर्णवुं, वीरनिम एक चि-त्तोरे; बार असंख गुणा हवे, बायर पज्ज परित्तोरे; ५३ विलहारी जिन वचननी ॥ ए आंकणी ॥ १॥ साहारण तनु ५४ पुढवी ५५ जल ५६, बायर वायु पज्जतोरे ५७; तेउ ५८ परित्त ५९ निगोद ६०

मही ६१ अप्प ६२ मरुत ६३, सुहु मग्मी अपज्जतो रे ॥ ६४ बिछ० ॥ २ ॥ सुहुम अपज्ज पुढवी ६५ 🖔 🖔 ॥ बिले ॥ ३ ॥ ६९ जल ७० अनिल पजाहिय ७१, सुहुमनिगोद अपजत्ता रे; असंखगुणा ७२ तह संखगुणा, सुहुमनिगोद पज्जत्तारे ७३ ॥ बलि० ॥ ४ ॥ बलि अभव्य ७४ पडिवडिइआ, ७५ सिद्धा ७६ 🔊 बायर पज्जवण कायारे; अणंतगुण पर्याप्ता, ७७ बायर अधिक ७८ सोहायारे ॥ बलि० ॥ ५ ॥ बायरवण अपर्याप्ता, असंखगुणा ७९ आगममां रें; बायरअपज्ञ ८० वायरहिया ८१, असंख अपज्जवण सुहुमा रे ८२॥ बिल ।। ६॥ अधिका सुहुमा अपज्जता ८३, संख सुहुम वण पज्जा रे ८४; हवे अधिका हैं एकेकथी, चौद कहुं सुणो सज्जरे ॥ बिल ॥ ७॥ पज्जसुहुम ८५ सुहुमा ८६ भवि ८७, निगोदजीव हैं ८८ वणकाया रे ८९; एगिंदि ९० तिरिय ९१ मिच्छा ९२, अविरइया ९३ सकसाया रे ९४॥ बिल हैं ॥ ८ छद्म ९५ सजोगी ९६ संसारीया ९७, सर्वजीव ९८ लगें अप्य बहुत्तरे; श्री जिनराज कृपा-करी, भाष्यो उत्तम हितहेतो रे ॥ बळि० ॥ ९ ॥

शांतिना थना.

|| **%** 

ढाल—॥ ३ ॥ करकंडुने करुं वंदणा हुं वारीलाल ॥ ए देशी ॥ वस्यो अनादि निगोदमा हुं वारि-लाल, पुद्गल परद्द अनंत रे हुं; तुज आणाविण दुःख सद्यां हुं०,सिव जाणो भगवंत रे हुं० श्रीवीरने जाउं भामणे हुं०, ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ त्रिशलादेवी मात रे हुं०; सिद्धारथनृप तातजी हुं०, उत्तम कुल वंश जात रे हुं० ॥श्री॥२॥ श्रीनयसार भवें मिथ्यात्वथी हुं०, नीसरीआ मुनि साह्यरे हुं;अनुक्रमे त्रिभुवन धणी हुं०, हुआ चरम जिन राजरे हुं०॥ श्री ॥ ३ ॥ मोह निकंदन मूळथी हुं०, कीधो धरी शुक्क ध्यानरे हुं०; वीतराग पद अनुभवी हुं०, पाम्या पंचम ज्ञानरे हुं०॥ श्री ॥ ४ ॥ त्रिगडे बेठा देशना हुं०, देताभवि उपगार रे हुं०; द्वादश अंग रचना करे हुं०, त्रिपदी लही गणधाररे हुं० ॥ श्री ॥ ५ ॥ रयामाचार्य ग्रणनिधि हुं०; त्रेवीशमा पट धाररे हुं०; पन्नवणा जिणे उद्धरी हुं०; श्रुत समुद्रथी साररे हुं० हुं०॥ श्री ॥ ६ ॥ ते पन्नवणा सिद्धांतमां हुं०; छत्रीश पद अद्भूतरे हुं०; पन्नवणा प्रथम तिहां हुं०; बीजुं ठाण अप्प बहुत्तरे हुं० ॥श्री ॥ ७ ॥ चोथुं स्थिति पद पांचमुं हुं०, विशेष व्युतकांत साररे हुं०; र्दू उसास पद कह्युं सातमुं हुं०, आठमें संज्ञा च्याररे हुं०॥ श्री ॥८॥ ज्ञानी पद नवमुं कह्युं हुं०, चरम

पंच क० स्तवन•

11 90 1

भाषा पद नामरे हुं०; शरीर पद तिहां बारमुं हुं०, तेरमुं पद परिमाणरे हुं०, ॥ श्री ॥ ९ ॥ चौदमु चार ककषायनुं हुं०, इंद्री पन्नरमुं होयरे हुं०; उपयोग पदवळी सोळमुं हुं०, ळेश्या सत्तरमुं जोयरे हुं०॥श्री ॥ १०॥ कायस्थिति अढारमुं हुं०, समकित एगुण वीशरे हुं०; अंतक्रिया पद वीशमुं हुं०, अवगाहना एकवीशरे हुं०॥ श्री०॥ ११॥किया पद बावीशमुं हुं०, त्रेवीशमुं लहो कम्मीरे हुं०; कर्म-धक चोवीशमुं हुं०, सुणतां दिए शिव शर्मारे हुं०॥ श्री०॥१२॥ कर्मवेदक पचवीशमुं हुं०, वेद बं॰ धक वली खासरे हुं०; वेदवेदक सत्तावीशमु हुं०, आहार पद सुविलासरे हुं० ॥ श्री० ॥१३॥ उपयोग पासणया भल्लं हुं०, संज्ञी संजम साररे हुं०; अविध पद तेत्रीशमुं हुं०, प्रविचारणा मन धाररे हुं० ॥ श्री० ॥१४॥ वेदना पद पांत्रीशमुं हुं०, समुद्घात पद जाणिरे हुं०; अनुक्रमें छत्रीश पद भला हुं०, सुणिए थिर मन आणिरे हुं०॥ श्री० ॥१५॥ एहमां त्रीजुं पद भहुं हुं०, अल्प बहुत्व जस नामरे हुं० तेहमांहि थकी उद्धर्यों हुं०, ए संबंध अभिरामरे हुं०॥ श्री०॥ १६॥ चरम जिनेश्वर गावतां हुं०, संपूर्ण हुए होंशरे हुं०; कीधो ए उद्यम रही हुं०, राधनपूर चोमासरे हुं० ॥ श्री० ॥१७॥ अढार शत

शांतिनाः हैं नव संवते हुं०, आशो शुदि दिन बीजरे हुं०; ए सहहतां परिणमें हुं०, धर्मरंग अठमीजरे हुं॥ श्री० थनाः ॥ १८॥ सत्यवचन भाषक सदा हुं०, कपूरसमी जश कीर्त्तिरे हुं०; क्षमा गुणे कर्यो जय जेणे हुं०, कोध सुभट सुविदित्तरे हुं०॥ श्री०॥ १९॥ श्री पद्मविजय गणि कहेणथी हुं०, कीधो ए अभ्यासरे हुं०; श्रीजिनराज पसायथी हुं०, उत्तम लहे शिव वासरे हुं०॥ श्री०॥ २०॥ ''इति श्री अल्प बहुत्व विचार गर्प्नित श्री महावीर जिन स्तवनम् सम्पूर्णम्"

''अथ श्री आलोयणानुं स्तवन"

ढाल-॥ १॥ पास संखेश्वरा सारकर सेवका ॥ ए देशी ॥ ए धन्य शासन वीर जिनवर तणो, जास परसाद उपगार थाये घणो; सूत्र सिद्धांत गुरुमुख थकी सांभली, लहीय समकित अनें निरति लहीए वली ॥१॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप करे, जिणथी जीव संसार सागर तरे; दोषलागें ्री नामने अर्थ ते धारणाः किणही कारण वशे पापजे कीजीये, प्रथम ते नाम संकल्प कहीजीये ॥ ३ ॥

कीजीये जेह कंदर्प प्रमुखे करी, दोष ते बीय परमाद संज्ञाधरी; कूदतां गरबनां होय हिंसा जिहां, दर्पइण नाम करि दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसता जीवने गिनर नकरे निको, चोथो आकुटिया दोष उपजें जिको; अनुक्रमे च्यारए अधिक एक एकथी, दोष धर प्रायचित्त छहे विवेकथी ॥ ५ ॥

ढाल—॥ २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो ॥ ए देशी ॥ पाटी पोथी कवली नवकारवाली जोय, ज्ञाननां उपगरण तणी आशातन कीधी होय; जघन्यथी पुरिमहु एकासणुं—आंबिल उपवास, अनुक्रमे एह आलोयण सुग्रुरु बतावे तास ॥ ६ ॥ ए जो खंडित थाये अथवा किहांइ गमाए, तोविल नवा कराया दोष सहु मिट जाए; स्थापना अणपिंड लेह्या पुरिमहुनो तप धार, पडता एकासण ते गमतां चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शननां अतिचार तिहां पुरिमहु जघन्य, एकासण आंबिल अद्यम चिहुं भेदे मन्नः आशातन ग्रुरु देवनी साहमीशुं अप्रीति, जघन्य एकासणथी आलोयण चढती रीति ॥८॥ अनंतकाय आरंभ विनाश्यां चोथ प्रसिद्ध, वि ति चउरिंद्री त्रसायां एकासणाथी चुद्धः, बहु बिति चउरिंद्रिय हण्यां वि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि दुगुणा दुगुण प्रकाश ॥ ९ ॥ उद्देही

शांतिना-नथा. ॥ ७२॥ इति आलोयण सुण सीस ॥ ११॥ पंचेंद्री ते लकडी प्रमुखे की धप्रहार, एकासण आंबिल उपवासनें छट्ठ विचार; साधु समक्ष लोक समक्ष राज समक्ष, कूडा आल दीयां हुए चौषट्र चोथ प्रत्यक्ष ॥१२॥ 🐒 उपवासद्द्य दंडायां तेम मरायां वीस, एक छख एंसी सहस नवकार गुणो तिज रीस; पखी चौमास 🖔 वरसलगे एक त्रिणं दश उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहिं तास ॥ १३ ॥ सूआवडनां दोष-कीया वली थापणमोस, बोल्यावलि उत्सूत्र कीयां ग्रह उपर रोष;करीय दुवालस बार हजार ग्रणो न-वकार, मिच्छामि दुकडं देइआलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

ढाल—॥ ३ ॥ वे करजोडी ताम ॥ ए देशी ॥ विण कीधां पचरक्खाण, विण दीधां वांदणा; पडि-

गंठसीने एकत्र; नीवी आंबिल; भांगे आलोयण इमे ए; एक पांच षद्र आठ, नवकार वालीय; गुणे नवकार अनुक्रमे ए ॥१६॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल उपरांत; अधिको दंडवखाणिये ए; पांचम आठम आदि, भंग कीया वली; फिर महि पातक हणीये ए ॥१७॥ उपलि मूसली आग, चूलो घरंटी ए; दीधे अहम तप करे ए; मांगी सूइ दीध, कातरणी छुरी; आंबिल चढतां आदरे ए ॥ १८॥ रात्री भोजन किथरे, तिम आरंभीया; जल तरणो खेलण जुओं ए; पाप तणो उपदेश, परद्रोह चींतव्या; उप-वास एक एक जूजूओ ए ॥ १९ ॥ पन्नर कर्मादान, नीयम करी भंग; मद मांस मांखण भक्ष्या ए; आलोयण उपवास, संकप्पादिक; चिहुं भेदे चढता सिख्याए ॥ २० ॥ बोल्या मृपावाद, अद्त्ता दानइयुं; जघन्य एकासण जाणीये ए; अति उत्कृष्टी एण,जाणि आलोयण; उपवास द्श आणीये ए॥२१॥ ढाल-॥ ४॥ सुगुण सनेहि मेरेलाल ॥ ए देशी ॥ चोथेत्रत भागे अतीचार, जघन्य छह आ-लोयण धार; मध्यें दश उपवास विचार, उत्कृष्टा ग्रुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष

प्रसंग, तीन गुणव्रत मांहे भंग; च्यार शिक्षा व्रतने अत्तीचारे, आंबिल त्रण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शील-

शांतिना-थनाः

॥ ७३॥

तणी नववाडी कहाय, तिहांजे लागो दोष जणाय; त्रयने फरस हुआ अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधु अने श्रावक प्रसीध, एकेंद्री संघट्टे कीध; वीसरभोले सचित्त जल पीध, दंड एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोया विणल्लह्या पात्र, एकासण तिम पुरिमत्न मात्र; गइ मुहपत्ती आंबिल सार, तिमओघे अद्यम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार छ छींडी राखे, व्रत पचक्वाण करे षट्टसाखे; दोषे, मिंच्छादुक्कडं दाखे, आलोयण तेहने अभिलाषे ॥ २७ ॥ आलोयणानां अति विस्तार, पूराकहेता नावे पार; तोपण संक्षेपे तस सार, निरमल मने करतां निस्तार ॥ २८ ॥ धन्य श्रीवीर जिणेसर खामि, जस आगम वचने विधी पामी; जीतकल्प ठाणांग आदि,वली परंपर ग्रह सुप्रसाद ॥२९॥ कलश—इम जेहधर्मी चित्त विरमी पाप सर्व आलोइनें, एकंत पूछे ग्रह बतावे शक्ति वय तस जो-"इति श्री आलोंयण स्तवनम् सम्पूर्णम्"

ूँ पंच क० १ स्तवन.

।। ७३ ।

## "अथ श्री षट् पर्वी अधिकार गर्पित श्री वीरजिन स्तवनम्"

ढाल—॥ १॥ पुण्य प्रशंसीय ॥ ए देशी ॥ श्रीग्रह पद पंकज नमी रे, भाखुं पर्व विचार; आगम चरित्रने प्रकरणे रें, भारूयो जेम प्रकारो रे भवियण सांभलो॥ १॥ निद्रा विकथा टालिरे, मुकी आमलो ॥ ए आंकणी ॥ चरम जिणंद चोवीशमो रे, राजप्रही उद्यान; गौतम उद्देशी कहे रे, जिन-पति श्री वर्द्धमान रे; भवि०॥ २॥ पखमां षट्ट तिथी पालिये रे, आरंभादिक लाग; मासमां षट्ट पंर्वि तिथि रे, पोसह केरो लाग रे; भवि०॥ ३॥ दुविध धर्म आराधवा रे, बीज ते अति मनोहार; पंचमी नाण आराधवां रे, अष्टमि कर्म क्षय कार रे; भवि०॥ ४॥ अग्यारस चौदशे तिथी रे, अंग पूर्वने रे काज; आराधी शुभ धर्मानें रे, पाम्यो अविचल राज्य रे; भवि० ॥ ५ ॥ धनेश्वर प्रमुख यथा रे, पर्व आराध्यां रे एहः पाम्या अव्याबाध ने रे, निज ग्रण ऋदि वरेह रेः भवि०॥ ६॥ गौतम पूछे वीरने रे, कहो तेहनो अधिकारः सांभळी पर्व आराधवा रे, आदर होय अपार रेः भवि०॥७॥ ढाल-बीजी ॥ एक वीसानी देशीमां ॥ धन्यपुरमां रे, शेठ धनेश्वर शुभ मति, शुद्ध श्रावक रे,

पर्व तिथे पोसहबती; धनश्री तसरे, पत्नी नाम सोहामणो, धनसार सुत रे, तेहनो जन्म नकामणो है पंच क० ॥ १ ॥ त्रूटक—कामणो निज हित करण माटे, शेठजी आठिम दिने; छेइ पोसह शुन्य घरमां, रहां काउस्सग्ग स्थिर मनें; इणे अवसर सोहम इंदो, बेठो निज सुर पर्षदा; करे प्रशंसा शेठनी इम, सांभछे सहु सुर तदा ॥ २ ॥ ढाळ—जो चाळवे रे, सुरपित जइने आपही, पण शेठजी रे पोसह माहि चछे नही; इम निसुणी रे, मिथ्यात्वी एक चिंतवे, हुं चळावुं रे, जइने हरकोइ कौतके ॥ ३ ॥ त्रूटक शेठना मित्रनुं रूप करीने कोटी सुवर्णनो ढग करी, कहे ल्यो ए शेठ तोपण, नवि चल्या जिम सुरगिरि; पछी पत्नीनुं रूप करीने, आलिंगादिक बहु करे; अनुकूल उपसर्गे तोहि शेठजी, ध्यान अधिकेरुं धरे ॥ ४ ॥ ढाल—करे बिहाणुं रे, ताप प्रमुख देखावतो, नारिने सुत रे, आवी इणीपरें भाषतो; पारो पोसह रे,अवसर तुमचो बहु थयो, तव शेठजी रे, चिंतवे काळ केतो थयो॥५॥-त्रृटक-सञ्जायनां अनुसार करीने, जाण्युं छे हजी रात ए, पोसह हमणां पारिए किम, निव थयो प्रभात ए, तव पिशाचनुं रूप करीने, चामडी उताडतो; घात उच्छालन शिला स्फालन, सायर मांहि ना-

खतो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ इम प्रतिकूल रे, उपसर्गे पण निव चल्या, प्राणांते रे, अष्टमी व्रतथी निव किल्या; तव ते सूर रे, माग माग मुखे इम कहे, पण ध्यानमां रे, तेह वात पण निव लहे ॥ ७ ॥ व्रूटक—तव तिणे रत्न अनेक कोटी, वृष्टि कीधी जाणिए, बहु जणा पर्व आराधवाने, सादरा ग्रण खाणीए; राजा पण ते देखी महिमा, शेठने माने घणुं; कहे धन्य धन्य शेठजी तुम, सफल जीवित हं गणुं ॥ ८ ॥

ढाल—त्रीजी ॥ साहेलडीनी देशी ॥ तेह नगर मांहि वसे ॥ साहेलडी रे ॥ त्रण पुरुष ग्रुणवंत तो; 🧗 घांची हाली एक घोबी, साहे॰, षट् पर्वी पालंत तो, ॥ १ ॥ साधर्मिक जाणी करी, सा॰, शेठ करे बहु मानतो; पारणे असन वसन तथा, सा॰, द्रब्य तणुं बहु दान तो ॥ २ ॥ साधर्मिक सगपण वडु, सा०, ए सम अवर न कोय तो; शेठ संगे ते त्रण जणा; सा०, समकित दृष्टि होय तो ॥ ३ ॥ एक दिन चौदशनें दिनें, सा०, राये धोबीनें गेह तो; चीवर राय राणी तणा, सा०, मोकळीयां वर एक दिन चौद्द्यानें दिनें, सा०, राये धोबीनें गेह तो; चीवर राय राणी तणा, सा०, मोकलीयां वर कि नेह तो ॥ ४ ॥ आजज़ धोइ आपज्यो, सा०, महोच्छव कौमुदी काल तो; रजक कहे सुणो माहरे

शांतिना थनाः ॥ ७५॥ सा०, कुटुंब सिहत व्रत भालतो ॥ ५ ॥ धोवुं नहीं चौदश दिने, सा०, तव नृप बोले जाणतोः नृप आणाए नियम इयो, सा०, जेहथी जाये प्राण तो ॥६॥ सज्जन शेठ पण इम कहे, सा०, एहमां हठ निव ताण तोः राज कोप अप भ्राजना, सा०, धर्मतणी पण हाण तो ॥ ७ ॥ वली रायाभिओगेणं, सा०, छे आगार पञ्चकाण तोः तव धोबी चित्त चिंतवे, सा०, दृढता विणुं धर्म हाणि तो ॥ ८ ॥ धोवुं नहि मान्युं तिणे, सा०, राये सुणी तेह वात तो; क्रुदुंब सहित निम्नह करुं, सा०, कालेजो हुं नृप साच तो ॥ ९॥ देव जोगे ते रातमां, सा०, शूल व्यथा नृप थाय तो; हा हा कार नगर थयं, सार, इम दिन त्रण वही जाय तो ॥ १०॥ पडवे दिन धोइ करी, सा०, आप्यां वस्त्र ते राय तो; व्रत निर्वाह सुखे थयो, सा०, धर्म तणे सुपसाय तो ॥ ११ ॥

ढाल—चोथी ॥ भरत नृप भावर्युं ए॥ एदेशी ॥ नरपति चौदशने दिने ए, घाणी वाहन आदेश; करे तेली प्रत्येए, रजक परे ते अशेष; व्रत नियम पालिए ए;॥ एआंकणी ॥ १॥ भूपति कोषे कल कल्यो क्रि, इण अक्सर परचक; आञ्युं देश भांजवाए, महा दुर दांत ते वक्क; व्र० ॥ २॥ नृष पण सन्मुख

ા હવા

नीकल्यो ए, युद्ध करणनें काज; विकल चित्तथी थयो ए, इम रही तेलीनी लाज; व०॥३॥ हालीने आठिम दिने ए, दीघुं मुहूर्त तत्काल; तिणे पण इम कह्युं ए, खेडीश हल हुं काल; व०॥४॥ कोप भराणो भूपती ए, इणे अवसर तिहां देव; वरसण लाग्यो घणुं ए, खेडि न थाये हेव; व०॥५॥ त्रणे अखंड वत पालता ए, पुण्य अतुलथी तेह; मरीने खर्गें गया ए, छट्ठे देवलोके जेह; व०॥६॥ चौंद सागरने आउखे ए, उपन्या ते तत्खेव; हवे शेठ उपन्या ए, बारमें देवलोके देव; व०॥७॥ मैत्री थइ ते च्यारने ए, श्रेष्टि सुरने ताम; कहे त्रण देवता ए, प्रतिबोधजो अम्हस्वामि; व०॥८॥ ते पण अंगी करे तदा ए, अनुक्रमे चिवआ तेह; उपन्या भिन्न देशमां ए, नरपित कुलमां तेह; ब्र॰ ॥९॥ धीर वीर हीर नामथी ए, देशधणी वडराय; थया त्रत दृढथकी ए, बहु नृप प्रणमे पाय; त्र०॥१०॥ ढाल—पांचमी ॥ देशी ॥सूरित महीनानी ॥धारपुर एक २०००, ५५ ।५५० २०२०, १५० होये घणो, शेठने अचरिज कार; अन्य दिने हाणी पण, होये पुन्य प्रमाण, एक दिन पूछे ज्ञा-निने, पूर्व भव मंडाण ॥ १ ॥ ज्ञानी कहे सुण परभव, निर्धन पण व्रत राग; आराधीने पर्व तिथी,

शांतिना-थना. कि आरंभनो त्यागः अन्य दिनें तुमे कीधो, सहेजे पण व्रत भंगः तिणे ए कर्म बंधाणुं, सांभल तुं ए-कंत ॥ २ ॥ सांभली ते सह कुटुंब स्युं, पाले व्रत निरमायः बीज प्रमुख आराधे, सिवशेषे सुखदायः याहक पण बहुआवे अर्थे, थावे लाभ अपारः विश्वासी बहु लोकथी, थयो कोटि शिरदार ॥ ३ ॥ निज कुल शोषक वाणिओ, जाणि आजगत प्रसिद्धः तिणे जइ रायने वाणिये, इणी परे चुगली कीध; इणे कोटि निधि लाधो, ते खामिनो होय; नरपति पूछे शेठने, वात कहो सहु कोय ॥४॥ शेठ कहे सुणो नरपति, माहरे छे पचक्खाण; स्थूल मृषावाद ने वली, स्थूल अदत्ता दान; ग्ररु पासे व्रत आदर्यं, ते पालुं निरमायः पिशुन वणिक कहें खामि ए, धर्म धूतारो थाय ॥ ५ ॥ तस वचने करी तेहना, द्रव्य तणो अप्पहार; करीने भूपति राखे, पुत्र सहित निज द्वार ॥ राजद्वारे रह्यो चिंतवे, आजमें लह्युं कष्ट; पण आज पंचमी तिथी तिणे, लाभ होय कोइ लष्ट ॥ ६ ॥ प्रातः समे नृपति देखे, खाली निज भंडार; शेठघरे मणी रत्न सुवर्ण, भर्यां श्री श्रीकार; आवी वधामणी रायने ते, ते बेहुंनी सम-काल; रोठ तेडी कहे नरपति, वात सुणो इण ताल ॥ ७ ॥

ढाल—छट्टी ॥ हरणी जब चरे ललना ॥ ए देशी ॥ भूपति चमक्यो चित्तमां ललना, ललहो देखी ए अवदातः ॥ व्रत इम पालीए ललनाः ॥ ए आंकणी ॥ खेद लही खामे घणुं ललना॰, ललहो॰ प्रश्न पूछे सुख शातः व्रत० ॥ १ ॥ कहो शेठ ए किम नीपन्युं ललना॰, ललहो तुज घर धन किम जाय; व्रत०; रोठ कहे जाणुं नही ललना०, ललहो० किणीपरे ए मुज थाय; व्रत० ॥ २ ॥ पण मुज पर्वने दहाडुं ललना॰, ललहो॰ लाभ अचिंत्यो थाय; व्रत॰; पर्वदिने व्रत पालीओ ललना॰, ललहो; ते पुण्यनो महिमाय; व्रत० ॥३॥ पर्व महिमा इम सांभली ललना०, ललहो०; भूपतिने तत्काल; व्रत०; जातिसारण उपन्युं ळळना०; ळळहो निज भव दीठो रसाळ; व्रत० ॥ ४ ॥ घोबीनो भव सांभयों ळ-लना०, ललहो० पार्खुं जे व्रतसार; व्रत०; जावजीव नृप आदरे ललना०; ललहो० पट्टपर्वी व्रतधार; वतः ॥ ५ ॥ आवी वधामणी तिणे समे ललनाः, ललहोः स्वामी भराणा भंडार; वतः, विस्मित राय थयो तदा छलना०, ललहो० हियडे हर्ष अपार; व्रत०॥६॥

ढाल—सातमी ॥ साहेबजी श्री विमलाचल भेटीये हो; ॥ ए देशी ॥ साहेबजी शेठ अमर

प्रगट थयो हो लाल, भाखे रायने इम; साहे॰; तुं निव मुजने ओलखें हो लाल, हुं आव्यो तुज प्रेम; साहे॰;॥पर्व तिथी इम पालियें हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ श्रेष्ठि सुर हुं जाणज्ये हो लाल, तुज प्रतिबोधन आज; साहे॰; रोठ सान्निध्य करवा वली हो लाल॰, कीधुं में सिव काज; साहे॰॥पर्व॥२॥ धर्म उद्यम करजे सदा हो लाल॰, जाउं हुं सुण वात; साहे॰; तैलिक हालीक रायने हो लाल, प्रति-बोधन अवदात;साहे०॥ पर्व ॥३॥ तिहां जड़ पूर्व भवतणां हो लाल, रुप देखाचे तास; साहे०; देखीने ते पामीआ हो लाल० जातिस्मरण खास; साहे०॥ पर्व ॥४॥ तेह बिहुं श्रावक थयां हो लाल, पाले नित्य षट्ट पर्वः; साहे०ः; त्रणे ते नर रायने हो लाल०, साह्य करे ते सुपर्वेः; साहे०॥ पर्व ॥५॥ निज निज देशेनि वारता हो लाल॰, मारि व्यसन सिव जेह; साहे॰; चैत्य करावे तेहवां हो लाल॰, प्रतिमा भरावे तेह; साहे॰ ॥ पर्व ॥६॥ संघ चळावे सामटा हो ळाळ॰, साहमीवच्छळ भिळ भात; साहे॰; पर्व दिने नित्य नयरमां हो ळाळ॰, पडह अमारि विख्यात;साहे॰॥ पर्व ॥७॥ पर्व तिथि सहु पाळता होळाळ०, राजा प्रजा बहु धर्म; साहे॰; इति उपद्रव सहु टळेहोळाळ॰, नही निज परचक्र भर्म;साहे॰॥ पर्व ॥८॥

धर्मथी सुर सान्निष्य करे होलाल०, धर्मे पाली राज्यः साहे०ः कोई सद्ग्रुरु संजोगथी हो लाल, थयां त्रणे ऋषिराजः साहे०॥ पर्व ॥ ९ ॥

ढाल-आठमी ॥ दुंक अने टोडा विचेरे ॥ सदगुरु वयण सुधारस्येरे ॥ ए देशी ॥ त्रणे नरपति ए आदयों रे, चोखो चारित्र भार; संयम रंग लागो; तप तपता अति आकरा रे, पाले निरति चार; संयमः।। ए आंकणी ॥ १॥ ध्यान बलेथी क्षय कर्यां रे, घनघाती जे च्यार; संयमः; केवलज्ञान लही करी रे, विचरे महीयल सार; संयम० ॥ २ ॥ श्रेष्टिसुर महिमा करे रे, ठाम ठाममनोहार; संयम०; देशन देता केविलजी, भाखे निज अधिकार; संयम; ॥ ३ ॥ पर्व तिथी आराधिए रे, भवियण भाव उछास; संयमः इम महिमा विस्तारीने रे, पाम्याशिव पुर वासः संयमः ॥ ४ ॥ बारमा देवलोकथी चवीरे, श्रेष्टिसर थया राय; संयमः महिमा पर्वनो सांभली रे, जाति स्मरण थाय; संयमः ॥५॥ संयम यही केवल लही रे, पाम्या अविचल ठाम; संयम०; अव्याबाध सुखी थयां रे, केवल चिद् आराम; संयम०, ॥६॥ ढाल-नवमी ॥ राग-धन्याश्री, ॥ गिरुआ रे गुण तुम तणां ॥ ए देशी ॥ उजमणां ए तप

शांतिना थना.

11 90 11

तणां, करो तिथि परिमाण उपगरणां रे; रत्न त्रयी साधन तणां, भिन भव सायर निस्तरणां रे; कि उजमणां ए तप तणा ॥ ए आंकणी ॥१॥ जो पण सहु दिन साधना, तो पण तेहनी अणशक्तें रे; पर्व कि जिथे आराधिने, तुमे उजमज्यो बहु भक्तेरे; उजमणा०॥२॥ श्राद्धविधि वर ग्रंथमां, भलो भाल्यो ए कि अवदातो रे; भगवतीने महानिशीथमां, कह्यो तिथि अधिकार विख्यातो रे; उजमणा०॥३॥ तप गच्छ गगनां गण रवि,श्रीविजयसिंह गणधारो रे;अंतेवासी तेहनां,श्रीसत्यविजय सुखकारो रे; उजमणा०॥४॥ कपूरविजय वर तेहनां, वर खिमा विजय पन्यासो रे; जिनविजय जगमां जयो, शिष्य उत्तमविजय ते खासो रे; उजमणा० ॥ ५॥ तस पद चरण भमर समो, रही साणंद चोमासुं रे; अढार त्रीश संवच्छरे, शुदि तेरस फालगुण मासे रे; उजमणा०॥६॥ पद्मविजय भक्ति करी, श्रीविजय धर्मसूरि राज्ये रे; वर्द्ध-मान जिन गाइआ, श्री अमीझरा प्रभु साह्यें रे; उजमणा०॥ ७॥ कलश—पर्व तिथि आराधो, सुकृत साधो, लाघो भव सफलो करो; संवेग संगी, तत्त्व रंगी,

पच क० स्तवन.

11 90 11

उत्तमविजय ग्रुणाकरो; तस शीष्य नामे सुग्रुण कामे, पद्मविजये आदर्यो; शुभ एह आदर, भवि सुहागर; नाम षट्र पर्वी धर्यो ॥ ८ ॥

''इतिश्री षट् पर्वी अधिकार गर्भित श्रीवीर जिन स्तवनम् सम्पूर्णम्" ''अथ श्री दशविध पच्चख्वाण स्तवनम्"

दुहा—सिद्धारथ नंदन नमुं, महावीर भगवंत; त्रिगडे बेठां जिनवरुं, परषदा बार मिलंत ॥१॥ गणधर गौतम तिण समें, पूछे श्रीजिनराय; दश पच्चख्वाण किसां कह्यां, कीयां कवण फल थाय ॥२॥ हाल १—ली ॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ श्री जिनवर इम उपिदशे, सांभिल गौतम खामिरे; दश पच्चख्वाण कीयां थकां, लहीयें अविचल ठामरे ॥ श्री जिनवर ॥ए आंकणी ॥ ३ ॥ नैवकारशी, बीजी पीरिसी, साढ पीरिसी, पुँरिमहुरे; एकासण निवी कही, एकलठाण दिवर्हुरे ॥ श्री जिनवर ॥ ४ ॥ दाति आंबिल उपवांसहि, एहज दश पच्चख्वाणरे; एहनां फल सुण गौतमा, जुजुआ करुंअ वखाणरे ॥ श्री जिनवर ॥ ५ ॥ रख प्रभा शर्करा प्रभा, वालूक त्रीजीय जांणरे;

तां. १४

शांतिनाः थनाः

ા હુર ા

भा धुम्र प्रभा, तम प्रभ तम तम ठांमरे॥ श्री जिनवर॥६॥ नरक साते एहिज कर्म कठिन करे जोररे; जीव कर्म वश करे जुदा, उपजे तिण हियठोर रे॥श्री जिनवर॥७॥ छेद्न भेद्न ताडना, भूख तृषा वली त्रास रे; रोम रोम पीडा करे, परमा धामिम तासरे॥ श्री जिनवर ॥ ८ ॥ रात्रि दिवस क्षेत्र वेदना, तिल्लभर नवीतिहां सुख रे; कीयां कर्म तिहां भोगवें, पामें जिव बहु डुःखरे ॥ श्री जिनवर ॥ ९ ॥ इक दिन रे नवकारिश, जे करे भावथी शुद्धरे; सो वर्ष नरकनुं आउखुं, दूर करे ज्ञानी बुद्धिरे ॥ श्री जिनवर ॥ १० ॥ नित्य करे नवकारिश, ते नर नरकें नवी जायरे; न रहे पापवली पाछलां, निर्मल होवे तस काय रे॥श्री जिनवर ॥ ११ ॥ ढाल २—जी ॥ श्री विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥ सूण गौतम पोरसी कीयां, महा महोटुं फल होयरे; भावग्रुं जो पोरिसी करे, दूर्गति छेदे सोयरे ॥ सुण० ॥ ए आंकणी ॥ १२ ॥ नरक मांहे जीव नारकी, वर्ष एकेक हजाररे; कर्म खपावे नरकमें, करता बहुत पूकाररे ॥ सूण० ॥ १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करे एक वाररे; कर्म हणे सहस एकनां,

पंच क० स्तवन.

11 99 11

निश्चे ते गणधाररे ॥ सूण० ॥ १४ ॥ दुर्गित मांहे नारकी, दश हजार प्रमाणरे; नरकनो हैं आयु क्षण एकमे, साढपोरिसी करे हाणिरे ॥ सूण० ॥ १५ ॥ पूरिमह करतां जीवडा, नरके ते नहीजाय रे; लाख वर्ष कर्म निकंदे, पूरिमह करता खपायरे ॥ सूण० ॥ १६ ॥ लाख वर्ष दस नारकी, पामे दुःख अनंतरे; तेटलां कर्म एकासणुं, दूर करे मन खंतरे ॥ सूण० ॥ १७ ॥ एक कोडि वर्षा लगे, कर्म खपावे जीवरे; नीवी करतां भावर्युं, दुर्गति हणे सदैवरे ॥ सूण० ॥ १८ ॥ दश कोडि जीव नरकमें, जेटलो करे कर्म दूररे; तेटलो एकल ठाणे करी, करे सिंह चक चूररे ॥ सूण० ॥ १९ ॥ दाति करतां प्राणीयां, सोकोडि प्रमाणरे; एटलां वर्ष दुर्गति तणां, छेदे चतुर सूजाणरे ॥ सूण० ॥ २० ॥ आंबिलनो फल वहू कह्यो, कोडि दश हजार रे; कर्म खपावे एणि परे, भावे आंबिल अधिकाररे ॥ सूण० ॥ २१ ॥ कोडि हजार दश वर्ष सही, दुःख सहे नरक मोझाररे; उपवास करे इक भावश्युं, पामे मुक्ति द्वाररे ॥ सूण० ॥ २२ ॥ ढाल ३—॥ जी॥ केइक वर मांगे सिता भणी चोपें॥ ए देशी ॥ लाख कोडि वर्षा लगे,

नरके करतां बहु रीवरे; ए छठ तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ सूण गौतम गण-धरा; ॥ ए आंकणी ॥ २३ ॥ नरके विषे कोडि दसलाख सही, जीव लहे तिहां अति दुःख रे; ते दुःख अद्वम तप हुंते, दूर करे पामे सूख रे ॥ सूण० ॥ २४ ॥ छेदन भेदन नारकी, कोडा कोडि वर्षों रे; कुगति कर्म ने परिहरे, दशम एतो फल होय रे ॥ सूण ॥ २५ ॥ नित्य फास् जल पीवतां, कोडाकोडि वरसनां पाप रे; दूर करे क्षण एकमें, जीव निरमल होय निरधार रे ॥ सूण० ॥ २६ ॥ ए तो वलिय विशेषें फल कह्यो, पंचमि करतां उपवास रे; ते तो पामे ज्ञान पांचे भलां, करतां त्रिभुवन उजाश रे ॥ सूण ॥ २७ ॥ चौदश तप विधिशुं करे, चौदह पूर्वि होय धार रे; इग्यारस एकादशी, करतां लहीए शीव सार रे ॥ सूण० ॥ २८ ॥ अष्टमि तप आराधतां, जीव न फरे इण संसाररे; इम अनेक फल तप तणां, कहेतां वली नावे पार रे ॥ सूण० हैं।॥ २९ ॥ मन वचनें काया ए करी, तप करे जे नरनार रे; अनंत भवना रे पापथी, छुटे तेह हैं। निरधार रे ॥ सूण० ॥ ३० ॥ तप हुंती पापी तर्या, निस्तरीया अर्जुन मालि रे; तप हुंती एक दिन

कलश—पञ्चरुखाण दराविध फल प्ररुप्या महावीर जिन देव ए, जे करे भवियण तप अखंडित कितास सुरपति सेवए; संवत् विधु ग्रुण अश्व राशि वली पौष श्रुदि दशमी दिने, पद्म रंग वाचक शिश गणी रामचंद्र तप विधि भणें ॥ ३३ ॥

"इति श्री दशविध पच्चख्खाणस्तवनम् समाप्तमिति"

"अथ श्री उपधान विधि स्तवनम्"

ढाल१—पहेली ॥ सारद् बुध दाइ ॥ ए देशी ॥ श्री वीर जिणेश्वर, सुपरि दिए उपदेश; सुणे बार परषदा, नहीं प्रमाद् प्रवेश ॥ १ ॥ सूणजो रे श्रावक, जो वहिए उपधान; नवकार गण्यां तो, सुझे सुगुण निधान ॥ २ ॥ 11 65 11

त्रूटक—पडिकमणुं किया तो सुझे, जो वहिए उपधान; इम जाणि उपधान वहो तुमे, श्रावक थइ सावधान ॥ ३ ॥

ढाल—पूर्वली ॥ नवकार तणो तप पहिल्लं अढारीउं होय, इरियावहि नो तप बीजुं अढारीउं जोय; ए बिहु उपधाने दिन अढार अढार, उपवास एक एक तप होय साढाबार ॥ ४॥ त्रूटकः–साढा बार उपवास ते कीजे, ग्रह मुखे पोसह लीजे; चोथ एकांतर एक एकासणुं, पाप पडल सवि खीजे॥ ५॥ ढाल-पूर्वली ॥ ए बिहुं उपधाने मांडी नंदी मंडाण, पुजा प्रभावना ओच्छव करो सुजाण; क्रिया सवी शुद्धि साधुनी रहेणी-ए रहिए, देहरे देव वांदो सुमति ग्रित निरवहिए ॥ ६॥ त्रृटक—सुमित गुप्ति सुपरि आराधो, चैत्य वंदन न विसारो; दोय-सहस नवकार गणिने, पोरिसी भणी संथारो ॥ ७ ॥ ढाल-पूर्वली ॥ पांचे उपवासे पहिली वायणा जोय, तप पुरे बीजी युरु मुखे वायणा होय; अंठो जो छांडे तो तस दहाडो वाधे, तिम मुहपित पिंड जो शोधतां हैं निव लाधे ॥ ८ ॥ त्रूटक-तिम अकाल असझाय वमनज, दहाडो लेखे नावे; जीव घात विकथा

पंच क० स्तवन.

11 68 1

हिंसादिक, तो आलोयण आवे ॥ ९ ॥ ढाल-पूर्वली ॥ अरिहंत चेइयाणं चोकिउं तप उपधान, उपवासने आंबिळ च्यार दिवसनुं मानः उपवास अढी जब तप संपूर्ण थाय, वायणा तव लीजें पामी सुग्रुरु पसाय॥ १०॥ त्रूटक—सुग्रुरु पसाले छकीउं वहीए, सात दिवस परिमाणः बे उपवासे पुखर वरदी, अढीए सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ ११ ॥

ढालर-बीजी ॥ राग सोरठी ॥ उधारणदेशी ॥ काजसिधासकलहवेसार ॥ एदेशी हवे माल पहेरावो, साहमी साहमिणि नोतरावो; भला भोजन भक्ते करावो, रुपानी रकेबी घडावो ॥ १२ ॥ माहिं मेवा मीठाइ भरीए, हीरागल कमखो धरीए; चतुराइ चाल मचूको, माहिं रुपानाणुं मुको ॥ १३ ॥ चार पहोर देवरावो भास, गाए गंधर्व ग्रुणरास; साहमी साहमिणि ने द्यो तंबोळ, एम रात्रि जगो रंग रोळ ॥ २४ ॥ एणिपरे माळ जगावो, वाजा निसाण मंगावो; पंच सब्दा ढोल सरणाइ, सांबेला सबल सजाइ ॥ १५ ॥ कुंयर सिर खुंप भरिजे, इंद्राणिने शण- शांतिना थना. मार्गे दिओ दान रसाल; एणिपरे संघ साजन साथे, माल आणी दिओ गुरू हाथे ॥ १७ ॥ गुरू-राय ठवे तिहां वास, श्रावक मन अति उछास; जेणे माला कंठ ठवीजे, मणीमय भूषण तस दीसे ॥ १८ ॥ अंग पूजा प्रभावना कीजे, व्रत धारी पहिरावीजे; पाठा पुस्तक रुमाल, ग्रुरु भक्ति करी सुविशाल ॥ १९ ॥ हवे शकस्तव उपधान, पांत्रीश दीवस तस मान; उपवास ते साढा ओग-णीद्या, वायणा त्रण अतिहि जगीद्य ॥ २० ॥ हवे अठावीशुं जेह, उपधान लोगस्सनुं तेह; साढा पन्नर उपवास, वायणा त्रण लील विलास ॥ २१ ॥ एणिपरे छ ए उपधान, श्रावय श्राविका शुभ धान; वही सफल करो अवतार, संसार तणो लहीपार ॥ २२ ॥ कलश—श्री वीरजिन उपधान विधिएम, भविक जीव हिते हेते कहि; महानिशिथ सिद्धांत माहें, सुलभ बोधि सदहे॥ २३॥ आराधीए उपधान वहिने, च्यार भेदे धर्माए; दान शील तप भाव भक्ते, पामीए शीव शर्मए॥२४॥ अघट्ट घाट शरीर होये, घाट माहें आवे घणो; खमासमण मुहपति शर्व क्रिया, जाणे विधि श्रावक तणो ॥ २५ ॥ उपधाननां ग्रण कहुं केतां, कहेतां न आवे पार ए; होय सफल श्रावक

पंच क० स्तवनः

ા હર ા

तर्ण ए; सेव

तणी किया, उपधाने निरधार ए ॥ २६ ॥ तप गच्छ नायक सुमति दायक, श्री विजय प्रभ सूरीश ए; पुण्य प्रभावे अधिक दिन दिन, जगत मांहि जगीश ए ॥ २७ ॥ श्री कीर्त्ते विजय उवझाय सेवक, विनय इणी परे विनवे; देवाधिदेवा धर्म्म एहवो, मुज दीयो भवे भवे ॥ २८ ॥

''इति श्री उपधान विधि स्तवनम् सम्पूर्णम्"

''अथ श्री समवसरणनुं स्तवन्"

पिउजी पिउजी नाम जपुं दिन रातियां ॥ ए राग ॥ जायव कुल सिणगार, सिरि नेमीसर पाय हैं नमीअ; समवसरण विचार, कहुं संखेवे ग्रुरु भणीअ ॥ १ ॥ तिथ्थंकर रहे नाण, उप्पन्ने सिव इंद कि तिहिं; आवे अति बहुमाण, निअ निअ कम्म करंति विहें ॥ २ ॥ पहेलो वायु कुमार, जोयण लगे भूमी सारवे ए; टाले कयवर वार, पावरेणु निअ हारवे ए ॥ ३ ॥ पछे मेहकुमार, कुंकुम कपूरोदकेही; बुठिकरिअ लहु धार, रय उवस करंति तिहिं ॥ ४ ॥ आवी अग्निकुमार, धुप उगाहण

शांतिना थनाः

॥ ८३॥

तिहां करे ए; वाणवंतर देविंद, पीठरयण मणिमय रचे ए ॥ ५ ॥ पीठ उवरि पंच वन्न, जानु प्रमाण कुसुम भरेए; उंधे बीट रचंत, वाण मंतर सुर सुरभितरो ॥ ६ ॥

वस्तु—इंदभुइ इंदभुइ चढिय बहुमान ॥ए राग ॥ नमीअ सुर नर २ नेमी जिन पाय पणमेविअ. भत्तिभर समवसरण लवलेश; पभणओ रिद्धि अनंती जिणह तणी, तेसघली किम कहिअ जाणे नाण उपन्ने; जिणवरह आवे चउसठि इंद समवसरण, ते करे इसिओ तिहुअण हुए आनंद ॥ ७ ॥ ठवणी—जन्मजरामरणेकरीए॥ ए राग॥ तो भवणाहिव देवमिली, रुपातणो पाँयार तोः कोसीसां सोवन्नमय, करे सुवृत्ता कारतो ॥ ८ ॥ चंद सूर गह पमुह सुर, जोसिअ भत्ति भरेण तो; कंचणमया पायार रचे, रयण कोसीसा श्रेणी तो ॥ ९ ॥ गढ त्रीजो तो रयण मये, करे आवी अति तुंगतोः वेमाणीअ सुररायवर, मणी कोसीसां चंगतो ॥ १०॥ उंधी गढनी भीत सवी, धणुसय पंच प्रमाणतो; विच्छर पुण तेतीस धणु, दुतीसंग्रुल वली जाणतो ॥ ११ ॥ गढ गढ अंतर समि अजुए, तेरसे घणुअ मोझार तो; पहोलि कने पंचास घणु, तो सोपानक हारतो ॥ १२ ॥ पावडीयारा पंच क० स्तवन.

11 63 11

सहस दश, हुए पहेले पायारतो; बीजे त्रीजे सहस तेम, पंच पंच विचारतो ॥ १३ ॥ पावडीआरा हाथ भुइं, उंचां तिम विस्तार तो; पंचवन्न तिहां रयण तणा, झलके चिहुं दिशि बारतो ॥ १४ ॥ वीस सहस होए पावडीआ, मेलिय त्रिहुं प्राकारतो; भूमि थकी उंचो अढीगाउ, उंचो ते पायार तो ॥ १५ ॥ त्रिण त्रिण तोरण चिहुं दिसी ए, नील रयणमयनुं मुगततो; मणिमय थंभे पूति लीए, दीशे करति रंग तो ॥ १६ ॥

वस्तु—भवणवासी भवणवासी पमुह देविंद, भित्तभर भिर अहिअ सयल लोय अच्छरीय कारण; उज्जोयंता गयण तल, भवीअ जीव भव दुःख वारण; रुप्प सुवन्नह रयणमय तिनि रचे पायरे; नाना वीह कोसीस तिहां सोहे सुवृत्ताकार ॥ १७ ॥ ठवणी-त्रीजे गढे वण रचे पीठ, पिहुं धणुसय दुन्नितो; उंचु जिण तणु माणि तथ्थ, आसण इग तिन्नि चिहुंतो; आसण विचे देव छंद, तिहां रुख अशोकतो; छंपल फल दल तणी, किसी बोलो रोकतो ॥ १८ ॥ चिहुं दिसि झलके छत्त तिन्नि, चामर सुर ढालेतो; कोतिगमो हिया लोक लक्ष, जिण रिद्धि निहालेतो; देव वणयर त्रिहुं दिशि ठवे,

शांतिना थनाः

11 68 11

तव जिणवर पिंड रूवतो; पूजे प्रणिम थुणे, देव उगाहे ध्वतो ॥ १९ ॥ बेसीअ आसण पुव तणे, पहु करे वखाण तो; देव मणुअ तिर्यंच सबे, बुझे जिणवयणतो; जोयण पमाण जिणंद वाणि, अति गुंहरी गाजेतो; तिहुअण जण संदेह राशि, तत्क्षण सिव भांजेतो ॥ २० ॥ मुणि पुठे विमाण देवि, तोमाहासे जाणितो; पहेळी परषद रहे तिन्नि, ए अग्नि कुणेणतो; जोसिअ भवणा वयणे राण, ए त्रिहुंनी देवीतो; नैरुत्य कूणे रहे, तिन्नि एजिण पणमेवीतो ॥ २९ ॥ जोसीअ भवणाधीश देव, तो वणयर देवातो; वायुकूण चिठंति सहि, करतां जिण सेवतो; वेमाणी सुर मणुय नारि, बहुभत्ति तुरंगतो; कुणरहे इसाण सामि, मुह कमल जोअंततो ॥ २२ ॥ बार पर्षद सुणे, धम्म इणे कम्मे रहियतो; बांधा वइरने भूख तृषा, तिहांकेने नहिंयतो; वाजिंत्र कोडाकोडि गयणि, अणवाए वाजेतो; चार द्वजा तिहां सहस जोयण, उंचि अतिराजेतो॥२३॥पोणि पोरिसी लगे देशना ए, जिनवर दिए सारतो; एक आढोवर सालिराय, दिव्य गंध उदारतोः पूर्व बारे भत्तिजूत्त, आणे जिण खेव मेळीतोः देसणा मनोहर ए, जिण तिहुअण देवतो ॥२४॥ वधावे जिनराज काज, भवियण इम तारेतोः अणपडती इंद्रादि अद्ध, छेइ गुण संभारेतोः

पंच क० स्तवन.

11 68 11

अद्धताण उजे सािळअद्ध, राजादिक ळिजेतो; अवर अद्ध कण एक एक, सिव कहे दीजेतो ॥२५॥ 🐉 षट्टमासी तिणे रोग सोग, संकट सिव भाजेतो; दारिद्र दुःख विजोग जाए, महिमा जग गाजेतो; ए 💃 आचार कर्यां पछी ए, जिन मेहले पधारेतो; तिद्वअण जीव जिणंद, एम आपोपें तारेतो; ॥२६॥ जिण विसामा तणे हेते, मणिमय गढ बाहेरतो; देवछंदो सुरकरे कूणे, इसाण पमुअ भरेतो; जिण जिण निय करमाणि जाणि, ए सयल पमाणंतो; सोहे चिट्ठं दिशि धम्म चक्का, तेजि जियभाणतो ॥ २७॥ वस्तु—पीठ मणिमय पीठ मणीमय, करे वणराय; चिहुं आसण सहिअ तरु, देवछंद मणि रयण हैं। घडिओ; भामंडल छत्तज्ञ्अ; चर्मरइंद धय रयण जडीओ; जिणवर धम्मो वएस सुणे, अनुक्रमे प्र-षदा बार; वयर भाव भय टले, सिव कहे हर्ष अपार ॥ २८ ॥ भाषा—ठावेए पढम पायारे, वाह-णसी करि पालखीअ; बीजी ए गढ तिर्यंच, जलयर थलयर सिव पंखीअ; त्रीजे ए देव मनुष्य, रहीय णसा कार पाळखाअ; बाजा एगढ ातयच, जळयर थळयर साव पखाअ; त्राज ए ६व मनुष्य, रहाय सुणे जिणवर वयण, आवे ए अधिक्षण माहिं, बारह जोयण भिव जाण ॥ २९ ॥ साहुणी ए चउविह देवि, उद्घठिआ जिण देसणाए; सांभळी ए मन उळासे; होय निह पुण जंतणा ए; आठे ए प्राति-

र्शाः १५

शांतिना थना

॥ ८५॥

हारज, होय निरंतर रातिदिह; बीजी ए अतिशय रिद्धि; कहुं केसी परि एक जीह ॥ ३० ॥ जाणीए जिणह समीवि, सेव करं तिहुअण सिरीअ; वाटले ए समवसरणे, चार वाव हुइ जल भरीअ; विदिश्णि दो दो वाव, चउ खुणे तिहां होय नियुण; आगे ए जेणे ठामे, हवउ नहीं समवसरण ॥३१॥ अहिकम ए अहिनव देव, कोइ आवे मह इंदि वर; तोकरे ए तीणेठामे, ए सहुए नियमेण सुर; पोलिआ ए, कणय मचकंद, कुंकुअ कज्जल सरिस पुण; सोहम ए वण भवणिंद, जोइसिया चिठंति पुण ॥ ३२ ॥ कणग मयना पट पडिहार, देवी जिन गुण रंजिया ए; नित्यरहे ए विजया देवि, जया जिता अपराजिआ ए; तुंबरु ए देव षट्ंग, पुरिस नांम अथि माल सुरं, रुप्यमय ए गढ च्यार, पडि हारुं करे सट्ट धर ॥ ३३ ॥ धन्य धन्य ए ते नरनारि, सफल जन्म तेह जाणीए ए; लोअणु तसु सुकयड, वाणी तास वखाणीए ए; नित्य नित्य ए नयणा णंद, दायगजे पहु पणमसिए; देखशे ए एरिसि रिद्ध रंगे जिण गुण गायसे ए॥३४॥ उत्तम ए ते सविखंड देसगाम आगर नयर जिणवरु पः; जिणे ठामे करे विहार उवयार पर, हरखीओ ए चित्त अपारः; दुःख भांगिउं मुज तणु ए, बुठो

पंच क० स्तवनः

11 24 11

कल्या-णकनुं ए अमिय मय मेह, आल उपरि मह अतिघणुं ए ॥ ३५ ॥ विणओ ए जय जिण नाह, समोसरणिठ अलग वर; श्रीग्ररु ए सोम सुंदर सूरि, गुणे गोयम अवर; नित्य नित्य ए इसो विचार; भविअण जिण आगल कहेए; सेवेए जेह ग्ररुपाय, रिद्धि अणंती ते लहेए ॥ ३६ ॥ "इति श्री समवसरण स्तवनम् समाप्त मिति"

"अथ श्री कल्याणकनुं स्तवन"

॥ दुहा ॥ सकल समीहित पूरवा, साची सुरतरु वेलि; पातिक पंक पखालवा, वर धाराधर रेलि ॥ १ ॥ भविराजी राजी रिव, सुर प्रति कृति ग्रुण ज्ञान; जयकारी जिन मंडली, मन समरुं एक ध्यान ॥ २ ॥ श्री श्रुतदेवि दीपिका, दीपे प्रवल प्रकाश; मुजमन मंदिर रही करो, जाड्य तिमिर भर नाश ॥ ३ ॥ चउवीसे जिनवर तणां, कल्याणक दिन नाम; भावधरी भणशुं भविक, सुख स्मरणनुं ठाम ॥ ४ ॥ आगामें पुनिम मासमें, मेली गणन अभ्यास; लोकरीति लेज्यो इहां, अमा वासि ए मास ॥ ५ ॥

स्तवनः

ढाल१—पहेली-इणिपरे राज्य करंत रे ॥ ए देशी ॥ धुरिकार्तिक शुदि त्रीज, सुविधि जिनेसहः केवल उज्जवल पामीया ए ॥ ६ ॥ बारसें अरजिन नाण, कार्त्तिक वदी वली पंचिमरेः सुविधि जन्म हुओ ए ॥ ७ ॥ छट्ठे नवम जिन दीक्षा, वीर दशमें दीक्षाः सिद्धि इंग्यारसें जिन छट्ठा ए ॥ ८ ॥ मृगशीर्ष शुदि अभिराम, दशिम दिवस जिहाः अरजिन जन्म मुक्ति हुआ ए ॥ ९ ॥ इंग्यारसे मिलीनाथ, जन्मज वत नाणः नमी केवल अरवत वली ए ॥ १० ॥ चउदसें संभव देव, जन्म वखाणि ए; संभव व्रत पुनिम दिन ए ॥ ११ ॥ मृगशिर वदि जिनपास, दशमि दिवसे जण्या; इग्यारसें, दीक्षा लही ए ॥१२॥ बारसे शशीजिन जन्म, चारित्र तेरसे; चउदशे शीतल केवली ए॥१३॥ ढाल२—बीजी ॥ राग देशाख ॥ मल्हार ॥ आव्यो आव्यो रे ॥ ए देशी ॥ पोसशुदि छडेरे केवल हालर—बाजा ॥ राग दशाल ॥ नल्हार ॥ जाउपाजाज्या र ॥ उ रस्ता माराजा उ जाउपाजाज्या र ॥ उ रस्ता माराजा उ जाउपाजाज्या र ॥ उ रस्ता माराजाज्या र ॥

स्तवन.

ા દક્ષા

श्रेयांसजिनपति केवलीवर अमावास्या दिनथयां ॥ १५ ॥ ढालपूर्वली—महाशुदि तीथे रे बीजे अभिनंदन जण्या, वली वासुपूज्य रे केवल नाणी तिम गण्यां; तिथि त्रीजेरे विमल धर्म जन्मीआ. दिन चोथेरे विमलनाथ संयम लीया ॥ १६ ॥ त्रूटक—वली आठमे अजित जनम्या, नविम दीक्षा अति भली, दीक्षा संवर नंद बारसे धर्म तेरसे तिमवली; सुणो महा वदि छट्टे जिणेसर सातमा नाणी वळी, सिद्ध सातमे सातमा जिन आठमा जिन केवळी ॥ १७ ॥ ढाळ पूर्वेळी—तीर्थंकर नविम नवमा अवतर्यां अग्यारसेरे आदिदेव केवल वर्याः जाया बारसेरे श्रेयांस मुनि सुव्रत केवली तेरस तीथेरे श्रेयांस दीक्षां निर्मेली ॥ १८ ॥ त्रुटक—निर्मेली चउदशे बारमा जिन जन्म जगजन जय कर्यो, वासुपूज्य नंदन देव दिक्षा अमावास्या वासरो; हवे फागण शुद्दे वखाणुं बीजे अर अव-तार ए, मही जिनवर च्यवन चोथे दीओ भिवक भव पार ए॥ १९॥ ढालपूर्वली—श्री संभवरे आठम च्यवन दिवस कह्यो, मछी सीद्धारे वारसे मुनि सुत्रत त्रतलह्यो; फागण वदिरे चोथे जिन-पति पासनां, कल्याणकरे च्यवन नाण बिहुं आसनां ॥ २० ॥ त्रूटक—आसना पंचमी चंद्रप्रभ जिन

स्तवत.

11 60 11

च्यवन भूतल भयहरु, नृपनाभि नंदन जन्म चारित्र दिवस आठम सुखकरुं; चैत्र शुदि तिथि त्रिज केवलनाण कुंथु अलंकर्या, अजित संभव जिन अनंतज पंचमी दिन शिववर्या ॥ २१ ॥ ढाल-पूर्वली—नविम सीद्धारे सुमित इग्यारसे केवली, तेरस दिनरे वीर जन्म पुहत्ती रली; पुनम दिनेरे जिन छठां नाणीथयां, चैत्रविदरे पडवे कुंथु मुक्तिगया ॥ २२ ॥ त्रूटक—गया शीतल मुक्ति बीजे कुंथुत्रत तिथि पंचमी, जिनराय शीतल च्यवन छट्टे दशमी सिद्धा जिन नमी; तेरसे जन्म अनंत जिननो जंतु कीधां निर्मलां, चउद्शे देव अनंत दिक्षा नाण कुंथु जण्या भला ॥ २३ ॥

ढाल३—त्रीजी ॥ राग केदारो ॥ गोडी ॥ पारिधयारे मुज तें वनवाटि देखाडि ॥ ए देशी ॥ आदरीयारे जिन कल्याण दिन सार ॥ ए आंकणी ॥ जेहथी लहीए भवनो पार, भजो भावे वारो-वार; करो तप जप अतिही उदार, प्रभु पूजो लेइ घनसार ॥ आ० ॥ २४ ॥ वैशाख शुदि चोथे चव्या रे, अभिनंदन जिन हंस; सातमे धर्म च्यवी थयारे, त्रिभुवन जन अवतंस ॥ आ० ॥ २५ ॥ आठमे शीव अभिनंदननुरे, सुमति जण्या जग धीर; नविम सुमति संयम धर्योरे, दशमे केवल स्तवन

॥ ८७ ।

वीर ॥ आ० ॥ २६ ॥ बारसे विमल च्यवन कह्योरे, तेरसे अजित जिणंद; वैशाख विद छट्टे अवत-पूर्वित भ्रेयांस जिन सुखकंद ॥ आ० ॥ २७ ॥ आठमे मुनीसुत्रत जण्या रे, नविम सोप्रभु सीद्ध; शांति जन्म शीव तेरसेरे, चउदशे चारित्र लीध, ॥ आ० ॥ २८ ॥

ढालथ—चोथी ॥ राग परजीओ ॥ अभंगो तुह्रप्राणगोलो ॥ ए देशी ॥ मम लेखण मात्र मनथी, मैत्र परे जे दुःख हरे; च्यवन आदि दिवस जीननां, पंच परगट सुख करे ॥ मम० ॥ ए आंकणी ॥ ॥ २९ ॥ ज्येष्ठ शुदि पंचमी दिवसे, धर्म जिन शिवपद वरे; बारमा जिन चवी नविम, जया उदरे अवतरे ॥ मम० ॥ ३० ॥ बारसे जन्म्य जिन सुपासो, तेरसे ते व्रत भजे; जेठ विद जिन ऋषभ चोथे, नािभ तृप घरे उपजे ॥ मम० ॥ ३१ ॥ सातमे जिन विमल सिद्धा, नवमे निमिजिन व्रतधरे; आषाढ शुदि छट्टे वीर जिनपति, सीद्धारथ कुल अवतरे ॥ मम० ॥ ३२ ॥ सकल टाली कर्म आठम, नेमीजिन शिवसुख लहे; चउदसे जिन जया नंदन, महानंद रमावहे ॥ मंम० ॥ ३३ ॥ ढाल५—पांचमी ॥ राग मालवी गोडी ॥ कहो भविक निःकारण सार ॥ ए देशी ॥ आराधो ए

स्तवन.

कल्या णकर्

cc 11

दिन भविलोगा, जग जेहना छे दुर्लभ जोगा; टाले आधि व्याधि सिव सोगा, दिए भव भव मिम वांछित भोगा ॥ आरा० ॥ ए आंकणी ॥ ३४ ॥ आषाढ विद त्रीज वखाणुं, तिहां श्रेयांस मुक्ति मन आणुं; सातमे च्यवन अनंत जिणंदा, आठमें निम जनम्या जगचंदा ॥ आरा० ॥ ३५ ॥ नविम चव्या छुंथु जगदीश, श्रावण छुदि बीजे सुमित अवतारी; पंचमी नेमि जन्म जयकारी, छहे दीक्षा तजी राजुलनारि ॥ आरा० ॥ ३६ ॥ आठमे पास मुक्ति मन धारो, पुनिमे मुनिसुत्रत च्यवन चितारो; श्रावण वदि सातम तिथि सारी, शशिजिन सिद्ध शांति अवतारी॥ आरा०॥ ३७॥ आठमे सत्तम जिनगामि, पृथिवीनयरे उपन्या स्वामि; भाद्रवा द्युदि नवमे जिनराया, सीद्धा सुविधि धवल जस-काया ॥ आरा० ॥ ३८ ॥ भाद्रवा वदि नेमिसर नाणि, अमावास्या तिम ऊज्ज्वल जाणी; आशो शुद्धि पुनिम अवतरीया, एकवीशमा जीन गुणमणी भरीया ॥ आरा० ॥ ३९ ॥

ढाल—६ छट्टी ॥ राग धन्याश्री ॥ हींचरे हींचरे हींच हींच हींडोलना ॥ ए देशी ॥पूज्यरे पूज्यरे

स्तवनः

11 66 1

पूज्यतुं प्रेमकरी, पंचिदन जिनतणां मुक्तिदायी; इंद्र चंद्रादि देवामिली हरखशुं, जास महिमा करे सुग्रण गाइ ॥ पूज्यरे० २ ॥ ए आंकणी ॥४०॥ मास आशो विद पंचमी केवली, देव संभव भुवन भाव जाणे; बारसे पद्मप्रभु जन्म जग दुःखहरुं, नेमीजिन च्यवन चित्त चतुरआणे॥ पूज्यरे २ ॥ ४१ ॥ तेरसे पद्मप्रभ चारीत्र आदरे, वीर अमावास्या दीन शीव वखाणे; भरतने ऐरवत काल त्रिहुं जिन-तणा, शाश्वता मास तिथि एह जाणो॥ पूज्यरे २॥४२॥च्यवन दीन वीर परमेष्टिने तेम गणो, जन्म अर अर्हते तेम विचारो; संभवनाथाय तिम व्रत दिवसे, अर सर्वज्ञाय नमः नाण धारो॥ पूज्यरे २॥४३॥ वीर पाङ्गगताय तेम गणो शिव दिवस, एहपद सर्व जिन नाम साथे; गणो कल्याणक दिवसे पद सहस्स बे, तप करी होय मुक्ति जिम हाथे॥ पूज्यरे२॥ ४४॥ चंद्र रस ऋतु गगन वर्ष कल्याणक, स्तवन कीधुं भविक भणत भावे; कीर्त्ति कोटि कल्याणक सुख संपदा, सिद्धि सौभाग्य मिली वेग आवे ॥ पूज्यरे २॥४५॥ कळश—तप गच्छ अधिपति नामित नरपति रूपे रति पति सुंद्रा, श्री विजयसेन

स्तवत.

श्रीसंव त्सरी ॥ ८९॥ सूरिंद सुविहित मुगट ग्रुणमणी आगरा; उवझाय श्री नय वीजय सीस्ये थुणिया सयल जिनेश्वरा, दिओमुज महोदय वास विद्या विजय संपद सुखकरा ॥ ४६ ॥
"इति श्री नय विजयजी शीष्य न्याय विशाद यशो विजयो पाध्याय रचित् कल्याणक स्तवनम्"

"अथ श्री संवत्सरी दाननुं स्तवन"

॥ ढाल — ठरे जिहां समिकत ते स्थानक, तेहनां पड्विध कहीये रे ॥ ए देशी ॥ श्री वरदायनां चरण नमीने, वली प्रणिम गुरू पायारे; सयल तिर्धंकर दानज देवे, ते कहुं हर्ष सवायारे ॥ श्री०॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुणजो दान संवच्छरी मिहमा, जेहिथ समिकत लहीये रे; त्रीजगने वश करवा ए दान, मोटो मंत्राक्षर कहीयेरे ॥ श्री ॥ २ ॥ देव लोकांतिक तिर्थंकरने, कयजवणि समे आवीरे; तव तिर्थंकर दानज समये, वर्षी पडहो वजडावेरे ॥ श्री०॥३॥ जे जिन ते निजतात सिहत सुल, नामनी मुंद्रा करावेरे; ते एक मुंद्राये सीरितनी, माने कोस भरावेरे ॥ श्री ॥ ४ ॥ एक-

दाननुं स्तवनः

॥ दु ॥

## श्रीसंव-त्सरी

कोडि आठलाख सोवन मुंद्रा, नीत्यप्रत्ये ते दीये दानरे; एक पहोरपछी वे पहोरसुधि, भविजन आवी लेवेरे ॥ श्री ॥ ५ ॥ ते एक दिन दीनारानुं सोवन, नवहजार मण थायरे; जेनीज वारानां सकट वलाण्या, ते सवाबसो शकट भरायरे ॥ श्री ॥ ६ ॥ त्रणसेकोडि अहासी कोडिते, उपर एंषि लाल भणियेरे; एटला दिनारा वर्षी दाने, देजिन सूत्रमां सूणीयेरे ॥ श्री ॥ ७ ॥ लाख बत्रीश मण सहस ब्यालीसमण, होय कनकना एतारे; सहस एकाशि शकट भराये, एक वर्षमां देतारे॥ श्री ॥ ८ ॥ एतोमुंद्रा कनकमणी गड्यां, तेह निशिथे वलाणीरे; पण हवे वीधी कहुं दान देवानी, सु णजो आगल प्राणिरे ॥ श्री ॥ ९ ॥ दानशाला जिन तात करावे, सौजीन दान आचरवा रे; तिहां-बेसि प्रभु धन अपावे, संयम नारी वरवारे॥ श्री ॥ १० ॥ पहेली शालाये अन्न जमाडे, बीजीये वस्त्र पहेरावेरे; त्रीजीये भूषण चोथीये टंका, देजन जने स्वभावेरे ॥ श्री ॥ ११ ॥ एणे अवसर जिन जमणे पासे, रहे इंद्र सोहम वासीरे; कौसथी मुद्रा काढीदेवा, तेभणी रहे उछासी रे ॥ श्री ॥१२॥ वलीजे मनुष्यना भाग्यमां लखीयुं, इशान इंद्र इम धारीरे; तेहना मुख मांहेथी ते तेहवाण, वयणठी

दाननुं स्तवनः श्रीसंव त्सरी

। ९०॥

ना देनारे ॥ श्री ॥ १३ ॥ चर्मइंद्र जीन मुठीना देनारा, एलेवे जो अधीका होयरे; उछाहोय तो पुराकरे बलेंद्र, सामानी प्राप्ति जोइ रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥ जिन आगल रहे उभो इशानेंद्र, रत्न जडीत लेइ लखुटीरे; देवअसुर कोइ विघ्न करेतो, काढे तेह कुटीरे ॥ श्री ॥ १५ ॥ भुवनपति सुर भरतना जनने, दानलेवा तेडी आवे रे; व्यंतरनांसुर पाछाते जनने, नीज नीज मंदीर ठावेरे ॥ श्री १६ ॥ ज्योतिष्य सुरमली वीद्याधरने, दानलेवाने ते जणावेरे; एवा अतिशय तीर्थंकरना, कहेतां पारन आवेरे ॥ श्री ॥ १७ ॥ चोसठ इंद्रादीक जिन आगल, लीजिये दान उच्छाहेरे; बारवर्ष लगे कल-हो न आवे, तेहने पण मांहो मांहेरे ॥ श्री ॥ १८ ॥ चिकहर नृप दानना टका, मुके ते नीज कोस उलटे रे; बारवर्ष लगे ते कोस टंका, काढतां किमही न खुटेरे ॥ श्री ॥ १९ ॥ इत्यादीक ते दान थकीजस, एकवर्ष जस गवायरे; विल दानथी बार वर्षनां, रोगीनां रोग ते जाय रे ॥ श्री ॥ २० ॥ वलीतस तनुए रोग न प्रगटे, बार संवत्सर सुधीरे; मंद बुद्धिकोइ दानज लेवे, तेहोवे ते सुरग्रह बुद्धिरे 🖔 ॥ श्री ॥ २१ ॥ एवा पंचदश अतीशय प्रभुना, वर्षीदाने प्रगटे रे; इम दानदेइ प्रभु संयमलेइ, उप

दाननुं स्तवन.

11 90 1

श्रीसंव-

शम कर्मने जपटे रे; ॥ श्री ॥ २२ ॥ केवललेइ शीवरमणी वशकरी, त्रीजग नायक उलसेरे; दान प्रभावे त्रिगडे बेसी, केवल कमला वासे रे ॥ श्री ॥ २३ ॥ दान देवानी विधी ए भाखी, सयल तीर्थंकर केरी रे; वीयसार जे ग्रंथ मोझारे, जो जो ए शीक्षा भलेरीरे ॥ श्री ॥ २४ ॥ एणीपेरे भवीया तमेपण निसुणी, देजो दान अभंगा रे; आभव परभव सुख अनंता, उलटे ज्यां गंग तरंगारे ॥ श्री ॥ २५ ॥ एवी दान शक्ति मुज सदा, भव भव उद्येते आवेरे; पंडित केसर अमरनो किंकर, लब्धी वंछीत पावेरे ॥ श्री ॥ २६ ॥

''इति श्री पंडित केसरअमर शिष्य लब्धी विजय विरचित श्री संवत्सरी दान स्तवनम् सम्पूर्णम्"

"अथ श्री आदीश्वर भगवाननां तेर भवनुं स्तवनम्" दुहा—पुरिसा दाणी पासजिन, बहु ग्रणमणी आगार; ऋद्धि दृद्धि मंगल करण, प्रणमुं मन दाननुं स्तवन.

जो १६

श्रीआ-दीश्वर ॥ ९१ ॥ उह्यास ॥ १ ॥ सरस्वति स्वामिने विनवुं, कविजन केरी मायः सरस वाणी मुजने दियो, मोटो किरिय पसाय ॥ २ ॥ लब्धीविजय ग्रह समरिये, अहिनश हर्ष धरेवः ज्ञानद्रष्टि जेहथी लही, पद पंकज प्रणमेव ॥ ३ ॥ प्रथम जिनेश्वर जे हुआ, मुनीवर प्रथम वखाणः केवलधर पहेलां कह्या, प्रथम मिक्षा क्रिय जाण ॥४॥ पहेलो दाता ए कह्यो, आ चोविशि मोझारः तहनां तरभव वर्णवुं, आणि हर्ष अपार ॥५॥ ढाल--१-पहेली ॥ धन्य धन्य संप्रति साचोराजा ॥ ए देशी ॥ राग आशाउरी ॥ पहेले भवे धनसारर्थ वाहे, समकीत पाम्यो साररे; आराधि बीजे भवे पाम्या, युगल तणो अवतार रे॥१॥ सेवो समकित साचुं जाणि, ए सिव धर्मनी खाणीरे; नवी पामे जे अभव्य अनाणि, एहवी जिननी वाणीरे॥ सेवो० ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ युगल चिव पहेले देवलोके, भव त्रीजे सूर थायरे; चोथेभवे विद्याधर कुले थयो, महाबल नामे रायरे ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ ग्रुरुपासे दीक्षा पालीने, अणसण कीधुं अंतरे; पांचमे भवे बीजे देवलोके, ललीतांग सूर दीपंतरे ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ देवचवी छट्टे भवे राजा, बज्रजंघ इणे हैं नाम रे; तिहांथी सातमे भवे अवतरिओ, युगला धर्मश्युं ठामरे, ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ पूर्ण आयु करी

स्तवन.

॥ ५३ ॥

श्रीआ-दीश्वर

आठमे भवे, सौधमें देवलोके देवरे; देवतणी ऋद्धि बहुली पाम्या, देवतणा वली भोगरे ॥ सेवो० हैं ॥ ६ ॥ मुनी भव जीवानंद नवमे भवे, वैद थयो चवी देवरे; साधूनी वैयावच्च करी दीक्षा, लेइ-पाले स्वय मेवरे ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ वैद जीव दशमे भवे स्वर्गे, बारमें सूर होय रे; तिहांकणे आयु भोगवी पूरुं, बावीश सागर जोयरे ॥ सेवो० ॥ ८॥ इग्यारमें भवे देव चवीने, चक्रीहुओ वज्र-नामरे; दीक्षा लेइ वीश स्थानक साधी, लीघो जिनपद लाभरे ॥ सेवो० ॥ ९ ॥ चौद लाख पूर्वनी दीक्षा, पाली निर्मल भावेरे; सर्वार्थ सीछे अवतरीआ, बारमे भवे आयरे ॥ सेवो० ॥ १० ॥ तेत्रीश सागर आयु प्रमाणे,सुख भोगवे तीहां देवरे; तेरसमा भव केरो हवे हुं, चरित्त कहुं संक्षेपेरे ॥ सेवो०॥११॥ ढाल—२ बीजी॥ वाडी फूली अतिभली मन भमरा रे ॥ ए देशी ॥ जंबुद्दीप सोहामणुं मनमोहना, लाख जोजन प्रमाण लाल मन मोहना; दक्षिण भरत भक्षं तिहां मन मोहना, अनोपम धर्मवुं ठाण लाल मन मोहना ॥ १ ॥ नयरी विनीता मांहि जाणीए मनमोहना०, स्वर्गपूरी अवतार लाल०; ना-भीराया कुलगर तीहां मन०, मरुदेवी तस नारिलाल० ॥२॥ प्रितिभक्ति पाले सदा मन०, पीउशुं प्रेम

स्तवनः

श्रीआ-दीश्वर ॥ ९२ ॥ अपार लालo; सुख विलसे संसारनां मनo, सुरपेरे स्त्री भरतार लालo॥ ३ ॥ एक दिन सूती मालिये मनo, मरुदेवी सुपवित्त लालo; चोथ अंधारि आषाढनी मनo, उत्तराषाढा नक्षत्र लालo॥ ४॥ तेत्रीश सागर आउले मनo; भोगवी अनोपम सुख लालo; सर्वार्थ सिद्धथी चवी मनo, सूर अवतरिओ कुख लालo॥ ५॥ चउद सुपन दिठां तीसे मनo, राणीए मझिम रात लालo; जइकहे नीज कंतने मनo, शुप-नतणी सावि वात लालः ॥ ६ ॥ कंत कहे निजनारीने मनः, शुपन अर्थ सुविचार लालः; कुलदिपक त्रीभूवन धणि मन०, पुत्र होशे सुखकार लाल० ॥७॥ शुपन अर्थ पीउंथी सुणि मन०, मन हरस्यां मरु-देव लाल०; सुखे करे प्रति पालना मन०, गर्भतणी नित्य मेव॥ लाल०॥८॥ नव मासवाडा उपरे मन०, दिन हुआ साढासात लाल०; चैत्रवदि आठिम दिने मन०, उत्तराषाढा विख्यात लाल०;॥९॥ मझिम रयणी ने समे मन०, जनम्यो पुत्र रतन्न लाल०; जन्म महोच्छव तवकरे मन०, दिशी कुमरि छपन्न लाल० ॥ १० ॥

ढाल-३-त्रीजी ॥ हमचडीनी देशी ॥ आसन कंप्युं इंद्रतणुं रे,अवधिज्ञाने जाणि; जिननो जन्म

स्तवन

11 32 11

श्रीआ दीश्वर महोच्छव करवा, आवे इंद्र इंद्राणीरे हमचिंड ॥ १ ॥ सुर परिवारे परिवर्यों रे, मेंरु शीखरे लेइ जाय; प्रभुने नमण करीने पूजी, प्रणमी बहु गुण गायरे हमचिंड ॥२॥ आणी माता पासे महेली, सुर सुर-लोके पहोता; दिन दिन वाघे चंद्र तणीपेरे, देखी हरखे मातारे हमचिंड ॥ ३ ॥ वृषभतणुं लंछन प्रभु चरणे, माता पिता देखे; सुपनमांहि वली वृषभज पहेलो, दीठो उज्ज्वल वर्णेरेहमचिंड ॥ ४॥ तेहथी माता पिताए दीधुं, ऋषभ क्रमार गुणगेह; पांचसे धनुष्य प्रमाणे उंचि, सोवन वर्णी देहरे हमचडि॰ ॥ ५ ॥ वीश पूर्व लाख कुंवर पणेरे, रहीया प्रभु ग्रहवासे; सुमंगला सुनंदा कुंवरी, परण्या दोय उछासेरे हमचिंडि०॥ ६॥ त्रीशलाख पूर्व गृहवासे, वसीया ऋषभ जिणंदः; भरतादिक सुत शत हुआ रे, पुत्रीदोय सुख कंदरे हमचिंडि०॥ ७॥ तव लोकांतीक सुर आवीने रे, कहे प्रभु तीर्थ स्थापोः; दान संवच्छिर देइ दीक्षा, समय जाणि प्रभु आपेरे हमचिंडि०॥ ८॥ दिक्षा महो-च्छव करवा आवे, सपरिवार सूरिंदोः; शीविका नामे सुदर्शना रे, आगल ठवे निरंदोरे हमचिंडि०॥९॥ ढाल-४ चोथी॥ राग-मारु॥ ए देशी॥ चैत्रवदि आठम दिने रे,उत्तराषाढारे चंद; शिबिकाए बेसी-

स्तवत.

श्रीआ-दीश्वर ॥ ९३ ॥ गया रे, सीद्धार्थ वन चंदोरे ॥ ऋषम संयम लीए ॥ ए आंकणि ॥ १ ॥ अशोक तरुतले आवीने रे, चउ मुट्टी लोच कीध; चार सहस वह राजवी रे, साथे चारित्र लीधरे ऋषभ० ॥ २ ॥ त्यांथी विचर्यां जिनपति रे, साधु तणो परिवार; घर घर फरतां गोचरी रे, महीअल करे विहार रे ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ फरतां तप करतां थकां रे, वर्ष दिवस हुआ जाम; गजपुर नयर पधारीया रे, दिठां श्रेयांसे ताम रे ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ वर्षि पारणुं जिनजीए रे, शेलडी रस तिहां कीध; श्रेयांसे दान देइने रे, परभव शंबल लिध रे ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ सहस वर्ष लगे तप ति रे, कर्म कर्यां चकचुर; पुरीम-ताल पुर आविने रे, विचरंता बहुगुण पूरो रे ॥ ऋषभ० ॥ ६ ॥ फागण विद इग्यारसे रे, उत्तरा-पाढा जोगे; अष्टम तप वह हेठले रे, पाम्या केवल नाण रे ॥ ऋषभ० ॥ ७ ॥

ढाल—५ पांचमी ॥ कपुर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ समवसरण देवे मली रे, रिचिउं अतिहि उदार; सिंहासन बेसी करि रे, दिए देशना जिन सार ॥ चतुरनर कीजे धर्म सदाय, जिमतुम शिवसुख थाय ॥ चतुरनर० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ बारे पर्षदा आगले रे,

स्तवन-

॥ ९३ ॥

श्रीआ-दीश्वर कहे धर्म च्यार प्रकार; अमृतसम देशना सूणि रे, प्रतिबोध्या नरनार ॥ चतुरनर० ॥२॥ भरत तणा सुत पांचसें रे, पुत्री सातसें जाण;दीक्षाळीये जिनजी कने रे, वैराग्ये मनआण ॥ चतुरनर०॥३॥पुंड-रीक प्रमुख थयारे, चौराशि गणधार;सहस चोराशि तिम वळी रे, साधु तणो परिवार ॥ चतुरनर०॥॥॥ ब्राह्मी प्रमुख वळी साहुणी रे, त्रणळाख सुविचार; पांच सहस त्रणळाख भळां रे, श्रावक समिकत धार॥चतुरनर०॥ ५॥ चोपन सहस पंचलाख कही रे, श्रावीका शुद्ध आचार; इम चतुर्वीध संघ स्थापीने रे, ऋषभ करे विहार॥चतुरनर०॥६॥ चारीत्र एक लाख पूर्वेनुं रे, पाल्युं ऋषभ जिणंदः धर्म-तणां उपदेशथी रे, तार्या भविजन वृंद्॥ चतुरनर०॥ ७॥ मोक्ष समय जाणी करि रे, अष्टापदगिरि आवे; साधु सहसद्शशुं तिहां रे, अणसण कीधुं भावे॥ चतुरनर०॥ ८॥माहावदि तेरशने दिने रे अभिचि नक्षत्र चंद्र योग; मुक्ति पहोता ऋषभजी रे, अनंत सुख संजोग ॥ चतुरनर०॥ ९॥

ढाल—६छट्टी ॥ राग–धन्याश्री ॥कडाखानि देशी॥ तुंजयो तुंजयो ऋषभ जिन तुंजयो, अल-

स्तवन.

श्रीआ-दीश्वर ॥ ९४ ॥ तुंजयो २॥ ए आंकणी ॥ १॥ जगमांहिं मेहने मोर जिम प्रीतडी, प्रीतडी जेहवी चंद चकोर; प्रीतिड राम लक्ष्मण तणी जेहवी, रात दिन तिमन ध्याउं दर्शतोरा॥ तुंजयो २॥ २॥ शितल सुरतह तणे छांयडे, शियलो चंद चंदन घसारो; शीयलुं केल कपूर जेम शीयलुं, शीयलो तिम मुज मुख तुमारो ॥ तुंजयो २॥ ३॥ मीठडो शेलडी रस जिम जाणीए, षद्रस दाक्ष मीठी वलाणि; मीठिड आंबला शाखजीम तुम तणी, मिठडी मुजमन तिम तुम वाणी॥ तुंजयो २॥ २॥ तुमतणा गुणतणो पार हुं नवीलहुं, एकजीमे केम ते कहीजे, तार मुजतार संसार सागर थिक; रंगइयुं शीवरमणी विरेजे॥ तुंजयो २॥ ४॥

कलश—इम ऋषभ स्वामि मुक्तिगामी चरणनामी शीशए, मरुदेवी नंदन दुःख नीकंदन प्रथम जीन जगदीश ए; मनरंगआणी सुखखाणी गाइओ जग हितकरुं, कवीराज लब्धी नीजसु सेवक प्रेमविजय आनंद करो ॥ १ ॥

''इति श्री आदिश्वर स्वामिना तेरभवनुं स्तवन सम्पूर्णः"

स्तवन.

11 38 11

श्रीगोडी पार्श्व.

## "अथ श्री मोडी पार्श्वनाथजीनुं स्तवन"

दुहा—भावधरी भजना करुं, आपो अविचल मात; लघुताथी ग्रुरुता करे, तुं शारद सरस्वत ॥ १॥ मुज उपर मया धरो, देज्यो दोलत दान; ग्रुणगाउं गोडी तणां, भावे भावे भगवान ॥ २॥ धवलिंग गोडी घणी, सहुको आवे संग; महेमदावादे मोटको, तारंगो नवरंग ॥ ३॥ प्रतिमा त्रणे पासनी, प्रगटी पाटण मांहि; भक्ति करे जे भविजना, कुण ते कहेवाय ॥ ४॥ उत्पत्ति तेहनी उच्चरं, शास्त्र भणी करि शाख; मांहि ग्रुण मोटातणां, भाखे कवीजन भाख ॥ ५॥

ढाल—१-पहेली ॥ निदयमुना के तीर उड़े दोय पंलीयां ॥ ए देशी ॥ काशिदेश मोझारके नयरी विणारसी, एह समोवड कोयनहीं लंकाजसी; राज्यकरे तिहांराजके अश्वसेन नरपित, राणी वामानंदके तेहने दिनपित ॥ १ ॥ जन्म्या पासकुमारके तेणी राणीये, ओच्छव कीधो देवके इंद्र इंद्राणीये, योवन परण्या प्रेमके कन्या प्रभावती, नीत्य नीत्य नव नवा वेश करीने देखावती ॥ २ ॥ दिक्षालेइ वनवास रह्या काउस्सग्ग जिहां, उपसर्ग करवा मेघमाली आव्यो तिहां; कष्टदेइ तेह गयो ते देवता,

स्तवन.

पाम्या केवलज्ञान के आविनर सेवतां ॥ ३ ॥ वर्ष सोनुं आउखुं भोगवी उपन्या, ज्योतमांहि मिल-ज्योति तिहांनही सुखमना; पाटण मांहि मूरत त्रणे पासनी, भरावी भोंयरामांहि राखे केइ मासनी ॥ ४ ॥ एकदिन प्रतिमा तेह गोडिनी लेइकरी, पोताना आवास मांहिं तरके धरी; खाड खणीने मांहि घालि तरके जिहां, सूए नित्यप्रत्ये तेह शय्या वालि तिहां ॥ ५ ॥ एकदिन सुहणामांहि आवी यक्ष-इम कहे, तेणे अवसर ते तरक हीयामां सद्दहे; निहंतर मारिश मरडीश हवे हुं तुजने, तेमाटे घर मांहेथी काढे मुजने ॥ ६ ॥ पारकर मांहिथी मेघाशाह आवशे, ते तुज देशे टका पांचसे लावशे; देजे मूरत एहके काढी तेहने, मतकरजे कोइ आगल वात ए केहने ॥ ७ ॥ थाश्ये कोडीकल्याणके ताहरे आजथी, वाधक्ये पांचमांहि नामके लाजथी; मनसुंबीनो तरक थाए ते आकुलो, आगल जे थारो वात ते भवीयण सांभलो ॥ ८॥

दुहा—मनशुं बीनो तरकडो, बडा भूतहे कोय; अबसताब प्रगट करे, नहितर मारशे सोय॥१॥ दुहा—मनशुं बीनो तरकडो, बडा भूतहे कोय; अबसताब प्रगट करे, नहितर मारशे सीय॥१॥ 🖔 ढाल—२-बीजी ॥ माहरा घणु रे सवाइ ढोला ॥ ए देशी ॥ लाख जोयण जंबु प्रमाण, तेहमां 🖔

श्रीगोडी पार्श्व. भरतक्षेत्र प्रधान रेः माहरा सुग्रुण सनेही सुणज्यो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पारकर देश ते रूडों, हैं जिम नारिने शोभे चुडो रे ॥ मा० ॥ २ ॥ शास्त्रमांहिं जिमगीता, तिम सतीओ मांहिं सीतारे ॥ मा० हैं वाजींत्र मांहिं जिम भेर, तिम पर्वत मांहिं जिम मोटो मेरुरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ देवमांहिं जिमइंद्र, यहगणमांहिं जिम चंद्ररे ॥ मा०; ॥ बत्रीशसहस तिहांदेश, तेमां पारकरदेश विशेषरे ॥ मा०॥४॥ भूधेसर नामे नयरी, तिहां रहेतां नथी कोइ वैरी रे ॥ मा॰; तिहांराज्य करे खेंगार, तेजात तणो परमाररे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तिहां वणीज करे वेपारी, अपछरा सरखी तसनारीरे ॥ मा०; मोटा मंदिर प्रधान, तीहां चौदसया बावनरे ॥ मा० ॥ ६ ॥ तिहां काजलशा व्यवहारी, सहु संघमांछे अधी-कारीरे ॥ मा; तस पूत्र कलत्र परीवार, जस माने घणुं दरबाररे ॥ मा० ॥ ७ ॥ ते काजलशानी बहेन, सा मेघो कीघो जमाइ रे॥ मा०; एकदीन सालो बनेवी, बेठां वातो करेछे एहवीरे॥ मा० ॥ ८ ॥ इहांथी धनजइ लावो, वस्तु केइरे अणावारे ॥ मा०; ग्रुजरातमांहे तुमे जाज्यो, जिमलाभ आवे तो लेज्योरे ॥ मा० ॥ ९ ॥

स्तवन

श्रीगोडी-पार्श्व.

॥ ९६ ॥

ढाल—३—त्रीजी ॥ पंचमी तप भणुंए, जन्म सफल करुंए॥ ए देशी॥ सा काजल कहेवात, मेघा-भणी दिनराति; सांभलि सद्दहे ए, वलतुं इम कहे ए॥ १॥ जाइश हुं प्रभाते, साथकरी गुज-राते; शकुन भले सिह ए, केतो चालवुं वही ए॥ २॥ धनघणुं लेइ हाथ, परिवार करी साथ; कंकु तीलक कीओ ए, श्रीफल हाथे दीओ ए॥ ३॥ लेइ उंट कतार, आव्यो चौटा मोझार; कन्या सन्मुख मली ए, करती रंगरली ए॥ ४॥ मालिण आवी जाम, छाब भरीने ताम; वधावे शेठजी भणीए, आशीष आपे घणी ए ॥ ५ ॥ मच्छयुग्म मल्यो खास, वेद बोलतो व्यास; पत्र भरीयो गणो ए, वृषभ हाथे धणीए॥६॥डावो बोल्यो सांढ, दधीनुं भरीउं भांड; खरडा वोखरो ए, लोककहे हीये धरो ए ॥ ७ ॥ आगल आज्या जाम; मारग बुट्यां ताम; भैरव जमणी भली ए, देवडावी वली वली ए ॥ ८ ॥ जमणी रुपारेल, तोरण बांधे तिणवेल; नीलकंठ तोरण कीओ ए, उलस्यं अति हियुं ए ॥ ९ ॥ हनुमंत दीधीहाक, मधुरो बोले काग; लोक कहे सह ए, काम होस्ये ए ॥१०॥ अनुक्रमे चाल्या जाय, आव्या पाटण मांहिं; उतारा भला किया ए, रोठजी आवीयाए॥ ११॥ 🧗

स्तवन.

॥ ९६॥

श्रीगोडी पार्श्व. निशिभर सुतां ज्यांहि, यक्ष आवीने त्यांहः सुहणे इम कहेए, ते सघछुं सद्देए॥ १२॥ तरक तणुंछे धाम, तेहने घर जइतामः पांचसें रोकडा ए, तुं देजे दोकडाए॥१३॥ देशे प्रतिमा एक,पासतणी सुवीवेकः तेहथी तुज थाश्ये ए, चिंता दुर जास्ये ए॥ १४॥ संभठावी यक्षराज, तरक भणी कहेसाजः प्रतिमा तुं देज्ये ए, पांचसे धन छेजे ए॥ १५॥ इम करता प्रभात, तरक भणी कहेवातः मनमांहि गह गहेए, अचरिज कुण छहेए॥ १६॥

ढाल—४थी॥आसणरारे योगी॥ ए देशी॥तरक भणी द्ये पांचसे दाम, प्रतिमा आणि नीज ठा क्रिं पासजी मुने तुठा;॥ ए आंकणी॥ पूजे प्रतिमा हर्ष भराणो, भाव आणीने खरचे छे नाणोरे; पासजी०॥१॥ मुज वखते ए मूरित आवी, मुने आपस्यें दाम उपावीरे; पासजी० दाम देइने पासजी लीधा, मनमान्या कारज कीधांरे; पासजी०॥ २॥ रुनां भरीया उंट त्रेवीश, मांहि बेसाड्यां जगदीशरे; पासजी० अनुक्रमे चाल्या पाटण मांहिथी, साथे मूरित लइने त्यांथीरे; पासजी० ॥ ३॥ आगल राधनपूरे सहु आव्यां, दाणलेवा दाणीमली आव्यांरे; पासजी० गणे उंटने भुले

स्तवन.

হা ৭৩

श्रीगोडीपार्श्व.
॥ ९७॥

प्राप्ति के इणमांरे; पासजी० मेघाशानें दाणी मली पुछे, कहो शेठजी ए कारण श्युंछेरे; पासजी०
॥ ९७॥

पार्श्व.
॥ ९७॥

पार्श्व.

पार्व.

पार्श्व.

पार्व.

पार्श्व.

पार्व.

पार्श्व.

पार्व.

पार्व.

पार्व.

पार्श्व.

पार्श्व.

पार्श्व.

पार्श्व.

पार्व.

पार्व.

पार्श्व.

पार्व.

पार्व.

पार्श्व. यायत घणुं हरखेरे; पासजी०॥८॥

बायत वे सु हरसर, नाताना । जा । वायत वे सु हरसर, नाताना । जा । वायत वे सु हरसर, नाताना । जा । वास वे सु हरसर, नाताना । जा । वास वास आवीमले सामटा रे लाल, दरी । इगण करवा काज भवीप्राणी; ढोल नगारा गड गडेरे लाल, नादे अंबर गाजे; भवीप्राणी० सुणज्यो । वात सोहामणी रे लाल, ॥ ए आंकणी ॥१॥ ओच्छव महोच्छव करी घणांरे लाल, भेट्यां श्रीपार्श्वनाथ । भवी० पूजा प्रभावना करे घणां रे लाल, हर्ष पाम्या सहुसाथ; भवी० ॥ सुणज्यो०॥ २॥

श्रीगोडी पार्श्व. संवत् चौद बत्रीसमेरे लाल, कार्त्तिक शुदि बीज; भवी०; थावरवारे स्थापियारे लाल०, नरपित पाम्या रीज; भवी० ॥ सुणज्यो०॥३॥ एक विनंती काजलशा कहेरे लाल०,मेघाशाने वात भवी०; नाणुं अमारुं लेइकरी रे लाल, गयाहुता गुजरात; भवी०; ॥ सुणज्यो०॥ ४॥ तेधन तुमे किहां वावर्यो रे लाल, तेद्यो लेखो आज; भवी०; तवमेघो कहे शेठजीरे लाल, खरच्यां धर्मने काज; भवी०॥ सुणज्यो०॥ ५॥ स्वामीजी माटे रुपीआरे लाल, पांचस्ये दीधा दाम; भवी०; काजल कहे तुमे स्युंकर्युंरे लाल, ए पथर केणेकाम; भवी०॥ सुणज्यो०॥६॥ काजल भणीमेघो कहेरे लाल, ए व्यापारमांहि नतुम भाग; भवी० ते पांचसे शीरमाहरे रे लाल; तेहमां नहीं तुमभाग; भवी०॥ सुणज्यो०॥०॥ मेघाशानी भार्यारे लाल, मृघादे छे नाम; भवी०; मइओने मेरो सारिखोरे लाल, बिहुसुत रिवय सामान; भवी०॥ सूणज्यो०॥८॥

हाल—६ ठी ॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥ साह काजल मेघाभणी, बिहुं जणमांही संवाद मेरेलाल; तिहां मेघो धनराजने, एकदीन कीधोसाद; मेरेलाल॰ सुणज्यो वात सोहामणी ॥ ए अंकणी ॥१॥ आ प्रतिमा पूजोतमे, भाव आणीने चित्त मेरेलाल॰; बारवर्ष लगे तिहां पुज्या, पूजि

स्तवनः

श्रीगोडी- प्रितमा नित्य मेरेलाल०; सुणज्यो॥२॥ एक दिन सुहणे इमकहे, मेघाशाने वात मेरेलाल०; तुंसुज साथे पार्श्व. आवजे, परवारि प्रभात मेरे लाल०; सुणज्यो०॥ ३॥ वहेल लेइ भावल तणी, चारण जातेछे तेह मेरे लाल०; देवाणंद राइका तणा, दोय वृषभछे तेह मेरेलाल०; सुणज्यो०॥ ४॥ वहेले खेडे तुं एकलो, मतलेजे कोइने साथ मेरेलाल०; डाबा स्थलभणी चालजे, मुजने राखजे हाथ मेरे लाल०; सुणज्यो० ॥ ४॥ इम मेघाशाने प्रीछवी, यक्ष गयोनिज ठाम मेरे लाल०; रविउगे मेघोतिहां, करवा मांड्यो काम मेरे लाल॰; सुणज्यो॰ ॥ ६ ॥ वहेल लीधी भावलतणी, वृषभ आण्या दोय मेरे लाल॰; जोतरी वहेळ स्वामीतणी, जाणोछो सबकोय मेरे लाल०; सुणज्यो०॥ ७॥ तव मेघो ते वहेलने, खेडी चाल्यो जाय मेरे लाल०; अनुक्रमे मारग चालता, आव्यां थल डाबामांहि मेरेलाल०; सुणज्यो० ॥ ८ ॥

ढाल—७ मी ॥ आमली लाल रंगावो वरना मोलिया ॥ ए देशी ॥ तिहा छोटाने मोटा स्थल घणा, दिसे रुक्षतणा नही पाररे; तिहां भुतने घेत व्यंतर घणां, देखी शेठ करे विचाररे ॥ साहमेघो मनमा चिंतवे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुण करस्यें माहरी साररे, तव यक्ष आवीने इमकहे; तुंमत करजे फिकर

श्रीगोडी पार्श्व.

हवे शेठहुओ दीलगीररे; मुजपासे नथी कांड् दोकडा, कुणजाणे पराइ पीररे॥ साहमेघो०॥ २ ॥ तिहां निहां के निहां के स्वार निहां महोल मंदिरना ठामरे॥ साहमेघो०॥३॥ तिहां वहेल थंभाणी चाले निहां के हवे शेठहुओ दीलगीररे; मुजपासे नथी कांड् दोकडा, कुणजाणे पराइ पीररे॥ साहमेघो०॥ २ ॥ तिहां रात पड़ी रवी आथम्यो, चिंतातुर थइने सुतोरे; साह मेघाभणी आवीने इमकहे, सुहणामां यक्ष एकांतो रे ॥ साहमेघो० ॥ ५ ॥ हवे सांभल मेघा हुं कहुं, आ वासे गोडीपुर गामरे; माहरो देरासर करजे इंहा, उत्तम जोइ कोइ ठामरे ॥ साहमेघो० ॥ ६ ॥ तुं जाजे दक्षिण दिशिभणी, तिहां पञ्चुं छे निल्लं छाणरे; तिहांकुओ उमटक्यें पाणीनो, वली प्रगटस्यें पाणीनी खाणरे॥ साहमेघो०॥आपासेउग्योछे उज्ज्वल आ-कडो,ते हेठेले धनछे बहुलोरे;पुर्यों छे चोखातणो साथीओ,तिहां पाणीतणो कुओ पहोलोरे॥साहमेघो०॥८॥ ढाल-॥ ८ मी ॥ सीता ते रूपेरुडी ॥ ए देशी ॥ सलावट सीरोही गामे, तिहां रहेछे चतुरछे कामेहो शेठजी सांभलो; रोगछे तेहने शरीरे, नमण करिछांटे नीरहो शेठजी सांभलो ॥ ए आं कणी०॥ १॥ रोग जाशेने सुखथाशे, बेठोइहां काम कमासेहो शेठ; ज्योतिष निमित्त जोवरावे,

स्तवनः

For Private And Personal Use On

॥ ९९ ॥

देहरासर पायो मंडावेहो शेठ०॥ २॥ यक्षगयो इम कहीने, करो उद्यम शेठजी वहिनेंहो शेठ; सिलावटने तेडावे, वली धननी खाण खणावेहो शेठ०॥३॥ गोडीपुरगाम वसावे, सगा संबंधी साजनने तेडावेहो शेठ०; इम करता बहुदिन विल्यां, थयोमेघो जगत्र वंदीतोहो शेठ०॥ ४॥ एकदिन काज लशा आवी, कहे मेघाने वात बनावीहो शेठ०; ए काममां भाग अमारो, अर्द्ध अमारो अर्द्ध तुमारोहो ॥ शेठ०॥ ५॥ इम करी देरासर करीए, जिम जगमां जशवरीएहो शेठ; तव मेघोकहे तेहेन, दाम जोइएछे हवे केहनेहो शेठ० ॥ ६ ॥ खामीजीने सुपसाये, घणां दामछे वली आहिंहो शेठ०; एकदिन कहेता तुमेआम, ए पथ्थरछे कुण कामहो शेठ०॥ ७॥ क्रोधवशे पाछो वलीयो, आपणा मंदिरमां भिलेओ हो शेठ०; साहकाजल मनमांचिते, मारुं मेघानें एम चितेहो शेठ०॥८॥

ढाल—९ मी ॥ कोइल्यो पर्वत धुंधलोरे लोल०॥ए देशी॥ परणाबुं पुत्री माहरीरे लोल०,खरची धन
अपाररे चतुरनर; न्यात जमाबुं आपणीरे लोल०; तेमुज उपजें कोररे चतुरनर; तेडी मेघोतेणी वाररे
चतुरनर, सांभलज्यो श्रोता जनोरे लोल०॥ए आंकणी॥१॥जो मेघो मारुंतो सहीरे लोल०, तो मुज उपजे

स्तवन

11 99 11

कराररे चतु॰; देवल कराउं हुं वलीवलीरे लोल, तो नाम रहे निरधाररे चतु॰, सांभलज्यो॰ ॥२॥ एम इंचींतवी विवाहनोरे लोल॰, करे कार्य तत्कालरे चतु॰; साजनने तेडावीयारे लोल॰, गोरीओ गावेध-मालरे चतु॰ ॥ सांभलज्यो ॥३॥ मेघा भणी मेलि नुंतर्यारे लोल॰, मोकले काजल शाहरे चतु॰; विवाह-उपर आवज्योरे लोल॰, अवस्य करिने आहिंरे चतु॰ ॥ सांभलज्यो॰ ॥ ४ ॥ सांभलि मेघो चिंत वेरे लोल०, किमकरी जइए त्यांहिरे चतु०; काज अमारे छे घणुंरे लोल०, देरासरनुं आंहिंरे चतु० सांभलज्यो॥ ५॥ तवमेघो कहे तेहनेरे लोल०, तेडीजाओ परिवाररे चतु०; काम मेली किमआवी येरे लोल०, तेजाणो निरधाररे चतु०॥ सांभलज्यो०॥ ६॥ मृगादेने तेडीनेरे लोल०, पुत्र कलत्र परीवाररे चतु॰; मेघाविनासहु साथनेरे छोल॰, तेडी आव्या तेणी वाररे चतु॰॥ सांभलज्यो॥ ७॥ कहे काजल मेघो किहांरे लोल॰, इहां नाव्यो शामाटेरे चतु॰; तो मेघाविण किम सरेरे लोल॰, न्यात तिण ए वाटरे चतु॰॥ सांभलज्यो॰॥ ८॥

ढाल--१०मी-नंद सळुणा मारा नंदनारे लोल० तेमुने नांखी छे फंदमारे लोल ॥ ए देशी ॥ कहे

यक्ष मेघा भणीरे लोल०, ताहरे हवे आवी बनीरे लोल०; काजल आवश्ये तेडवारे लोल०, कुडकरी कुज तेडवारे लोल०। १॥ तुं मतजाजे तिहा कणेरे लोल०, झेरदेइ तुजने हणेरे लोल०; तेड्या विण जाए नहीरे लोल०, तो नमण करिलेजे सहीरे लोल०।। २॥ दूधमांहि देशे खरूरे लोल०, नमणपिघे जाश्ये परुरे लोल०; तेमाटे तुजने घणुरे लोल०, माने वचन सोहामणुरे लोल०॥ ३॥ यक्ष कहिंगयो तेहेवे रे लोल०, काजलशा आव्यो एहवेरे लोल०; कहे मेघाने सांभलोरे लोल०, आवोमेली मननो आमलोरे लोल० ॥ ४ ॥ तुम आव्यां विण किम सरेरे लोल०, न्यातमा शोभीए किणी परेरे लोल॰; तुम सरिखा आवे सगारे लोल॰, तो अम मनथाए उमंगरे लोल॰ ॥ ५ ॥ हुंआ किणा परर लाल॰; तुम सारखा आव सगार लाल॰, ता अस मनयाद उमगर लाल॰ ॥ ३ ॥ इ०० इट्यो धरती भरीरे लोल॰, तोकिम जाउं पाछो फरीरे लोल॰; जो अमने कांइ लेखवोरे लोल॰, आ डो अवलोमत दाखवोरे लोल॰ ॥ ६ ॥ हठकरी बेठां तुमरे लोल॰, खोटी थाइएछथे अमोरे लोल॰, ॥१००॥ साहमेघो मन चिंतवेरे लोल॰, अति ताण्युं किम पूरवेरे लोल॰ ॥ ७ ॥ काजल साथे चल्यारे लोल॰, भुधेसरमां आवीयारे लोल॰; नमण वीसार्युं तिहां कणेरे लोल॰, भावीवशे आवी बनीरे लोल॰॥८॥

श्रीगोडी पार्श्व

ढाल--११ मी-काबिलरो पाणी लागणो काबील मतचालो ॥ ए देशी ॥ न्यात जमाडे आपणी, देइने बहुमान; वरकन्या परणाविया, दीधां बहुदान ॥ १ ॥ काजल कहे नारीभणी, मेघाने अमे 🖔 भेलां; जिमण देजे वीष भेलीने, दुधमां तेणी वेला ॥ २ ॥ दुधतणी छे आखडी, तुमने कहीश हुं 🖔 रीसे; मेघाने मेळवो निहं, पीरस्युं, जमण ते पीस्यें ॥ ३ ॥ तवनारी कहे पीउजी, मेघाने मत मारो; कुलमां लंखन लागइयें, थाइये पंचमा कारो ॥ ४ ॥ काजल ते माने नहीं, नारी कहीने हारी; मन-भांग्यो मोती आड्यो, तेहने न लागे कारी ॥ ५ ॥ एम शीखवी नीज नारिने, जीमवा बेहु बेठां; भेलां एकण थालमा, हैये हर्षे हैठा ॥ ६ ॥ दुध आण्युं तिण नारिए, पीरस्युं थालि माहिं; काजल कहे मुज आखडी, पीधो मेघे त्यांहिं ॥ ७ ॥ मेघाने हवे तत्क्षणे, विष व्याप्युं ते अंगे; श्वासो श्वास रमीगयां, पाम्या गति सुरंग ॥ ८॥

ढाल—१२–कीहांरे ग्रुणवंती मारी जोगणीरे ॥ ए देशी ॥ आवी मृगादे पीउने देखीनेरे, रोती कहे तिणि वाररे; मइओनेमेरो तेपण बिहुं जणारे, अतिघणो करे पोकाररे ॥ १ ॥ फिट फिटरे कुल

स्तवन.

श्रीगोडी पार्श्व ॥१०१॥ हीणा ए ते इयुंकर्युरे ॥ ए आंकणी ॥१॥ नावी लाज लगाररे, मुख देखाडीश म लोकमांरे; धीग् धिग् तुज अवताररे ॥ फीटफीटरे० ॥ २ ॥ वीरडा न जाण्युं तें मन एहवुंरे, ताहरी भक्तिनो कुण सलु खरे; माहरेतो कर्मे ए छाज्युं नहींरे, पडी दीसे छे मुजमां चुकरे ॥ फीटफीटरे० ॥ ३ ॥ एहवा लख्यां छठीये अक्षरारे, हवेदीजे कीणने दोषरे; नीराधारी मेलीगयो नाहलोरे, मुजने नकीधो कही रोषरे ॥ फीट फिटरे० ॥ ४ ॥ इम विलवंति मृगादे कहेरे, वीरातें तोडी मोरी आशरे; तुजने किम उकल्युं एहवुंरे, जीवीस तीन पंचासरे ॥ फीट फिटरे० ॥ ५ ॥ कुड करीने मुजने छेतरीरे, कीधो तें मोटो अन्यायरे; माहरा ना ना बेहु बाछुडारे, केहने मलश्ये जड़ने धायरे ॥ फीट फीटरे ॥ ६ ॥ अधिवच रह्यां आजथी देहरांरे, जगमां नामरह्यो नीरधाररे; नगरमां वात घरोघर विस्तरीरे, सहुकोना दिलमां आव्यो खाररे ॥ फीट फीटरे० ॥ ७ ॥ द्वेष राखीने मेघो मारीयोरे, एतो काजल कपट मंडाररे; मन नो मेलोने धीठो एहवोरे, एम बोले नरने नाररे ॥ ८ ॥

ढाल-१३ मी-प्रीत पूर्व पून्य पामीए ॥ ए देशी ॥ बेहनी अग्नी दाह देइकरी, आव्यां सहु

स्तवनः

112031

डीî.

निज ठामहो बहेनी; काजल कहे तुंमत रोए, न करुं एहवो कामहो बेहनी०॥लेख लख्यों ते लाभीए ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दीजे केहने दोषहो बेहनी०, जन्म मरण हाथेनहीं; तो राखवो इयो सोषहो बेहेनी० ॥लेख० ॥२॥ ए संसार छे कारमो, खोटी माया जालहो बेहनी०; एक आंटे ठालीभर, जेहवा अरटनें मालहो बेहनी०॥लेख०॥३॥ सुखदुख सरज्या पामीए, नहीं कोइने हाथहो बहेनी; मतकर फिक-रतुं आजथी, बोहली आपणे हाथहो बेहनी०॥ लेख०॥४॥ खाओपीओ सुख भोगवो, नकरो चिंता लगारहो बेहेनी०; जे जोइए ते मुजने कहो, म करो दीलमां वीचारहो बेहनी० लेख ॥५॥ जिननो प्रसाद करावद्युंरे, महितल राखस्युं मामहो बहेनी; इजत आपणा धरतणी, खोस्युं किम करी नामहो बेहनी०॥ लेख०॥ ६॥ सोढाने हाथे सुंपस्युं, गोडीपूर ए गामहो बेहनी; चालो आपणो सहु तिहां, हुं लेइआवुं दामहो बेहनी ॥लेख०॥७॥ अनुक्रमें आव्यां सहुतिहां, गोडीपुर गाम मोझारहो बेहनी०; प्रभुनो प्रसाद करावीयो, काजलशाह तेणी वारहो बेहनी० लेख०॥ ८॥

ढाल-१४ मी-करेलडीगढदेरे ॥ ए देशी ॥ देहरे शिखर चढावीयोरे, स्थीर न रहे तेणिवार;

स्तवन

श्रीगोडी पार्श्वः

ાા૧૦સા

काजल मनमां चिंतवे, हवेकुण करइयुं प्रकार; भविकजन सांभलोरे, मुकीद्यो मननो आमलोरे ॥ 🖔 ए आंकणी ॥ १ ॥ बीजीवार चढावीयो, पडे हेठो तत्काल; सहुणामां यक्ष आवीने इम, कहे महिराने सुवीशाल भविक० मुकीद्यो॥२॥ तुं चढावजे जाइने, स्थिर रहेशे शीखर जेह;काजलशाने जश कीमहोये, मेघो मार्यो तेह; भविक०मुकीद्यो॥ ३॥ मेहरिये शीखरे चढावीयो, नाम राख्युं जगमांहिं; मूरत स्थापी पासनी, संघआवे उछांहि; भविक०मुकीद्यो०॥४॥ संवतचौद् चुमालमां,देहरे प्रतिष्ठा कीघ;महिओमेहरे मेघातणो, तेणे जगमां जशळीधः भविक०मुकीद्यो०॥५॥देशी प्रदेशी घणां, आवे लोकअनेकः भावकरी भगवंतने, वांदे अधीक विवेक; भविक० मुकीद्यो० ॥ ६ ॥ खरचे द्रव्य घणांतिहां, रायराणा तेणी वार; मानत माने लाखनी, टाले कष्ट अपार; भविक०मुकीद्यो० ॥७ ॥ नीरधनीया ने धनदिए, अपुत्रीयाने पुत्र; रोग नीवारे रोगीया, टाले दालिद्र दोसुत्र; भविक० ॥ ८ ॥

ढाल—१५ मी–घरे आवोजी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥ आज अमघर रंग वधामणां, आजतुठ्या श्रीगोडीपास; आज चिंतामणि आवी चढ्यो, आज सफल फली मुजआश ॥ आज अमघर रंग वधामणा ॥

स्तवन.

ાા૧૦૨ાા

ए आंकणी ॥ १ ॥ आज सुरतरु फलीयो आंगणे, आज प्रगटी मोहन वेलि; आज विछडीया वाला मिल्यां, आंज अमघर हुइ रंगरोल ॥ आज० ॥ २ ॥ आज अमघर आंबो मोरियो, आज वुठी सोवन धार; आज दुधे वुठा मेहुला, आज गंगा आवी घरबार॥ आज०॥ ३ ॥ आज गायो गोडी पूरधणी, श्रीसंघे कस्बो उच्छाहि; चौमासो कीधो चुपशुं, नगर ते महियाल मांहि ॥ आज० ॥ ४ ॥ चहु आण चावा चिहु खुटमां, तेमामोटा सुजाणोजी होय; मेहदासशा डुळजी जाणीए, एहवा धरतिम धणी नहीं कोय ॥ आज० ॥ ५ ॥ रामना राज्य तणीपरे, चलावे जगमां रीत; सोलंकी साथमां शोभता, विवेकी शावाघो सुविनीत ॥ आज० ॥ ६ ॥ प्रमाणीक वोहरो प्रतापशी, समर्थ राज का जने काम; भणशाळी नाथो तिहां भलो, जेहने घर बहुला दाम ॥ आज० ॥ ७ ॥ संघवी लाघो ते जाणीये, खूणा मेता मांहि दोय; शेठमांहिं दीपो वखाणिये, विल मनो मनजी जोय ॥ आज० ॥८॥ सारु पोटिलो जाणिये, तपगच्छ तिलक समानः मइयालनां महाजन शोभतां, दोलत करी दीपे वान ॥ आज० ॥ ९ ॥ श्री हीरविजय सूरीश्वरु, तस सुभवीजय कवि शीशः, तेहना भाव विजय

सीमंधर विनंति ॥१०३॥ कवी दीपता, तस शिश नमुं निशदिश ॥ आज० ॥ १०॥ तेहना रुपविजय कवी राजमां, तेहना कृष्ण नमुं करजोडि; विळ रंगविजय रंगे करी, हुंतो प्रणमुं प्रणीत करजोडि ॥ आज० ॥ ११ ॥ संवत् अढार सतळोतरे, भाद्रवा मास उदार; तिथि तेरश चंद्र वासरे, इम नेमीविजय जयकार॥आज०॥१२॥ "इति श्री गोडी पार्श्व नाथजीनुं स्तवन सम्पूर्णः"

"अथ श्री सीमंघर स्वामी विनंति रूप स्तवनम्"

धन्य धन्य क्षेत्र महा विदेह जी॥ ए देशी ॥ सूण श्रीमंधर साहिबा जी, शरणा गत प्रतिपाळ; समर्थ जग जन तारवा जी, कर माहरी संभाळ ॥ १ ॥ क्रपानिधि सूण मोरि अरदास ॥ हुं भव भव तुमचो दास क्र० ताहरो छे विश्वास क्र० पूर माहरि आश क्रपानिधि सूण मोरि अरदासे ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ हुं अवग्रणनो राशिछुं जी, तिल तुष नहिं ग्रणलेश; ग्रणनी होडि करुं सदा जी, एहिज सबल किलेस ॥ क्रपानिधि ॥ ३ ॥ मच्छर भयने लालचे जी, करतो किया लेश; तेपण परजन रंजवा जी, भलो भजाव्यो वेश ॥

रूप स्तवनम्

1180311

क्रपानिधि ॥ ४ ॥ छठा ग्रणठाणा धणी जी, नाम धराव्युं रे स्वामि; आगम वयणे जोयता जी, न गयो कषायने काम ॥ क्रुपानिधि ॥ ५ ॥ रसना रामाने रमा जी, ए त्रणे पातिक मुलः तेहनी अहनीश चिंतना जी, करता भव थया धूल ॥ कृपानिधि ॥ ६ ॥ व्रत मुख पाठे उच्चरी जी, दिवस माहिं बहु वार; तेह नुरत विराधतां जी, नाणी शकल गार ॥ कृपानिधि ॥ ७ ॥ धुलितणा देउल करि जी, जेम पावसमा रे बाल; थोमूला मुख इम वदे जी, तिम व्रत मे कर्यां आल ॥ कृपानिधि ॥ ८ ॥ आप अशुद्ध परने करुं जी, देइ आलोयण ग्रुद्ध; मासा हंस पंखी परे जी, पाडे फंदे मुद्ध ॥ कृपानिधि ॥९॥ अछत्ता गुण नीसुणी मने जी, हरखुं अति सुविशेष; दोष छता पण सांभली जी, तस उपरे धरुं द्वेष ॥ कृपानिधि ॥ १०॥ परभव पर परिवादना जी, परि परि भाखुंरे आप; निज उत्कर्ष करुं घणो जी, एहिज मुज सं ताप ॥ क्रपानिधि ॥ ११ ॥ निश्चय पंथ न जाणीओ जी, विवा हरिओ व्यवहार;मद मस्ते निःशंक 🖟 थी जी, थाप्यो असदा चार ॥ क्रुपानिधि ॥ १२ ॥ समय संघयणादि दोषथी जी, नावे शुक्क ध्यान; सूहणे पण नवि आवियो जी, निराशंस धर्म ध्यांन ॥ कृपानिधि॥ १३॥ आर्त्त रौद्र बिहुं अहनिशी जी,

रूप स्तवनम्

सोमंधर- सेवाकार खवास; मीथ्या राजा जीहां होये जी, त्रसना लोभ विलास ॥ क्रुपानिधि ॥ १८ ॥ जिन मत वितथ प्ररुपणा जी, किथि स्वार्थ बुद्ध; जांड्य पनाना जोरथी जी, न रहि कोइ शुद्धि ॥ कृपा निधि ॥ १५ ॥ हिंसादीक अदत्त रयुंजी, सेव्यां विविध क्वशील; ममता परिग्रह मेलवी जी, किथां भवना लील ॥ कृपानिधि ॥ १६ ॥ अकिय साधे जे कीया जी, ते नावे तिल मात; मद अज्ञान टले जेह थी जी, ते नहिं नाणानि वात ॥ क्रपानिघि ॥ १७॥ द्रिशण पण फरस्यां घणां जी, उदर भरणने काज; पण तुम तत्त्व प्रतित इयुंजी, नथरुं दरराण नाण ॥ कृपानिधि॥ १८॥ सुविहित गुरु बुद्धि लोकने जी, हुं बंदाबुंरे आप; आचरणा नहिं तेहवी जी, ए मोटो संताप ॥ कृपानिधि ॥ १९ ॥ मिथ्या देव प्रश-रीया जी, किथी तेहनीरे सेव; अह च्छंदाना वयणनी जी, नटिल मुजने टेव ॥ क्रुपानिधि॥ २०॥ कोरे चित्त चूना परे जी, धर्म कथा मे किध; आप वंचि पर वंचिया जी, एको काज न सी छ ॥ क्रुपानिधि ॥२१॥ रातो रमणी देखीने जी, जीम अण नांख्योरे सांढ; भांड भवाइयानि परे जी, धर्म देखाडुं मांड ॥ कृपा-विधि ॥ २२ ॥ क्रोध दावानल प्रबल्धी जी, उगे न समता वेल; मान महिधर आगले जी, नचले गुण

### सीमंधर विनंति

निद् वेल ॥ क्रुपानिधि ॥ २३ ॥ माया सापिणी पापिणी जी, मनछल मूकेरे नाहि; कोमल गुणने तेड इयें जी, लोभ विलास अथाह ॥ क्रुपानिधि ॥ २४ ॥ धर्म तणे दंभे कर्यां जी, पूर्यां अर्थने काम; तेणेथी त्रुण भव हारिया जी, बोधि होय बलिवाम ॥ क्रुपानिधि ॥ २५ ॥ वस्त्रपात्र जन पुस्तके जी, त्रसना किथ अनंत; अंत न आवे लोभनो जी, कहुं केतो वृत्तांत ॥ कृपानिधि ॥२६॥ कल्पा कल्प विचारणाजी, राखी कांइ न संक; अनेषणिय परि भोगथी जी, रभ्यो चउगति जीम रंक ॥ कृपानिधि ॥ २७ ॥ हवे तुम ध्यांन सनाथता जी, आडो विलयोरे अंक; करुणा करिने राखीये जी, मत गणयो मुजवंक ॥ कृपानिधि ॥ २८ ॥ मुजने कहेतां नावडेजी, नाणे जे तुमदिठ; हुं अपराधि ताहरोजी, खमजो अवनि अधिठ ॥ क्रुपानिधि ॥ २९ ॥ तुमे जिम जाणो तिम करो जी, हुं निव जाणुंरे कांइ; द्रव्य भाव सवी रोगना जी, जाणो सर्व उपाय ॥ क्रुपानिधि ॥ ३० ॥ हुं एक जाणुं ताहरुं जी, नाम मात्र निरधार; आलंबन ताहरुंजी, तिणथी लहुं भवपार ॥ क्रुपानिधि ॥ ३१ ॥ माता सत्यकी नंदनो जी, रुलमणी राणीनो कंत; तात श्रेयांस नरेशछेजी, विचरंता भगवंत ॥ क्रुपानिधि ॥ ३२ ॥ चित्त मांहिं अव धार

रूप स्तवनम

सीमंघर- रयो जी, तो एके तिक वात; लिह सहाय तुम्हारी जी, प्रगटे गुण अवदात ॥ कृपानिधि ॥ ३३ ॥ परम पुरुष परमे श्वर जी, प्राणा धार पवित्र; पुरुषोत्तम हित कारकुं जी, त्रिभुवन जनना मित्र ॥ कृपानिधि ॥ ३४ ॥ ज्ञान विमल गुणथी लह्यो जी, माहरा मननीरे होंद्रा; पूरिसि श्रृमुखियोसया क- रो जी, मुज मानस सर हंस ॥ कृपानिधि ॥ ३५ ॥

"इति श्री सीमन्धर स्वामी विनंति रूप स्तवनम् समाप्तम्"

"अथ श्री सीमन्धर खामी स्तवनम्"

दुहा— सुण सुण सरस्वती भगवती, ताहरी जग विख्यात; कवि जननी किर्ती वधे, तिम करज्यो मुज मात ॥ १ ॥ श्री सीमंधर स्वामी माहा विदेहमां, बेठा करेय वखाण; वंदणा माहारी त्यां जइ, कहेज्यो चंदा भाण ॥ २ ॥ मुज हीयडुं संशय भर्यों, किण आगल कहुं वात; जेशुं बांधु गोठडी,

सीमंधर स्वामी

न मिले तस मुज धात ॥ ३ ॥ जाणुं जे आवुं तुद्धा कहे, विषम वाट पंथ दूर; डुंगरने दरीया घणां, विचे नदी वहे पूर ॥ ४ ॥ ते माटे इहांकिण रही, जे जे करुं विलाप; ते तुमे प्रभुजी सांभलो, अव-गुण करज्यो माफ ॥ ५ ॥

ढाल—१ ली॥ पवयण देवी चित्त धरीजी॥ ए देशी। भरत क्षेत्रनां मानवी रे, ज्ञानी विणा मुंझाय;ते माटे तुमने घणुं रे, प्रभुजी मनमें उच्छाह रे॥ स्वामी आवोने इण खेत्र; तुम दरिशण जो देखीये रे, तो निर्मल थाये माहरां नेत्र रे॥ स्वा०॥ ए आंकणी॥ १॥ धर्मीनी हांसी करे रे, पक्ष विहुनो सिदाय; लोभ घणो जग व्यापीओ रे, तिणे साचुं निव थाय रे॥ स्वा०॥ २॥ गाडरीओ परिवार मिल्यो रे, घणा करे ते थाय; परिक्षावंत थोडा हुवे रे, सरधानो विश्वास रे॥ स्वा०॥ ३॥ सामाचारी जूजूई रे, सहु कहे माहरो धर्म; खोटुं खरुं किम जाणिए रे, ए कुण भांजे भर्म रे॥ खा०॥ ४॥ ढाल—२ जी॥ राग रामग्री॥ अथवा मारु॥ जगत गुरु हीरजी रे॥ ए देशी॥ ज्यारेने वीरजी विच

स्तवनम्

सीमंधर खामी ॥१०६॥ रता, त्यारे वर्तित शांति रे; जे जन जाइने पूछता, तस मन भांजता श्रांति रे॥ है है झानीनो विरह पड़ियो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ते तो दहे मुज दुःख रे, खामी सीमन्धर तुम विना; ते मुज कुण करे सुख रे ॥ है है ॥ २ ॥ विरहणीने रयणी जीसी, तेसि मुज घडी जाय रे; वात मुख नव नवी सांभछुं, पण मुज निर्णय नवि थायरे ॥ है है ॥ ३ ॥ जे जे जीव दुर्भागीया, ते तो अवतरीया इंहाय रे; भूला भमेरे पून्य रहित वाडोलीया, जिहां जिन केवली नांही रे ॥ है है ॥ ४ ॥ धन्य महा विदेहनां मानवी, जिहां जिनजी आरोग्य रे; ज्ञान दर्शन चारित्र आद रे, संयम ले गुरू संयोग रे॥ है है॥ ४॥ ढाल-३ जी॥ मारग देशक मोक्षनारे ॥ ए देशी॥ श्री मंधर खामी माहरा रे, तुं गुरु ने तुं देव; तुज विना अवर न ओलखुं रे, न करुं अवरनी सेवा रे॥ इंहां किणे आवज्यो, वली चतुर्विध संघने रे साथे लावज्यो०॥ ए आंकणी ॥ १॥ ते किम संघ क्रिया करे रे, किणपेरे घ्याये छे घ्यान; वत पच्चलाण किम आदरेरे, किणिपरे चे बहु दानोरे ॥ इंहां किणे ॥२॥ निश्चे सरसव जेटलोरे, बहु के चाले ज्यवहार; अभ्यंतर विरला हुआ रे, झाझो बाह्य आचारोरे ॥ इंहां किणे ॥ ३ ॥ इंहा उचित

स्तवनम्

1190६॥

सीमंधर स्वाजी कीरति अति घणु रे, अनुकंपा लवलेश; अभय सुपात्र अल्प हुआ रे, पहनो भरतमा देशरे ॥ इंहां किणे ॥ ४ ॥

ढाल—४ थी—राग परिजओ ॥ ग्रिणिह विसाला मंगलीक माला ॥ ए देशी ॥श्रीमन्धर तु माहरो साहिब, हुं सेवक तुम दास रे; भमी भमी भव हुं किर थाक्यो, हवे आपो शिवपुर वास रे ॥श्रीमन्धर ॥ ए आंकणी ॥१॥ इण वाटे वटे मारग्र नावे, नावे कासीद कोय रे; कागल को साथे पहोंचाडुं, हुं मोह्यो तस मोह रे ॥ श्रीमन्धर ॥२॥ चार कषाय घटे मुज व्याप्या, हुं रातो इंद्रीय रस रे; मदन पणो क्यारे को व्यापे, मन नावे माहरुं वश रे ॥ श्रीमन्धर ॥३॥ तृष्णानु दुःख न होत मुजने, होत संतोषनुं ध्यान रे; तो हुं ध्यान धरत प्रभु ताहरो, स्थिर करी राखत माहरुं मन्न रे ॥श्रीमन्धर ॥४॥ निविड परिणामे गांठ्यो बांध्यो, तो किम छूटुं खाम रे; ते तो हुं नर तुममां छे प्रभुजी, आवो अमारे कामरे॥श्रीमन्धर॥५

ढाल—५ मी-अरिहंत पद ध्यातो थको ॥ ए देशी ॥ श्रीमन्धर जिन इम कहे, पूछे तिहांना लोक रेः भरत क्षेत्रनी वारताः, सांमले सुरनर थोक रे ॥ श्रीमन्धर ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ त्रीजोने आरो स्तवनम्

सीमंधर स्वामी ॥१०७॥ बेठा पछे, जारये केटलो काल रें; पद्मनाभ जिन जब हुरये, ज्ञानी झाक झमाल रे ॥ श्रीमन्धर ॥२॥ क्रिकेट आरे जे हुरये, ते तो प्राणीने पाप रें; शाता निह एक घडी, रिवनां झाझा ताप रे ॥ श्रीमन्धर ॥ ३ ॥ ओळुं ने आयु मणुअतणुं, मोटुं देवनुं आयु रें; सुख भोगवता खर्गनां, सागर प्रत्योपम जाय रे ॥ श्रीमन्धर ॥ ४ ॥ सरागी नर जे इमभणे, तुमे तारो भगवंत रें; आपेथी आपे तरों, एम सांभलो सुर नर संघरे ॥ श्रीमन्धर ॥ ५ ॥

हाल—६ थी— एहवी वात जीव ते सूत्रमें सांभली रे, म किरश विषम विषाद; जो ते पूरव पुण्य पुरो की घो नहीं रे, तो किहांथी पहोंचे आश; जिनजी किम मीले रे, भोलाइयुं वल वले रे; प्राणीश्युं टल वले रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तुं सरागी प्रभु वैरागीमां वडोरे, किम तेंडे तुं त्यांह; शागुण देखी तुज उपर किपा करे रे, किम आवे प्रभु इहांय ॥ जिनजी० भोला० प्राणी० ॥ २ ॥ चोल मजीठ सरीखो जिनजी साहिबो रे, जीव तुं तो गलीनो रंग; कटको काच तणो मुल तुजमें नहीं रे, जिनजी नगीनो नंग ॥ जिनजी० भोला० प्राणी० ॥ ३ ॥ भमर सरीखो भोगी श्री भगवंत

स्तवनम्

सीमंधर स्वामी जी रे, जीव तुं माखीने तोल; सरिखा सरखा विना क्युं वाजे गोठडी रे, जीवतुं इदय विचारी बोल ॥ जिनजी० भोला० प्राणी०॥ ४॥ जीवतुं कर्म लगे लपटाणो ज्यां लगे रे, त्यां लगे तुज नहीं कास; समतानो ग्रण ज्यारे तुजमें आवश्ये रे, त्यारे जाइश जिनजी पास॥ जिनजी० भोला० प्राणी०॥ ५॥ ढाल—७ मी॥ राग धन्याश्री॥श्री मंधर खामी तणी ग्रणमाला, जे नर भावे भणश्ये; तस शिर वैरी कोइ न व्यापे, कर्म शत्रुने हणइये रे॥ हमच्छरी॥१॥ श्रीमंधर स्वामी तणी गुणमाला, जे नांरी नित्य गुणश्ये; सतीरे सोहागण पिहर पसरी, पुत्र सुलक्षणा जणश्ये रे ॥ हमच्छरी ॥ २ ॥ श्रीमं धर खामी शिवगित गामी, किवता कहे शिरनामी; वंदणा मारी इदयमां धारी, धर्मलाभ द्योस्वा मी रे ॥ हमच्छरी ॥ ३ ॥ श्री तपगच्छ नायक सुंद्रुं, श्री विजयदेव पहोधारी; जस कीर्त्ति जेहिन जगमाही झाझी, बोले नरने नारी रे ॥ हमच्छरी ॥४॥ श्री गुरु वाणी सुणी बुध सारु, श्रीमंधर जिन में गाया; संतोषी कहे देवगुरु धर्में, पूर्व पुण्ये पाया रे ॥ हमच्छरी ॥ ५ ॥

"इति श्री सीमन्धर स्वामी स्तवनम् सम्पूर्णम्"

स्तवनम

॥१०८॥

# ''अथ श्री सिमंधर जिन स्तवनम्"

अहो गतिवाले साजन ॥ ए देशी॥ ढालु—१-ली ॥ निश्चय नय वादी कहे, एक भाव प्रमाण छे साचो रे; वार अनंती जे लही, ते कियामां मत राचो रे ॥ चतुर सनेही सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ भरत भूप भावे तयों, वली परिणामे मरु देवा रे; ग्रैवेयक उपर नही फले, द्रव्य कियानी सेवा रे ॥ चतुर० ॥ २ ॥ नय व्यवहार कह्यो तुमे, किम भाव किया विण लेहेस्यो रे; रतन शोध शत पुटपरे, किया ते साची कहेंशों रे ॥ चतुर० ॥ ३ ॥ एक सहेंजे एक यत्नथी, जिम फलकेरों परि पाकोरे; तिम किया परिणामनो, जग भिन्न भिन्न छे वांकों रे ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ सहेंजे फल अमें पामर्थ्यं, इम गलिया बलद जे थायरे; सहेंजे तृपता ते हुश्ये, कां अन्न कवल करी खायरे ॥ चतुर० ॥ ५ ॥ विण व्यवहारे भावजे, ते तो क्षण तोलों क्षण मासोरे; तेहथी हांसि उपजे, वली देखें लोक तमासोरे ॥ चतुर० ॥ ६ ॥ गुरु कुलवासी गुणनिलो, व्यवहारे स्थिर परिणामी रे; त्रिविध अवं चक योगथी, होए सुजस महोदय कामी रे॥ चतुर०॥७॥

स्तवनम्

ढाल—२ श्री॥ मोतीडानी॥ ए देशी॥ निश्चय कहे कुण ग्रुरु कुण चेला, खेले आपिह आप एकेला; मोहना मनरंगी हमारा, सोहना सुख संगी॥ जास प्रकाशे जग सिव भाषे, नवनिधि अष्ट महासिद्धि पासे; मोहना० सोहना०॥ ए आंकणी॥ १ ॥ कर्म विभाव शक्ति रयुं जोडे, ते खभाव शक्ति सिव तोडे; भांग्यो भर्म मर्म सिव जाण्यो, पूर्ण ज्ञान निज रूप पिछान्यो; मोहना० सोहना०॥ शक्तरतां होइ हाथी परे झुझें, साखीग्रण निज मांहि सल्झें; करतां ते किया दुःख वेदे, साखी भवतरु कंद उछेदे; मोहना० सोहना०॥ ३ ॥ ज्ञानीने करणि सिव थाकि, होइ रह्यो नरम कर्म स्थिति पाकी; माला अण देखे जे भमतो, ते क्षय होइ निज ग्रुण रमतो; मोहना० सोहना०॥ ४॥ भाव अशुद्ध जे पुद्धल केरां, ते तो जाण्या सबीही अनेरा; मोक्ष रूप अमे निजगुण वरीयां, ते अथें कुण करशे किया; मोहना० सोहना०॥ ५॥ हवे व्यवहार अनेरा; मोक्ष रूप अमे निजगुण वरीयां, ते अर्थे कुण करहा किया; माहनावसाहनाया वा हुन प्राप्त कहे सुणो प्यारा, एम मीठां तुम बोल दुचारा; भणतां ने अण करतां भाषो, वचन वीर्य करी आप विमाशो; मोहनाव्सोहनाव ॥६॥ जे अभिमान रहित ते साखी, शिक्त कियामां ते छे आखी; किया जे शुभ योगे मांडे, खेदादिक दूषण सविछांडे; मोहनाव्सोहनाव ॥७॥ भृख न भांजे भोजन दीठे, विण खांडे

स्तवनम्

जां० १९

तुष वृहि न नीठे; मांज्या विण जिम पात्र <sup>न</sup> आछुं, तिम कियाविण साधन पाछुं; मोहना० सोहना०॥ ८॥ मोक्ष रूप आतम निरधारी, नवि थाके जिनवर गणधारी; किया ज्ञान जे अनुक्रमें सेवे, सुजस रंग प्रभु तेहने देवे; मोहना० सोहना० ॥ ९॥

ढाल—३ जी ॥ बेडले भार घणोछे राज॥ए देशी॥निश्चय कहे विण भाव प्रमाणे, किया काम न आवे; आव्यो भावतो किया थाकी, किया जिममणन भावे॥ मानो बोल हमारो राज ताणो ताण न कीजे ॥ ए आंकणी॥ १ ॥ श्रमण होइ गणधर प्रव्रज्या, मिले ते भाव प्रमाणे; लिंग प्रयोजन जन मन रंजन, उत्तराध्ययने वलाणे॥ मानोबोल ॥ २ ॥ निज परिणामज भाव प्रमाणे, वली ओघ निर्जरा ते; आतम सामायिक भगवइमां, भारव्युं ते जुओ जुगते॥ मानोबोल ॥ ३ ॥ नय व्यवहार कहे, सवि श्रुतमां, भाव कह्योवर्त्ते साचो; पण कियाथी ते होय जाचो, किया विण होय काचो॥ मानोबोल ॥ ४ ॥ भाव नवो कियाथी आवे, आव्यो ते वली वाधे; निव पडे चढे गुणश्रेणि, तिणे मुनि किया, साधे ॥ मानोबोल ॥ ५ ॥ निश्चयथी निश्चय निव जाण्यो, जेणे किया निव पाली; वचन मात्र निश्चयशुं

स्तवनम्

॥१०९॥

मानो, ओघ वचन जुओ भाली ॥ मानोबोल ॥ ६ ॥ जिम जिम भाव कियामां, भलश्ये, साकर कियामां, सावयमां, साकर कियामां, सावयमां, स

ढाल—४ वटउनी ॥ ए देशी ॥ निश्चय नय वादी कहेरे, पट् दरिशण मांहिं सार; समता साधन मोक्षनुं रे, एहवो कीधो निरधार रे;मनमांहि धरिजे प्यार रे;अमे कहुं छुं तुम उपगाररे; बली हारी गुण गौणनी मेरे लाल ॥ ए आंकणि ॥१॥ पन्नर भेदछे सिद्धनां रे, भाव लिंग तिहां एक; द्रव्य िलंग भजना कही, शिव साधन समता छेकरे; तेहमां छे सबल विवेक रे, तिहांलागी मुज मन टेकरे; भम्याछे अवर अनेकरे ॥ बलीहारी ॥ २ ॥ तिहां मारग भांजे; सवेरे, धारणा ने असराल; जोग-नालि समता तिहां, डांडो दाखे तत्कालरे; होइ योग अयोग विशराल रे, लघु पण अक्षर संभाल रे; पहुं-चे शिवपद, देइ फालरे ॥ बलीहारी ॥ ३ ॥ स्थिविर कल्प जिन कल्पनी रे, क्रिया छे बाहु रूप; समा-चारी जु जुइ, कोइ न मिले एक स्वरूप रे; तिहां छे उंडो क्रूप रे, तिहां पास धरे मोह भूपरे; ते तो विरुओ विषम विरूप रे॥ बलीहारी ॥ ४ ॥ नय व्यवहार कहे हवेरे, तिहांइयुं बोल्यां ए मित्त; समता जुमने

स्तवनम्

सीमंधर जिन ॥११०॥ वालही, अमने पण तिहां दढ चित्त रें; अमे संभारुं नित्य नित्य रें, क्रिया पण तास निमित्त रें; इम 🖔 वध्दये बिहुंने हित रे ॥ बलीहारी ॥ ५ ॥ पन्नर भेदछे सिद्धनां रें, राज पंथ जिहां एहः; ते मारग अनुसारिणि, किया ते इयुं धरो नेह रे; क्षणमांहि न दाखो छेह रे, आलस छोडो निज देह रे; आलसुने घणा संदेह रे ॥ बलीहारी ॥ ६ ॥ स्थापे भाव जे जे कही रे, भरतादिक दृष्टांत; आवश्यक मांहिं कह्यां, ते तो पासट्टा एकांत रे; ते तो प्रवचन छोपे तंत रे, तस मुख नवि देखे; इम भाखे श्री भगवंतरे ॥ बलीहारी ॥ ७ ॥ किया जे बहु विधे कही रे, तेहिज कर्म प्रति काररे; रोग घणां औषध घणां, कोइने कोइथी उपगार रे; जिनवैद्य कहें निरधार रे, तेणे कह्युं ते कीजे सार रे; इम भाखे अंगं आचाररे ॥ बळी-हारी ॥ ८ ॥ राज पंथ भांगे नहिं रे, भागे नाह नासे; ए पण मनमां धारज्यो ए, एक गांठो सोफेर रे; इयुं फुली थाओछो भेररे, जो मिले बिहुं एक बेर रे; तो भाजे श्रांत उकेर रे ॥ बलीहारी ॥ ९ ॥ सूत्र परं परशुं मीले रे, सामाचारी शुद्ध; विनयादिक मुद्रा विधि, ते बहुविध पण अविरुद्ध रे; जे मुंझे ते होय मुद्धरे, निव मुंझे ते प्रतिबुद्ध रे; वली सुजस अलुद्ध अकुद्ध रे ॥ बलीहारी ॥ १० ॥

स्तवनम्

ढाल—५ मी॥ राग धन्या श्री॥ वाद वदंता आवीआ, तुज समवसरण जब दीढुं रे; ते बेहुनो झगडो टल्यो, तुज दर्शन लाग्युं मीढुं रे॥बलीहारी प्रभु तुमतणी॥ए आंकणी॥१॥ स्यादवाद आगल करी, तुमे बेहुने मेल कराव्यो रे; अंतरंग रंगे मिल्या, दुरिजनो नो दाव न फाव्यो रे॥बलीहारी०॥२॥ परघर भंजक खल घणां, ते तो चित्तमां खांचो घाले रे; पण तुम सरिखा प्रभु जेहने, तेहर्युं तिणे निव चाले रे ॥ वलीहारी ॥ ३ ॥ जिम ए बेहुनी प्रीतडी, तुमे करी आपी स्थिर भावे रे; तिम मुज अनुभव मित्तरयुं, करी आपो मेल स्वभावे रे ॥ बलीहारी ॥ ४ ॥ तुज शासन जाण्या पछी, तेहरयुं मुज प्री-त छे झाझि रे; पण ते कहे ममता तजो, तिणे नवि आवे छे बाझी रे ॥ बलीहारी ॥ ५॥ काल अनादि संबंधनी, ममता केड न मूके रे; रीसाइ अनुभव तदा, पण चित्तथी हीत नवि चूके रे ॥ बलीहारी ॥ ६॥ एवा मित्तरयुं रूसणुं, ते तो मुजमन लागे माठुंरे; तिम किजे ममता परे, जिम छांडुं चित्त करी काठुं रे ॥ बलीहारी ॥ ७ ॥ चरण धर्म नृप तुम वक्ष्ये, तस कन्या समता रूडी रे; अचिरा सुत ते मेलवो,

स्तवनम्

सीमंघर जिन

1188811

जिम ममता जाए उंडीरे ॥ बलीहारी ॥ ८ ॥ साहेबे मानी विनंती, मील्यो अनुभव मुज अंतरंगि रेः ओच्छाव रंग वधामणा, हुआ सुजस महोदय रंगेरे ॥ बलीहारी ॥ ९ ॥

कलश—इम सकल सुखकर दुरित भय हर शांति जिनवर में स्तव्यो, यूग भुवन संजम मान-वर्षे चित्तमहर्षे विनव्यो; श्री विजय प्रभसूरि राज राजित सुकृत काजे नय कही, श्री नयविजय बुध-शिष्य वाचक जशविजय जयसिरी लही ॥ १ ॥

''इति श्री निश्चय नयवाद गर्भित श्री सीमन्धर जिन स्तवनम् सम्पूर्णम्"

गाथा—जय कमल लोचन जग विरोचन विगत शोचण वंवणो, निःसंग रंग तरंग जिनवर अकल क्ष्म निरंजणो; इय सहज कुशल विनेय बोले चेतीओ श्रीमंधरो, श्रीविजय दान मुणिंद वाचक सकलचंद कृपा करो ॥ ३२॥

"इति श्री सीमन्धर जिन स्तवनम् सम्पूर्णम्"

स्तवनम्

## अष्टमीनुं

## "अथ श्री अष्टमीनुं स्तवनम्"

दुहा-पंच तीरथ प्रणमुं सदा, समरी शारद माय; अष्टमी स्तवन हरखे रचुं, सुगुरू चरण पसाय॥१॥ ढाल-१-ली॥हांरे लाल चंद्रप्रभ जिन आहमा,अष्ट कर्म कर्यां चक चूररे लाला॥ ए देशी ॥हांरे लाला जंबुद्वीपना भरतमां, मगध देश महंत रे लाला; राजग्रही नयरी मनोहरुं, श्रेणीक बहु बलवंत रे लाला ॥ अष्टमी तिथि मनोहरुं ॥ ए आंकणी ॥१॥ हांरे लाला चेलणा राणी सुंदरुं, शीयलवंती शीरदार रे लाला;श्रेणीक शुद्धबुध छाजतां,नामे अभय कुमार रे लाला॥ अष्टमी ॥२॥ हांरे लाल वर्गणा आठ मीटे एहथी, अष्ट साधें सुख निधान रे लाला; अष्ट मद भाजें वज्रछे, प्रगटे समकीत निधान रे लाला ॥ अष्टमी ॥ ३ ॥ हांरे लाला अष्ट भय नारो एहथी, अष्ट बुद्धि तणो भंडार रे लाला; अष्ट प्रवचन ए अष्टमा ॥ ३ ॥ हार लाला अष्ट नय गारा ५०गा, गण्ड जाता । अष्टमी ॥ ३ ॥ हांरे लाला, अष्टमी आराधन थकी, अष्ट कर्म हारे करे चक चूररे लाला; नवनिधी प्रगटे तसघरे, संपूर्ण सुख भरपुर रे लाला ॥ अष्टमी ॥ ५ ॥ हांरे

स्तवनम्

अष्टमीर् ॥११२॥ लाला अड दृष्टी उपजे पहथी, शीव साधे ग्रण अंकुर रे लाला; सिद्धनां आठ ग्रण संपजे, शीव कमला-रूप सरुप रे लाला ॥ अष्टमी ॥ ६ ॥

ढाल—२—जीहो कुंवर बेठो गोंखडे ॥ ए देशी ॥ श्रीपालना रासनी ॥ जीहो राजग्रही रिलयामणी, जिहो विचरे वीर जिणंद; जिहो समवसरण इंद्रे रच्युं, जिहो सुरा सुरनां दृंद ॥ जगत सहु वंदो वीर-जिणंद ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीहो देव रचित िसंहासने, जीहो बेठां श्री वर्ष्वमान; जीहो अष्ट प्रातीहारज शोभतां, जीहो भामंडल झलकंत ॥ जगत ॥ २ ॥ जीहो अनंत ग्रणे जिनराजजी, जीहो पर उपगारी प्रधान; जीहो करुणा सिंधु मनोहरु, जीहो त्रिलोके जिन भाण ॥ जगत ॥ ३ ॥ जीहो चोत्रीश अतीशय बिराजतां, जीहो वाणी ग्रण पांत्रीश; जीहो बारे परर्षदा भावश्यं, जीहो भिक्त नमावे शीश ॥ जगत ॥ ४ ॥ जीहो मधुर ध्वनी दीये देशना, जीहो जिम आषाढोरे मेघ; जीहो अष्टमी महिमा वर्णवे, जीहो जगवंधु कहे तेम ॥ जगत ॥ ५ ॥

ढाल—३-रुडीने रढियाली वाहला ताहरी वांसली रे, तेतो मारे मंदरीये संभलाय रे॥ ए देशी ॥

स्तवनम्

अष्टमीनुं

रूडीने रिंडयालीरे प्रभुताहरी देशना रे, तेतो जोजन लगे संभलाय रे; त्रिगडे विराजे रे जिन दिये देश-ना रे, श्रेणिक वंदे प्रभुनां पाय; अष्टमी महिमा रे कहो कृपा करी रे, पूछे गोयम अणगार; अष्टमी आराधन फल सी छनुं रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वीर कहे तपथी महिमा एहनो रे, ऋषभनुं जन्म कल्याण; रूषभ चारीत्र होय निर्मलुं रे, अजितनुं जन्म कल्याण ॥ अष्टमी ॥ २ ॥ संभव च्यवन त्रीजा जिनेश्वरु रे, अभिनंदन निर्वाण; सुमित जन्म सुपास च्यवनछे रे, सुविधि नेमि जन्म कल्याण ॥ अष्टमी ॥ ३ ॥ मुनिसुत्रत जन्म अति गुणनिधि रे, नेमी शीवपद लखुं सार; पार्श्वनाथ नीर्वाण मनोहरु रे, ए तिथी परम आधार ॥ अष्टमी ॥ ४ ॥ उत्तम गणधर महिमा सांभली रे, अष्टमी तिथि प्रमाण; मंगल आठतणी गण मालिका रे, तस घर शीव कमला प्रधान ॥ अष्टमी ॥ ४ ॥

ढाल—४-श्री जिनराज जगत उपगारी, मुरित मोहन गारीरे॥ए देशी॥ आवझ्यकनी निर्शुक्ति ए भाषे, माहानिशिथ सूत्रे रे;ऋषभ वंशदृढ वीरजी आराधे, शिवसुख पामेपवित्र रे॥श्री जिनराज जगत उपगारी॥ ए आंकणी॥ १॥ ए तिथि महिमा वीर प्रकाशे, भविक जीवने भाषे रे; शासन ताहरुं

स्तवनम्

For Private And Personal Use Or

अष्टमीन् ॥११३॥ अविचल राजे, दिन दिन दोलत वाधे रे; श्रीजिनराज जगत उपगारी ॥२॥ त्रीशलारे नंदन दोष क्रिनीकंदन, कर्म शत्रुने जीत्यां रे; तीर्थंकर महंत मनोहर, दोष अढारने वरत्यां रे ॥ श्रीजिन ॥३॥ क्रिन मन मधुकर जिन पदकज लीनो, हरखी निरखी प्रभु ध्याउं रे; शीव कमला सुख दीओ प्रभुजी, प्र-भामंडल जिन दीपे, दुंदुभि अमर गाजे रे॥ श्रीजिन ॥ ५॥ खंभात बंदर अतिय मनोहर, जिन प्रा-साद घणां सोहे रे; विंब संख्यानो पार न लउं, दरीशण करी मन मोहे रे ॥ श्रीजिन ॥ ६ ॥ संवत-अढार ओगणचालीश वर्षे, आश्विन मास उदारो रे; शुक्क पक्ष पंचमी गुरुवारे, स्तवन रच्युं छे त्यारे रे॥ श्रीजिन ॥ ७ ॥ पंडित देव सोभागी बुधी लावण्य, रत्न, सौभागी तिणे नामेरे; बुधी लावण्य लीओ, सुख संपूर्ण, श्री संघने कोड कल्याण रे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

"इति श्री अष्टमीनुं स्तवनं संपूर्णम्"

स्तवनम्

समकित-पचीशीनुं

# "अथ श्री समिकत पत्तीशीनुं स्तवन"

दुहा—वंदु वीर जिणंदने, समरुं सरस्वित मातः, पद्कंज प्रणमुं गुरु तणां, कहेवा समिकित वात ॥ १ ॥ जिम खरुप समिकित तणो, भाख्यो वीर जिणंदः तिम भाखुं गुरु साक्षिथी, पामुं परमाणंद ॥ २ ॥ खामि अनादि अनंतजे, चिहुं गित एह संसारः मोहादिक गुरु स्थिति थकी, भमे अनंती वार ॥ ३ ॥ यथा प्रवृत्ति करणे करी, आवे गंठी देशः पछ उपल दृष्टांतथी, यथा प्रवृत्ति सुणो लेश ॥ ४ ॥

ढाल—१–ली॥ चउ सदहणा ति लिंगछे॥ ए देशी॥ जिम कोइक ग्रहपति घरे, पालो धान्यनो भरी-ओरे; घर खरचे बहु काढीओ, थोडो तेहमां धरीओ रे॥ ५॥

त्रूटक—धर्यों तहेमां स्तोक इणीपेरे अनुक्रमे खाली करे, तिम कर्म भरीओ जीव क्षय करे बहु-स्तोक यही भरे; अनाभोगथी अनुक्रमे इम बहु खपावी शुभमने, गंठीदेशे तदा बांधे, आयु विना

स्तवनम्

For Private And Personal Use O

1188811

समिकत- 🕍 सग कर्मने ॥ ६ ॥ ढाल-पूर्वली ॥ पल्योपम असंख्यातमो, भाग ते उणो जाणो रे; कोडाकोडी सागर 🦃 पचीशीनुं माहिं, स्थिति बांधे एम आणो रे॥ ७॥

> त्रूटक—आणो मनमां एह सत्ता यथा प्रवृत्ति व्यापार ए, कोइ पूछे किम खपावे अणाभोग किला वार ए; ग्रुरु कहे सांभल शिष्य आगल उपलनो दृष्टांत ए, जेह सांभली जाए संशय चित्त हर्षित हुंतए ॥ ८ ॥ ढाल पूर्वली ॥ पर्वत भूमी नदी यथा, उपल शकल जिहां बहुला रे; पवना घोलना बहु हुए, पाणीनां बहु छोला रे ॥ ९ ॥

> त्रूटक—बहु छोहला होय इणीपेरे उपलनां कटका तिहां, त्रण खुणा गोल केइ चार खुणा पण जिहां; हैं सहेज भावे इम होवे अना भोगथी बहुपरे, हा हा गंठी देश पण प्रभु तुज दर्शन नविधरे ॥ १० ॥ ढाल पूर्वली ॥ तिहां गंठी राग द्वेपनी, जीव न भेदी शक्तो रे; पाछो जायकें तिहां रहे, अथवा आगल नवि टकतो रे ॥ ११ ॥

त्रृटक—निव टकतो कोइ आगल अपूर्व करण मार्गे करी, दुष्ट गंठी भेद कीधो सुपरिणाम

तमकित-पचीशीनुं मनमां धरी; नथी पाम्यो पूर्वे एहवुं, तिणे अपूर्व छे नाम ए;पथिक पिपीलिका न्याये; सांभलो गुण कामए ॥ १२ ॥

ढाल—२–जी ॥ कपुर होये अति उजलोरे ॥ ए देशी ॥ त्रण पुरुष इण लोकमां रे, कोइ नगर भणी जाय; अटवी ओलंघ्या घणुंरे, अर्क अस्तंगत थायरे ॥ प्राणी सुणिए उपनय एह–तेणे अपूर्व छे जेहरे ॥ प्राणी० तेणे०॥ ए आंकणी॥ १३ ॥ भय ठामे दोय चोरनेरे, दीठां दूरथी तेम; तेहमां एक भय लही करीरे, नाठो पाछो जेमरे ॥ प्राणी० तेणे०॥१४॥ बीजो मनमां चिंतवेरे, जब जाश्ये ए चोर; तब आगल जाइश वही रे, चिंती रह्यो इम ठोर रे ॥ प्राणी० तेणे०॥ १५ ॥ त्रीजे मनमां चिंतव्युंरे, एह मनीस हुं मनीस; कर पद दोय एहने माहरेरे, करश्ये रण तो करीशरे ॥ प्राणी० तेणे०॥१६॥ इम अवलंबी धर्यनेरे, चोरने सन्मुख जाय; रण करी हणी ते चोरनेरे, पहोतो वांछित ठायरे ॥ प्राणी० तेणे ॥१७॥ अटवी कर्म गुरु स्थिति तणीरे, पंथी समए जीव; राग द्वेष दोय तस्करारे, विचरंता तेह सदैव रे ॥ प्राणी० तेणे॥ १८ ॥ प्रथम पुरुष सम जे थयांरे, बांधे गुरु स्थिति तेह; तेटली बांधे ते नरा रे, बीजां पथिक

शां० २०

समकित-पच्चीशीनुं

सम जेहरे ॥ प्राणी० तेणे० ॥ १९ ॥ लेइ अपूर्व मोगर करेरे, त्रीजे हणीआ चोर; समकितादिक पुर भणीरे, पोहतां ते निज ठोररे ॥ प्राणी० तेणे० ॥ २० ॥ हाल—३—जी ॥ प्रथम गोवाला तणे भवेजी ॥ ए देशी ॥ पंच प्रकार कीडी तणांजी, तेहमां

पहेली जोय; भुंइ भ्रमणकरे घणुंजी, यथा प्रवृत्त इंहा होयरे ॥ प्राणी समजो द्वद्य मोझार॥ उपनय एह उदार रे ॥ प्राणी० ॥ उप० ॥ ए आंकणी ॥ २१ ॥ स्थंभ उपर बीजी चढीरे, कीडी अपूर्व 🦎 छे तेह; त्रीजी पांखथी उडतीजी, अनिवृत्ति जाय छे जेहरे ॥ प्राणी० उप० ॥ २२ ॥ चोथी स्थंम मस्तक रहीजी, गंठी देशने संधिः पांचमीते पाछी वलीजी, बांधे ग्रुरु स्थिति बंधरे ॥ प्राणी० उप०॥ ॥ २३ ॥ एम मिथ्यात्वथी प्राणीआजी, पामे समिकत सारः अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तमांजी, होये तास संसाररे ॥ प्राणी० उप०॥ २४ ॥ जाए भिन्न मुहूर्त्तमांजी, वर्त्ततो शुभ परिणामः अनिर्शृति करणे करीजी, ते समिकत शुद्ध ठामरे ॥ प्राणी० उप०॥ २५ ॥ जिम सुभट संग्राममांजी, जीत्यो वैरी

स्तवनम्

समय; माने तिम आणंदनेजी, समकित लहे सुख वयरे ॥ प्राणी० उप०॥ २६॥ धर्म दृक्षनुं पचीशीनुं मूळछेजी, धर्म आवासनुं द्वार; प्रतिष्ठा न पणे तेहनुंजी, छेखे ज्ञान आचाररे ॥ प्राणी० उप०॥२७॥ र्हें ढाळ—४-थी ॥ रहोरे रहो रथ फेरवोरे ॥ ए देशी ॥ एक प्रकार समिकत कह्युं रे, तिम बेत्रण

च्यार पांच भेदरे; एक प्रकार जे तुज कह्यां रे, द्रव्यादिक रुचिओ मेद रे ॥ सुणीए भेद समकीत तणां रे ॥ ए आंकणी ॥ २८ ॥ द्रव्य भाव भेदे करी रे, तिम निश्चयने व्यवहार रे; अथवा सहेज उपदेशथी रे, कह्युं तुज वचन जाणण हार रे ॥ सुणीए ॥ २९ ॥ तुज वचनें जे तत्त्वनी रे, रुचि ते द्वी द्रव्य समकित होय रे; जोइं परमार्थ निव लहे रे, जीव ते तत्त्व जाणज जोय रे ॥ सुणीए ॥ ३० ॥ ज्ञानादिक आत्मक हुवे रे, निश्चय ते शुभ परिणाम रे; उपशम आदि कारण थकी रे, व्यवहार दर्शन गुण धाम रे ॥ सुणीए ॥ ३१ ॥ जल वस्त्रे मार्ग कोईंव ज्वर रे, द्रष्टांते निसर्ग उपदेश रे; समकित एह प्ररूपीउं रे, हुं नमुं नमुं तह जिनेश रे ॥ सुणीए ॥ ३२ ॥

ढाल—५-मी ॥ समकित दूषण परिहरो॥ ए देशी ॥ पंथी मारग चूकीओ, अटवी भ्रमण करंतरे;

समकीत पचीशीनुं ॥११६॥ जिम कोइक निजथी लहे, मारग तिम इंहा हुंतरे ॥ समिकत प्रापण विधि वहुं ॥ ए आंकणी ॥ ३३ ॥ कोइक पर उपदेशथी, लहे मार्ग तिग प्राणीरे; समिकत लहे कोइ ग्रुरु थकी, जिननो मारग जाणीरे ॥ समिकत ॥ ३४ ॥ गंठी देश आव्यो थको, पाछो ते वली जायरे; ज्वर द्रष्टांत तिम जायें, सहेजे पण क्षय थायरे ॥ समिकत ॥ ३५ ॥ उपदेशथी अस्वभावथी, कोइ मार्ग निव पामेरे; तिम अभव्य दुर्भव्यवा, न लहे ते गुण कामरे ॥ समिकत ॥ ३६ ॥ कोइक वैद्य औषध थकी, कोइकने स्थिर थावेरे; इम मिथ्या ज्वर सहेजथी, ग्रुरुथी जाय वा न जावेरे ॥ समिकत ॥ ३७ ॥ भव्यने त्रण गति होवे, त्रीजी अभव्यने एकरे; कोद्रवनो द्रष्टांत जे, सुणीए तेह विवेकरे ॥ समकित ॥ ३८ ॥ ढाल--६-थी ॥ भोलीडा हंसारे विषय न राचीये॥ ए देशी ॥ मदन कोदरा रे जेम स्वभावथी, उतरे मद् विकार; कोइक गोमय आद् उपायथी, कोइक नवि होय सार ॥ भावे भविअण समकीत आदरो ॥ ए आंकणी ॥ ३९ ॥ तिम मिथ्यात्वना पुंज त्रिविध करे, ग्रुद्ध मिश्रने अशुद्ध तेह;

For Private And Personal Use Only

अपूर्व करण परिणामथी, जल चिवर सुणो बुध ॥ भावे० ॥ ४० ॥ जिम जल चिवर होये मेलडुं, जिम

समकीत-पच्चीशीनुं ते शुद्ध करंत; करतां शुद्ध अशुद्ध मिश्र रहे, तिम त्रण पुंज धरंत ॥ भावे० ॥ ४१ ॥ इम स्वभाव तथा उपदेशथी, समकितनां दोय भेद; महा भाष्यमां भाष्या ए सवे, जोयो मुकी खेद ॥ भावे० ॥ ४२ ॥ कारगे रोचेग दीवेग भेदथी, समकित त्रण प्रकार;क्षय उपशम उपशेम क्षायिक थकी, त्रण प्रकार विचार ॥ भावे० ॥ ४३ ॥

ढाल-७-मी ॥ सितय सुभद्रा ॥ ए देशी ॥ जिम भाख्युं जिनवर मते, सिख करवुं पण तिम तास; कारक समिकत जिन कहे, सिख जिन कहे केवल ज्ञान विलास ॥ सुख कारक समिकत आदरो॥ए आंकणी ॥४४॥रोचक कहीए तेहने,सिख रुचि मात्र होए जास;धर्म कथादिक दीपतां,सिख दीपतां पण निहं अंतर वास ॥ सुख० ॥ ४५ ॥ तुज समयविद इम कहे, सिख दीपक समिकत तेह;त्रण प्रकार बीजा हवे, सिख बीजां हवे क्षय उपशम आदि जेह ॥ सुख० ॥ ४६ ॥ त्रण पुंज करे तेहमां, सिख उदये तेह खपाय; अण उदय उपशम करे, सिख शम करे क्षयो पशम कहेवाय ॥ सुख० ॥ ४७ ॥ अंतर करणे जे होए, सिख अथवा जे गत श्रेणि; त्रणे पुंज जेणे निव कर्यां, सिख निव कर्यां उखर अग्नि ना एण स्तवनम्

समकित-पचीशीनुं ॥११७॥

॥ सुख०॥ ४८॥ पयडि सात मिथ्यादिका, सिख क्षय करी ने तिहां ठाय; बांध्युं पूर्वे आउखुं, सिख आउखुं त्रण चार भवें सिद्ध थाय॥ सुख०॥ ४९॥ बांध्युं न होवे आउखुं, सिख पाम्यो क्षायक जेहः ते निश्चय वीरजिन कहे, सिख जिन कहे ते भिव जाए शिवगेह॥ सुख०॥ ५०॥ ढाळ—८—मी॥ लक्षण पांच कह्यां समिकत तणां॥ ए देशी॥ चार प्रकारे समिकत दाखीउं, सास्वा

ढाल—८—मी ॥ लक्षण पांच कह्यां समिकत तणां ॥ ए देशी ॥ चार प्रकारे समिकत दाखीउं, साखा दिन समिकत ॥ सुगुणनरः सिहत तथा जे अनंतर भाखीउं, तस लक्षण सुणो मित्र ॥ सुगणनरः ॥ वीरजी नेश्वर भाषे एणिपरे ॥ ए आंकणी ॥ ५१ ॥ गुड आदिक जिम वमन करे तथा, माल थकी पडे जिम ॥ सुगुणनरः उपशमथी पडतो अण पहोचतो, मिथ्यात्वे होय तेम ॥ सुगुणनरः ॥ वीर ॥ ५२ ॥ वैद्क गुक्त करे पंचविध तदा, दोय पुंज क्षय करंतः सुगुणनरः त्रीजा पुंजने चरम समय यथा, शुद्ध अणु ते वेदंत ॥ सुगुणनरः ॥ वीर ॥ ५३ ॥

ढाल—९–मी ॥ जिन जिन प्रतिमा वंदन कीजे ॥ ए देशी ॥ काल प्रमाण कह्युं पंच केरा,

स्तवनम्

ાાકકભા

धरीये ॥ ए आंकणी ॥ ५४ ॥ समय एक वेद्क होय समकित, उद्धि तेत्रीश झाझेरा; क्षायक पचीशीनुं 🖔 क्षय उपशम ने छासट्टी, सागर कह्यां अधिकेरा रे ॥ भविका ॥ ५५ ॥ उत्कृष्टुं, साखादन उपशम, पंच वार ते आवे; वेदेक क्षायक एक वार ते, जे आव्युं निव जावे रे ॥ भविका ॥ ५६ ॥ वार असं ख्याती क्षयं उपराम, बीअ गुणे सासाण; चोथाथी अगीयारमा सुधि, उपराम समकित ठाणरे ॥ भविका ॥ ५७ ॥ चोथाथी वली चउदमा सुधी, क्षायक समकित जाणो; वेदक क्षय उपशम चोथाथी, सात लगी गुणठाणो रे ॥ भविका ॥ ५८ ॥

> ढाल--१०-मी ॥ ठरे जिहां समिकत ते स्थानक ॥ ए देशी ॥ ग्रुँ द्वि लिंगै त्रण लक्षण दूषण, भूषण पंच विचारो रे; आर्ठ प्रभावक पर्द आगारा, सदृहणा चउँ धारो रे ॥ ५९ ॥ जयर्णा भावर्ण ठोण ते षद् षद्, दुशैं विध विनय उदारों रे; सडसिट्ट भेद अलंकृत समकित, भाष्यो जिन सुख कारि रे ॥ ६० ॥ वाचक जरा विजये ए प्र पंच, कीधो जेह सझायो रे; तिणे विस्तार न आण्यो एहमां, ते कहेता बहु थायो रे ॥ ६१ ॥ एह स्तवन सद्दृहीने भणता, समिकत निर्मेळ थायरे; वीर

स्तवनम्

मौनएका दिशीनुं जिनेश्वर स्तवन करता, मुज मन हर्ष सवायो रे ॥ ६२ ॥ भावनगर चोमासुं रहीने, वीर जिणंद दिशीनुं मलायो रे; चंद्र शिशा मद राजावर्षे, शीत आशो बीज गायोरे ॥ ६३ ॥ एहनी चर्चा जेह करे तस, थाए निर्मल बुद्धि रे; एह प्रयासथी फल मुज होजो, समिकत रत्ननी शुद्धी रे ॥ ६४ ॥ विजय देव सूरिश पटोधर, विजय सिंह गणधारो रे; तास शिष्य पंडित आचारी, सत्य विजय सुख कारो रे ॥ ॥ ६५ ॥ कपूर विजय मुनि क्षमा विजय गणी, क्षमा तणो भंडारो रे; तास शिष्य जिन विजय वैरागी, उत्तम विजय श्रीकारो रे ॥ ६६ ॥ विजय धर्म सूरिश्वर राज्ये, प्रथम जिणंद उपाशी रे; उद्यम पारे खका कहेणथी, घोघा वंदर वाशी रे ॥ ६७ ॥ ते उत्तम ग्रुरु बहु श्रुत प्राही, ग्रुणवंता वैरागी रे; तास कृपाथी पद्म विजय कहे, शुभ मति माहरी जागीरे ॥ ६८ ॥ "इति श्री समिकत पचीशी स्तवनम् सम्पूर्णम्"

"अथ श्री मौन एकाद्शीनुं स्तवन"

दुहा—शांति करण श्री शांतिजी, विघ्न हरण श्री पास; वाग् देवी विद्या दिये, समरुं धरी

॥११८॥

### मौनएक। दशीनुं

उह्यास ॥ १ ॥ जादव कुल शिर सेहरो, ब्रह्म चारि भगवंत; श्री नेमिश्चर वंदिये, जेहनां; ग्रुण अनंत ॥ २ ॥

ढाल--१-ली ॥ राग मल्हार-देखी कामिनी दोय, के कामें व्यापीयो रे; के कामें व्यापीयो ॥ ए देशी ॥ नयरि निरुपम नाम द्वारामति दीपति हो लाल ॥ द्वारा ॥ धनवंत धर्मि लोक देव पुरि जिपति हो लाल ॥ देव ॥ यादव सहित गदाधर राज करे जिहां हो लाल ॥ गदा ॥ उपगारि अरिहंत प्रभु आव्या तिहां हो लाल ॥ प्रभु ॥ १ ॥ अंतेउर परिवार हरि वंदन गयां हो लाल ॥ हरि ॥ प्रद-क्षिणा देइ त्रण्य प्रभु आगळ रह्यां होलाल ॥ प्रभु ॥ देशना देइ जिनराज सूंणे सहु भाविया हो लाल ॥ सुणे ॥ अरिया अमृत वयण सूणि सुख पाविया हो लाल ॥ सुणि ॥ २ ॥ हरि तव जोडी हाथ प्रभुनें इम कहे हो लाल ॥ प्रभु ॥ सकल जंतुनां भाव जिनेश्वर तुंलहे हो लाल ॥ जिने ॥ वर्ष दिवसमां कोइक दिन एक भाखियें हो लाल ॥ कोइक ॥ थोडे पुण्यें जेहथी अनंत फल चाखियें हो लाल ॥ अनंत ॥ ३ ॥

स्तवनम

मोनएक दशीनुं ॥११९॥ दुहा—प्रभुजी तव हरिनें कहे, मौन एकाद्शी जांण; कल्याणक पंचास शत, शुभ दिवसे चित्त आंण ॥ १ ॥ वासुदेव वलतुं कहें, दोढसो कल्याणक केम; अतित अनागत वर्त्तमांन, एणिपरे भाषे नेम ॥ २ ॥

ढाल—२—जी ॥ केसर भिनो मारो सायबो, प्रभू माहरा रित एक रूप देखाड हो ॥ ए देशी ॥ माहाजस सर्वानु भूति–भविक जन, किजे श्रीधर सेव हो; निम मिल्ल अरनाथिन–भवि०, राखो वंदन देवहो—भवि० ॥ नाथ निरंजन साचो सज्जन दुःखनो भंजन मोहनो गंजन साहेबो भवि० एहिज जिनवर देव हो ॥ ए आंकिण ॥ १ ॥ खयंप्रभ देवश्रुत उदय नाथिज—भवि०, साचो शिवपुर साथ हो;अकलंक शुभंकर वंदियें—भवि०,साचो श्री सप्त नाथ हो ॥ नाथ० साचो० दुःख० मोहनो० साहे० एहिज० ॥ २ ॥ ब्रह्मेंद्र गुणनाथ गांगिक—भवि०, सांप्रत श्री मुनि नाथ हो; विशिष्ट जिनवर वंदिए— क्षित्र पहिज० ॥ २ ॥ ब्रमुदु श्री अजोग श्री व्यक्त नाथजे—भवि०, साचो कलाशत जांण हो; अरण्यवास श्री योगजे—भवि०, श्री अजोग

स्तवनम्

मौनएका दशीनुं चित्त आंण हो ॥ नाथ० साचो० दूःख० मोहनो० साहे० भवि० एहिज० ॥ ४ ॥ परम नाथ सुधारति— दशीनुं भवि०, किजं निकेस सेव हो; सर्वार्थ हरिभद्रजि—भवि०, मगधाधिप शुद्ध देव हो ॥ नाथ० साचो० दूःख० मोहनो० साहे० भवि० एहिज० ॥ ५ ॥ प्रयच्छ अक्षोभ जिनवरा—भवि०, मलयसिंह नित्य वंद हो; दिनकर धनंद प्रभु नमो—भवि०, पौषध समरस कंदहो ॥ नाथ० साचो० दूःख० मोहनो० साहे०भवि० एहिज०॥६॥ दुहा—जिन प्रतिमा जिन वाणीनो, मोहटो जग आधार; जिव अनंता एहथी, पाम्यां भवनो पार ॥ १ ॥ नाम गोत्र श्रवणे सुणी, जपे जे जिनवर नाम; आठ कर्म अरि जितिनें, पामे शिवपूर ठाम ॥ २ ॥

ढाल—३–जी ॥ मोरा साहेब हो श्री शितल नाथ तो विनती सुणो एक माहरि ॥ ए देशी ॥ 🖔 श्री प्रलंब हो चारित्र निधि देवके प्रशमराजित नितु वंदियें, श्री स्नामिक हो विपरीत प्रसादके श्रा प्रलब हा चारित्र गाव रक्क नरमाराक्या । जुला के क्रियम चंद्र चित्त आणिए ॥ पश्चिममां हो

दशीनुं ॥१२०॥

ए भरत मवारके, त्रण चीविसी जांणीइं ॥ १ ॥ श्री द्यांत हो अभिनंदन पूज्यके रत्न द्रोखर 🖔 त्रिभुवन धणी, इयाम कोष्टक हो मरुदेव द्यालके अति पार्श्व किर्ति घणी; नंदिखीण हो व्रतधर निर्वाणके सेवंतां संकट टले, जंबुद्वीपे हो चउविसि त्रण्यके सेवंतां संपत्ति मले ॥ २ ॥ श्री सौंदर्य हो त्रिविक्रम नामके नारसिंह सेवो सहि, श्री क्षेमंत हो संतोषीत देवके कामनाथ वंदो वहिः मुनि-नाथज हो जिनवर चंद्र दाहके दिला दिल चित्तमां धरो, खंड धातकि हो पूर्व ऐरवत मांहिंके त्रण चोविशि मंगल करो ॥ ३ ॥ अष्टाहिक हो श्री वणिक् जाणके उदय ज्ञान सेवो सुखने, तमोकंद हो श्री साय काक्षके खेमंत वांदि गमो दुःखनें; श्री निर्वाणिक हो श्री जिन रवि राजके प्रथम नाथ शिव साथछे, पुरकरवर हो चउविसि त्रण्यके त्रण जगतनां नाथछे॥ ४ ॥ श्री पुरुर वाष हो श्री अव-बोध देवके विक्रमेंद्र इंद्रे नमो, श्री ख शांति हो हरनाथ मुणिंदके; नंदिकेश मुज मन गम्यो; महा मृगेंद्र हो श्री अशो चितके 'महेंद्र नाथ नाथाय नमुं, धातिक खंड हो ऐरवत क्षेत्रके त्रण्य चोविसि चरणे नमुं ॥ ५ ॥ अश्ववृंद् हो श्री कुटलिक वृंदके वर्द्धमान मुज मन रम्यो, श्री नंदि

मौनएका दशीनुं केश हो श्री धर्म्मचंद्रके-विवेक मुज मनमां गम्योः कलापक हो श्री विशोम पहके-अरण्य माय कीर्ति घणी, पुस्कर द्वीपे हो चोविशी त्रण्यके-त्रीश चोविशि स्तुति भणी ॥ ६ ॥ हाल-४-थी॥ कोइ ल्यो पर्वत धुंधुलो रे लोल॥ ए देशी॥ नेमि जिनेश्वर उपदिश्यो रे लोल०,

अद्भृत एह अधिकार रे॥ सुग्रण नर; सांभळतां चित्त हरखीयो रे लोल०, हुवो जय जय कार रे॥ सुग्रण नर ॥ श्रीजिन शासन जग जयोरे छोछ०॥ ए आंकणि॥ १॥ मंत्र जंत्र मणि औषधीरे छोछ०,सकछ जंत हित कार रे ॥सुगुण नर॥ एह नित्य थुणतां थकां रे लोल०, टाले विषय विकार रे॥सुगुण नर॥ श्रीजिन ॥२॥ रोग ने शोक विजोगडा रे लोल॰, नाशे उपद्रव दुःख रे सुगुण नर सेवंतां सुख खर्गनां रे लोल॰, विल पामे शीव शर्म रे ॥सुगुण नर॥ श्रीजिन ॥३॥ आराधन विधि सांभलो रे लोल०, चोथ भक्ते उपवास रे ॥ सुगुण नर ॥ मौन ध्यांन ध्यानतां रे लोल०, होये अघनो नाश रे ॥ सुगुण नर॥श्रीजिन॥४॥ अहोरत्तो पोसह करि लोल॰, जिपये ए जिन नांम रे ॥सुगुण नर ॥रिद्ध वृद्धि सुख संपदा रे लोल॰, लहिए शिवपूर ठाम रे॥ सुगुण नर ॥ श्रीजिन ॥५॥ मृगशिर शुद एकाद्शी रे लोल०, इंग्यार वर्ष वखाण रे ॥ सुगुण नर ॥ मास स्तवनम्

शां० २१

मौनएका के अग्यार उपर विले रे लोल०, ए तप पूरण प्रमाण रे ॥ सुग्रण नर ॥ श्रीजिन ॥६॥ उजमणुं करो भावथी रे होल०, इाक्ति तणे अनुसार रे ॥ सुग्रण नर ॥ जिन पूजा संघ सेवना रे लोल०, दान दियें सुविचार रे ॥ सुग्रण नर॥ श्रीजिन॥ श्रीजिन॥ श्रीजिन॥ प्रीजिन॥ श्रीजिन॥ श्रीजिन॥ श्रीजिन॥ श्रीजिन॥ श्रीजिन॥ श्रीजिन॥ श्रीजिन॥ तप किया की थां घणां रे लोल०, पण नाव्युं प्रणीष्यांन रे ॥सुग्रुण नर ॥ ते विण लेखे आव्यो नहिं रे लोल०,कास क्रुसुम उपमांन रे ॥ सुग्रुण नर ॥ श्रीजिन ॥९॥ काल अनंते में लह्यां रे लोल०, कर्म इंधण केइ तुर रे ॥ सुग्रण नर ॥ शुद्ध तप भले 🧏 भावथी रे लोल०, तेह करे चक चूर रे ॥ सुग्रण नर ॥ श्रीजिन ॥ १०॥ दान शियल तप भावथी रे लोल०, उद्धर्यां प्राणी अनेक रे ॥ सुगुण नर ॥ आराधो आदर किर रे लोल०, आणि अंग विवेक रे ॥ सुगुण नर ॥ श्रीजिन ॥ ११ ॥ बारे पर्षदा आगले रे लोल०, ए भाल्यो नेमि स्वाम रे ॥ सुगुण नर ॥ कृष्ण नरेसरे सह हि रेलोल०, पोहता निज निज धामरे ॥ सुगुण नर ॥ श्रीजिन ॥ १२ ॥ दुहा—श्री नेमिश्वर उपदिश्यो, सद्द्धो कृष्ण नरेश; विर विमल ग्रुर्थी लह्यो, में शुद्धो उप-

मौनएका देश ॥ १ ॥ काल अनंतां निर्गम्यो, अनंत अनंती वार; आवी निगोदे हुं भम्यो, केणे न कीधी दशीतुं सार ॥२॥ प्रभुदर्शन मुज निव हुओ, निव सूण्यो धर्म उपदेश; नाटीया नाटक परें, बहु बनाव्या वेष ॥ ३ ॥ अनुक्रमें नरभव लह्यो, उत्तम कुल अवतार; दुर्लभ दर्शन पामियो, तार प्रभु मुज तार ॥ ४ ॥ ढाल-५-मी॥ राग धन्याश्री ॥ दुषम काले एहं आलंबन, सुगुरु सदागम वाणीजी; तेहने संघे बहु सुख पाम्यां, भव मांहिं भवि प्राणीजी ॥ १ ॥ समकीत दायक शुभ पंथ वाहक, गुरु गीतारथ दीवोजी; पशु टाली सुर रूप करेजे, तेह ग्रुरु चिरं जिवोजी ॥२॥ ग्रुरु कुल वासे रहेतां लहिए, विनय विवेक सिव कियाजी; तेहनी सेवा करतां थाये, पूरण ज्ञाननां दरियाजी ॥३॥ एह स्तवन भणशे गणशे, छोडि चित्तनां चाळाजी; सूरतरु सुर मणि सुर गवि प्रगटे, तस घर मंगळ माळाजी ॥४॥ संवत सत्तर एंसी वर्षे, स्तवन रच्युंमन खंतेजी; यंत्र अनुसारे जोइ कीधुं, बार गाथामें तंतेजी ॥५॥श्री वीर विमल गुरु सेवा करतां, ऋद्धि किर्त्ति बहु पायाजी; विशुद्ध विमल कहे तेहवे संगे, पुरुषोत्तम ग्रण गायाजी ॥६॥ "इति श्री मोन एकादशी स्तवनम् सम्पूर्णम्"

श्रीरोहि-णी तपनुं

''अथ श्री रोहिणी तपनुं स्तवन"

दुहा—सुख कर संखेश्वर नमी, शुभ गुरुनें आधार; रोहिणी तप महिमा विधि, कहेर्द्युं भवि उपगार ॥ १ ॥ भक्त पान कुत्सित दीये, मुनीने जाण अजाण; नरक तिर्यंचमां जीवते, पामे बहु दुःख खाण ॥ २ ॥ ते पण रोहिणी तप थकी, पामी सुख संसार; मोक्ष गया तेहनो कहुं, सुंदर ए अधिकार ॥ ३ ॥

ढाल—१-ली ॥ शीतल जिन सहेजा नंदी ॥ ए देशी ॥ मघवा नगरी करी जंपा, अरी वर्ग थकी निहं कंपा; आ भरते पुरी छे चंपा, राम सीता सरोवर पंपा ॥ पनोता प्रेमथी तप कीजे ॥ ग्रुरु पासे तप उचरीजे ॥ पनोता० ग्रुरु०॥ ए आंकणी ॥ ॥१॥ वासुपूज्यना पुत्र कहाय, मघवा नामे तिहां राय; तस लक्ष्मीवती छे राणी, आठ पुत्र उपर एक जाणी ॥ पनोता० ग्रुरु०॥ २ ॥ रोहिणी नामे थइ बेटी, नृप वस्त्रभ शुं थइ मोटी; यौवन वयमां जब आवे, तव वरनी चिंता थावे ॥ पनोता० ग्रुरु० ॥ ३ ॥ स्वयं वर मंडप मंडावे, दूरथी राज पुत्र मिलावे; रोहिणी शणगार धरावी, जाणुं चंद्र प्रिया इहां आवी ॥ पनोता० ग्रुरु० ॥ अ

स्तवनम्

ાશ્વરા

For Private And Personal Use Only

॥ ४ ॥ नाग पुरवित शोक भुपाल, तस पुत्र अशोक क्रमार; वरमाला कंठे ठावे, नृप रोहिणी ने पर णी तपनुं ही णावे ॥ पनोता० गुरुवा ५ ॥ परिकरशुं सासरे जावे, अशोकने राज्ये ठावे; प्रिया पुण्ये वधी बहु रिखी वीतशोके दिक्षा लीधि ॥ पनोता० ग्रुरु० ॥ ६॥ सुख विलसे पंच प्रकार, आठ पुत्र सुता थइ च्यार; रहि दंपति सातमे मालें, लघु पुत्र रमाडे खोले ॥ पनोता० ग्रुरु० ॥ ७ ॥ लोकपाला भिधान ते बाल, रहि गोखे जुए जन चाल; तस सन्मुख रोति नारी, गयो पुत्र मरण संभारी ॥ पनोता०ग्रुरु॥८॥ शिर छाती कुटे मिल केती, माय रोती जलांजली देति; माथानां केश ते रोले, जोइ रोहिणी कंतने बोले॥ पनोता० इं ग्रह्मा ९॥ आज में नवुं नाटक दीद्वं, जोतां बहु लागे मीद्वं; नाच शिखि किहांथी नारी; सुणी रोषे भयों नृप भारी ॥ पनोता०ग्रुरु० ॥ १० ॥ कहे नाच शिखो इणि वेला, लेइ पुत्र बाहिर दिप झोलां; करथी विछड्यो ते बाल, नृप हा हा करे तत्काल ॥ पनोता० गुरु० ॥ ११ ॥ पुर देव विच्येंथी लेतां, भुंइ सिंहासन करि देतां; राणी हसति हसति जुए हेट्रं, राजाए कौतुक दीट्ठं॥पनोता० ग्रुरु०॥१२॥ लोक सघलां

श्रीरोहि-णी तपनुं

गा१२३॥

विस्मय पामे, वासुपूज्य शिस वन ठामे; आव्या रूप सोवन क्वंभ नामा, शुभवीर करे परणामा ॥ पनोता० ग्रुरु० ॥ १३ ॥

चउ नाणी नृप प्रणमी पाय, निज राणीनुं प्रश्न कराय; आ भव दुःख नवि जाणे एह, ए उपर मुज अधिको नेह ॥ १ ॥ मुनि कहे इणे नगरे धनवंतो, धनिमत्र नामा द्रोठज हतो; दुर्गंधा तस बेटी थइ, कुबजा कुरूपा दुर्भग भइ ॥ २ ॥ यौवन वय धन देतां सही, दुर्भग पण कोइ परणे नहीं; नृप हणतां 🦞 कै तव सिखेण, राणी परणावि सा तेण ॥ ३ ॥ नाठो ते दुर्गंधज लही, दान दीयंती सायर रही; ज्ञानीने परभव पूछती, मुनी कहे रैवत गिरि तट हती ॥ ४ ॥ पृथिवी पाल नृप सिद्धीमति, नारी नृप वनमां क्रीडती; राय कहे देखी गुणवंता, तपसी मुनि गोचरी ए जता ॥ ५ ॥ दान दीयो घर पाछां वली, तुं किडारस रिसें बली; मुर्खपणे करि बल ते हिये, कडवुं तुंबडुं मुनिने दीये ॥ ६ ॥ पारणुं करतां प्राणज गयां, सुरलोके मुनि देवज थयां; अशुभ कर्म बांधे सा नारी, जाणी नृप काढे पुर बार

स्तवनम्

ાાશ્વરા

🖔 ॥ ७ ॥ कुष्ट रोग दिन साते मरी, गइ छडी नरके दुःख भरी; तिरिय भवे अंतरता लेइ, मरीने सात णी तपनुं नरकमां गइ ॥ ८ ॥ नागिण करभीने कूतरी, उंदर घीरोली जलो श्रूकरी; काकी चंडालण भव लही, नवकार मंत्र तिहां सहही ॥ ९ ॥ मरीने शेठनी पुत्री मइ, शेष कमें दुर्गंधा थइ; सांभली जाति समरण लहे, श्री शुभवीर वचन सहहें ॥ १० ॥

> ढाल—३–जी ॥ गजरा मारुजी चाल्यां चाकरी रे ॥ ए देशी ॥ दुर्गधा कहे साधूने रे, दुःख भोग वियां अतिरेकः; करुणा करिने दाखीयेरे, जिम जाए पाप अनेकरे–जिम० ॥ १ ॥ मुनी कहे रोहिणी तप करोरे, सात वर्ष उपर सात मासः; रोहिणी नक्षत्रने दिनेरे, ग्रुरु मुख करिए उपवासरे–ग्रुरु० ॥२॥ तपथी अशोक नृपनी प्रियारे, थइ भोगवि भोग विलास; वासुपूज्य जिन तीर्थे रे, तमे पामइयो मोक्ष निवासरे—तमे०॥ ३॥ उजमणे पूरण तपेरे, वासुपूज्यनी पडिमा भराय; चैत्ये अशोक तरु तछेरे, अशोक रोहिणी चितरायरे—अशो०॥ ४॥ साहमी वत्सल पधराविनेरे, गुरु वस्त्र सिद्धांत लखाय; कुमर सुगंध तणी परेरे, दुःख कर्म सकल क्षय जायरे–दुःख०॥ ५॥ साधु कहे सिंह पुरमांरे,

श्रीरोहि-गी तपनु ॥१२४॥

सिंहसेन नरेसर सार; कनकप्रभा राणी तणोरे, दुर्गंधी अनीष्ट क्रमाररे–दुर्गंधी० ॥ ६ ॥ पद्म प्रभुने 🖔 पूछतांरे, जिन जंपे पूर्व भव तासः बार योजन नागपूरथीरे, एक शीक्षा निलगिरि पासरे-एक०॥ ७॥ क्षे ते उपर मुनि ध्यानथीरे, न लहे आहेडी शिकारः गोचरी गत शिक्षा तलेरे, कोप्यो धरे अग्नि अपा-तत्क्षण पाम्या अपवर्गरे-तत्क्षण०॥ ९॥ आहेडी कुष्टि थइरे, गयो सातमि नरक मोझार; मच्छ मघा अहि पांचमीरे, सिंहचोथी चित्रक अवताररे–सिंह०॥ १०॥ त्रीजी बीलाडो बीजीएंरे, घुक प्रथम नरक दुःखजाल; दुःखनां भव भमी ते थयोरे, एक शेठ घरे पशु पालरे-एक० ॥ १९ ॥ धर्म लही दवमां बल्योरे, निद्राए इदय नवकार; श्री शुभ वीरनां ध्यानथीरे, तुज पुत्र पणे अव-ताररे-तुज०॥ १२ ॥

ढाल—४-थी ॥मारी अंबानां वडला हेठ ॥ ए देशी ॥ निसुणी दुर्गंध क्रमार जातीस्मरण पाम

स्तवनम्

**ાા** ૧૨૪**ા** 

श्रीरोहि- हैं। योरे, दुरगंध पणुं गयुं दूर-नामे सुगंधी कुमर थयो रे; रोहिणी तप महिमा सार-सांभळता णी तपनुं हैं। निव विसरेरे ॥ ए आंकणी ॥१॥ रहि वात अधुरी एह-सांभळक्यो रोहिणी ने भवेरे, इम सुणी दुर्गंधा नारी-रोहिणी तप करे ओच्छवेरे; सुगंधी लही सुख भोग-खर्गे देवी सोहामणीरे, तुज कांता मघवा घुअ—चिव चंपाए थइ रोहिणीरे ॥ रोहिणी० ॥ २ ॥ तप पुण्य तणे प्रभाव—जन्मथी दुःख न देखि-युरे, अति स्नेह किस्यो अम साथ-राय अशोके वली पूछीउंरे; गुरु बोले सुगंधी राय-देव थइ पुखला वतीरे, विजये थइ चक्री तेह—संजम धरि हुआ अच्युत पतिरे ॥ रोहिणी० ॥ ३ ॥ च्यविने थयां तमे अशोक-एक तपे प्रेम बन्यो घणोरे, सात पुत्रनी सुणज्यो वात-मथुरामां एक माहणोरे; अग्निशर्मा सुत सात-पाडलीपुर जड़ने भिक्षा भमेरे, मुनी पासे लही वैराग्य-विचर्यां साते रही संयमेरे रोहिणी० ॥ ४ ॥ सौधमें हुआ सुर सात-ते सुत साते रोहिणी तणारे, वैताढ्ये भछ चूल खेट-समकी त शुद्ध सोहामणांरे; गुरु देवनी भक्ति पमाय-धुर खर्गे थइ देवतारे, लघु सुत आठमो लोकपाल रोहिणीनो ते सुर सेवतांरे ॥ रोहिणी० ॥ ५ ॥ विल खेट सुता छे च्यार-रमवाने वनमां गइरे,

श्रीरोहि-णी तपनुं

118રપ્તા

तिहां दिठां एक अणगार—भाखे धर्म वेला थइरे; पुछ्यांथी कहे मुनि तास—आठ पहोर तुम आयुछेरे, आज पंचमीनो उपवास—करश्यो तो फल दायछेरे ॥ रोहिणी० ॥ ६ ॥ धुजंति करी पच्चक्खाण—गेह अगासे जइ सोवतीरे, पिंड विजलीयें बली तेह—धुर सुरलोके देवी थतीरे; च्यवि थइ तुम पुत्री च्यार—एक दिन पंचमी तप करिरे, इम सांभली सहु परिवार—वात पूर्व भवनी सांभलीरे ॥ रोहिणी० ॥ ७ ॥ गुरु वंदी गयां निज गेह—रोहिणी तप करतां सहुरे, मोटी शक्ति बहु मान—उजमणामां वस्तु बहु रे; इम धर्म करी परिवार— साथे मोक्ष पुरि वरिरे, शुभ वीरनां शासन मांहि—सुख फल पामो तप आदरीरे ॥ रोहिणी० ॥ ८ ॥

कलरा—इम त्रिजग नायक मुक्ति दायक वीर जिनवर भाखियो, तप रोहिणीनो फल विधाने विधि विरोषे दाखीओ; श्री क्षमाविजय जरा विजय पाटे शुभ विजय समता धरो, तस चरण सेवक कहे पंडित वीर विजयो जयकरो ॥ १ ॥

"इति पंडित वीर विजय रचित श्री रोहिणी तप विधि स्तवनम् सम्पूर्णम्"

स्तवनम्

ાારુરુપા

るまるまるまるまるよう

## "अथ श्री बीजनुं स्तवन"

दुहा—सरस वचन रस वरसती, सरस्ति छुल भंडार; बीज तणो महिमा कहुं, जेम कह्यो शास्त्र मोझार ॥ १ ॥ जंबु द्वीपना भरतमां, राजग्रही नगरी उद्यान; वीर जिणंद समोसर्या, वंदवा आव्यां राजन् ॥ २ ॥ श्रेणिक नामे भूपति, बेठो बेसण ठाय; पुछे श्री जिन रायने, द्यो उपदेश महाराय ॥ ३ ॥ त्रिगडे बेठां त्रिभुवन पति, देशना दिये जिनराय; कमल सुकोमल पांखडी, इम जिन इदय सोहाय ॥ ४ ॥ शिश प्रगटे जेम तेदिने, धन्य ते दिन सुविहाण; एक मने आराधतां, पामे पद निर्वाण ॥ ५ ॥

ढाल—१–ली ॥ चैत्रशुद पंचमी दीने सूण प्राणीजीरे, ॥ ए देशी ॥ कल्याणक जिननां कहुं सुण प्राणिजीरे, अभिनंदन अरिहंत ए भगवंत भिव प्राणीजीरे; माहा शुद बीजने दिने सुण प्राणी जीरे; पाम्यां शिवसुख सार हरख अपार भिव प्राणीजीरे ॥ १ ॥ वासु पूज्य जिन बारमां सुण प्राणिजीरे, एहज तिथी नाण सफल विहाण भिव प्राणीजीरे; अष्ट कर्म चूरि करी सुण प्राणी स्तवनम्

जीरे, अवगाहन एक वार मुक्ति मोझार भिव प्राणीजीरे ॥ २ ॥ अरनाथ जिनजी नमुं सुण प्राणी कि जीरे, अष्टाद्शमो अरीहंत ए भगवंत भिव प्राणीजीरे; उज्वल तिथी फाग्रणनी भली सुण प्राणी कि जीरे, विरया शिववधु सार सुंद्र नार भिव प्राणीजीरे ॥ ३ ॥ दशमा शितल जिनेश्वह सुण प्राणीजीरे०, जीरे०, परम पदनी वेल ग्रणनी गेल भिव प्राणीजीरे; वैशाख वद बिज दिने सुण प्राणीजीरे०, मूक्यो सर्वे ए साथ सुरनर नाथ भिव प्राणीजीरे ॥ ४ ॥ श्रावण शुद्नी बीज भली सुण प्राणीजीरे०, जीरे, सुमित नाथ जिन देव सारे सेव भिव प्राणीजीरे; इण तिथी ए जिन भला सुण प्राणीजीरे०, कल्याणक पांचे ए सार भवनोपार भिव प्राणीजीरे ॥ ४ ॥

ढाल—२—जी॥श्री सिद्धचक्र आराधिय रे लाल ॥ ए देशी ॥ जगपति जिन चोवीशमोरे लाल, ए भाष्यो अधिकार रे भविक जन; श्रेणिक आदि सहु मिल्यां रे लाल, शक्ति तणे अनुसार रे भविक जन॥ भाव धरिने सांभलो रे लाल, आराधे धरि खांतरे भवि० भाव० ए आंकणी ॥ १ ॥ दोय वर्ष दोय मासनी रे लाल, आराधो धरी खांतरे भवि०; उजमणुं विधीशुं करोरे लाल, बीज स्तवनम्

ાારવદ્દા

ते मुक्ति महंत रे भवी० भाव०॥२॥मारग मिथ्या दुरे तजो रे लाल, आराधो ग्रण नाथ रेभवि०; विरनी वाणी सांभली रे लाल, उच्छ रंग थयां बहु लोक रे भवी० भाव०॥३॥ एणे बीजे केइ तयाँ के रे लाल, वली तरक्षे केइ सेवरे भवि०; शक्ती सिद्धी अनुमानथी रे लाल, शीलनाग धरो अंकरे भवि॰ भाव॰ ॥ ४ ॥ आशाढ शुदि दशमी ने दिने रे लाल, ए गायो स्तवन रसाल रे भवि॰; नवल विजय सुपसायथी रे लाल, चतुर ने मंगल माल रे भवी० भाव० ॥ ५॥ कलश— इय वीर जिनवर सयल सुखकर गाइयो अति उछट भरे, आषाड उज्ज्वल दशमी दिवसे संवत अढार अट्टो त्तरे; बीज महिमा इम वर्णव्यो रही सिद्धपुर चोमासुं ए, जेह भाविक भावे भणे गुणे तस घर **ळीळ विळास ए ॥ ६ ॥** 

"इति श्री बीज स्तवनम् सम्पूर्णम्"

"अथ श्री चोवीश जिननां-आंतरानुं स्तवन"

दुहा— शारद शारदा सुपरे, पद पंकज प्रणमेव; चोवीसे जिन वर्णवुं, अंतर जिन संक्षेप

चोवीश जिन

॥ १ ॥ वीर पार्श्वने आंतरं, वर्ष अढीसें होय; पंच कल्याणक पार्श्वनां, सांभलजो सहु कोय ॥ २ ॥ ढाल—१—प्रथम ॥ पंच महावत आदरो साहेलडी रे ॥ ए देशी ॥ नीरूपम नयरी वणारसी जी, श्री अश्वसेन नरींद तो; वामा राणी ग्रण भर्यांजी, मुख जीम पुनेम चंद-भवि भाव धरिने प्रणमो ए पास जीणंद तो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ प्राणत कल्प थकी चव्या जी, चैत्र वदि चोथ ने दीन तो; तेहनी कुले अवतर्यां जी, प्रभु जीम किन्नर सिंह ॥ भवी० ॥ २ ॥ पोष बहुल दशमी दिनें जी, जनम्या ए पास कुमार तो; जोबन वय प्रभु आवीयां जी, वरीया प्रभावती नार ॥ भवि० ॥ ३ ॥ कमठ तणो मद गारीजी, उद्धर्यों नाग सजोड लीयो तो; वद अगीयारस पौषनी जी, संयम लीयो ऋदि छोड ॥ भवी० ॥ ४ ॥ गाज वीज ने वायरो जी, मुशल धारा मेह तो; उपसर्ग कमठे कर्यो जी, धरणेंद्रें निवार्यों तेह ॥ भवी० ॥ ५ ॥ कर्म खपावी केवल लह्यं जी, चैत्र वदि चोथ सुजाण तो; श्रावण द्युदि दीन आठमेजी, प्रभुजीनो निर्वाण ॥ भवी० ॥ ६ ॥ एकसो वर्षनुं प्रभु आउखुं जी, पास चरित्रे कह्युं एम तो; वर्ष चौराशी सहसनुं जी, आंतरु पासने नेम ॥ भवी० ॥ ७ ॥

आंतरानुं स्तवनम्

1183011

## चोवीश जिन

॥ ढाल–२ बीजी—सोना-केरुं मारुं बेडंलु रे, स्वाम अलगा रहेजो; रुपला इंढोणि हाथ, हो 🖔 स्वाम अलगा रहेजो ॥ ए देशी ॥ शौरी पूर नयर सोहामणुं रे, जग जीवना रे नेम; समुद्र 🕏 वीजय नरपाल हो दील रंजना रे नेम, चव्या अपराजीत थकी रे, जगजीवना रे नेम, कार्तिक विद् बारस दिन हो, दिल, रंजना रे नेम ॥ ए आंकणी ॥ १॥ शीवादेवी कुखे अवतर्या रे, जग०; मान सर जिम मराल हो, दील० श्रावण द्युदि दिन पंचमी रे, जग०; प्रसव्यो पुत्र रत्न हो, दील० ॥ २ ॥ जोबनवय प्रभु अवीयां रे, जग०; नील कमल दल वाण हो, दील० परणो सुंदर सुंदरी रे, जग०; एम कहे गोपी कान हो, दील० ॥ ३ ॥ श्री उपसे ननी कुंवरी रे, जग०; वरवा कीधी जाण हो, दील० पशु देखी पाछा वल्यां रे, जग०; हुआ जादव कुल हेरान हो, दील० ॥ ४ ॥ त्रोडां हारने हारडा रे, जग०, राजुल दुःख न माय हो, दील० कहे पीउजी पाए पडुं रे, जग०; छोडी मुने मत जाओ हो, दील० ॥ ५ ॥कीडीशुं कटक करो रे, जग०; ए तुम कुण आचार हो, दील० माणसनां दिल दुहवो रे, जग०; पशुआंद्युं करो

आंतरानुं स्तवनम् चोवीश जिन ॥१२८॥ प्यार हो, दील०; ॥ ६ ॥ नव भव नेह नीवारिओ रे, जग०; देइ संबच्छरी दान हो, दील० श्रावण द्याद छठने दीने रे, जग०; संजम लीओ वड वाण हो, दील० ॥ ७ ॥ तारी राजुल सुंदरी रे, जग०; देइ दीक्षा दाण हो, दील० अमावास्या आशो तणी रे, जग०; प्रभु लीयुं केवल ज्ञान हो, दील० ॥ ८ ॥ सहस्र वर्ष प्रभु आउखुं रे, जग०; पाली श्री जिनराज हो, दील०; आषाढ द्यादि दीन आठमे रे, जग०; प्रभु लहे शीवपुर राज हो, दील० ॥ ९ ॥

ढाल—३-त्रीजी॥ राग मल्हार॥नयरि निरुपम नाम द्वारामित दीपती हो लाल, द्वारा॥ ए देशी
॥ पांच लाख वर्ष निम नेमिने आंतरुं हो लाल, के निम नेमिने आंतरुं हो लाल; मुनिसुत्रत
निम नाथने छ लाख चित्त धरुं हो लाल, के छ लाख चित्त धरुं हो लाल; चौपन लाख वर्ष मुनि सुदृत
मि नाथने हो लाल, के सुत्रत मिलीने हो लाल कोड सहस वली जाणो मिली अर नाथने होलाल, के
मिली अरनाथने हो लाल॥ ए आंकणी॥ १॥ कोड सहस वर्षे करी ओ छुं पल्योपम हो लाल, के
ओ छुं०; चोथो भाग अरनाथने छुंथु नाथ ने हो लाल, के छुंथु०; पल्योपमनुं अडध जाणो शांती छुंथुने

आंतरानु स्तवनम्

ાારુવડા

## चोवीश जिन

हो लाल के जाणो शांती०; शांतीधर्म पल्योपम उणे सागर त्रण्ये हो लाल,के उणे सागर०,॥२॥ सागर चार अणंतने धर्म जीणंदने हो लाल, के धर्म॰; नव सागर वली अनंत विमल जिण चंद्रने हो लाल, 🖔 के विमल॰ जिण; सागर त्रीश विमल वासुपूज्य जिणेशने हो लाल, के वासु पूज्य जि॰; सागर चोपन श्री वासुपूज्य श्रेयांसने हो लाल, के वासुपूज्य ॥ ३॥ लाख पांसेठ सहस छवीस वर्ष सो सागरुं हो लाल, के वर्ष०; उनी सागर कोड श्रेयांस शीतल करे हो लाल, के श्रेयांस०; शीतल ने नव क्रोड सागर भावजो हो लाल, के सागर०; सुविधी चंद्रप्रभु सागर क्रोड नेवुंगावजो, हो लाल, के नेवुं० ॥ ४ ॥ सागर नवसें कोड सुपार्श्व चंद्रप्रभु हो लाल०; के सुपार्श्व०; सागर नव सहस्र कोड सुपास पद्म प्रभु, हो लाल, सुपास॰; सुमती पद्म प्रभु नेवुं सहस्र कोड सागरुं हो लाल, के क्रोड सागरुं०; सुमति अभिनंदन नव लाख, क्रोड सागर वरु, हो लाल, के क्रोड०॥ ५॥ द्श लाख क्रोड सागर संभव अभिनंदने, हो लाल, के संभव०; त्रीश लाख क्रोड सागर संभव जिन अजितने हो लाल, के संभव०; पचाश लाख कोड सागर अजित जिन ऋषभने

आंतरानुं स्तवनम् ॥१२९।

हो लाल, के अजीत॰; एक कोडा कोड सागरऋषभने वीरने हो लाल, के ऋषभने॰॥६॥अंतर काल जाणो जिन चोविशनो हो लाल, के जिन॰; सहस बेंतालीश तीन वर्ष वली जाणीए हो लाल; के वर्ष॰; साडा आठ महीना उणा ते वस्नाणीए हो लाल, के उणा॰; नवसें ऐंसी वर्षे होय पुस्तक वांचना हो लाल, के पुस्तक०॥ ७॥

ढाल—४—चोथी ॥ दिन सकल मनोहर ॥ ए देशी ॥ जायो आदि जिणेशर, त्रीभुवननो अवतंस; नाभिराजा मारुदेवा, कुल मानु सर हंस; सर्वार्थ सिद्धथी, च्यव्या इक्ष्वाकु भूमि वर ठाम; अशाड विद् चोथ ने दीने, अवतर्या पुरुष प्रधान ॥ १ ॥ चैत्र विद आठम दीने, जनम्या श्री जिनराज; आवे इंद्र इंद्राणी, प्रभुजीनां गुण गावे; सुनंदा सुमंगला, वरीआ जोबन पाय; भरतादिक एकसो, पुत्र पुत्री दोय थाय ॥ २ ॥ करी राज्यनी स्थापना, वासी वीनीता इंद्र; जग नीती चलावें, मारु देवीनो नंद; सिव शिल्प देखाडे, वारे जुगलो आचार; नर कला बहातिर; चोशठ महीला सार ॥ ३ ॥ भरतादीकने दीए, अंगादिकनुं राज्य; सुरनर एम जंपे, जय जय श्री जिनराज; दीए दान आंतरानुं स्तवनम

1182811

## चोवीश जिन

संवच्छरी, प्रभु लीओ संयम भार; चार सहस्र राजाशुं, चैत्र विद आठम सार ॥ ४ ॥ प्रभु विचरे महीयल, वर्ष दिवस विणा हार; गज रथने घोडा, जन दीए राज कुमारी; प्रभु तो नवि लेवे, जोवे शुद्धो आहार; पडी लाभ्या प्रभुजी, श्री श्रेयांस कुमार ॥ ५ ॥ फागण अंधारि, अगीयारस शुभ ध्यान: प्रभु अट्टम भक्ते, पाम्या केवल ज्ञान; गढ त्रण रचे सुर, सेवा करे कर जोड; चक्र रत्न उपन्युं, भरत तणे मन कोड ॥ ६ ॥ मारुदेवा मोहे, दुःख आणे मन जोर; मारो ऋषभ सहे छे, वनवासी दुख घोर; तव भरत पयंपे, त्रीभुवन केरुं राज; आवो आइजी तमने, देखाडुं हुं आज ॥७॥ गजरथमां बेसाडी, समवसरणनी पास; भरतेसर आवे, प्रभु वंदन उल्लास; सुणी देवनी दुंदुभी, उल्लित आणं दपुर; आव्यां हर्षनां आंसु, तिमिर पडल गयां दूर ॥८॥ पूत्रनी ऋद्धि देखी, एम चिंते मन मात; धीक् धीक् कुडी माया, कीना सुत कीना तात; एम भावना भावतां, पाम्यां केवल ज्ञान; तत्क्षण मारुदेवा, त्यां लह्यां निर्वाण ॥ ९ ॥ धन्य धन्य ए प्रभुजी, धन्य एहनो परिवार; लाख पूर्व चौराशी, पाली आयु त्यां लह्यां निर्वाण ॥ ९ ॥ धन्य धन्य ए प्रभुजी, धन्य एहनो परिवार; लाख पूर्व चौराशी, पाली आयु है उदार; माहा वदि तेरस दीने, पाम्या सिद्धनुं राज; अष्टापद शीखरे, जय जय श्री जिनराज ॥१०॥

आंतरानुं स्तवनम्

श्रीचतु. द्रा ग्रण-स्थान

गाउउगा

कलश—चोविश जिनवर तणो अंतर, भण्यो अति उह्यास ए; संवत सत्तर तहोंतेरे एम, रही सुरत चोमासुं ए; संघ तणे आग्रहे ग्रही में,श्री विमल विजय उवझाय ए; तस शिष्य रामें तस नामे, वर्यो जय जय कार ए॥१॥

"इति श्री चोविश जिन आंतरानुं स्तवन सम्पूर्ण"

"श्री शांतिनाथ स्तुतिगर्मित चतुर्दश गुणस्थान स्तवन"

॥ दुहा ॥ सकल मंगल करण सदा, श्री शांतिनाथ ग्रुणगेह; तस मुख पंकज वासिनी, प्रणमुं सरश्वती तेह ॥ १ ॥ वे कर जोडी वीनवुं, सुणजो खामी कृपाल; कर्मजोगे ए जीवडो, भम्यो अनंतो काल ॥ २ ॥ विण ग्रुण ठांणक जाणता, किंम लहीए सुध धर्म; तेणे हुं संक्षेपे कहूं, जिम पंथ क्रुपंथ समजाय ॥ ३ ॥

ढाल १ -ली ॥ चोपाइ ॥ अशो सुदि सातम सुविचार, ओली माडी स्त्री भरतार; ॥ ए देशी ॥ प्रथम

शांति-नाथ स्तवनम्

।।१३०॥

मिथ्यात्व ग्रुणठाणुं कहुं, बीजुं साखद्न नामे लहुं; मिश्र ग्रुंणठाणुं त्रीजुं सुणुं, अविरति समकित द्रष्टी चोथुं गणुं ॥ ४ ॥ देश विरति ग्रुणठाणुं पांचमुं, छठुं प्रमत्त अप्रमत्त सातमुं; आठमुं अपूर्वकरण नउमुं अनिवृत्तिबाद्र वखाण ॥ ५ ॥ दसमुं ग्रणस्थानक सुक्ष्मसंपराय, उपशांत मोह इंग्यारमुं कहेवाय; क्षीणमोह गुण स्थानक बारमुं, तेरमुं सयोगी अयोगी चौदमुं॥ ६ ॥ कह्या गुणठाणां ए नामथी सार, हवे कहूं भेदथी अल्प विचार; प्रथम मिथ्यात्व किम गुणठाणुं होए, गुणस्थानक प्रंथे जोय ॥ ७॥ व्यक्त अव्यक्त मिथ्यात्व वे प्रकार, अव्यक्त ते अव्यवहार राशि मोजार, व्यक्त मिथ्यात्व व्यवहार मांहि लहुं, तिणे ए प्रथम गुंणठाणुं सद्दृं ॥ ८ ॥ तेहना भेद् छे दश प्रकार, जुओ श्री ठाणांग सूत्र मजार; धर्मनें विषे जिहां अधर्मनी बुध्धि, अधर्मने विषे जे धर्मनी शुद्धि ॥ ९ ॥ इत्यादिक दस बोल छे जिहां, वली संशयादिक पांचे कह्यां; एहनी नथी आदि भव्यनी छे अंत, अभव्यने नथी आदि ने अंत ॥ १०॥ एकसो वीश प्रकृति बंधनी कही, तेहमां ए त्रण बांधे नही; तीर्थंकर नाम आहारक शरीर, अंगोपांग एहनां जाणुं धीर

शांति-नाथ स्तवनम्

श्रीचतु-र्दश गुण स्थान ॥ ११ ॥ सत्तरोत्तरीसो प्रकृति बंध उदे होय, सत्तामां एकसो अडतालीश जोय; एहने उदए च्यार गतिए भम्यो, अनंत पुद्गल परावर्त नीगम्यो ॥ १२ ॥ राज ऋद्धि पाम्यो बहु वार, पांम्यो अर्थ गर्थ भंडार; जिहां लगें न गयुं ए मिथ्यात, तिहां लगें एके नावी लेखे वात ॥ १३ ॥ जिहां राजा मोह तिहां ए छे प्रधांन, तेणे एहनी वर्ति बहु आण; एह विचार प्रथम गुणठाणा तणो, हवे एहनी करणी तुह्रो सुणो ॥ १४ ॥

हाल—२—बिजी—॥ राग मारु ॥ कुंअर गभारो नजरे देखतांजी ॥ ए देशी ॥ जूओ जुओ करणी ए मिथ्यात्व नी रे, सर्व कष्ट रद किर एहः जिम ताव मांहि खीर भोजन करीरे, बहु दुःख पामे देहः जुओ जूओ करणी ए मिथ्यात्वनीरे ॥ ए आंकणी ॥१५॥ जे जे दर्शनीने जई पूछीए रे, कहे ते नव नवा आचारः एक कहे ईश्वर इच्छा छे जेहवी रे, ते तिम थाय निरधार ॥ जूओ जूओ० ॥ १६ ॥ एक कहे स्नान होम त्रपण किर रे, एक कहे वेदोक्तिथी मोक्षः एक कहे टाढ ताप भुख तृषा सहोरे, एक कहे जाणि बहु दोष॥ जूओ जूओ० ॥ १७ ॥ एम अन्य दर्शणेवात छे घणी रे, ते में कहीअ

॥१३१॥

्रैं न जाय; पण अश्रुद्ध।किर जे जिन दर्शण लही रे, ते वात हैये न समाय ॥ जूओ जूओ ॥ १८॥ है एक मलीन वस्त्र पहेरी कष्ट किया करे रे, वली कहे अम्हे अणगार; करे बाहिर यतना लोक देखा डवा रे, अंतर यतना नही लगार ॥ जूओ जूओ ॥ १९ ॥ आप प्रशंसे पर निंदे घणुं रे, सिद्धांत भणी थापे निज मति; कलह कारी कदायहथी भस्या रे, ते देखी मूढ पामे रति॥ जूओ जूओ॥२०॥ एक जिन प्रतिमानी अविधि करे घणी रे, विनय न जाणे लगार; पुत्र कलत्र धन संपद। भणी रे, यात्रा माने वारंवार॥ जूओ जूओ ॥ २१ ॥ एक मूढ जिन प्रतिमा माने नही रे, कहे अहीं आरंभ अपार; बीजी व्यवहारनी करणी करे घणी रे, धरि चित्तद्युं द्वेष गमार ॥ जुओ जूओ ॥ २२ ॥ एक द्रव्य संयम लेइ विकथा मांहि नीगमें रे, देव धर्म न जाणे धुर; आत्म तत्वनी खबर पडे नही रे, एम वाध्युं मिथ्यात्वनुं पूर ॥ जूओ जूओ ॥ २३ ॥ उपराम समिकत लहि पडतां थकां रे, जीव आवे बीजे गुणठाणः तिहां छ आवली समिकत फरशे सही रे, खीर खांड वमन समान ॥ जूओ जूओ ॥ २४ ॥ नरक गति आयु आनुपूर्वी ए त्रण कहीरे, एकेंद्रियादिक च्यार जाति; थावर सुक्ष्म अप

शांति-स्तवनम् श्रीचतु-र्द्श गुण-स्थान

ાારુરાા

र्याप्त साधारण सिंह रे, हुंडक आतप मिथ्यात ॥ जुओ जुओ ॥ २५ ॥ सेवार्त संघयण नपुंसक वेद जाणी ए रे, ए सोल न बांघे निरधार; एकसो एक प्रकृति बांघे सही रे, उदय होय एकसो अग्यार ॥ जुओ जुओ ॥ २६ ॥ त्रीजुं गुणठाणुं अंतर्मू हुर्तनुं सही रे, जिहां हरिहर जिनदेव समान; राग देष नही जिनधर्म मिथ्यात्वशुं रे, सर्व वर्त्त एक तान ॥ जुओ जुओ ॥ २७ ॥ तिरियंच गति आयु आनुपूर्वी एहनी रे, डुर्भाग्य डुःश्वर अनादेय; निद्रा निद्रा प्रचला प्रचला थीणिंद्र कही रे, कषाय अनुत्तानुबंधी जोय ॥ जूओ जूओ॥ २८॥ संघयण ऋषभनाराच नारच जाणी ए रे, अर्धना राच कीलिका ए चार; संस्थान निय्रोध सादि वामन वली जाणीए रे, कुब्ज नीच गोत्र विचार ॥ जूओ जूओ ॥ २९ ॥ आयु देव मनुष्य मांहि भेळीये रे, ऊखगइ स्त्रीवेद उद्योत; ए सतावीश न 🖔 बांधे बांधे चिहुत्तर सही रे, उदय प्रकृति सो होत ॥ जूओ जूओ ॥ ३० ॥ केम फिरि आवे जीव

पिथ्यात्वमां रे, किम समकित पामें सोय; ए गुणठाणे काल धर्म नही जीवने रे, ए वात निश्चय होय ॥ जूओ जूओ ॥ ३१ ॥

शांति-नाथ स्तवनम्

ાારુકરાા

श्रीचतु देश गुण स्थान ढाल–३जी–देश सोरठ द्वारापूरी॥अथवा॥जुओ जुओ अचिरज अति भल्लं॥ ए देशी॥ धन धन ते दिन ते घडी, जब पामुं चोथुं ग्रणठाणुंरे; जे हर्ष ते दिन उपजे, कहो केम ते वखाणुंरे; धन धन ते दिन ते घडी ॥ ए आंकणी॥ ३२॥ कषाय जे अप्रत्याख्यानीया, रोके ग्रणव्रत तेहरे; केवल समकित जिहां अनुभवि, उच्छेदे मिथ्यात्व जेहरे; धन धन० ॥३३॥ कहूं भेद हवे समकितना, क्षाइक वेदक निरधाररे; क्षयोपसम उपसम रुचक वली, कारक दीपक प्रकाररे; घन धन०॥३४॥ च्यार कषाय जे अनंतानु बंधिआ,मोहनी मिश्र सम कित मिथ्यातरे; ए सातेना क्षये क्षायिक हुए, ए उपरामे उपराम विख्यातरे; धन धन० ॥३५॥ क्षयोपराम कांइ क्षिणतौ, रैंचिक रुचि करि जाणुंरे; धर्म करे कारक भल्लं, दीपक दीवा परि मानुंरे; धन धन ।। ३६ ॥ करुणा वच्छल सज्जन पणुं, करि आतम निंदा जेहरे; समता भक्ति वैराँ ग्यता, धर्मराग आठ ग्रुण एहरे; धन धन०॥ ३७॥ जीवादिक नव तस्व जे, तिहां उपजे नही संदेहरे; सहज नही प्रपंचनुं, समिकत लक्षण एहरे; धन धन०॥ ३८॥ ज्ञान गरव मित मंदता,

१ उपशम । २ क्षयोपशमे । ३ उपशम । ४ विराजता ।

शां० २३

शांति-नाथ स्तवन

बोलि निद्धर वचन उछासरे, रुद्र भाव आलस दिशा, होय एहथी समिकत नाशरे, धन धन०॥३९॥ शंका कंखा वितिगिच्छा, करे अन्य दरशणनी सेवरे; वली प्रशंसा मिथ्यात्वनी, ए अतिचार टालो नित्य मेवरे; धन धन०॥ ४०॥ देव गुरु श्री संघनी, भिक्त करि इढ चित्तरे; जिनशासन उन्नति करी, इम समिकत अजुआले नीत्यरे; धन धन०॥४१॥ आयु देव मनुष्यनुं, तीर्थंकर गोत्रज साररे; ए त्रण्य प्रकृति मांहि भेलतां, बांधि सत्तोत्तेर निरधार रे; धन धन०॥ ४२॥ उदय प्रकृति एकसो च्यारनी, जघन्य स्थिति अंतरमुहूर्त दिशरे; उत्कृष्टी स्थिति वली एहनी, साधिक सागर तेत्रीशरे; धन धन०॥ ४३॥ आत्मीक सुख जिहां अनुभवी, रिह जगतशुं उदासरे; भाषे नही मुखे दीनता, करे निशिदिन ज्ञान अभ्यासरे; धन धन०॥ ४४॥

ढाल-४-थी ॥ ओषारणनी ॥ धन साधु मृगासुत दिसि, ॥ ए देशी ॥ एणिविधि समकित पामे 🐒 प्राणी, इम बोळे श्री केवलनाणी; केईक सहज खभावे जागी, कोइक ग्ररु वचने लागि॥एणिविधि

श्रीचतु-र्दश ग्रण स्थान समिकत पामे प्राणी ॥ ए आंकणी ॥ ४५ ॥ आतम परचित परगुण त्यागिं, राग द्वेषथि वेगलो भागिः जेहवो मार्ग जिनवर भाषे, तेहवो निज हीयामांहि राखेः एणिविधि० ॥ ४६ ॥ हंस तणी परे किर य परिक्षा, जेम लहे तेहनी दे श्रुशिक्षाः परनुं कीधुं गुण बहु जाणे, धर्माचार्यनें अति घणुं मानेः एणिविधि० ॥ ४७ ॥ शुभ अशुभ कर्म उदय जे आवे, ते भोगवतां रित अरित न पावेः कांक्षा सिहत जे न करे धर्म, कल्पनाथी बंधाए कर्मः एणिविधि० ॥ ४८ ॥ समिकतिवण जे तप जप किया, जाणुं जिम विणमेहि हरिआः समिकतिनी वात कहेतां नावे पार, जिम कहीए तिम थाये वहु विस्तारः एणिविधि० ॥ ४९ ॥

ढाल—५–मी ॥ राग आसाउरी ॥ नमोरे नमो श्री दोत्रंजा गिरिवर ॥ ए देशी ॥ व्रत धरोरे व्रत धरो भवियण, पामो पंचम गुणठाणरे; च्यार कषाय जिहां मद्या अप्रत्याख्यानी, तेणे निरमल थाय पच्चलाणरे ॥ व्रत धरोरे व्रत धरो भवियण॥ए आंकणी ॥ ५०॥ करे त्याग जे मद्य मांसनुं, करि स्थुल जीवनी रक्षा जेहरे; गणे नवकार जे चोखे चित्ते, जघन्य श्रावक कहेवाय तेहरे ॥ व्रत०॥५१॥ शांति-नाथ स्तवनम् श्रीचतु-द्श गुण स्थान ॥१३४॥

मध्यम श्रावक कहीए तेहने, जे उच्चरे व्रत बाररे; करि उभय काल सामायिक चोखेचित्ते, चउ परवी पोसह निरधाररे ॥ व्रत० ॥ ५२ ॥ विह अनुंक्रमे इग्यार प्रतिमा, सहे परीसह जे थायरे; देव दानव जेहने न शके चलावी, ते उत्कृष्टो श्रावक कहेवायरे ॥ व्रत० ॥ ५३ ॥ आणंद कामदेव चुलणी पिया, इत्यादिक श्रावक जेहरे; श्री वीर वखाणे गोयम आगल, व्रह धर्मी कह्या तेहरे ॥ व्रत० ॥ ५४ ॥ मनुष्यगति आयु अन्पूर्वी एहनी, क्रोध अप्रत्याख्यानी च्याररे; उदारिक शरीर एहना अंगोपांग, वज्र ऋषभनाराच विचार रे ॥ व्रत० ॥ ५५ ॥ ए दश काढतां बांधे सडसठ, एहने उद्ये सत्तासी जोयरे; पूर्वकोडि आठ वर्षे उणी, एनी उत्कृष्टी स्थिति होयरे ॥ व्रत० ॥ ५६ ॥

ढाल—६–ही ॥ जननी मन आशा घणी ॥ ए देशी ॥ संयम मारग आदरुं, चढि छट्टे ग्रणठाण; हैं जिहां उदय नही च्यारनो, क्रोधादि प्रत्याख्यान ॥ संयम मारग आदरुं० ॥ ए आंकणी ॥ ५७ ॥ जिहां उदय होय पंच प्रमादनो, निद्रा विषय कषाय; धर्म राग विकथा कहि, तेणे प्रमादी कहे

१ प्रतिक्रमण ।

शांति-नाथ स्तवन

118281

श्रीचतु-द्श गुण स्थान वाय ॥ संयम० ॥ ५८ ॥ पांच समिति त्रिहुं ग्रिप्तिग्रुं, पाले पंचाचार; बावीस परिसह जीपवा, वहि पंच महाव्रत भार ॥ संयम ॥ ५९ ॥ थिविर कल्पी कांइ सरागता, जिनकल्पी निर हंकार; आरिते रौद्र निवारवा, धरे धर्म विचार ॥ संयम० ॥ ६० ॥ च्यार प्रत्याख्यानी काढतां, बंधे त्रेसठ होय; उदय एकाशीनुं कह्युं, इम छट्टे गुणठाणे जोय ॥ संयम० ॥ ६१ ॥ जिहां प्रमाद नही जीवने, ते कहे सत्तम गुणठाणः तिहां आतम तत्व अनुभवि, धरि निरालंबन ध्यान ॥संयम० ॥६२॥ शोक अरित अशुभ अथिरता, अशाता वेदनीय अजस; ए छ प्रकृति काढतां, रही सत्तावन अवश्य ॥ संयम० ॥ ६३ ॥ आहारक सरीर भेलीए, वली एहनां अंगोपांग; आयु बांध्युं न होय जो देवनुं, तो अडवन बांघे मनरंग ॥ संयम० ॥ ६४ ॥ ए त्रण प्रकृति मांहे भेलतां, बंध उगणसाठ होय; उदय छहुंतेरनुं सहि, इम सत्तम ग्रुणठाणें जोय ॥ संयम ॥ ६५ ॥

ढाल—७–मी ॥ चोपाई ॥ अशोसुदि सातम सुविचार ॥ ए देशी ॥ हवे कहुं अद्वम ग्रुणठांण, नांम अपूर्व करण वखाण; जिहां क्षपक उपशम श्रेणी मंडाय, तिहां जीव प्रणाम अति निर्मल शांति-नाथ स्तवनम् चतुश्री-र्दश गुण स्थान ॥१३५॥ थाय ॥ ६६ ॥ निद्रा प्रचला देवगति आयु, जाति पंचेंद्रिय शुभ विहाउ; त्रस बाद्र प्रत्येक पर्याप्त भेय, स्थिर शुभ सौभाग्य शुखर आदेय ॥ ६७ ॥ तैजस कार्मण वैकिय आहारक, वली एहनां अंगो पांग निरधार; पहेळु समचउरस संठाण, वर्ण गंध रस फर्ष वखाण ॥ ६८ ॥ पराघात अग्रुरुळघु; उपघात, उसास निर्माण जिन नाम विख्यात; ए बत्रीश काढतां छवीस बंधाय, उदय प्रकृत्ति बहूंत्तेर कहेवाय ॥ ६९ ॥ कहुं हवे अनिवृत्ति बाद्र ग्रुणठांण, जिहां अधिक भाव स्थिरता अहिनाण; पूर्वे भाव चलाचल जेह, सहेजे अडोल थया सर्व तेह ॥ ७० ॥ हास्य रित भय डुगंच्छा विण एहैं बांधे बावीस प्रकृति वली जेह; उद्य प्रकृति छासिट निरधार, कहुं ए नवमा गुंणठाण विचार ॥ ७१ ॥ हवे दसमुं ग्रुणठाणुं सुणो, सुक्ष्म लोभ उदय जिहां सुणों; तिहां सर्वे अभिलाष सूक्ष्म होय, सूक्ष्मसंपराय कहीए सोय ॥ ७२ ॥ पुरुषवेद च्यार संज्वलन कषाय, ए काढतां प्रकृति सत्तर बंधाय; उदय प्रकृति साठ एहनी कही, ए विच्यार दसमे गुणठाणें सही ॥ ७३ ॥ इग्यारमुं

शांति-नाथ स्तवनम्

॥१३५॥

१ चउ, छेह ।

श्रीचतु-द्श गुण स्थान उपशांत मोह गुणठाण, जिहां मोह उपसमावे सुजाण; तिहां यथाख्यात चारित्र प्रकाश, वली पांमी तेहनो होय नाश ॥ ७४ ॥ पंच ज्ञानावरणी पंच अंतराय, दर्शणा; वरणी च्यार कहेवाय; उंच गोत्र जस नाम ए सोल विण जेह, बांधे एक श्याता वेदनी वली तेह; ॥ ७५ ॥ उदय प्रकृति ओगणसाठ कही, इम जाणो इग्यारमे गुणठाणें सही; हवे बार्मुं क्षीणमोह गुणठाण, जिहां आवें यथाख्यात चारित्र प्रधान ॥ ७६ ॥ सर्व घनघाती कर्म खपावे तिहां, बांधे एक स्याता वेदनी वली जिहां; उदय प्रकृति तिहां पंचावन कही, हवे एहिन स्थिति कहुं गहगही ॥ ७७ ॥ छट्टाथी बारमा ग्रुणठाणा लगिजोय, उत्कृष्टी स्थिति अंतर मुहुर्त्त होय; जो एकठुं रहे छठुं सातमुं गुणठाण, तो देशे उणुं पूर्व कोडि प्रमाण; ॥ ७८ ॥ काल धर्म इग्यार गुणठाणे जोय, बारमे तेरमे त्रीजे न होय; जाय केडें साखादन समकित मिथ्यात्व, ए प्रमाण जिन मतमें विख्यात ॥ ७९ ॥ एणीपरे कह्यां ए गुणठाणा बार, सुणो हवे तेरमानुं कहुं निरधार; जेहना गुण कहेतां नावे पार, जो सुरगुरु करे मुखें उच्चार॥८०॥

शांति-नाथ स्तवनम्

१ साथे।

श्रीचतु-द्श गुण स्थान ॥१३६॥ ढाल—८—मी ॥ राग मेवांडु ॥ पद्म प्रभुजि जइ अलगा रह्या ॥ अथवा ॥ भोली डारे हंसा विषय न राचीए ॥ ए देशी ॥ सुग्रण सनेहारे जिनजी तुं जयो, सोहे तेरमें ग्रणठाण; शुक्रध्याने रेलयलीन थइ, तिहां पाम्या केवल नाण सुग्रण० सनेहारे जिनजी तुं जयो ॥ ए आंकणी ॥ ८१ ॥ अनंत ज्ञान द्रिशण चारित्र लही, पाम्या अनंत वल तेज; तुझ द्रिसण देखीने भविकने सही, उपजे अतिघणुं हेज; सुग्रण० ॥ ८२ ॥ दोष अढारे रेगया मूलथी, सोहे अतिशय चोत्रीश; योजन गामिनी रे वाणी खिरे, जेहना गुणनो पार न दीश सुगुण० ॥ ८३ ॥ लोकालोक प्रका शक तुं प्रभु, रूपी अरूपि जांणेरे जेह; केवलझानीरे जे होवे सही, सोहे ए गुणठाणेरे तेह ॥ सुगुण० ॥ ८४ ॥ सता पंचाशीरे रही च्छारशी, उदय प्रकृति वेंतालीश होय; समयिक वंधीरे स्याता रही, नावे जे सुख तोलेरे कोय ॥ सुग्रण० ॥ ८५ ॥ आठ वर्ष ऊणीरे पूर्व कोडीनी, कहि उत्क्रष्टिरे स्थिति रे एम; अंतरर्मुहुरत्तनीरे जघन्य स्थिति कही, मध्यम स्थीति कहेवाय केम ॥ सुग्रण० ॥ ८६ ॥ कहुं अयो

शांति-नाथ स्तवनम्

1133511

१ रज जेवी।

श्रीचतु-देश ग्रण-स्थान गीरे गुणठाणुं चौदमुं, पंच अक्षर लघु स्थिति जेह; योग हंधीरे शैलेशी करण करी, सर्व कर्म छेदीरे एह ॥ सुगुण० ॥ ८७ ॥ अजर अमर रे निकलंक थई, पाम्या मोक्ष सुठाम; अष्ट गुणेरे करी शोभेसदा, ते सिद्ध करुं प्रणाम ॥ सुगुण० ॥ ८८ ॥ कह्या गुणठाणारे ए व्यवहारथी, निश्चय एक चेतन अभेद; शुद्ध नयनेरे जे समझे सही, न रहे रे तेहने मन खेद ॥ सुगुण० ॥ ८९ ॥ च्यार गुणठाणारे जे कह्या आदिनां, ते लाभे देव नारकीरे मोझार; देश गुणवत सहित पांच गुणठाणा लगि, गर्भज तिर्यंच मांहि विचार ॥ सुगुण० ॥ ९० ॥ चउद गुणठाणारे लाभे मनुष्यमां, ते पण चोथे आरेरे जोय; पंचम आरेरे षट्ट सत्तम लगे, ते पण कोइकमां रे होय ॥ सुगुण० ॥ ९१ ॥

कलश—राग धन्याश्री ॥ एणीपरे ग्रंणठाणा कह्या, कर्मग्रंथ जिन आगम जोइरे; ए मांहि असत्य कहेवाणुं होय जे कांइ, होजो मिच्छामिदुक्कड सोइरे; ॥९२॥ सुण सुण शांतिजिणेश्वरु॥ए आंकणी॥ एक वीनतिड अवधारोरे; तुझ शरणागते आवीयो, भव भ्रमण भय निवारुरे ॥ सुण सुण० ॥ ९३॥

१ पांच ह्रस्व अक्षर।

शांति-नाथ स्तवनम् धिकारे

॥१३७॥

वधमान स्तवनम्

शुद्ध निमित्त छे प्रभु ताहरुं, तो ते आवे छेखेरे; जो छगन थइ तुझ नाममां, तो निज श्ररुपने देखेरे॥ सुण सुण०॥ ९४॥ कष्ट करे किया करे, विविध करुं व्यवहाररे; ज्ञानिदशा विण जीवने, निहं दुख छेह छगाररे॥ सुण सुण०॥ ९५॥ अचिरा नंदन तुं जयो, विश्वसेन कुछ राय दिणंदरे; मारि नीवारी देशथी, तुझ जन्मे जिणंदरे॥ सुण सुण०॥९६॥ चक्रवर्ती थयो पांचमो, वैछी सोछमो जिनवर होयरे; एकण भवे दोय पदवी छही, तुझ समो अवर नहीं कोयरे॥ सुण सुण०॥ ९७॥ श्री विधिपक्ष गच्छे दीपता, श्री कीर्तिरत्नसूरि सोहरे; तस शीश शिवरत्न कहे, तुंझ आधार छे जग दीशो रे॥ सुण सुण०॥९८॥॥ इति श्री चतुर्दश गुणस्थानक गर्भित शांतिनाथ स्तवनम्॥

''अथ श्री दस मताधिकारें वर्धमान जिन स्तवन" दुहा—सुखदाई चोविसमो, प्रणमि तेहना पाय; ग्रहपद पंकज चित धरि, श्रुत देवी सारदाय

१ मरकी. २ सौभाग्यरत ।

।।१३७।

द्श मता धिकारे ॥ १ ॥ त्रण तत्व स्वरूप छे, आत्म तत्व धरेय; देव तत्व ग्रुरु तत्वहें, धर्म तत्व जो लेय ॥ २ ॥ तास परिक्षा कारणे, ग्रुद्धा शुद्ध स्वरूप; कहेशुं ते भिव सांभलो, भाष्यो त्रिभुवन भूप ॥ ३ ॥ ढाल—१-प्रथम-जिहो प्रणमु दिनप्रति जिनपति लाला, शिवसुख कारि अशेष ॥ ए देशी ॥

जिहों चरम जिणेश्वर शिव गयारे लाला, वर्ष एकविस हजार; जिहो शासन श्री वर्धमाननो लाला, रहेशे जंबु भरत मोझार ॥ भविक जन ओलखो धर्म श्वरुप॥जेहथी माने सुरनर भूप॥भविक जन ओलखो धर्म श्वरुप॥ चेहशे लाला, आगम त्रण प्रकार; जिहो संप्रति सम परंपरारे लाला, माने नहि ते गमार ॥ भविक० ॥ जेहथी० ॥२॥ जिहो वीरथी सुरि परंपरारे लाला, दुपसह लगण निरधार; जिहो वर्तवे मारग विरनोरे लाला, उपदेश माला अधिकार ॥ भविक० ॥ जेहथी० ॥ ३ ॥ जिहो जिहां तीर्थंकर विना नवी होवेरे लाला, तीर्थ तणो उद्धार; जिहो सुरि विना शोभे नहिरे लाला, गच्छ तणो वीचार ॥ भविक० ॥ जेहथी०॥४॥ जिहो महानिसिथे भाखियारे लाला, सुरिना पंच प्रकार; जिहो पडते काले एवा होशेरे लाला, वर्धमान स्तवनम् विल अनुयोग द्वार ॥ भविक० ॥ जेहथी० ॥ ५ ॥ जिहो वकुसने कु सिलनारे लाला, तेहना पचिवस भेदः जिहो जोइ महा निसिथनेरे लाला, पछे धरज्यो खेद ॥ भविक० ॥ जेहथी० ॥ ६ ॥ जिहो भष्म महना योगथिरे लाला, पडता कालनो स्वभावः जिहो बाह्य कीया आडंबरेरे लाला, धुत्यानो मल्यो छे दाव ॥ भविक०॥ जेहथी ॥ ७॥ जिहो वीर वचन उथापतारे लाला, फरता फरे जिम ढोरः जिहो परम पदना प्रगट छेरे लाला, सिह ते जाणो चोर ॥ भविक० ॥ जेहथी० ॥ ८॥ जिहो ममते जेंणे काटियारे लाला, तेहनो सुणो अधिकारः जिहो मत तिहां धर्म निहरे लाला, जाणो भवि निरधार ॥ भविक० ॥ जेहथी० ॥ ९ ॥ जिहो तत्व पदारथे तत्वनेरे लाला, जांणिने जे नर ध्यायः जिहो सुयस सुख लहरूये घणोरे लाला, तेहना त्रिलोक सुरग्रण गाय ॥ भविक० ॥ जेहथी० ॥ १० ॥

ढाल—२—बीजी ॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ छसेंनें नव वर्षे महावीरथी, दीगं कर्म मत थाप्योरे; आपमते नवा शास्त्र उपावी, वीर आगम उथाप्योरे; ॥१॥ धन धन श्री महावीर क्रिजीवाणी, सकल सुखिन खांणिरे; साते नए चउ नीक्षेपे मलति, पांचमे प्रकरणे वखाणिरे ॥ धन

वर्धमान स्तवनम्

॥१३८॥

द्श मता धिकारे भन ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ नारीने न मुक्ति माने मुर्ख, खुहा पिवा सांहि भेदरे; त्रिलोक सार विसार विचास्त्र तो, नारिने मुक्ति ज्युं वेदरे ॥ धन धन ॥ ३ ॥ ब्राह्मि सुंदरी चंदन बाला, राजीमित जोनास्त्ररे; गोमटसार वृति जो जोतो, मुक्ते पहोंची छे नास्त्ररे ॥ धन धन ॥ ४ ॥ विक्रमथी अगी यारसें वर्षे, वली ओगणसाठ अधिकरे; पुन्य विहुणा पुनमीया उपना, जावाने नर्क नजीकरे ॥ धन धन ॥ ५ ॥ वीरजीए सुगडांगे चउदश भाषि, ते कीम आदरी पाखीरे; आवस्यक चुर्णे ने महानि सिथे, तीहां पण चउद्दश दाखीरे ॥ धन धन ॥ ६ ॥ कंबल संबल सागरचंद, आठम चउदश पोस-हरे; विवहार चुणें जोज्योने मूर्खों, मत धरो मनमां धोस्यारे ॥ धन धन ॥ ७ ॥ पन्नर दिने आवे ते पालि, चउदशे आलोयणा भालिरे; पुनमनो दिन सर्वथा वर्जवो, सुगडांग टिका छे सालिरे ॥ धन धन ॥ ८॥ संवच्छर द्वादशने चार, विक्रमनो नीरधाररे; खर सरिखा खरतर उपना, पुजा स्त्रिने निवारीरे ॥ धन धन ॥ ९ ॥ कस्यांणक पट वीरनां थाप्यां, मास कल्प कस्त्रो दुररे; दुःख देखसे आगल जाता, भवो दिधने पुररे ॥ धन धन ॥ १० ॥ श्रावण भाद्रवा दो जिणे वर्षे, पंचास दिव-

वर्धमान स्तवनम्

आं. २१

द्शमता है सने फरषेरे; सित्तेर दिवसने दुरे वारे, तो मूढ मती कीम तरहोरे॥धन धन ॥११॥द्वपदि ज्ञात्रा श्रुत्रे पुजे, जिन प्रतिमा त्रण कालरे; कल्याणक षट कांइ न दीसे, श्रुत्र चिरत्र निहालरे ॥ धन धन ॥ १२ ॥ अधिक मास मंगलिकने कामे, क्यांए न दिसे रीतरे; धर्म कर्मनो एकज मारग, राजा रुषि एक नित्यरे ॥ धन धन ॥ १३ ॥ आगलथी पच्चास जो लेस्यो, तो पुट्टे कीम करहयोरे; समवायंगना अर्थ जोतांतो, भवोदिध कहो कीम तरहयोरे ॥ धन धन ॥ १४ ॥ उतराध्यन आगममां कह्यो, मास कल्प उपदेशरे; ते देखिने कीम निव मानो, मुनीनो धर्म विशेषरे ॥ धन धन ॥ १५ ॥ आचा रंगथी अर्थ लहीने, जे मुनि पंचमे कालेरे; वाचकजस कहे तेहने भामणे, जे ग्रुद्ध मारग पालेरे ॥ धन धन ॥ १६॥

> ढाल—३—त्रीजी॥मोरडीनी देशी ॥ विमल्जिन विमलता ताहरीजी॥ ए देशी ॥ मुनीवर वेष भर्यों विण ग्रहजी, लोपीरे ग्रहनी आण; अंग उपांग उथापतोजी, धिक पड्यो एहनो जाण ॥ भवि मुको मंगत राह्विजी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ नाम द्रव्यने ठवण भावनाजी, भगवइ अंगे होय;

दश मता किया देव पुजे समकीतिजी, जिवा भगवइ जोय ॥ भवि० ॥ २ ॥ तुगीया श्रावक जीन भणिजी, धिकारे इव्य भावे पुजे त्रण काल; अन्य देव पुजे निह समकीतिजी, जोने तुं हृदय निहाल ॥ भवि० ॥ ३ ॥ राय पसेणीरे श्रुत्रमांजी, पुजा सत्तर प्रकार; जिन पडिमा जिन सारखिजी, उपंग उवाइ ए धार ॥ भवि०॥ ४॥ जंघाने विद्या चारणाजी, नवमा अंगमां ताम; नंदिसरे जाय कहो स्या भणीजी, शुं छेरे तिहां ने काम ॥ भवि० ॥ ५ ॥ छट्टारे अंगमां प्रतिमाजी, द्वुपादि बहुल प्रकार; पुजे छे किम ते देखो नहिजी, वैकूल हिणो गमार ॥ भवि० ॥६॥ द्या द्या मुखथी पोकारताजी, देखे नहि आगम प्रमाण; जल मांहीथीरे काढे साधुनेजी, साधवि गागमा जाण ॥ भवि० ॥ ७॥ ग्रुद्ध श्रद्धा कहो किम रहेजी, जेहने बहुछ संसार; ग्रुड श्रद्धा विना किम होवेजी, श्रुजस भवनोरे पार ॥भवि०॥८॥

ढाल-४-चोथी ॥ कािंके पिलि वादली ॥ ए देशी ॥ संवत पंत्रर चोसठेरे लाला, कडुए काले कीधः ग्रुरु तत्व उथापतारे लाला, खोइ अनुभव रिद्धि॥ जोज्यो भवि पंचमा कालनो खभाव०॥ प्राणियो चितलाय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पांचे भरते पांचमेरे लाला, काले सरिखा कीध; तो

द्श मता धिकारे ॥१४०॥

पाडली पुरे कीम कहेरे लाला, मूर्ख मोटा ए घिथ ॥ जोज्यो भवी० ॥ प्राणीयो०॥२॥ द्रव्य खेन्न काल 🎉 भावनारे लाला, आगमे प्रगट ए पाठ; भेद महानिसीथे घणारे लाला, दुष्ट निमीते पड्यो काल ॥ जोज्यो भवी० ॥ प्राणीयो० ॥ ३ ॥ पुरे ग्रण निव पामिएरे लाला, ए तो पंचमो काल; काल विषेश निव गणे लाला, आखें मत एक ताल ॥ जोज्यो भवि० ॥ प्राणीयो० ॥ ४ ॥ भेद कह्या देशवृतिना लाला, ते एकवीस देख्याल; आप जोइ ग्रुण आपणा लाला, पछे साधुना तुं भाल ॥ जोज्यो भवि० 🎖 ॥ प्राणीयो० ॥ ५॥ सूरिआवे सिद्धाचले लाला, दशमा अंगमां धार; तो किम उतराखंडनी लाला, नावे ते अणगार ॥ जोज्यो भवि० ॥ प्राणीयो० ॥ ६ ॥ वकूसने क्रुसिलनारे लाला, तेहना बहुल प्रकार; 🎉 गुद्धा शुद्ध करता थकां लाला, थासे बहुल प्रकार ॥ जोज्यो भवि०॥प्राणियो०॥ ७ ॥ साधवृत्तिमां कि कह्यो लाला, देश वृतिनो लाग; साधु काले जे हुवेरे लाला, तहने देवो संविभाग ॥ जोज्यो भवि०॥ प्राणीयो०॥ ८ ॥ साधु विना श्रावक होसे लाला, तिहां अछेरो थाय; अछेरा भृत उपन्यो लाला, कपटी कडवो साह ॥ जोज्यो भवि० ॥ प्राणीयो० ॥ ९ ॥ नाम लेता पण पहनो लोला, होय दुर्गती

वर्धमान स्तवनम्

116801)

द्श मता धिकारे 🗚 वास; गरु विना गति नही छाछा, सुजस वचन विशाछ ॥ जोज्यो भवि०॥ प्राणीयो०॥ १०॥ ढाल-५-पांचमी ॥ वैरागिनी ॥ लोको भुलोमां ॥ ए देशी ॥ संवत पन्नर सीत्तेर समेरे, विजया मतिनीरे वात; छुका मांहीथी उपन्यारे, किल युगमे कमजातोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ पुजा नीवारी जिनभणि, इर्या सुमतिनी राह; माला रुप मांने नहि, कलियुगे उपनी घाडरे ॥ लोको भूलोमां ॥ २ ॥ कहेतां अवगुण एहनारे, कोइ न आवे पार; जे अवले भामे पाड्यारे, ता रुठो कीरतारोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ ३ ॥ नागोरि तप गच्छथीरे, पाय चंद उपन्न; कलयुगे कलंकी समोरे, शांन्तिदास नीपन्नोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ ४ ॥ सागर जेहनी उपमारे, तेहना रे जलना स्वभावरे; पिघे जीम दुःखिया होयेरे, दुःख समुद्र नीवारोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ ५ ॥ लोभि लंपटी जे द्वतारे, मुकी लाज निज आप; शांन्तिदासने जेणे कर्योरे, बुडवा भवनो पायोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ ६ ॥ तप गच्छ मांहि करीरे, नयवेमले नविरीत; नव मानव नव सारीखोरे, धिरनो ए अवनितोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ ७ ॥ आप मतिलो उपन्योरे, अवली जेहनी वात; आगम लोपे

वर्धमान स्तवनम् दश मता धिकारे ॥१४१॥

आणा विनारे, तेर बोलनी वातोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ ८ ॥ प्रथमतो इरीया वहीरे, षट आवशक्य अंत; महानिसिथे अक्षरारे, न देखे अवनीतोरे ॥ लोको भूलोमा ॥९॥ आचारंगे अंगे वस्त्रनेरे, धोवे रंगेरे जेह; पासथो ते सर्वेथीरे, किम होवे साधु तेहरे ॥ लोको भूलोमा ॥ १० ॥ एकण देशे किम फरेरे, साधु जेहनोरे भेख; सकल देशे जयवरे, उतराध्येयन देखोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ ११ ॥ संवर पांच इंद्रि तणोरे, चउ कषाय निवार; गच्छनो ममत जेहने नहीरे, ते संवेगी जाणो रे ॥ लोको भूलोमा ॥१२॥ राग द्वेषना ममतमारे, साधु धराव्युरे नाम; आचारज पदवि तणुरे, साधुने छे कामरे ्रां तार तार तार प्रवचन मनतिनार, ताबु पराव्युर नाम, जापारज प्राप्त ताबुम छ प्राम्त ।। लोको भूलोमा ॥ १३ ॥ ज्ञानविमल सूरिए धर्युरे, अविन ते ए नाम; छांडो एह नाम भणीरे, जो वांछो शिव ठामोरे ॥ लोको भूलोमा ॥१४॥ षट् आवशक्ये फरी फरी मांहिरे, इरिया वहिनुंरे नाम; नवमे अंगे अक्षरारे, मूढ ने देखे तांमरे ॥ लोको भूलोमा ॥ १५ ॥ घोर घनाघन वरसतांरे, विजली चिहुं दिसि थाय; दोय घडींनो सामायिक करेरे, पुरो किणविध थायरे ॥ लोको भूलोमा

वर्धमान स्तवनम्

1138311

दश मता है जायरे ॥ लोको भूलोमा ॥ १७ ॥ भाणचंद्र सरीखा थयारे, अण काले मुनि जोय; आगे पण बहुला हिकारे हुवारे, ममत न कीधो कोयरे ॥ लोको भूलोमा ॥ १८ ॥ ग्रुभ दृष्टि प्रभु तुम तिणरे, जेहने उपनीरे हिय; तिणे ग्रुद्ध आद्रिरे, सामाचारी जोयरे ॥ लोको भूलोमा ॥ १९ ॥ ममती मते जे पड्यारे, तेह्रने दुर्गति वासः; उतराध्ययनमां अक्षरारे, जोइ मुको क्रमति पासोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ २० ॥ सामाचारि तप गच्छ तणीरे, आदरि शुद्ध स्वभाव; तप जप किया जे करेरे, जश विछ होवे जावे पापोरे ॥ लोको भूलोमा ॥ २१ ॥

हाल ६—छट्टी ॥ रागधन्याश्री ॥ थुणियो थुणियो रे प्रभु तुं सुरपित जिन थुणियो ॥ ए देशी ॥ एम बोहले मत जोइने, मत भूलो भिन प्राणीरे; मत तिहां कोइ धर्म न दिशे, बोले केवल ज्ञानिरे ॥ तुत्व्योरे मने त्रिभोवन स्वामी तुत्व्यो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मत करिने मेंतो पडतो मुक्यो, श्री आगम हित आणीरे; आणा विना कोइ धर्म न दिशे, उत्तरा- ध्येयनी वाणीरे ॥ तुत्व्योरे० ॥ २ ॥ आतम ध्याने आगमे भाख्या, राग रोष तिहां नहि दिशेरे; राग

द्श मता धिकारे ॥१४२॥

रोष तिहां बोध न दिशे, बोध विना निह मोक्षरे ॥ तुळारे ॥ ३ ॥ कुमितने तमे मुकोरे भाई, डुरे जिम जलिन खाइरे; बुडतो बुडाडे छे तमने, आचारंग सखाइरे ॥ तुठयोरे० ॥ ४ ॥ आगम लोपीने तपकरे मिनवर, वर्ष पुर्व कोडरे; एक दिवस आणाधारिनि, ते पण नावे जोडेरे ॥ तुळाो रे०॥ ५ ॥ श्रुत प्रमाणे समाचारि दिठि, साकरथी अति मीठीरे; विजयप्रभ सूरिनि वाणी, संघले लोके दीठीरे ॥ तुळ्योरे ॥ ६ ॥ श्रीमहावीरनी महेर थइ जब, कुमत मत मुकि टालीरे; नयविजय सुपसायथी जशने, आज थइ दिवालीरे ॥ तुळ्योरे ॥ ७ ॥

कलश—ित्रशला ते नंदन त्रिजग वंदन, वर्धमान जिनेश्वरो; मे शुध पामी अंतरजामी, बीनव्यो अलवे सरो ॥ १ ॥ शकल सुख करता दुःकृत हरता, जगत तारण जग ग्ररु; युग भक्न संयम पौषमासे, शुकल सप्तमी सुख करु ॥ २ ॥ तपगच्छ राजा सुजश ताजा, श्रीविजयप्रभ दिनकर समो; नय विजय सुपसाय वाचक, जशविजय शिर नमो ॥ ३ ॥

"इति श्री दशमता धिकारे वर्द्दमान जिन स्तवनम् सम्पूर्णम्"

वर्षमान स्तवनम्

ાાકુકરાા

वर्धमान तप

"अथ श्री विजय धर्म सूरि सिस्य रत्नविजय कृत वर्द्धमान तप स्तवन"

दुहा-वर्ष्टमान जिनपति नमी, वर्ष्टमान तप नाम; ओलि आंयंबिलनी करूं, वर्ष्टमान परिणाम ॥ १ ॥ एक एक दिन यावत् शत, ओली संख्या थायः कर्म निकाचित तोडवा, वज्र समान गणाय ॥ २ ॥ चौद वर्षे त्रण मासनी, ए संख्या दिन वीश; यथा विधि आराधता, धर्म रत्न पद इश ॥३॥ ढाल--१-पहेली ॥ नवपद् धरज्यो ध्यान, भविक तमे नवपद् धरज्यो ध्यान ॥ ए देशी ॥तप पद धरज्यो ध्यान–भविक तमे तप पद् धरज्यो ध्यान ॥ नामे श्री वर्द्धमान ॥ भ०दिन दिन चडते वान ॥भ०॥ सेवो थई सावधान॥ भविक तमे तप पद धरज्यो ध्यान॥ए आंकणी॥१॥ प्रथम ओली एम पालिनेरे, वीजीए आयंबिल दोय ॥ भ०॥ त्रिजी ए त्रण चोथी चार छेरे, उपवास अंतरे होय ॥भविक०॥२॥ एम आंयंबिल सो इत्तनीरे, सोमी ओली थाय ॥ भ० ॥ शक्ति अभावे आंतरेरे, विश्रामे पहोचाय ॥ भ विकः।।३॥ चौद वर्षे त्रण मासनीरे,उपर संख्या वीश ॥ भ०॥ काल मान ए जाणबुंरे,कहे वीर जगदीश ॥ भविक० ॥ ४ ॥ अंतगढ अंगे वर्णव्युरे, आचार दिनकर लेखा। भ० ॥ प्रथांत्तरथी जाणवुरे, ए

स्तवनम्

वर्धमान तप ॥१४३॥

तपनुं आलेख ॥ भविक०॥५॥पांचहजार पच्चाराछेरे, आयंबिल संख्या सर्व ॥भ०॥ संख्या सो उपवा सनीरे, तपमान गाले गर्व ॥ भविक० ॥६॥ महासेन ऋष्णा साधवीरे, वर्द्धमान तप कीध ॥ भ०॥ अंतगड केवल पामीनेरे, अजरामर पद लीध ॥ भविक०॥ ७॥ श्रीचंद्र केवलीए तप सेवीओरे, पाम्या पद निर्वाण ॥ भ०॥ धर्म रत्न पद पामवारे, ए उत्तम अनुमान ॥ भविक०॥ ८॥

हाल—२॥ बीजी ॥ जिम जिम ए गिरी भटीएरे॥ तिम तिम पाप पलाय सलुणा ॥ प्देशी ॥ जिम जिम ए तप कीजीएरे, तिम तिम भव परिपाक; सलूणा०; निकट भवि जीव जाणवोरे, एम गीतारथ साख; सलूणा॥ जिम जिम ए तप कीजीएरे, तिम तिम भव परिपाक; सलूणा॥ ए आंकणी॥ १॥ आयंबिल तप विधि सांभलोरे, वर्द्धमान गुण खाण; सलूणा०; पाप मल क्षय कारणेरे, कतक फल उपमान॥ सलूणा॥ जिम जिम० तिम तिम०॥ २॥ शुभ मुर्हुत्त सुभ योगमारे, सद्गुरु आदि योग; सलूणा०; आयंबिल तप पद् उचरीरे, आराधो अनुयोग॥ सलूणा॥ जिम जिम०॥ तिम तिम०॥ ३॥ गुरु मुख आयंबिल उच

स्तवनम्

॥१४३।

## वर्धमान तप

रीरे, पूजी प्रतिमा सार; सछूणा०; नवपदनी पूंजा भणीरे, मागो पद अणाहार ॥ सछूणा ॥ जिम जिम०॥तिम तिम ॥ ४ ॥ षट् रस भोजन त्यागवारे, भुमि संथारो थाय; सछूणा०; ब्रह्मचर्यादि पाळ वारे, आरंभ जयणा थाय ॥ सऌ्णा ॥ जिम जिम० ॥ तिम तिम० ॥५॥ तप पदनी आराधनारे, काउस्सग्ग छोगस्स बार; सॡणा०; खमासमणा बार आपवारे, ग्रणणुं दोय हजार ॥ सॡणा ॥ जिम जिमः।। तिम तिमः।। ६ ॥ अथवा सिद्धपद् आश्रयिरे, काउस्सग्ग लोगस्स आठ; सल्लूणा॰; खमा समणा आठ जाणवारे, नमो सिद्धाणं पाठा ॥ सछूणा ॥ जिम जिम० ॥तिम तिम० ॥औ बीजे दिन उपवासमारे, पौषधादि दृत्त युक्त; सऌूणा०; पतिक्रमणादि क्रिया करीरे, भावना परिमल युक्त ॥ जिम जिम०॥तिम तिम० ॥ ८ ॥ एम आराधता भावथीरे, विधि पूर्वक धरो प्रेम; सऌूणा०; भावो 🧗 ध्यावो भविजनारे, धर्म रत्न पद एम ॥ सळुणा ॥ जिम जिम० ॥ तिम तिम ॥ ९ ॥

ढाल—२—त्रीजी ॥ नर भव नयर सोहामणुं, वणजारारे ॥ ए देशी ॥ जिन धर्म नंदन वन

स्तवनम्

वर्धमान तप ॥१२२॥ 🎇 🛮 ॥ अमृत फल आस्वादिने ॥ राज० ॥ काङ अनादिनीः भुख ॥ अहो० ॥ भव परी भ्रमणा भमतुं ॥ राज० ॥ अवसर पामी नःचुक ॥ अहो० ॥शा शतः सांखाथी शोभतोः॥ राज० ॥ पांच हजार पचास ॥ अहो० ॥ आयंविल फुले अलंकयों ॥ राज० ॥ अक्षय पद फल तास ॥ अहो० ॥३॥ विमलेश्वर सुर शांतिचे ॥ राज० ॥ तुं निर्भय थयो आज ॥ अहो० ॥ कृत कृत्व थइ मागतुं । राज०॥ अकल स्वरुपी राज॥ अहो०॥ ४॥ विग्रह गति वोसरावीने ॥ राज०॥ लोकामे कर वास ॥ अहो० ॥ धन्यतुं कृत्य पून्य तुं ॥ राज० ॥ सिद्ध स्वरुप प्रकाश ॥ अहो० ॥ ५ ॥ तप चिंता मणी काउस्सग्गे ॥ राज० ॥ वीर तपो धन धन्य ॥ अहो० ॥ महासेन कृष्णा साधवी ॥ राज० ॥ श्रीचंद् भवजल नाव ॥ अहो० ॥ ६ ॥ सुरि श्री जगचंद्रजी ॥ राज० ॥ हीर<sup>,</sup> विजय<sup>,</sup>गुरु हीर ॥ अहो० मह्नवादि प्रभु क्रुरगडु ॥ राज० ॥ आचार्य सुहस्ती वीर ॥ अहो० ॥ ७ ॥ पारंगतः तप जल धिना ॥ राज० ॥ जे जे थया अणगार ॥ अहो० ॥ जीत्या जिव्हा खादने ॥ राज० ॥ धन्य धन्य तस अवतार ॥ अहो० ॥ ८ ॥ एक आयंबिले तुटसे ॥ राज० ॥ एक हजार दश कोड ॥ अहो० ॥ दस

स्तवनम्

ાાકકશા

सोभाग्य पंचमी

हजार क्रोड वर्षनुं ॥ राज० ॥ उपवासे नरक आयुष्य ॥ अहो० ॥९॥तप सुदर्शन चक्रथी ॥ राज० ॥ क्रिं करो कर्मनो नास ॥ अहो०॥ धर्म रत्न पद पामवा ॥ राज० ॥ आदरो तप अभ्यास ॥ अहो०॥१०॥ क्रिं करो कर्मनो नास ॥ अहो०॥१०॥ क्रिं पर्मे सुरिश दोवक क्रिं सुर्वा वरो ॥ १ ॥ १ ॥

"इति श्री वर्षमान तप स्तवनम् संपूर्णम्"

"अथ श्री कांतिविज्यजी कृत श्री सौभाग्य पंचमी स्तवन"

ढाल १—प्रथम ॥ सूरती महीनानी ॥ धीरपुरे एक शेठने पर्व दिने व्यवहार ॥ अथवा ॥ शासन है नायक लायक शिववधु कंत मुनीश ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं पवयण देवी रे सुर बहु सेवीत पास ॥ पंचमी तप महिमा कहुं देज्यो वचन प्रकास ॥ जे सुणता दुख नीकसे रे वीकसे संपद हेज ॥ आगिम

स्तवनम्

शां, २५

सौभाग्य पंचमी ॥१२५॥ साखे आराधतां साधता वाघे तेज ॥ १ ॥ देव असुर नर लोके रे पुजीत त्रीभुवन भाण ॥ एक र्रे दिन नेमि समोसर्या द्वारिका नयरी उजाण ॥ त्रीगडे देव वीराजे रेगाजे दुंदुभि नाद ॥ चढत दीवाजे रे भाजे मोह तणां उन्माद् ॥ २ ॥ कांनड हलधर आदिरे यादव वीर अनेक ॥ परवर्या रुधि अ छे के वांदे धरीय विवेक ॥ बेठी पर्षदा बारे रे आरे जीननें आय ॥ क्केस मथन उपदेसतां भाषे श्री जीनराय॥३॥पंच प्रमाद् नीवारो रे धारो व्रत नीज अंग॥तारो आतम आपणो वारो भवनो संग ॥ आतिम सक्ति संभालो रे टालो विषय कषाय ॥ सहज धर्म अजुआलो रे एहीज तरण उपाय ॥ ४ ॥ दंसण नाण चरीत्तरे ए छे मुक्तिना अंग ॥ चारीत्तनी भजना हुई दंसण नाण स संग ॥ पहेळुं ज्ञान जो होय रे तो करे क्री<sup>आ</sup> सार ॥ अन्नाणी स्युं करस्यें नाणीनी बलिहार ॥ ५॥ अन्नाणी फल काचे रे माचे आचे आप ॥ साचे नाणी राचे जाचे एह न ताप॥भोग उदय ते देखे रे छेखे ए तो वीपाक ॥ एहने नाण विभागे रे छागे जीम किंपाक ॥ ६ ॥ क्रीआ करतां केतारे नाणी वीरला होय ॥ नाण कीया मांहे अंतर सरसव मेरु नो जोय ॥ रुपी अरुपी

स्तवनम्

ાાકકસા

सौभाग्य पंचमी

अनंत रे द्रव्य असंख्य अबाध ॥ देखे सवी जो होय रे नाण नयण नीराबाध ॥ ७ ॥ नाण परम हीत बंधु रे सिंधु अमृत रसरेल ॥ कामगवी चिंतामणी नाण ते मोहन वेल ॥ ज्ञान विना नर अंध रे बंध नथी नही दूर ॥ पशु सरीखो दाखीजें बीजे ते भव भूर ॥ ८ ॥ देसा राहग कीया रे सबा राहग नाण ॥ पंचम अंग उच्छंगे अक्षर एह प्रमाण ॥ ज्ञानस्युं कीआ सूद्ध रे दूधमां साकर भेल ॥ वार न लागे तरता करता कर्म उकेल ॥ ९ ॥ ते तो ज्ञानना यंथे रे कारण भाष्यां अनेक ॥ पिण पंचमी तप सरीखुं रे नीरखु न बीजुं अनेक ॥ पंचमी प्रेमें आराधो रे साधो कांति अनंत ॥ जीम वरदत्त गुणमंजरी तेह सुणो वीरतंत ॥ १० ॥

हाल—२—बीजी ॥ चंद्राउलानी ॥ समरी श्रुत देवी सदारे ॥ हंस वाहन कर वेण ॥ ए देशी ॥ जंबु द्वीपनां भरतमा रे, नयर पदम पदमपूर सारो; अजित सेन तिहां राजीयो रे, यशोमती भरतारो ॥ १ ॥ त्रूटक—यशोमती जण्यो नंदन वारु, वरदत्त नामे अति दीदारु; आठ वर्षनो जाणी भूपाले, भूभणवा सारु मुक्यो नीसाले ॥ जी पंडीत जी जी रे ॥ करज्यो भाव विषेशे आराधन ज्ञाननुं

स्तवनम्

सौभाग्य पंचमी ॥१४६॥

🖫 रे ॥ ज्ञान वीराधन खाद अछे वीष पाननुं रे ॥ ए आंकणी ॥२॥ ढाल पूर्वली–अक्षरतस मुख नवी चढेरे, पार्के घडे जीम कंठ; ग्रह उद्यम अहिले हुओ रे, रहीयो केवल बंठ ॥ ३ ॥ त्रुटक—रहीयो है थाकी समजण नावी, ग्रह कहे लाभ अलाभ ए भावी; तरुण पणे हवे थयो ते कोढी, वेयण वाधी के आडी डोढी ॥ जी पंडीत जी जीरे ॥ ४ ॥ ढालपूर्वली—एहवे ते पूरमां वसेरे, सिंहदास एक सेठ सात कोडि कंचन धणीरे, जीनमत भावित देव ॥ ५ ॥ त्रुटक—जीनमत भावित ते घर घरणी, कर्पुरतिलका पति मन हरणी; गुणमंजरी तस पुत्री मुंगी, वीष महा मुख रोगे गुंगी ॥ जी पंडीत जी जी रे ॥ ६ ॥ ढाल पूर्वली-सोल वर्षनी ते थइरे, वर न वरे कोइ तास; मात पीतादीक ते दुखेंरे, डुःख्यां चीत्त उदास ॥ ७ ॥ त्रुटक—डुःख्या बेहु करे तिहां चिंता, पहवे देश नयर विहरंतो; वीजयसेन सूरी चउनाणी, आव्या ते पूर ग्रुह ग्रुण खांणी ॥ जी पंडीत जी जी रे ॥ ८॥ ढालपूर्वली–पुत्र सहीत पूरनो धणीरे, सपरीवार सिंहदास; लोक सकल नगरी तणारे, गुरु पद वांदे उस्लास ॥ ९ ॥ त्रुटक—गुरु वांदी बेठा मुख आगें, देशना दें गुरु भाव वैरागे; ज्ञान आरा

स्तवनम्

1188811

धन करज्योरे प्राणी, ज्ञान विराधन डुखनी खाणी ॥ जी पंडीत जी जी रे ॥ १० ॥ ढाळ पूर्वेळी मनथी झान वीराध तांरे, होय सूनां अविवेक; वचन थकी मुख रोगीया रे, होय वली मुंगा छेकू ॥ ११ ॥ त्रुटक—होय वली कोढी काय विराधे, मन वच काया ए ज्ञान जे बांधें; इह भव परभव नीर्धन रोगी, ते परीवारनां होय वियोगी ॥ जी पंडीत जी जी रे ॥ १२ ॥ ढालपूर्वेळी-सिंहदास पूछे तीसे रे, पामी सद्गुरु जोग; भगवन स्यें कर्में हुओ रे, मुज पुत्रीनें रोग ॥१३॥त्रुटक-मुजनें पुछे स्युं महाभाग, वीषम कर्म ते फल किंपाक; पूर्व भव एहनो कहुं माडी, सांभलज्यो सहु आलस 🖔 छांडी ॥ जी पंडीत जी जी रे ॥ १४ ॥ ढालपूर्वली–धातकी पूर्व भरतमा रे, खेटक नगर पूराणो; सेठ सूंदरीनो धणी रे, जीनदेव नामे जांणो ॥ १५ ॥ त्रुटके—जीनदेवने श्रुत पांच वखाणो, 🖔 आस तेज ग्रणपाल प्रमांणो; धर्मपाल धर्मसार ए वास्हा, माए लाड लडाव्या काह्रा॥ जी पंडीत जी जी रे ॥ १६ ॥ ढालपूर्वेली—च्यार हुइ वली बेटडी रे, प्रथम लीलावती नाम; सीलावती रंगावतीरे, वली मंगावती नाम ॥ १७ ॥ ब्रुटक—वली ते सूत भणवानी आसे, मुंके अध्यारु नें 🎉

सौभाग्य पंचमी ॥१४७॥

पासे; प्रेमे जो उध्यम उछासे, कांति सकल विद्या अभ्यासे ॥ जी पंडीत जीजी रे ॥ १८ ॥ ढाल—३—त्रीजी ॥ करहलडीनी ॥ देहरे शिखर चढावीयो रे ॥ स्थीर न रहे तेणि वार ॥ ए देशी ॥ नंदन ते जीन देवना, करता अति चपळाई; काइ न हो ळाळ०; बोळे बोळ कु टेवनां, रस राता मद मद माता; न भणे पळ हो राजि ॥ १ ॥ सीख न माने हीत तणी, द्वःख रोता मुख जोता कहे; नीज माता आगे हो राजि॰; मारे ताडें अम भणी, अध्यारु हतियारो; खारो अमने लागे हो राजि॥२॥ मात कहे नंदन ग्रुणो, काम कीस्यो भणवानो; मानो सीक्षा मानी हो राजि०; नाम लीयें जो तुम तणो तो हीयडामां साह्मां हणज्यो; इंटज छांनी हो राजि ॥ ३ ॥ फिरी नही आवे बारणें, वीण औषध खस हाणी; थास्ये टाढें पाणी हो राजि॰; पंडीत मुर्ख समा गणे, काळ न छोडें त्रोडे; कुण मुर्ख कुण नाणी हो राजि ॥ ४ ॥ कंठ शोषमां फल नहीं छे, इंम वीष वयण वधारी; सुतनें भणता वारी हो राजि॰; धम धमती आवी पछे, पंडीतनें ओलंभा द्ये; त्यां भारी नारी हो राज ॥ ५ ॥ पाटी पोथी

स्तवनम्

1188011

## सौभाग्य पंचमी

रीसमां, जालें पावक कालें वालें, कुलनी जाइ हो राजि०; पती आव्यो घरनीगमां, कहें प्रेमदानें, स्थानें; कीधी नीच कमाइ हो राजि ॥ ६ ॥ कुण देस्यें सुतनें सुता, नीर्वाह कीणीपरें थास्यें; सीदासें व्यापारें हो राजि०; कालें ए निर्धन हुता, मुर्ख मुख कहास्यें; जास्ये कुण आधारें हो राजि॥॥वचन सुणी प्रेमदा कहें, कां न भणावो पोते; जो ते वांक तुम्हारों हो राजि०; सेठ अबोल्यो तव रहे, अनु-कमें श्रुत मती वाम्यां;पाम्यां यौवन सारो हो राजि ॥८॥ कन्या कोइ दीयें नहीं, कुल रुडुं पण कुडुं; ज्ञान नहीं जन भाषे हो राजि०; सेठ कहें अवसर लहीं, कन्या कोइ कदीयें न दीयें; वीद्या पासें हो राजि ॥९॥ तुज वांके कोरा रह्यां, पुस्तक पाटी बाली; डुहव्यो पंडीत गाली हो राजि०; आिंठकां बोलो वह्या, पुत्र जनक वश बाली; कहीयें मानी पाली हो राजि ॥ १० ॥ सेठ कहे तव रुठडो, आपण दोष उपाइ; पापिणी इंम कां बोले हो राजि०; तुज जनक पापी वडो, मूढें समजाव्यो; आव्यो तुं पशु तोले हो राजि॥११॥ पठर दलकरमां यही, रसमें दशमें द्वारें; नाहे नारी मारी हो राजि०; काल धर्म तिंहांथी लही, तुज घरे गुणनी पेटी; बेटी ए थइ प्यारी हो राजि ॥ १२ ॥ कीधी ज्ञान

स्तवनम्

सौभाग्य पंचमी ॥१४८॥ आसातनां, तेह कर्मनें जोगे; रोगे व्यापी बाला हो राजि०; कांति सुग्ररू कहे हेजना, उद्**यें** आवे दावे;कीधा कर्म रसाला हो राजि ॥१३॥

ढाल-४-चोथी ॥ जीरे मारे जाग्यो कुंमर जाम ॥ तव देखे दोलत मीली ॥ जीरेजी ॥ ए देशी ॥ जीरे मारे ॥ ग्रणमंजरी सुंणी एम ॥ जाति स्मरण तिहां लही ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे मारे ॥ नीज भव देखे जाम ॥ तव मुर्छा आवी वही ॥ जीरेजी ॥ १ ॥ जीरे० ॥ मुर्छा टली लच्छं चेत ॥ गुरुने कहे आदर भरी ॥ जीरेजी ॥ जीरे० धन्य सुगुरु तुम ज्ञान ॥ वात पूर्व भवनी खरी ॥ जीरेजी ॥ २ ॥ जीरे० पूछें गुरुनें सेठ ॥ रोग जास्ये कीम एहनां ॥ जीरेजी ॥ जीरे० गुरु कहे न रहे रोग ॥ करता नाण आराधनां ॥ जीरेजी ॥ ३ ॥ जीरे० करीयें तप उपवास ॥ अजुआली पंचिम दिने ॥ जीरेजी ॥ जीरे० खस्तीक भरीयें खास ॥ पुस्तक पाटे स्थापीयें ॥ जीरेजी ॥ ४॥ जीरे०॥ पंच वाटिनो दीप ॥ करी आगल ढोइयें ॥ जीरेजी ॥ जीरे० पंच वर्ष पंच मास ॥ ए तप कीधो जोइयें ॥ जीरेजी ॥ ५ ॥ जीरे० मास मास असमर्थ ॥ नरनें जो नावे वगें ॥ जीरेजी ॥

स्तवनम्

1168911

## सौभाग्य पंचमी

ी जीरे० कात्ती सुदिनि एक ॥ करवी जिहां जीवीत लगें ॥ जीरेजी ॥ ६ ॥ जीरे० आराधी तिथी 🖟 एह ॥ दीए सोहाग सोहामणा ॥ जीरेजी ॥ जीरे० रोग रहीत नव रुप ॥ जस धन धान्य दीयें घणुं ॥ जीरेजी ॥ ७ ॥ जीरे० शुत संतती परीवार ॥ स्वर्ग दियें आराधतां ॥ जीरेजी ॥ जीरे० सीद्धी बुद्धी पण नाण ॥ जीन पदवी दीयें साधतां ॥ जीरेजी ॥ ८ ॥ जीरे० इमनी सुणी जीन देव ॥ कहे नही सक्ति सुतातणी ॥ जीरेजी ॥ जीरे० करस्यें वर्षनी एक ॥ वीस्तारी विधि कहो मुंणि ॥ जीरेजी ॥ ९ ॥ जीरे० वैसाख जेठ आषाढ ॥ मृगसीर माहें फागुणें ॥ जीरेजी ॥ जीरे० उच्चारीयें 🐉 गुरु साख ॥ पंचमी ग्रुभ मुहुर्त दिणें ॥ जीरेजी ॥१०॥ जीरे० गुरु कहें पुस्तक पाट ॥ थापी क्रशुमें पुजीयें ॥ जीरेजी ॥ जीरे० ॥ धुप उखेवो धांन ॥ पंच वर्ण ढोइजीयें ॥ जीरेजी ॥ ११ ॥ जीरे० पांच जाति पक्कवान ॥ पांच पांच फल मुकीयें ॥ जीरेजी ॥ जीरे० चोथ तणो पच्चखाण ॥ ग्रुरु मुखथी नवी चुकीयें ॥ जीरेजी ॥ १२ ॥ जीरे० ॥ देहरे देव जुहार ॥ गीतार्थ ग्रुरु वांदीयें ॥ जीरेजी ॥ जीरे० ॥ पुजी पुस्तक भाव ॥ करे प्रभावना हसी हीयें ॥ जीरेजी ॥१३ ॥ जीरे० सक्तिनाण मंडाव ॥

स्तवतम

सौभाग्य पंचमी ए तप माहिं पेसीयें ॥ जीरेजी ॥ जीरे० ॥ पडीकमणां विहुं टंक ॥ ब्रह्मचरिज धरी बेसीयें ॥ जीरेजी ॥ १४ ॥ जीरे० वांदीयें देव त्रीकाल ॥ आरंभ शकल नीवारीयें ॥ जीरेजी ॥ जीरे० स्तवन थुइ धरी खांति ॥ पंचिमनी नीरधारीयें ॥ जीरेजी ॥ १५ ॥ जीरे० नमो नाणस्स पद एक ॥ उत्तर पूर्व मुख जपें ॥ जीरेजी ॥ जीरे० ए विध तप करे जेह ॥ ते तो त्रीभुवनमां तपें ॥ जीरेजी ॥ १६ ॥ जीरे० ॥ जो होय पोसह युक्त ॥ तो विधि बीजे दिन करे ॥ जीरेजी ॥ जीरे० उजमणुं करी कांति ॥ ए तपथी भवजल तरे ॥ जीरेजी ॥ १७ ॥

ढाल—५—पांचमी ॥ एकवीशानी ॥ जग नायकजी, त्रीभुवन जन हितकार ए ॥ परमातमजी, चिदानंद घनसार ए ॥ ए देशी ॥ नीज सक्ति रे उजमणुं तपनुं करो, धन खरचीरे नर भव सफल करो खरो; जीनवरनीरे प्रतिमा भरावो मनरुली, पंच तिथीं रे पाट पाटली सुंदर वली ॥ १ ॥ जुटक—वली नाण दंशण चरित्त टीकी देइ पुस्तक पुजीए, स्थापना पुजी पांच लोगस्स काउ स्सग्ग तिहां कीजीए; स्माल पाठा परत लेखण नवकारवाली वरतणां, पाटी पोथी ठवणी कवली पुंजणी

स्तवनम्

1188611

वेंटिंगणा ॥ २ ॥ ढाल पूर्वली ॥ दोरा चाबखी रे काबी खडीया डाबडी, कांठा मलिकारे स्थापना मुहपत्ती पडवकी; धुपधाणां रे जरमर वाडने चंहुआ, वालाकुंचीरे आरती कलसा जु जुआ ॥ ३ ॥ ब्रुटक—जु जुआ इज वासकुंपी रकेबी थाली भली, दीवी चंगेरी अंग लुहणा गंधवाती नीर-मली; घनसार सुकड अगर केसर जीन तणा सीणगार ए, उपगरण दंसण नाक केरां पंच पंच प्रकार ए॥ ४॥ ढाल पूर्वली ॥ पंच वाटीनोरे दीपक करीये आगलें, ढोइजेंरे पकवांन फल दल पाखलें; ना ना विधरे धान सरस भक्तिधरो, उजमणुंरे वीस्तारें इणि विधि करो ॥ ५ ॥ त्रुटक— विधि सहीत साहमी भक्ति करीयें जागीए रातीजगें, जीन नाण दंसण गीत गाता पाप भवनां उभगें; थावे आराधन झाननुं इम सुंणी ते ग्रणमंजरी, तप पंचमीनुं कांति प्रेमे आदरें आदर भरी॥६॥ ढाल-६-थी ॥ हस्तिनाग पुरवर भलो ॥ अथवा ॥ प्राणी वाणी जिनतणी, तुम्हें धारो चित्त मजार रे; श्रीपालना रासनी ॥ए देशी॥ इण अवसर भुपति हवें॥पूछे ग्रुत भवनो खरुपरे ॥ कोढ थयो कुण कर्मथी ॥नावे वली वीद्या अनुपरे ॥ नावे वली वीद्या अनुप ॥ सुग्रुरु कहे सांभलो ॥ भवी

स्तवतम

सीभाग्य पंचमी ॥१५०॥ 🖫 स्रोकरे ॥ थाए घोर कटोर सजोर कर्मनो वेदवो ॥ कीम फोकरे ॥ ए आंकणी॥१॥जंबु द्वीपना भरतमां॥ पूर श्रीपूर नामें समृधरे ॥ वसुनामें व्यवहारीयो ॥ वसतो तिहां समृधरे ॥ वसतो० ॥सुग्रुरु०॥२॥ तेहनें नंदन बे हुता ॥ वसुसार अने वसु देवरे ॥ वनमां गुणसुंदर गुरु ॥ नीरख्या तस सारे सेवरे ॥ नीरख्या०॥सुगुरु०॥३॥ गुरु मुख धर्म कथा सुंणी॥ तव पाम्यां बे वैयरागरे॥ अनुंमित मागी तातनी ॥ छेइ चारित्र त्यां वड भागरे ॥ छेइ० ॥ सुग्रुरु०॥४॥ छघु बंधव वसुदेवनें ॥ आगम धर सुधो जाणरे ॥ आचारज पद गुरुदीयें ॥ पात्रे ठवता नही हाणरे॥सुग्रुरु०॥५॥पांचसे मुनिनें वाचना ॥ आपे वसुदेव स्मर्थरे॥ आलस तजी आगम तणा॥कहे उंडा आलोची अर्थरे ॥ कहे०॥सुगुरु०॥६॥ एक दिन सूरि संथारीया ॥ तेहवे मुनि आव्यो एकरे ॥ अर्थ प्रही पाछो वल्यो ॥ इम बीजा आव्या अनेकरे ॥ इम०॥सुग्रुरु०॥७॥ कांइक नीद्रा वस हुआ ॥ वली पुछें अपर मुनि आयरे ॥ जपमाला मणीया परें ॥ एक आवें बीजो जायरे ॥ एक०॥सुगुरु०॥८॥ आखें न आवे नीद्रडी ॥ जंपे नही जागर होयरे ॥ सूत्र अर्थ पद आपता ॥ आकुल थयो सूरि सोयरे॥ आकुल०॥सुगुंरु०॥९॥ अमृत फीटी वीष थयुं॥ पलट्या तस अध्यवसायरे॥

स्तवनम्

॥१५०॥

3 6

पुर प्रमाद नदी तणें ॥ आगम तरु नाखें खिसायरे ॥ आगम० ॥ सुग्रुरु०॥१०॥पालटता परीणामथी चिंते मन विकल्प एमरे ॥ श्रुत दुख कारण मुज थयुं ॥ भण्यां शुक ने पंजर जेमरे ॥ भण्यां॥०सुग्रुरु०॥ हैं।॥ ११ ॥ मुर्खपणामां ग्रुण घणा ॥ पंडीत जन दुखीया होयरे ॥ जुवो ए बंधव माहरो ॥ अभण्यो रहे सुखमां सोयरे ॥ अभण्यो०॥सुगुरु०॥१२॥ न भणुं भणावुं न आजथी ॥ वीसारुं पठीत पुराणरे ॥ जो थाउं बंधव समो ॥ तो वांछयुं होय प्रमाणरे ॥ तो वांछयुं शासुगुरु शादीन दस दोय मौने रह्यो आलोयां पाप न तेहरे ॥ काल करी रुद्रध्यानमां ॥ तुज पुत्र पणें थयो एहरे ॥ तुज० ॥ सुग्रुरु०॥१४॥ कोढ थयो कृत कर्मथी ॥ नही वीद्यानो पण छेसरे ॥ कीधा कर्म वीपाकथी ॥ संतापे आपे रेसरे ॥ संतापेशासुग्रुरुशार्थ्यासूरी सहोदर ते मरी ॥ थयो मानस सरनो हंसरे॥ गती विचित्र ए कर्मनी ॥ हड़ संभव नहीं जस अंसरे॥ हुइ०॥सुग्रुरु०॥१६॥सांभळतां गत भव कथा॥ वरदत्तने सांभरी जातरे॥ मुच्छी चिते वस्ये कहे ॥ साचुं सवी ए जग भ्रातरे ॥ साचुं शासुग्रुरु ।। भूप कहें भगवन सूणो ॥ कीम जास्यें सुतनां रोगरे ॥ ग्रुरु कहे तप साधन थकी ॥ लहस्ये सुख कांति नीरोगरे ॥ लहस्ये ०॥ सुगुरु०॥ १८॥

स्तवनम

शां. २६

सौभाग्य पंचमी ॥१५१॥

ढाल—७ सातमी ॥ बापडली रे जीभडली तुं कांइये न बोले मित्रुं ॥ ए देशी ॥ कहे वरदत्त हैं सक्ति नही मुजमां ॥ तेहवी तप करवानी ॥ मुजथी थाय उचीत ते दाखो ॥ तव बोल्या ग्रह ज्ञा-नीरे ॥ आराधो हीत जाणी प्राणी—पंचमी उज्जल पक्षनी ॥ भाव सहीत आराधन करता ॥ नीसाणी शिव सुखनीरे ॥ आराधो हीत० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पेहेली भाषी जे विस्तारें ॥ ते विधि कुंवरे कीधी ॥ नृप राणी आदि पूरी जननें ॥ ग्रुरुए हीत करी दीधीरे ॥ आराधो हीत० ॥ २ ॥ भूपादिक निज निज घर पोहता ॥ पंचमी तप अभ्यासें ॥ वरदत्तनां तपनां महीमाथी ॥ रोग देहनां नासेरे ॥ आराधो हीत० ॥ ३ ॥ दत्त सहस एक कन्या परण्यो ॥ खयंवर मंडप साजें ॥ अजीत्तसेंन तस राज्य देइने ॥ ल्ये संयम सुख काजेरे ॥ आराधो हीत० ॥ ४ ॥ वरदत्त राज्य घणा दीन पाली ॥ पंचमी तप आराधे ॥ भुक्तभोग स्रुत राज्ये स्थापी ॥ अवसर दीक्षा साधेरे ॥ आराधो हीत०॥ ५॥ ए हवें पंचमी तप महीमांथी॥ गुणमंजरीने अंगे॥ रोग हता ते नाठा रे ॥ रुप हुओ नव रंगरे ॥ आराधो हीत० ॥ ६ ॥ ते श्रावक जीनचंद्रे परणी ॥ तातें बहु धन

स्तवनम्

॥१५१॥

दीधां ॥ भोग भोगवी तप आराधी ॥ अंते महात्रत लीधांरे ॥ आराधो हीत० ॥ ७ ॥ चरण करण धर साधु साधवी ॥ करी अणसण संथारो ॥ वैजयंत सूर पदवी पाम्यां ॥ हवे लहेस्यें भव आरोरें ॥ आराधो हीत० ॥ ८ ॥ जंबुद्वीपे पूर्ववीदेहें ॥ वीजय पुष्कला नामें ॥ पुंडरीकगीणी नगरी नामें ॥ अमरसेन तिहां नामरे ॥ आराधो हीत० ॥ ९ ॥ गुणवंती तस राणी कुखें ॥ सूर भव तजी दत्त आव्यो ॥ जनम्यो सुरसेन इंण नामें ॥ अनुक्रमें जोवन भाव्योरे ॥ आराधो हीत० ॥ १० ॥ बार वर्षनो मात पीताए ॥ सो कन्या परणाव्यो ॥ अमरसेंन तस राज्य देइनें ॥ परलोकें सीधाव्योरे ॥ आराधो हीत०॥ ११॥ अन्य दिवस श्रीमंधर खामि॥ पोहता तिहां विचरंता॥ वनपाछें जई राय वधाव्यां ॥ समवसस्या अरीहंतारे ॥ आराधो हीत० ॥ १२ ॥ सुरसेन जइ जिनने वांदी ॥ सुणी धर्मनी वाणी ॥ जिन कहे पंचमी तप करज्यो ॥ वरदत्त परे भवी प्राणीरे ॥ आराधो हीत० ॥ १३ ॥ तव पुछें प्रभु कुण ते वरदत्त ॥ जिन तव सकल प्रकासे ॥ ज्ञान पंचमी महीमा सुणता ॥ भवीजन मन उह्यासेरें ॥ आराधो हीत० ॥ १४ ॥ लोक घणां उचरें जिन मुखर्थी ॥ ज्ञान पंचमी

स्तवनम

सौभाग्य पंचमी ॥१५२॥ भावें ॥ वांदी राय गयो निज धामें ॥ सुतनें पाटे ठावेरे ॥ आराधो हीत० ॥ १५ ॥ वर्ष सहस्स दस नृपपद पाली ॥ व्रत ल्यें जिननें चरणें । वर्ष सहस्स एक चारीत्र पाली ॥ केवल कमला पर णेरे ॥ आराधो हीत० ॥ १६ ॥ नाण पंचमी तपथी इंणीपरें ॥ सीद्धा भवीक अपार ॥ कांतिविजय कहे सूणज्यों आगें ॥ गुणमंजरी अधीकाररे ॥ आराधो हीत० ॥ १७ ॥

ढाल—८-आठमी॥लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ जंबु द्वीप मोझार ॥ रमणी विजय उदार ॥ आजहो० राजेरे तिहां छाजे नगरी विश्वताजी ॥ १ ॥ अमरिमंह तिहां राय ॥ मोहटो जस भड वाय ॥ आजहो० राणीरे गुणखाणी अमरवती सतीजी ॥ २ ॥ गुणमंजरीनो जीव ॥ पाली आय अतीव ॥ आजहो० कुखेरे सुत भुखें तेहनें अवतस्त्रोजी ॥ ३ ॥ जनम्यो समये बाल ॥ मन हरस्यो भूपाल ॥ आजहो० नामरें तमामें सुत्रीव स्थापीयोजी ॥ ४ ॥ वीस वर्षनो जाम ॥ हुओ धीर उद्दाम ॥ आजहो० जाणीरे माणीगर राज्य नृपे दीयुंजी ॥ ५ ॥ चारीत्र ल्यें नीसोक ॥ नृप साधें परलोक ॥ आजहो० कुमरें रे रसभरें बहु कन्या वस्त्रोजी ॥ ६ ॥ सहस चौरासी पुत्र ॥ रूप जीस्या

स्तवनम्

ાાશ્પરાા

सौभाग्य पुर हुत्त ॥ आजहो० हुआरे जुजुआ राज्यें ते ठव्याजी ॥ ७ ॥ दीक्षा ल्ये सुप्रीव ॥ स्थावर सुक्ष्म पंचमी पुरे जीव ॥ आजहो० पाले रे संभालें व्रत चोखे मनेजी ॥ ८ ॥ तप तपतां सुहजाण ॥ उपनुं केवल नाण ॥ आजहो० सोहेरे पडीबोहे भवीयण वीश्वनांजी ॥ ९ ॥ लाख वर्षनुं आय ॥ पाली ते रुषी राय ॥ आजहो० कांतिरें बळीहारी शीवनारी वस्त्रोजी ॥ १० ॥

> ढाल-९-नवमी॥जयो जिन वीरजी ए ॥ ए देशी ॥ पंचमी तिथि तणो भाषीयो ए॥ इम महीमा सुवीवेक ॥ जयो जिन नेमजी ए ॥ सींचि सदहणां रसें ए ॥ तास्त्रा भविक अनेक ॥ जयो जिन नेमजी ए ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जिन वाणी रस भावीया ए ॥ पाम्यां केइ प्रतिबोध ॥ जयो ॥ केटले ए तप उचरी ए ॥ कीघो आतम सोघ ॥ जयो॥२॥ आणा ए आराघता ए॥ लहीयें पहथी सौभाग ॥ जयो ॥ सौभाग्यपंचमी ते भणी ए ॥ ए कही सेवा लाग ॥ जयो ॥ ३ ॥ धन धन प्रभुजी नी देशना ए॥ जेणें सुणी ते पण धन्य॥ जयो॥ दुषम कालें कां अवतर्स्वा ए॥ अम्हें पण सुणता वचन्न ॥ जयो ॥ ४ ॥ दोष घणां मुजमां भस्या ए ॥ नही किया व्यवहार ॥ जयो ॥ पण

॥१५३॥

🐒 एक छे तुज आसरो ए ॥ तारे जो तुं तार ॥ जयो ॥ ५ ॥ सत्तर नवाणुमां रहि ए ॥ पाल्हणपुर 🕼 लउत्पत्ति है चोमास ॥ जयो ॥ श्रावण शुदि तिथि पंचिम ए ॥ हस्तारक दिन खास ॥ जयो ॥ ६ ॥ संघ हि रिपाटी तणा आग्रह थकी ए ॥ कीधा ते दिन जोड ॥ जयो ॥ कांति कहे जे सांभले ए ॥ ते घर संपद कोडि ॥ जयो ॥ ७ ॥

> भुवनभूषण दलितदूषण दुरितशोषण जिनपति ॥ शिरताज जगजदुराय गातां पाइओ सुख संपत्ती ॥ श्री विजयप्रभग्रहचरणसेवक शिष्य प्रेमविजय तणो ॥ कहे कांति सुणतां भविक भणता पामिए मंगल घणो ॥ १॥

> > "इति श्री सोभाग्यपंचमीमाहात्म्य गर्भित स्तवनम्"

"अथ श्री अर्बुदाचल उत्पत्ति चैत्यपरिपाटी स्तवन" दुहा-जिनवर चोवीसे नमी, सकल जीव सुखकार; हंसवाहिनी हर्खसो, वाणी मुज आधार स्तवनम्

ાાકુપર્ગા

अर्बुदाच है। १॥ श्री ग्रह चरण कमल नमुं, दोष रहित सुख धाम; संपत्ति दायक दुख हरण, पूरे वंछित हैं। काम ॥ २॥ आबु गिरिवर अति प्रवल, महिमा अकल अनंत; परमत जिनमत तीर्थ ए, भाखे श्री भगवंत ॥ ३॥ उत्पत्ति चैत्य परवाडि सहु, दीठो सांभल्यों जेह; ते अतिशय आद्र करी, भाषुं आणी नेह ॥ ४॥ मत अनेक आबु कल्प, शिव शासन कहे वात; जिनमत कल्प आबु तणो, ते

ढाल-१-पहेली ॥ उठि कलाली भरि घडोहे ॥ ए देशी ॥ आगे वात सुणी ऐसीहे, आबु गिरि उत्पत्तिः; तापस परमतना घणांहे, करता तप संपत्ति ॥ भविक जन सांमळो आबु वात ॥ भेद विचार विख्यात ॥ भविक भेद०॥ ए आंकणी॥१॥ भूमि पवित्र जळ अति घणांहे, दर्भ समिध पळासः गायवृंद वच्छ सहु चरेहे, पूरें तापस आस॥ भविक० भेद०॥२॥ एक खाड तिहां आकरीहे, जोतां मन अकुलाय; कामधेनु मुनिवर तणी है, चरती चरती जाय॥ भविक० भेद०॥ ३॥ खाड उंडी बीहामणीहे, तिहां पडी सुरवर गाय; तापस आकुला सहु ए, अति दुःख मनमां थाय॥ भविक० भेद०॥ ४॥ मंत्र

अर्बुद्विच-लड़ जाप बहु आचरेंहे, वेद भणें बहुं भाति; गाय रही तिहां एकलीहे, दुध जरे बहु ख्याति॥ भविक० भेद० ॥ ५॥ खाड भरी दुधें करीहे, धेनु अतिशय निधान; तरती आवी उपरेंहे, तापस वाध्यो वान ॥ भविक०भेद०॥६॥ भ्रग्न कहे वात विश्वष्टनेहे, खाड टले कहो केम; बुद्धि विचारी आपणीहे, धर्म कर्म रहे नेम ॥ भविक० भेद०॥७॥ हेमाचल हलवो नहीहे, एकसो सुतनी जोडि; बीजा डुंगर देखतांहे, एहनी नहीं कोय जोडि॥ भविक० भेद०॥८॥ रुषि संघला मिलि आवीयाहे, हेमाचलने पास; आदर मान देई करीहे, भक्ति करे उछास ॥ भविक० भेद०॥ ९॥ सुणि हेमाचल आदरेहे, तुं अतिशय ग्रण जाण; सकल गिरिवरनो तुं घणीहे, ताहरी वहे शिर आण ॥ भविक०भेद० ॥ १० ॥ पुत्र भला छे ताहराहे, एकसो अति बलवंत; सेवा सारे ताहरीहे, तुं अविचल सुणि संत ॥ भविक० भेद० ॥ ११ ॥ एक पुत्र आपि अम भणीहे, पूरि अम्हारी आस; खाड पूरेवा अम तणीहे, आव्या ताहरे पास॥ भविक भेद०॥ १२॥

ंदुहा—आदर करी आकरो, पुत्र ते<del>ड्या</del> धरि प्रीतिः आज्ञाधारक आवीया, विनय वडा कुल

अर्बुदाच-लउत्पत्ति रीति ॥ १ ॥ नंदीवर्धन नाहडो, मानीतो मतिवंत; हेमाचल कहे हित भणी, तुं अतिशय बलवंत ॥ २ ॥ ऋषि साथें जाओ आदरे, करज्यो सारी सेव; पुण्य प्रभृत तुमने थस्ये, थास्ये सेवक देव ॥ ३ ॥

ढाल—र-बीजी ॥ कपूर होय अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ नंदीवर्धन पुत्र नाहनडो रे, तात तणी लही आणः अर्बूद्नाग तिहां भावीयो रे, जोरावर अति जाण ॥ ऋषिश्वर आवे निज आवास, नंदीवर्धन धन लेईने ए॥सफल करी निज आस ॥ रुषिश्वर ॥ ए आंकणी ॥१॥ नंदीवर्धन अर्बुद वह्योरे, अर्बुदाचल अति जोरः आवी खाडमां उतस्त्रो रे, रुषिकुमर करे सोर ॥ रुषिश्वर ॥ २ ॥ खाड गई कहो किहां कणेरे, अचरिज अतिशय थायः तपथी सुख संपत्ति मिलेंरे, लोक कहे ते न्याय ॥ रुषिश्वर ॥ ३ ॥ हवें आबुनी वर्णनारे, सांभलज्यो चित्त आणिः अढार भार वन-स्पती रे, आंबा कंदली सणि ॥ रुषिश्वर ॥४॥ ठाम ठाम वहे वाहलां रे, निरमल गंगा नीरः आंबा उपरे आकरारे, बोलें कोकिल कीर ॥ रुषिश्वर ॥ ४ ॥ मुनिवर सघला तिहां रहे रे, करे धर्म शुभ चैत्यप-रिपाटी स्तवनम् अर्बुदाच-लउत्पत्ति ॥१५५॥

ध्यानः तेत्रीसकोडि सुर आर्वे तिहां रे, धरे सुमति मति ग्यान ॥ रुषिश्वर ॥ ६ ॥ यात्रा बारे वर्षे 🧍 मिलेरे, गौतम रुषिनी सार; विशष्ट रुषि देखो आदरे रे, तप जप शील आधार ॥ रुषिश्वर ॥ ७ ॥ उंची ग्रफा मांहि अति भली रे, अर्बुदाचलनी राणी; नयणे हरखें निरखसें रे, सफल जन्म तसु जाणि ॥ रुषिश्वर ॥ ८ ॥ जगमाता श्रीदेवीनो रे, रसीओ जोगी एक; जगमातानें इम कहेरे, मुज परणा विवेक ॥ रुषिश्वर ॥ ९ ॥ बार पाज एक रातिमां रे, न बोले कूकडा जाम; पहिले पाज सहु बांधवी रे, पुत्री परणावो ताम ॥ रुषिश्वर ॥ १० ॥ रसिओ निरसीओ कीयोरे, कूकडा बोल बोलावि; बुद्धि बलें तेहरावीयो रे, श्रीदेवी घरे आवि ॥ रुषिश्वर ॥ ११ ॥ विमलसाहने आदरें रे, देखाडी ग्रुभ ठाम; देहरो कराव्यो अतिभलो रे, दीठा आणंद धाम ॥ रुषिश्वर ॥ १२ ॥

हुहा—नमिव श्री ग्रुरु सारदा, अविचल सुख द्ये राज; आबुचैत्य परिवाडि कहुं, भवजल तरण जहाज ॥ १ ॥ आबु गिरिवर उपरे, सुरवर कोडि तेत्रीस; वली विशेषे तिहां रहे, जगतारण जग चैत्यप-रिपाटी स्तवनम्

॥१५५॥

दीश ॥ २ ॥ आदिश्वर अरिहंत तिहां, नमो सदा कर जोडिः, बीजा देव संसारना, न करे जेहनी होडि ॥ ३ ॥

ढाल---३-त्रीजी ॥ मेंतुरे मणुया वरजीओ ॥ ए देशी ॥ अंबिका देवी प्रसादथी,विमल प्रसाद मंडाविरे; नाग खेतल वाली मिली, ततक्षण सघला आवेरे॥चैत्य वंदन करी भावसु, सकल संपत्ति मुख पावोरे; वीतराग आराधतां, फिरि संसारमां नावोरे ॥ चैत्य० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ भूमि तणा जे देवता, भाट भरडा बहु आवेरे; न हुवो निव छे नहीं होसे, धन खरचें कोडि लाखेरे ॥ चैत्य ॥ २ ॥ विमल प्रसाद मंडावसो, खरचस्यो द्रव्य अनेकरे; राति समे ते पाडसो, चैत्य न रहेश्यो एकोरे ॥ चैत्य ॥ ३ ॥ इम करता जो मनछे, अमने देव देखाडोरे; श्री आदिश्वर तिहां कणे, प्रगट थया धन जाजोरे ॥ चैत्य ॥ ४ ॥ देव सकल सुख उपनो, खेतलवीर वर धारीरे; तेल सिंदुर बिल बाकुला, बिल देई गावें नारीरे ॥ चैत्य ॥ ५ ॥ भरडा भूमीया तिहां हुता, संतोष्या 🛱 धन आपीरे; जोटिंग प्रेत मानें आगन्या, भूमि देहरानी स्थापीरे ॥ चैत्य ॥ ६ ॥ सुँद्र तिल तिल

चैत्यप-रिपाटी स्तवनम् अर्बुदाच लउत्पत्ति ॥१५६॥ कोरणी, नव नवी भाति करावीरे; रुपा सोना सम ते थई, आरासज वहर हरावीरे ॥ चैत्य ॥ ७ ॥ चिहुं दिसि फरती देहरी, एक एकथी रुडीरे; मंडपे मंडपे पूतली, नाचंता खलके चूडी रे ॥ चैत्य ॥ ८ ॥ स्तंभ सकलनी कोरणी, स्वर्ग मृत्यु निव दीठीरे; सुणता दीठां सुख उपजे, अमृत सम लागे मीठीरे ॥ चैत्य ॥ ९ ॥ मूल नायक तिहां स्थापीआ, पीतल में आदि जिणंदरे; विमल मंत्री-श्वर जग जयो, बोले नरवर इंद्ररे ॥ चैत्य ॥ १० ॥ हस्तिशाला आगलि भली, विस्तर भूमि अपा ररे; असवार विमल मंत्री थया, प्रणमें जगदाधारोरे ॥ चैत्य ॥ ११ ॥ कोडि अढार सोना तणी, उपरे छपन्न लाखोरे; प्रतिमा देहरा कोरणी, ध्वजा दंड ये शाखोरे ॥ चैत्य ॥ १२ ॥

दुहा—हवे जगदीश्वर पूजसो, लेई चंपक फुल; अगर धुप उस्नेवसो, जेहनो नही जग मूल है ॥ १॥ बोघरीओ सुलतान विल, करे जिन मूर्ति भंग; स्तंभ स्तंभनी पूतली, टाली टाले रंग ॥२॥ विज्ञडसाह एक वाणीयो, श्रावक समिकत धार; मूर्ति स्थापे आदरे, भवे भवे सुख दातार ॥ ३॥ विज्ञडसाह नो जस वारु, करे जिन वन भवन औंधारु;

चैत्यप-रिपाटी स्तवनम्

ાારુપદ્દાા

अर्बुदाच-लउत्पत्ति

छूणग वसही जिन वंदुं, भवनां पाप निकंदुं॥१॥नेमीश्वर जग जयवंत, छूणग वसही भगवंत; मंत्रीश्वर 💃 श्री वस्तुपाल, बीजो बांधव श्री तेजपाल ॥२॥ धन खरचें अति उदार, साढीबारह कोडि विस्तार; पार न पावे कोई; हस्तिशाला तिहां अति सोहे, परीया सात वेग मन मोहे ॥ ४॥ वस्तुपाले पुण्य भंडार, भरीया भवे भवे सुखकार; गिरनार समान ए कहीये, वांदी अविचल पदवी लहीये ॥५॥ हवे पेथडसाह पुण्यवंत, करे चैत्य उद्धार ग्रुणवंत; धन मनने भावे वावे, सुरनर जोवा तिहां आवे ॥ ६ ॥ हवे गुर्जर ज्ञाति गुण भारी, भीमसाह वडो व्यवहारी; त्रीजो उद्धार करावे, प्रासाद जिन जोवा आवे ॥ ७ ॥ पीतलमय श्री जिन आदि, नारी गावें वादो वादि; हवे कुंभ राणानी रीति, लीधुं कुंभल मेरु धरी प्रीति ॥ ८ ॥ चौमुख जग सघलो जाणे, मूल नायक सकल वखाणे. संघपति मंडग नाम, रचें देहरी सुंदर ठाम ॥ ९ ॥ मंडग वसही श्री पास, पूजता पहोचें आस; चौमुख पूतलीसु विचित्र, च्यार मंडप वांदो मित्र ॥ १० ॥ ओरडी सघली जिन देव, पूजी वांदी

चैत्यप-रिपाटी स्तवनम्

ani Du

1184011

अर्बुदाच-🐒 करुं सेव; इणिपरे तिहां जिनवर वांद्या, निज चित्त सकल आनंद्या ॥ ११ ॥ हवे स्वमणावसही छउत्पत्ति द्वीठी, जिणवर सो लागी मीठी; तिहां श्री जिन महिमा निवास, पूरे पूजक जन मन आस॥१२॥ दृहा—विमल वसहीयें आदिजिन, लूणगवसही नेमि; करस्यों पूजा भावस्युं, आणी मनमां प्रेम ॥ १ ॥ तीम गवसही आदिजिन, पास जिणेसर भाव; चौमुख पूजा वंदना, करता भवजल नाव ॥ २ ॥ सघळे ठामे जिनवरु, पूजी प्रणमी शुद्धि; खमणा वसही जोइसों, आणी निरमल बुद्धि ॥३॥

ढाल-५-पांचमी ॥ तुज साथे नहीं बोछं रुषभजी ॥ ए देशी ॥ हवें कुंभाराणानी वातो, सांभलज्यो चित्त देईजी; कुंभ राणे सांघ्या सगला, सुजस भलो जग लेईजी ॥ १ ॥ चैत्य परि-वाडि आबू गिरिनी, कहेतां मन उल्हासजी; सांभलतां सुख संपत्ति थाये, सफल फलि आसजी ॥ २ ॥ क्रंभो राणो आबु उपरि, आवे करवा वासजी; विषम ठेकाणुं जाणी सुंदर, गढ मंडावे उल्हासजी ॥ ३ ॥ नाम अचलगढ तेहनों दीधो, वारु पोलि कुठारजी; नागोरी घडीयाळूं वाजे, वावि सरोवर राजेजी ॥ ४ ॥ अनेक ठाम आराम अनोपम, वीसामा जल ठामजी; जिहाँ स्तवनम्

ाच-गत्ति

लिंग चंद हु तारा, रहवराव्यो जग नामजी ॥ ५ ॥ अचलेश्वर तिर्थ ग्रुम देहरो, मंदागिणि देखोजी; ग्रुम लेंकिक तिर्थ छे अनोपम, देखत जन्म ग्रुम लेखोजी ॥६॥ कुमर विहार जूनुं तिर्थए, जन सघळो जन जाणेजी; पीतलमे तिहां शोभे, सुरनर चित्तमां आणेजी ॥ ७ ॥ प्रतिमा गाली श्री जिन केरी, सांढीओ सुंदर कीधोजी; अचलेश्वर तिहां लिंग स्थापना, अपयश तिलक सिर लीधोजी ॥ ८ ॥ पाल्हो पापी पुण्यें हीणो, श्री जिन प्रतिमा त्रिण गाली जी; कुमती पापीनें सुं कहियें, यश कीर्ति शुभ बालीजी ॥ ९ ॥ तत्क्षिण विणस्यो अंग तेहनो, गलित कोढ अंग व्यापेजी; देव स्वप्त दीधों पाल्हानें, पालविहार जिन स्थापेजी ॥ १० ॥ पाल्हणपुर नगरमां सुंदर, पाल्ह विहार जयकारीजी; उद्घार राय लखाने वचने, रायविहार प्रीति सारीजी ॥ ११ ॥ खंभाति नगरथी आणी सुंदर, मूर्त्ति श्री जिन शांतिजी; गढ मांहिं पूजुं ओरडीये, कुंथुनाथ भगवंतजी।। १२॥ साह शीरोमणि खेंता संघवी, स्थापे प्रतिमा सारजी; श्री जिन स्थापी पूजी वांदी, सफल करि अवतारजी ॥ १३ ॥ लखपति राजाने आदेसें, मांडवगढनो वासीजी; सहसा सुलताणी चित्त

चैत्यप-रिपाटी स्तवनम्

अर्बुद्वाच- क्रिंग आणी, खरचे धन बहु रासीजी ॥ १४ ॥ अर्बुद्ध गिरि प्रासाद मंडावे, मेरु शिखर सम भावेजी; क्रिंग पीतलमय तिहां बिंब भरावे, च्यार बिंब चित्त आवेजी ॥ १५ ॥ आगें पण ए घरें तम्हारे, धरण विहार मंडाव्योजी; धन धन सहसा संघवी श्रावक, चौमुखे इंडो चढाव्योजी ॥ १६ ॥ दूहा—चैत्य प्रवाडि गढमां करी, ओरी आस गढ पास; श्री जिनवर प्रजों आदरे, पूरे मननी

आस ॥ १ ॥ साह उजल पासादि हवे, पूजों श्री अरिहंत; सालि ग्राममों वांदसो, भवे भंजन भगवंत ॥ २ ॥ विमल वसही आदिजिन, नमसो धरि आनंद; परम पद दातार जिन, चिदानंद सुखकंद् ॥ ३ ॥

ढाल—६—थी ॥ रंगीले ॥ ए देशी ॥ हवे जिनवर आगल कहुं ॥ आपवीत अवदात ॥ रंगीले ॥ कहेतां कर्मनी निर्ज्जरा ॥ भवबंधन भय जात ॥ रंगीले ॥ हवे जिनवर आगल कहुं ॥ ए आंकणी ॥१॥ अतीत चउवीसी एणे ठामें ॥ अर्बुदगिरि शुभ ठाम ॥ रंगीले ॥ मुनि कोडि बहु परिवस्ता ॥ त्यें अणसण सुख धाम ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ २ ॥ सिद्धक्षेत्र ए जाणीए ॥ सीधा

स्तवनम्

अर्बुदाच- प्रानिवर कोडि ॥ रंगीले ॥ सेत्रुंजय गिरि सम जाणीये ॥ प्रणमो बे कर जोडि ॥ रंगीले ॥ हवे॥३॥ उउत्पत्ति क्रिंसिद्धाचल सम अर्बुद कह्यो ॥ सिद्धक्षेत्र ग्रुभ नाम ॥ रंगीले ॥ ए तिर्थ सम को नही ॥ मन सोहन अभिराम ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ ४ ॥ दशद्रष्टांते दोहिल्यो ॥ मनुश्य जन्म में लाघ ॥ रंगीले ॥ आर्य क्षेत्र जैन धर्मनो ॥ मार्ग जगमां अगाघ ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ ५ ॥ पंचेंद्री पूरा लह्या ॥ धर्म श्रवण सुख राशि ॥ रंगीले ॥ सदहणा साची लही ॥ देव धर्म ग्ररु पासे ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ ६ ॥ हवे संभारुं आपणा ॥ गति आगतिना फेर ॥ रंगीले ॥ निगोद नरकमां हुं भम्यो ॥ कर्म कठिन घोर ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ ७ ॥ नरक मांहि दुःख अनुभव्यां ॥ कहेतां नावे पार ॥ रंगीले ॥ ते दुःख सघला तुं प्रभु ॥ जाणे जग किरतार ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ ८ ॥ तिर्यंच भव अति अनुभव्या॥ विना विवेक विचार ॥ रंगीले ॥ अज्ञान पणे जाण्यो नहीं ॥ जैन धर्म सुख दातार ॥ रंगीले ॥ हवे ॥९॥देव तणा सुख अनुभव्यां ॥ कहेतां नावे पार ॥ रंगीले ॥ क्षीण पुण्य तिहांथी च्यवी ॥ आब्यो मनुष्य मोजार ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ १० ॥ तट पामी जिन धर्म लही ॥ च्यार परमांग समेत ॥ रंगीले ॥ भव भव 🞉

अर्बुद्वाच-लडत्पत्ति ॥१५९॥ १ नाव्यो पार ॥ रंगीले ॥ कुण आगल कहुं वीनती ॥ जिनपति तुं अवधार ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ १२ ॥ रखत्रय जिनवर कह्यां ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ॥ रंगीले ॥ सुद्ध परे नवी आदस्यां ॥ न कस्यो जन्म पवित्र ॥ रंगीले ॥ हवे ॥ १३ ॥ तारक बिरुद् प्रभु ताहरो ॥ संभारो जिन देव ॥ रंगीले ॥ ताहरा चरण पंकज तणी, नित्य आपेवी सेव ॥ रंगीले ॥ १४ ॥

ढाल-७-सातमी ॥ वीर जिणंद वैरागीया ॥ ए देशी॥ अर्बुद गिरिवर गाईयो, शास्त्र श्रवण आधारोरे; ए गिरि दीठा वांदतां, में सफल कीयो अवतारोरे ॥ में सफल कीयो अवतारोरे॥अर्बुद गिरिवर गाइयो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जिहां जिनवरनां जन्म छें, दीक्षा ज्ञान विशेषोरे; मुक्ति गया जिहां जिनवरु, ते भूमिका पावन छेखोरे ॥ अर्बुद् ॥ २ ॥ सिद्ध अनंता जिहां थया, यतिवर ध्यान प्रमाणेंरे; ते स्थानिक नित्य वांदतां, भवसागर अंत ते आणिरे ॥ अर्बुद् ॥ ३ ॥ आबुकल्प जिन पूर्ण मत विषे, कहितां नावे छेडोरे; रसकूपी छे एणे डुंगरे, कंचननो वर्षे मेहोरे ॥ अर्बुद् ॥ ४ ॥ आबु

अर्बुदाच- किम जिन कहे, षट्दर्शन जय जय मानीरे; सघला मतमां सारिखो, ए वात नहीं छे छानीरे॥ लउत्पत्ति कुं अर्बुद् ॥ ५ ॥ सिंहिं वृहस्यित संचिर, त्यारें लोक आवे लख कोडीरे; पूजे आराघे भावस्युं, प्रणमें वे कर जोडीरे ॥ अर्बुद् ॥ ६ ॥ आबु गिरिवर गावतां, में सफल करी निज जीह्वारे; पुण्य संचय प्रगट्यो थयो, सफल जन्म मुज दीहारे॥ अर्बुद्॥ ७॥ विधिपक्ष गच्छ जग परगडो, सुद्र सिद्धांत पक्ष पालेरे; पूज्य शिरोमणि परगडा, निज गच्छ कुल अजूआलेरे ॥ अर्बुद् ॥ ८ ॥ श्री अमर सागर सूरीसरो, कल्याण सूरी पाटे विराजेरे; सकल सूरिश्वर तिलक सारिखो, पदवी नित्य प्रते राजेरे ॥ अर्बुद् ॥ ९ ॥ तासुपक्ष शुद्ध संयम धारी, पालीताणा शाखा सारीरे; पंडित श्री मुनिसील हितकारी, राय राणा सुखकारीरे ॥ अर्बुद् ॥ १० ॥ तेह तणा शिष्य अति गुणवंता, ग्रणशील मुनि जयवंतारे; तेह तणा शिष्य वाचक जाणो, विनयशील चित्त आणोरे ॥ अर्बुद ॥ ११ ॥ संवत् ( १७४२ ) सत्तर बेंतालीस वर्षे, वडनगरमां हर्षेरे; अर्बुद गिरि गावो चित्त भावें,

श्रीज्ञान-पंचमी ॥१६०॥ सुख संपत्ति फल पावोरे ॥ अर्बुद ॥ १२ ॥ ए स्तवन जे भावें भणस्ये, चित्त दईनें सुणस्येरे; ते क्रिक्मी लीलाकरस्ये, भव समुद्र ते तरस्येरे ॥ अर्बुद ॥ १३ ॥

कलश—इम सकल गिरिवर मुख्य हितकर—हिमाचल सुत जाणीये, मोक्ष स्थानिक दुःखवामक नित्य प्रते चित्त आणीये; वा विनय शीलें जय सुमित लीले—ज्ञान कांति आदर वशकरी, कल्याण कारी पाप वारी—नित्य प्रणमो हित धरी ॥ १ ॥

''इति श्री अर्बुदाचल उत्पत्ति चैत्य परिपाटी स्तवनम् सम्पूर्णम्"

"अथ श्री ज्ञान पंचमी स्तवन"

"देशी ॥ चंद्राउलानी ॥ जंबुद्वीपनां भरतमां रे ॥ ए देशी ॥ समरी श्रुतदेवी सदारे, हंस वाहन कर वेण; मुर्खनें पंडीत करे रे, सद्गुरु ये श्रुत नेण ॥ त्रुटक–सद्गुरु से श्रुत नेंण घणेरी, टाले मिथ्यात्व कूमति भव फेरी; श्रुक्र कस्यां शनि हुता जेह, ते ग्रुरुनें नमीए नित नेहें ॥ १ ॥ स्तवनम

।।१६०॥

श्रीज्ञान पंचमी

जिननेमीसरजीरे ॥ प टेक ॥ ढाल पूर्वली-पंचमी तप महीमा कहुं रे, सांभलो सुग्रण सुजाण; एक दिन नेमी समोसस्वा रे, द्वारिका नयरी उद्यान; त्रुटक-द्वारिका नयरी उद्याने त्र्यावे, कृष्ण प्रमुख याद्व मन भावे; वांदी नेमने पुछे प्रश्न, ज्ञान पंचमी तणो श्री कृष्ण॥ जिननेमी॥२॥ ढाल पूर्वली— नेम कहे हरीनें तदारे, ज्ञान तणो अधीकार; क्रीय।नें निर्मल करें रे, मुक्ति तणो दातार; त्रटक-मुक्ति तणो दातार ग्रंथे, पंचमा अंगर्ने माहा निसिथे; ज्ञानी श्वासोश्वासे जेह, कर्म निकाचित्त त्रोडे तेह ॥ जिननेमी ॥ ३॥ ढाल पूर्वली–क्रोड वर्ष नारकी तणा रे, कर्म छूटे तत्काल; ज्ञानविना नर जांणजोरे, पशु सम अंधनें बाल; त्रुटक-पशुसम अंधनें बाल ते दाख्यों, ज्ञान यहीं जेणें सम-कित चारुयो; पयसाकर नो जेम बनाव, ज्ञानकीयानो तेम खभाव॥ जिननेमी ॥ ४॥ ढाल पूर्वली-रुपी अरुपी लोकमां रे, नीश्चें नें व्यवहार; द्रव्य भाव क्रिया तणोरे, जाणें सर्व विचार ॥ त्रुटक—जाणें सर्व विचारते नाणी, लोक अलोक निगोद वखाणी; नरक तणा छटवा पास, आराधो क्षीनाण पंचिम सुविलास ॥ जिननेमी ॥ ५ ॥ ढाल पूर्वली–पंचमी तप साधन थिकरे, पामें पंचम

स्तवनम

श्रीज्ञान पंचमी ॥१६१॥ नाणः पंचमी गतिनें ते देयेरे, जो आराधे ग्रुभ ध्यानेः त्रुटक—आराधें ग्रुभ ध्यानें नियमां, पंच वर्ष पंच मासनी सीमाः चोथ भक्त उपवास करीनें, देहरे देव ग्रुरु वांदीनें ॥ जिननेमी ॥६॥ ढाल पूर्वली—वैशाख ज्येष्ट आषाढमां रे, मृगसिर माहनें फागः उचिरयें ग्रुरु आगले रे, पंचमी धरी मनरागः त्रुटक—पंचमी धरी मनरागे किजे, पंचवाट घृत दीप भरिजेः खस्तिक पंच फलादि धरीजे, मुख आगल पुस्तक स्थापीजे ॥ जिननेमी ॥ ७ ॥ ढाल पूर्वली–त्रण काल देव वांदिये रे, पडिकमणां बे वार; हैं ब्रह्मचर्य धरि बेसीये रे, आरंभ सकल नीवार; जुटक—आरंभ सकल नीवारी पोसो, पूर्व उत्तर सामा बेसो; नमो नाणस्स हजार बे जपीये, तो तप तेजें त्रीभोवन तपीयें ॥ जिननेमी ॥८॥ ढाल पूर्वेळी-पोथी पुजो ज्ञाननी रे, प्रभावना श्रीकार; नाण मंडावी पेसीयें रे, सक्ति तणे सुविचार; त्रुटक सक्ति तणें सुविचारे जोई, पंच वर्ष पंच मासज होई; उजमणुं करी तप आराघें, जलथी कमल ज्युं तेजें वाघे ॥ जिननेमी ॥ ९ ॥ ढाल पूर्वली–प्रतिमा भरावो जिन तणीरे, पंच तिथें 🖔 सुविशाल; ज्ञान लखावीनें दीयोरे, पाग पंच रुमाल; त्रुटक–पाठा पंच रुमाल नें काबी, लेखण

स्तवनम्

॥१६१॥

श्रीज्ञान पंचमी दोरा खिंडआ डाबी; जरम वाड तोरण चंदुवो, पक्कवान पांच सूद्वानें द्वओ ॥ जिननेमी॥ १०॥ हाल पूर्वेली–पूजा रचावो जिन तणीरे, दीवी कलस मृंगार; अंगहणा, ठाली भली रे, चंदन ने घनसार; त्रुटक–चंदन नें घनसार उखेवी, घंट नाद जालर रकेबी; एम सघली पांच पांच मेलीजें, रातीजमें उजमणुं कीजे ॥ जिननेमी ॥ ११ ॥ ढाल पूर्वली-सक्ति नही मास मासनी रे, वर्ष वर्ष प्रते एक; वरदत्त गुणमंजरी परेंरे, आराधो धरीय वीवेक; ब्रुटक–आराधो अति राग धरीनें, रोग सोग सर्व जाय टालीनें; सुध बुध सुत संपत सारी, राग धरी सेवो नर नारी॥ जिननेमी ॥ १२ ॥ ढाल पूर्वली-वरदत्तें पूर्व भवेरे, ज्ञान उपर धस्त्रो द्वेष; दिन दश दोय मुनि रह्यो रे, आलोयो पाप नरेष; त्रुटक-आलोयो नहीं कर्म संयोगें, तेह मुर्खनें व्याप्यो रोगे; गुरु वचने आराधें नाण, उद्यमी पोहतो खर्ग वीमान ॥ जिननेमी ॥ १३ ॥ ढाळ पूर्वळी–तिहांथी च्यवि जंबु द्विपमां रे, पूर्व विदेह मोजार; वरदत्तनो जीव ते सहीरे, सुरसेन नाम कुमार; त्रुटक-सूरसेन श्रीमंघर वांदी, देशना सांभली मन आणंदी; राज छंडि प्रद्यों संयम भार, केवल लही पोहता मुक्ति मोजार ॥ जिननेमी ॥ १४ ॥ ढाल पूर्वली—गुणमंजरी पूर्वभवे रे, पावके श्राल्यं ज्ञानः तेह

स्तवनम्

11१६२॥

श्रीज्ञान- कि कमें एह भव थइ रे, मुंगी रोगी अनांण; त्रुटक-मुंगी कोई न परणें तेहनें, सोले वर्षे गुरु मलीया पंचमी एहने; विधें आराधि पंचिम अजुआली, भोग भोगवी अंते चारित्र पाली ॥ जिननेमी ॥ १५ ॥ ढाल पूर्वली—विजय विमानें भोगविरे, सूरपणें सूख अपार; तिहांथी च्यवि जंबुद्दीपमां रे, रमणि विजय मोजार; त्रुटक—रमणि विजय सूप्रीव कुंमार, राजनो सोंपि पुत्रनें भार; संयम ग्रही लह्युं केवल सार, थयों ते शीवरमणी भरतार ॥ जिननेमी ॥१६॥ ढाल पूर्वली-नेमी जिणेश्वर खयं मुखे रे, अल्प कह्यो अधिकार; ज्ञान पंचमी आराधतां रे, केई पाम्या भव पार; ब्रुटक-पाम्यां नेमनें वांदीने गेहें ऋष्ण प्रमुख आराधे नेहें; प्रेमे पंचिम तप आराध्यो, कांति लह्यो जिम भक्ति साध्यो ॥ जिननेमी ॥१७॥ कलश-श्री नेमिजिनवर सयल सुखकर भविक हितकर जयकरु, संसारतारक दुःखवारक सुखका-🌠 रक सुरतरुः, तपगच्छनायक सुमतिदायक बिजयप्रभ सूरीश्वरु, शिष्य प्रेमनो कहो कांति सेवक भक्तिविजय जयंकरु ॥ १८॥

"इति श्री ज्ञान पंचमी स्तवन सम्पूर्ण"

॥१६२॥

"अथ श्री पंडित उतमविजयजीकृत संयमश्रेणितुं स्तवन अर्थ सहित" ॥ सकलपंडितचक्रचक्रवर्त्ति पं० श्री खिमाविजयगणि शिष्य मुख्य पं० पर्षदभामिनीभाल पं० श्री जिनविजयगणिग्रहभ्यो नमः सिद्धिबुद्धिविधायिने श्रीमद्गौतमस्वामिने नमः श्री वर्द्धमानजिनं नत्वा, वर्द्धमानग्रणास्पदं; खोपज्ञ संयमश्रेणि, स्तवस्यात्थों वितन्यते ॥ १ ॥ ढाल-१-पहेली ॥ प्रथम गोवाला तणें भवेजी ॥ ए देशी ॥ केवल ज्ञान दिवा-करुजी, सिद्ध बुद्ध सुखदाय; आतम संपद भोगवेजी, वर्द्धमान जिनराय ॥ गुणोद्धि शासननायक वीर ॥ मेरु महीधर धीर० गुणो दुधि शासन नायक वीर ॥ ए आंकणी ॥ ९। भावार्थः—समस्त केवल ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयथी उत्पन्न थयुं जे केवल ज्ञान तद्रूप समान एवा वली॥ सिद्ध के०६॥ क्षायिकभावें सकलगुण निष्पन्न सिद्ध छे॥ बुद्ध के०, सकल वस्तु खभावनां जाण छे॥ सुखदाय के० उपगारी पणे सर्व सुखनां दातार छे॥ आत्म संपदा अनंत ग्रुण पर्याय रूप स्याद्वाद पणे परिणमती तेने भोगवे छे॥ एहवा वर्द्धमान स्वामि चोवीशमा अर्थ सहित

द्याः. २८

॥१६३॥

तीर्थंकर जिनराय के० समस्त केवलीओमां राजा समान छे ॥ ग्रुणनां समुद्र ग्रुणरूप रत्ननी उत्पत्ति स्थान तेमज वर्त्तमान शासननां अधिपति एवा वीर भगवान् छे ॥ वली उपसर्ग-परिसह आवे अडग रह्यां माटे मेरु पर्वतनी पेठे धीर छे ॥ एटले वंद्नात्मक स्तवनात्मक अने वस्तुनिर्देशात्मक ए त्रण प्रकारना नमस्कार छे तेम आगाथाथी त्रिविध नमस्कारमांथी स्तवनात्मक इष्ट समुचित नमस्कार कर्यो ॥ १ ॥

गाथा—अनुक्रमे संयम फरसतोजी, पाम्यो क्षायक भाव; संयम श्रेणि फ्लडेजी, पुजुं पद निष्पाव० ग्रणो द्धि० मेरु०॥ २॥

भावार्थः—अनुक्रमें—उत्तरोत्तर प्रधान संयम स्थानक फरसतोथको यदुक्तं—दशाश्चतस्कं भे 'तस्सणं भगवंतस्स अनुत्तरेणं नाणेणं अनुत्तरेणं दंशणेणं अनुत्तरेणं चित्तिणं अनुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अनुत्तरेणं वीरिएणं अनुत्तरेणं अज्ञवेणं अनुत्तरेणं महवणं" इत्यादिक महिनीय कमिनो क्षयकरी उत्कृष्टुं संयम स्थान रूप खीणमोह गुणस्थानने पाम्या पहवा श्री वर्द्धमान खामीनां संयम

अर्थ सहित

श्रेणिरुप भाव फुले करीने निष्पाव के० पाप रहित पद के० चरण कमलने पुजुं के० अर्चा करं छुं ॥२॥ गाथा-वाचक जराविजयें रच्योजी, संक्षेपे सझाय; विस्तरि जिन गुण गावतांजी, जीव्हा पावन थाय० गुणो द्धि० मेरु०॥ ३॥ बारकषाय क्षय उपशमेंजी, सर्व विरति गुण ठाण; तेहना आदिम ठाणमांजी, पर्यवना परिमाण० गुणो द्धि० मेरु० ॥ ४ ॥ भावार्थः--न्यायवादि शिरौरत महोपाध्याय श्री यशोविजय गणिए तिक्ष्णबुद्धिगम्य संयम श्रेणिनो सझाय ते पण विस्तार रुचिनां अर्थे अमे संक्षेप रचेलछे ॥ विस्तारे संयम स्थान गर्भित जिनेश्वरना गुण गाता थका जीह्वा तथा जन्म पवित्र थाय ॥ उत्तम जीवने ए मनोरथज होय । भवसय सहस्समहणीए; वोलंतु मे दीअहा; एटले मंगलीक अभिधेयादिक कह्यां ॥ ३ ॥

हवे आदिम बार कषायने क्षयोपशमें एटले जे उदय आव्या दलीकने क्षय करे अने उदय नथी आव्या तेहने उपशमावे ॥ जे प्रदेशें उदय आव्याने वेदे एहवी अवस्थाए वर्ततां

संयम-श्रणीनुं स्तवनम् ॥१६१॥ उपन्युं अविरित देशविरित प्रमुख० कषाय बारनां अभावे उपनुं जे सर्वविरितरूप जे छठुं ग्रुण-स्थानक तेहना आदिम ठाणमां कहेतां सर्वे जघन्य स्थानकमां एटले प्रथम स्थान मध्ये पर्यव के० निर्विभाग एटले जेना केवली प्रज्ञाये पण एक सडनां बेअंश नथाय एवा पर्याय चारित्रना जे अंश प्रमाण संख्या ते कहे छे॥ ४॥

गाथा–सर्वाकाश प्रदेशथीजी, अनंत्त गुणा अविभाग; वृहत्कल्पनां भाष्यमांजी, भा-खेतुं महाभाग० गुणो० दिघ० मेरु० ॥ ५॥

भावार्थः—सर्व आकाश के० लोक तथा अलोकनां आकाश प्रदेश जेटले अनंतछे एटले अनंतानी गणना अनंत प्रकारनीछे ॥ तेमां लोकालोकना आकाश प्रदेशनी गणनानु जे अनंतु छे तेने अनंत गुणो करियें एटला ए वीभाग छठा गुणस्थानकना सर्वथी जघन्यमां जघन्य स्थानक जे पहेल्लं स्थानक तेमां छें एरीते हे महा भाग महा पूज्य तुं कहे छे यदुक्तं—बृहत् कल्पनाभाष्य मध्ये " ते कत्तीआ पएसा,सद्वागासस्स मग्गणा होइ; तेजत्तीआ पएसा, अविभागतओ अनंतगुणा ॥१॥ ते अविभाग सर्वो- .अर्थ सहित

ાારફશા

त्कृष्ट देशविरति विशुद्ध स्थानकनां निर्विभाग भागथी सर्व जीव अनंत रूप गुणकारे अनंत गुणा जाणवा ॥ ग्रंथांतरे असत् कल्पना ए उत्क्रष्ट देशविरति विद्युद्ध स्थानकनां अविभाग १००० छे ॥५॥ 🖔 गाथा-भाग अनंते आदिथीजी, बीजे ठाणे रे दृद्धि; इम अनंत भागुत्तरेंजी, स्थान-कनी होय सिद्धि० गुणो द्धि० मेरु०॥ ६॥ भावार्थः—ए पहेलां संयम स्थानकेथी अनंतमे भागें एतले प्रथम संयम स्थानमां जेटला अविभाग छे॥ ते सर्व जीवनें वहेंची आपतां एक जीव ने भागे एतले प्रथम जेटलां संयमनां अविभाग आवे तेटलां बीजा संयम स्थानकमां वृद्धि होय ॥ एम बीजां संयम स्थानथी त्रीजामां ॥ त्रीजाथी चोथामां यथोत्तर अनंत भाग वृद्धि होय ॥ तेम आगल पण संयम स्थानकनी निष्पत्ति जाणवी ॥ ते केटलां होय ते आगल कहे छे॥ ६॥ गाथा—अंगुल भाग असंख्यमांजी, जे आकाश प्रदेश; तेतां स्थानिक नीपजेंर्ज

अर्थ सहित

कंडक तास निवेश० गुणो द्धि० मेरु०॥ ७॥

संयम-श्रेणीनुं स्तवनम् ॥१६५॥

भावार्थः अंग्रेल मात्र आकाश क्षेत्रनो भेद तेना असंख्यातमो भाग ते मांहि जेटलां आकाश प्रदेशछे ॥ तेटलां अनंतभाग दृद्धिनां संयम स्थानक निपजे ॥ आगम परिभाषाए एटलां स्थान-कनो समुदाय तेहने कंडकनी स्थापना जाणवी ॥ उक्तंच-कडातिए च्छभन्नइ, अंग्रल भागो असं-स्थिजो हवइ ॥ ७ ॥

गाथा—बीजे कंडक ठाणमांजी, आदि असंख अंसजाण; तदनंतर नंत भागतांजी, स्थानक कंडक माण० गुणो दिधि० मेरु० ॥ ८॥

भावार्थः—अनंत भाग दृष्ठि कंडकने अनंतर असंख्यात भाग दृष्टिनुं कंडक मंडाय ते बीजा कंडकनी आदि स्थानक मांहें अनंत भाग दृष्टि कंडकनां चरमस्थानकथी असंख्यातमे भागे दृष्टि जाणवी ॥ एटले प्रथम कंडकनां चरम स्थानकमांहे जेटलां अविभागछे ते असंख्यलोकाकाशना प्रदेशने वहेंची आपी एक प्रदेशने भागे जेटलां अविभाग आवे तेटलो असंख्यातमो भाग वधे तेने अनंतर अनंत भाग दृष्टिनां स्थानक कंडक प्रमाण थाय ॥ तेकिम असंख्यात भाग दृष्टिनां प्रथम ठाणथी

अर्थ सहित

।।१६५।

अनंतमो माग क्ये प्रुं प्रथम तेनो अनंतमो भाग वृद्धिरुप बीजुं एम यथोत्तरे कंडक प्रमाण हैं होय ॥ इम आगल पण पाछलां स्थानकथी आगला स्थानकमां भागवृद्धि तथा गुणवृद्धि पोतानी के बुद्धिए जाणवुं ॥ ८ ॥

गाथा—इम अनंत भाग वृद्धिनेजी, कंडक कंडक मध्य; ठाणअसंख्य अंश वृद्धिनांजी, कंडक मानें लद्ध० गुणो द्धि० मेरु०॥ ९॥

भावार्थः—इम अनंत भाग वृद्धिनां कंडक प्रमाण स्थानक अने असंख्यात भाग वृद्धिनुं एक स्थानक ए रीते अनंत भाग वृद्धि कंडक कंडकने विचाले असंख्यात भाग वृद्धिनुं एक एक स्थानक करतां असंख्यात भाग वृद्धिनां स्थानक केटलां होय ते कहेछे कंडक प्रमाणे लाधां एटले एक कंडक प्रमाण थयां एटले एक कंडक प्रमाण थयां एटले एद वृद्धि मांहिं असंख्यभाग वृद्धिरूप बीजी वृद्धि पूरी थइ ॥ ९ ॥

गाथा—ते आगे अनंत भागनांजी, स्थानक कंडक मातः, तदनंतरे संख्यभागनुंजी, स्थानक एक विख्यात० गुणो दिघ० मेरु०॥ १०॥

संयम-श्रेणीनुं स्तवनम् ॥१६६॥

भावार्थः—ते असंख्यात भाग दृद्धि कंडकना चरम स्थानकमां आगल अनंतर अनंत भाग दृद्धिनां स्थानक कंडक मात्रथाय एटले कंडक प्रमाणे करीए ॥ तेवार पछी संख्यातभागदृद्धिनुं कुं एक स्थानक प्रसिद्ध थाय ॥ एटले पश्चात् कंडकनां चरम स्थानकमां जेटलां अविभागछे ते उत्कृष्ट संख्यात पद साथे भागदेतां एकने भागे जेटलां आवे तेटलां वधे ॥ इम आगल पण स्वबुद्धिए किंगाया ॥ १०॥

गाथा—ते उपर द्वय वृद्धिनांजी, जेतां ठाण अतित; ते कीघे संखभागनुंजी, बीजुं ठाण पवित्त० गुणो दिध० मेरु०॥ ११॥

भावार्थः—ते असंख्यात भाग वृद्धिनां प्रथम स्थानक ने उपर ए वे वृद्धिनां स्थानक जेटलां अतिक्रम्याछे ॥ एटले पूर्वे अनंत भाग वृद्धि ॥ असंख्यात भाग वृद्धिनां जेटलां स्थानक गयाछे ते सघलाए प्रथम संख्यातमो भाग वृद्धि स्थानकने आगल कीजीए ते कीधा पछी संख्यात भाग वृद्धिनुं बीजुं स्थानक पवित्र संयम परिणाम रूप आवे ॥ ११ ॥ अर्थ सहित

गाथा–इम वृद्धिद्वय अंतरेंजी, कंडक माने रे ईठ; अंस संख्या ते वृद्धिनांजी, स्थानक जिनवर पुठ० गुणो द्धि० मेरु० ॥ १२॥

भावार्थः—एम आगल पण बे वे वृद्धिना स्थानकने विचाले एक एक संख्या निक करतां कंडक प्रमाणे हे इष्ट ? हे प्राण वल्लभ ? नीपजे ॥ ते असंख्यात भाग वृद्धिनां स्थानक हे जिनवर हेवीत-राग तमने फरस्यां ॥ १२ ॥

गाथा—विल पूरवद्वय दृद्धिनांजी, स्थानक सर्व करेह; आगल गुण संख्यातनुंजी, स्थानिक एक धरेह० गुणोद्धि० मेरु०॥ १३॥

भावार्थः—वली संख्यात भाग वृद्धि कंडकनां चरम स्थानक ने आगल पूर्वनी वे वृद्धिनां जेटलां स्थानक गयाछे ॥ तेटलां सर्व स्थानक करवां ॥ तेहने आगल संख्यात भाग वृद्धिनुं कंडक पुरुं थयुं तेमाटे तेहने ठामे संख्यात वृद्धिनुं एक संयम स्थानक धरिए ॥ स्थापीए एटले पाछला अनंत भाग वृद्धिनुं कंडक गयुं तेनां चरम स्थानकमां जेटलां अविभागछे ॥ ते उत्कृष्ट संख्यात गुणा

संयम-श्रेणीनुं स्तवनम् ॥१६७॥ कीजे करतों जेटलां अविभाग थाय तेटलां अविभाग प्रथम संख्यात गुण वृद्धि स्थानादिकमां वधे॥ इम आगल पण खबुद्धिएं जाणेबुं॥ १३॥

गाथा—इम त्रिक दृद्धि अंतरेजी, गुण संख्यातनां ठाणः; केंडक माने नीपजेंजी, जाणे तुं वर नाण० गुणो दिघ० मेरु०॥ १४॥

भावार्थः—इम त्रिक वृद्धिने विचाले एटले अनंत भाग वृद्धि १ असंख्य भाग वृद्धि २ संख्यात भागवृद्धि ३ ए त्रण वृद्धिनां स्थानक ने विचाले एक एक संख्यात ग्रणनुं स्थानक करीए इम करतां संख्यात ग्रण वृद्धिनां स्थानक कंडक प्रमाण निपले ॥ एतले पट्वृद्धीमांहिं चोथी संख्यात ग्रण वृद्धि पूरी थइ ॥ संयम स्थानक चारित्र परिणाम रूप अरुपिछे ते माहि हैं सर्वज्ञ सर्व नुं जाणे छे ॥ १४ ॥ गाथा—पुनरपि त्रिक वृद्धितणांजी, पूरी स्थानक सर्व; असंख्यात ग्रण वृद्धिनुंजी, स्थानक एक अगर्व० गुणो दृधि० मेरु० ॥ १५॥

भावार्थः—संख्यात ग्रुण वृद्धि कंडकना चरम स्थानकथी आगंध वली त्रण वृद्धिनां एटले

अर्थ सहित

अनंत भाग वृद्धि १ असंख्य भाग वृद्धि २ संख्यात भाग वृद्धि ३ स्थानक जेटलां पूर्वे गयांछे ॥ ते सर्व संयम स्थानक पूरीने नीपजावीने पछी असंख्यात ग्रुण वृद्धिनुं संयम स्थानक हे अगर्व १ एक आवे ॥ एटलेपाश्चात्य अनंतर संयम स्थानकमां बेटलां अविभागछे ॥ असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाण ग्रुणा करतां जेटला ग्रुणा थाय तेटलां प्रथम असंख्य ग्रुण वृद्धि स्थानमां अविभाग वर्षे॥१५॥

गाथा—चउरंतर चउरंतरेजी, स्थानक कंडक मेय; असंख्यात गुण दृद्धिनांजी, पंडीत वीर्य वरेय० गुणो द्धि० मेरु०॥ १६॥

भावार्थः—आगल पण चार चार वृद्धिने विचाले एक एक असंख्यात गुण वृद्धिनुं स्थानक निपजे ॥ एटले असंख्यात गुण वृद्धिनां प्रथम स्थान पछी अनंत भाग वृद्धि १ असंख्य भाग वृद्धि २ संख्यात भाग वृद्धि ३ संख्यात गुण वृद्धि ४ एवं चार वृद्धिनां स्थान कर्या पछी असंख्य गुण वृद्धिनुं वीजुं स्थान आवे ॥ एरीते चार चार वृद्धि विचाले एक एक स्थान करतां कंडक मात्र थाय ॥ एटले पद्विद्धि मांहिं असंख्य गुण वृद्धि रूप पांचमी वृद्धि पूरी थइ ॥ असंख्यात गुण

संयम-श्रेणीनुं स्तवनम् ॥१६८॥ वृद्धिनां संयम स्थानक इम नीपजावतां कंडक मात्र थाय ॥ एसर्व संयमस्थानरूप आत्मग्रण हे वीर ? हे परमेश्वर ? तमे पंडित वीर्यें करीने वर्या ॥ पाम्या ॥ एटला माटे तमे वंद्यछो ॥ पूज्यछो ॥ स्तुत्यछो ॥ तमने स्तवतां एवा ग्रणो पामीए ॥ १६ ॥

गाथा—उपर वली चउ दृद्धिनांजी, फरसे स्थानक सार; तदनंतरनंतगुणनुंजी, स्थानक एक उदार० गुणो द्धि० मेरु० ॥ १७ ॥

भावार्थः—असंख्यात गुण वृद्धि कंडकनां चरम स्थानकने उपर वली चार वृद्धिनां एटले अनंत भाग वृद्धि १ असंख्यात वृद्धि २ संख्यात भाग वृद्धि ३ संख्यात गुण वृद्धि ४ ए चार वृद्धिनां सर्व स्थानक हे सार हे उत्कृष्ट १ फरसे ॥ तेवार पछी आंतरा रहित अनंत गुणवृद्धिनुं एक प्रथम स्थानक महोटुं आवे॥ एटले पाश्चात्य अनंतर संयम स्थानकमां जेटलां अविभागछे॥ ते सर्व जीवरूप अनंत साथे अनंत गुणा करतां जेटलां अविभाग थाय तेटलां अनंत गुण वृद्धिनां प्रथम स्थानकमां अविभाग वघे ॥ १७॥

अर्थ सहित

गाथा–पंच पंच बुढ्ढि विचेंजी, ठाण एक एक जोय; इम अनंतगुण बुढ्ढिनांजी, कंडक माने होय० गुणोद्धि० मरु०॥ १८॥

भावार्थः—अनंत गुण दृद्धिनां प्रथम स्थानक पछी अनंतर अनंत भाग दृद्धि १ असंख्य भाग दृद्धि २ संख्यात भाग दृद्धि ३ संख्यात गुण दृद्धि १ असंख्यात गुण दृद्धि ९ असंख्यात गुण दृद्धि ९ ए पांच दृद्धि रूप सर्व संयम स्थानक अपने ए रीते पांच पांच दृद्धिने वच्चे एक एक अनंत गुण दृद्धनुं स्थानक निपजे ते ज्ञान दृष्टि ए जुओ इम करतां अनंत गुण दृद्धनां संयमस्थानक केटलां होय ते कहे छे कंडक प्रमाणे होय ते अंगुल ने असंख्यानिमा भागमां जेटलां आकाश प्रदेशके ते प्रमाण जाणवा ॥ १८ ॥

गाथा–उपर वळी पंच वृद्धिनांजी, फरसे संयम ठाण; प्रवचन अनुसारे कह्युंजी, षट्ट स्थानक परिमाण० गुणोदिधि० मेरु०॥ १९॥

भावार्थः—अनंतगुण वृद्धं कंडकनां चरम स्थानकने उपर वली मूल थकी पांच वृद्धिनां सर्व

अर्थ सहित

ज्ञो. २९

संयम स्थानक फरसे पण पांच वृद्धि कर्या पछी प्रसंगे आव्युं अनंत ग्रुण वृद्धिनुं स्थानक ते न करवुं जे माटे षद् स्थानक पूरुं थयुं ते माटे प्रवचन अनुसार क० "कल्प भाष्य" तथा "प्रवचन सारोद्धार" नी टीकाने अनुसारे कह्युं छे षद् स्थानकनुं परिमाण प्ररूपणा एतावता स्वमति कल्प-नाए नथी कह्युं ॥ १९ ॥

गाथा–असंख्य लोका काशनाजी, प्रदेशने परिमाण; एक षट्ट स्थानक उपरेजी उठे वली षट्ट ठाण० गुणोद्धि० मेरु०॥ २०॥

भावार्थः—एक चौद्राज प्रमाण लोकछे एवा असंख्याता खोकाकाशमां कल्पीये तेना जेटला पूर्वे आकाश प्रदेशनो समुह तेटला प्रदेशने परिमाणे उक्तंच ॥ छ ठाणग अवसाणे, अझं छठाणयं पुणो अझं; एव मसंखा लोगा, छ ठाणाणं मुणेअवा ॥ १ ॥ एक प्रथम मूल षद् स्थानक उपर उपर वली बीजा षद्ग स्थानक उपर जे एतावता असंख्याती वार उपर उपर षद्ग स्थानक थायइं इति ॥ २०॥

अर्थ सहित

स्तवनम्

र्रु गाथा–एह संयम गुण ठाणमांजी, जे वर्ते मुनि सोय; वंद्य अपर भजना पणेजी भाष्य कल्पमां जोय० गुणोदिध० मेरु० ॥ २१ ॥

भावार्थः—एह संयम गुणठाण क॰ चारित्र गुणना स्थानकमां एटले छट्टा गुणठाणाना आदि स्थानकथी मांडी असंख्यात चारित्र रूप चरम स्थान पर्यंते तेहमां जे मुनिराज वर्तेछे ते वांदवा योग्य पण वेषमात्रतुं प्रयोजन नहीं उक्तंच ''वेसो विअप्पमाणो, असंजमए सुमाणस्स; किं परि अत्तिय वेसं, विसंन मारेइ खर्जातं इति ॥१॥ अपर क०बीजा संयम श्रेणीथी बाह्य ते भजनाए वंद-नीक एतावता कारणे वांदवायोग्य छे कारण विना नहीं ए अर्थ बृहत्कल्प भाष्यमां जोवो उक्तंच "संयम ठाण ठियणं किइकम्मे बाहिराणं भइयवं इति ॥ २१ ॥

गाथा-षद्र स्थानिक संयम तणाजी, कहेतां स्तवतारे वीर; खिमा वीजय जिन भक्तथी जी, उत्तम छहे भव तीर० गुणोद्धि० मेरु० ॥ २२ ॥ भावार्थः—षद् स्थानक नाम अनन्त भाग वृद्धि १ असंख्य भाग वृद्धि २ संख्यात भाग वृद्धि ३

संख्यात गुण वृद्ध ४ असंख्यात गुण वृद्ध ५ अनंत गुण वृद्धि ६ इहां भाग तथा गुण कुण संख्याए ते जाणवा ने आगम गाथा ''सब जिए हिं अनंतं, भागं च गुण असंख; लोगेहिं जाण असंखं, संखं संखी ज्जेणं च जिठेणं ॥ १ ॥ एहनो अर्थ इहां षट्ट स्थानक ने विषे अनंत भागने अनंत ग्रण सर्व जीवें जाण असंख भाग तथा असंख्याता लोकाकाश प्रदेशे संख्यात भाग तथा संख्यात ग्रण उत्क्रष्ट संख्याए तथाही-जे संयम स्थानक अनंत भागे वृद्ध पामे ते पाछला संयम स्थानकनां जे अविभाग तेहनुं सर्व जीव संख्या प्रमाणे भाग हरे ते जेटला लाभीये तावत् प्रमाण अनंत भागे अधिकुं जाणवुं जे असंख्यात भाग दृद्ध ते पाछिला संयम स्थानिकना निर्विभाग असंख्य लोका काहा प्रदेश प्रमाण भाग हरे ते जें पामीए तावत् प्रमाण असंख्ये भागे अधिकुं जाणवुं जे असं-ख्यात भागे वृद्ध ते पाछला संयम स्थानकना अविभाग तेहनुं उ० संख्यातक राशिं भाग हरता जे लाभे तेटले संख्यात भागे अधिकुं जाणवुं जे संख्या गुणे वृद्ध ते पाछला संयम स्थानना जे निर्विभाग उ० संख्यात गुण राशि गुणता थाय तावत् प्रमाण जे असंख्यात गुण वृद्ध ते पाछला अर्थ सहित

स्थानिकनाज अविभाग तेहने असंख्याता गुणा करीए तावत् प्रमाण जे अनंत गुण वृद्ध ते पूर्व संयम स्थानकना विभाग सर्व जीवा नंतकारे गुणीए तावत् प्रमाण एह संयमनां षट्ट् स्थानक क० संयम श्रेणी गर्भित वीर परमेश्वर स्तवता तथा वली क्षमागुणे करीने विजय कर्यों छे मोह ते जेणे यतः अणुत्तराए खंतिएत्ति वचनात् एहवा जिन क० वीतराग श्री वीरखामी तेहनी भक्तिथी उत्तम जीव भवसमुद्रना पार पामे सिद्ध परमेश्वर थाय एतावता पंडित श्री क्षमाविजय गणि तत् शिष्य पं० जिनविजय गणि तेनी भक्तिथी उ० क० उत्तम विजय भवनो पार पामे प्पण जणाव्युं ॥२२॥ 📡 हवे पूर्वोक्त संयम स्थानक सुगम थाय ते माटे यंत्रनो ढाल वीर प्रभुनी स्तवना करतां थकां कहिये छीये॥ इति संबंद्ध॥

ढाल-२बीजी-स्रती महीनानी ॥ धीर पुरे एक शेठने पर्वदिने व्यवहार ॥ ए देशी ॥

।।१७१॥

वस्तु स्वभाव प्रकाशक भासित छोगा छोग, वीर जगत गुरु भोगवे रत्न त्रयीनो भोग; संयमना षट् स्थानक सक्षम बुद्धि गम्य, स्व परिववोधन हेते स्थापुं यंत्र सुरम्य ॥ १ ॥

भावार्थः—सद्सद्।दिक अनंत धर्मात्मक वस्तु खभाव तेह्नो प्रकाशक तथा केवल ज्ञान आदर्शमां भाख्योछे जे लोकालोक जेणे एवा श्री वीर परमेश्वर जगतनो ग्ररु भावरत त्रयीनो आस्त्राद अनुभवेछे ''सम्यग् ज्ञानं यथार्थाऽव बोधः" ''सम्यग् दर्शनं तत्त्वप्रतीतः" ''सम्यग् चारित्रं निज स्वरूप, रमण स्थिरता रूपं" इति रत्नत्रयी संयमनी षट् रुद्धिनां स्थानक तिक्ष्ण बुद्धिए गम्यछे ते माटे पोताने तथा परने समजाववाने काजे असत्कल्पनाए मनोहर यंत्रस्थापुंछुं तथा अनंत भाग वृद्धि स्थाने मीडां असंख्यात भाग वृद्धिस्थाने एकडा संख्यात भाग वृद्धिस्थाने बगडा संख्यात गुण वृद्धिस्थाने त्रगडा असंख्यात गुण वृद्धिस्थाने चोगडा अनंतगुण वृद्धि स्थाने पांचडा असत्कल्प-नाए चारमीडा ने अनंत भाग वृद्धि कंडक ४ एकडे असंख भाग वृद्धा इत्यादि संज्ञा ॥ १ ॥ गाथा-भाग अनंत रुद्दिना ठाण छे कंडक सार, छे यद्यपि ते असंख्य ठवुं तस

अर्थ सहित

र्दुं बिंदु च्यार; असंख भाग वृद्धिनुं स्थानक आगल एक, तस ठामे ठवुं एको मनधरी अतिहि विवेक ॥ २ ॥

भावार्थः—अनंत भाग वृद्धिना स्थानक भला कंडक मात्र अंग्रल असंख्य भाग मत आकाश प्रदेश प्रमाणे छे. यद्यपि ते अनंत भाग वृद्ध स्थानक असंख्याता छे तोपण असत् कल्पना ए चार बिंदु स्थापुंहुं एटले अनंत भाग वृद्ध कंडक पूर्व थयुं ते माटे आगल असंख्यात भाग वृद्धिनुं स्थानक एक आवे तेहने ठामे १ एकडो मनमां अत्यंत विवेक आणीने स्थापुंहुं पूर्वोक्त.स्थानकथी भिन्न पडवा निमित्ते एम सर्वत्र जाणवुं ॥ २ ॥

गाथा—चउ चउ बिंदु अंतर इम होय एकाचार, तदनंतर चउ बिंदु सघठां वीश उदार; आगळ भाग संख्यातह टिद्धितो, बीओ जाण, इम चउ बीआ ठवतां मीडां शत परिमाण ॥ ३ ॥ े अर्थ सहित

ठविति आच्यार ॥ ४ ॥

भावार्थः—वली आगल अनंत भाग वृद्धिना कंडक मात्र स्थानक थाय तेहने ठामे चार बिंदु स्थापीए आगल असंख्य भागनुं एक स्थानकछे ते माटे वली एकडो स्थापीए प्रीते चार चार बिंदुने आंतरे चार एकडा थाय पटले संख्य भाग वृद्ध कंडक थयुं ते वार पछी आंतरा रहित अनंत भाग वृद्धनुं कंडक आवे तेहने ठामे चार विंदु स्थापिए एटले सघला सरवाले चार एकडा अने वीश मीडां थयां आगल संख्यात वृद्धनुं स्थानक एक आवे तेने ठामे बगडे बगडा आवे तेवारे संख्यात भाग वृद्ध कंडक पूरुं थाय जाणनी स्थापना एरीते चार एकडा गर्भित वीसमीडां अनंतर संख्यात भाग वृद्धनो एक एक बगडो आणतां जेवारे चार बगडा आवे ते वारे संख्यात भाग वृद्ध कंडक पूरं थाय तेवार पछी वली चार एकडा गर्भित वीस मीडां आवे ॥ ३ ॥ गाथा-चउ बीआ वीस एक मीडां शत समुदाय, भागनी वृद्धि मांहि थयां हवे गुण रुद्धि कहेवाय; संख्यात गुणनी रुद्धिमां तीओ आदि उदार, इम सवि मीडां अंका विचे

अर्थ सहित

भावार्थः—संख्यात भाग वृद्धि पर्यंत सर्व समुदाये मीडां शत १०० एकडा वीस २० बगडा चार ४ एतावता संख्यात भाग वृद्धनुं कंडक १ असंख्यात भाग वृद्धना कंडक ५ अनंत भाग वृद्धना कंडक पचवीस २५ एटला स्थानक भागवृद्धिमां थयां हवे गुण वृद्धि मांहे थाय ते कहीए छीए हवे आगल संख्यात गुण वृद्धिनुं स्थानक आवे तेने ठामे एक त्रगडो स्थापीये एटले संख्यातगुण वृद्धि मांहि प्रथम उत्तम स्थान ३ जाणवुं एरीते वली चार बगडा वीस एकडा गर्भित शत मीडां अनंतर बीजो त्रगडो आवे इम चार त्रगडा थाय ए चार त्रगडे संख्यात गुणे वृद्ध रूप कंडक पूरुं थयुं चोथा त्रगडाने अनंतर वली चार बगडा वीस एकडा शत मीडां थापीये ॥ ४॥ गाथा-वीस बीआं रात एका पणसय बिंदु मान, असंख्यात गुण वृद्धिनो चोको धुरि मंडाण; इम चउ चोका आणतां त्रिक वीस द्विक शत जोय, पंचमय एकडा मीडां पच-वीस सय होय ॥ ५॥ भावार्थः—सर्व मली संख्यात ग्रुण वृद्धि पर्यंत त्रगडा ४ बगडा २० एकडा शत १०० मीडां

श्रेणीनुं स्तवनम् ॥१७३॥ पांचसे ५०० एतावता संख्यात वृद्धिनुं कंडक १ संख्यात भाग वृद्धिनां कंडक ५ असंख्यात भाग वृद्धिना कंडक १२५ ते वार पछी असंख्यात गुण वृद्धिरूप प्रथम स्थानकनो चोगडो मांडीये एरीते चार त्रगडा वीस बगडा एकागये थके बीजो चोगडे चार चोगडाथाय एटले शत १०० सिहत मीडां ५०० मांडीए ए परीपाटी असंख्यात गुण वृद्धनुं कंडक पूरुं थयुं चोथा चोगडाने अनंतर ४ चार त्रगडा २० बगडा १०० एकडा ५०० मीडां स्थापीए सर्व बगडा शत १०० एकडा एतावता असंख्यात गुण वृद्ध मली चोगडा चार त्रगडा २० ५०० मीडां पचवी-ससें २५०० कंडक १ संख्यात गुण वृद्धिनां कंडक ५ संख्यात भाग वृद्धिनां कंडक २५ असंख्यात भाग वृद्धना कंडक १२५ अनंत भाग वृद्धिनां कंडक छतें पचवीस ६२५ थायछे॥ ५॥

गाथा–हवे अनंत गुण वृद्धि पदे ठिव पंचक चंग, पुनरिप पूरव रीते मीडां अंक सुरंग; तेवार पछी पंचक इम पंचक चउ जव थाय, आगे पण पचवीससे मीडां अंक कराय ॥ ६॥ भावार्थः—हवे अनंत गुण वृद्धि पदे कहेतां अनंत गुण वृद्ध रूप प्रथम स्थानकने ठामे एक अर्थ सहित

संयम श्रेणीन् स्तवनम

पांचडो स्थापीये फरी पण पूर्वनी रीतिए चोगडा चार ४ त्रगडा वीस २० बगडा शत १०० एकडा ५०० गर्भित मीडां २५०० स्थापीये तेवार पछी बीजो पांचडा स्थापीये ए रीते अनुक्रमे जे वारे पांचडा चार थाय ते वारे अनंतगुण वृद्ध कंडक पूरुं थाय आगलपण चोथा पांचमाने अनंतर चोगडा ४ त्रगडा वीस २० बगडा शत १०० एकडा पांचसे ५०० युक्त मीडां पचीसें २५०० करीए एटले एक षट स्थानक पूरं थयुं षद स्थानक मध्ये आंक तथा मीडांनी संख्या आवीते पश्चानुपूर्वीए कहीए छीए॥ ६। गाथा-पांचडा चोगडा त्रगडा बगडा एकडा बिंदु, षट् स्थानकनां यंत्रनी संख्या कहे जिन चंद; चउवीस सय पणसय पचवीस सय सार, अंक मीडां गणतां साढाबार हजार ॥७॥ भावार्थः--पांचडा तथा चोगडा तथा त्रगडा तथा बगडा तथा एकडा तथा मीडां तेहना समुदाय रूप पट्ट स्थानकना यन्त्रनी संख्या जिनचंद्र एवा ऋषभादिक कहे हे वीर परम इश्वर? तेम तमे फरसी पांचडा चार ४ चोगडा वीरा २० त्रगडा शत १०० बगडा पांचसें एकडा पचवीसें मीडां गणतां साढाबार सहस्र १२५०० सरवाळे थयां एतावता अनंत ग्रुण वृद्ध कंडक १ असंख्यात ग्रुण वृद्ध कंडक ५ संख्यात

स्तवनम् 1186811

गुण वृद्ध कंडक २५ संख्यात भाग वृद्धना कंडक १२५ असंख्यात भाग वृद्धना कंडक ६२५ अनंत भाग वृद्धना कंडक एक त्रीशसेंने पचवीश सरवाले ३९०६ कंडक थयां ए सर्व यंत्र प्रमाणे असत्कल्प-नाए लख्युंछे परमार्थ रीते आगली ढालमां कहिए छीए॥ ७॥

गाथा-संयम श्रेणिमां श्रेण क्षपक लही शुक्रध्यान, घाती कर्मनो क्षय करि पाम्या पंचम ज्ञान; प्रवचन सारनी वृत्तिमां यंत्रनी ठवणा दीठ, खिमाविजय जिन वयणथी उत्तम चित्त पविठ ॥ ८ ॥

भावार्थः —संयम श्रेणि आरोहतां अनुक्रमे क्षपक श्रेणी मांहि ग्रुक्कध्यान पामीने घातीआं चार ४ कर्म क्षय करतां यथाख्यात चारित्र केवलज्ञान–केवलदर्शन रूप रत्नत्रयी पाम्या तद अनुक्रमें यथा– अप्रमत्तगुणठाणे अनंतानुबंधी चार ४ दर्शनमोहनीय त्रिक त्रण ३ एवं सात प्रकृति क्षय करी अपूर्व करण 🖔 ॥१७४॥ अनिवृत्ति गुणठाणे चढ्या अनिवृत्तिना प्रथम भागने अंते १६ सोल प्रकृति खपावे तेनां नाम ''थावर तिरि निरया यव, दुग थिण तिगेग विगल साहारं;" बीजे भागने अंते अप्रत्याख्यानीया चार ४ प्रत्या-

ख्यानीया चार ४ एवं आठ प्रकृति खपावे त्रीजे भागे नपुसक वेद चोथे भागे स्त्रीवेद ततः पंचमें भागे हास्यषट्क छट्टे भागे पुंवेद सातमे भागे संज्वलन क्रोध अष्टमे भागे संज्वलनमान नवमे भागे संज्वलनमाया, एटले नवमे ग्रणठाणे २० वीश खपावे दशमे ग्रणठाणे लोभ शुक्क ध्याननो प्रथक्त्व वितर्क सविचार रूप प्रथम पायो ते रूप अनले करी सकल मोहनीय भर्मसात् करे पछी क्षीण मोह गुणठाणो चढे क्षायिक चारित्रवान् थाय तिहां एक ''त्ववितर्क, अविचार रूप शुक्कध्याननो बीजोपायो अनुभविने द्विचरम समय निद्रा दुग खपावी चरम समये ज्ञानावरणीय पांच ५ दर्शनावरणीय चार ४ अंतराय पांच ५ एवं चौद १४ प्रकृतिने क्षये अनंत चतुष्ट्यी विभूषित सिद्धिवधु योग्य थाय छे" इति ॥श्री सिद्धसेन दिवाकरकृत प्रवचन सारोद्धारनी वृत्तिमांहे षट्ट स्थानकनी यंत्र स्थापना दीठी ते क्षमाए उपलक्षित दशविध धर्म तेणे करी विशेषे जयवंता जिन कहेतां श्रुतकेवली अवधि जिन मनः पर्यव जिन एवा सुधर्मा खामी तेनां वयण कहेता वर्त्तमान आगम तेहथी उत्तम साधु-साध्वीने फरसन रूपें तथा उत्तम श्रावक-श्राविकाने श्रद्धा रूप संयम श्रेणी चित्तमां पेठी एटले पंडित

अर्थ सहित

जां. ३

संयम-श्रेणीनुं स्तवनम् ॥१७५॥ श्रीखिमाविजय गणि शिष्य रत्नपं० श्रीजिनविजयगणिनां वचनथी मुनी उत्तमविजयना चित्तमां यंत्रनी स्थापना पेठी. स्थिरपणे रही.

''इति श्री प्रथमढाले षट्स्थानकप्ररूपणा समाप्तम्"

ढाल—३—त्रीजी ॥ धन्य पूरमारे दोठ धनेश्वर ग्रुभमित ॥ एकवीसानी ए देशी ॥ अतम रामीरे शिव विसरामी नित्य नम्रं, प्रभूजी स्तवतारे पाप पोताना निगम्रं; षड् द्रिस्थानकरे जे अहठाण परुपणा, सुणो सयणारे वयणा कल्पनी भाष्यनां ॥ १ ॥

भावार्थः—बीजी ढालनी यंत्र स्थापना करतां स्थूल बुद्धिने पण सुखे समजाय हवे एकांतरादिक मार्गणा कोइ पूछे तेने सुखे कही शकीए तेमाटे वीरप्रभुनी स्तवना करतां थकां अधस्तन स्थान प्ररूपणानी ढाल कहिए छीए.

''शुद्ध निर्मेल निःकलंक आत्म स्वभावी रमण शील निरूपद्रव स्थान क्षेत्रथी उर्द्ध लोकाय

अर्थ सहित

॥१७५॥

भावथी निरावर्ण स्थाननें विषे विशरामी एवा श्री वीरप्रभुने नित्य प्रत्यें नमुं. प्रभुजीनी स्तवना करतां थकां अनेक भवोपार्जित पोताना कर्च्यां क्षीरनी पेरे अभेद रह्यां जे पाप कर्म ते निगमुं प्रभो नमस्कार स्तुति फलम् उत्तर इव संयमनां षड् स्थानकने विषे जे अनंतरएकांतरादिक अहठाण प्ररूपणा छे ते हे सयणा हे सम्यग्दृष्टि उत्तमजीवो तमे सांभलो ए वचन श्रीबृहत्कल्प-भाष्य वृत्तिनां छे॥ १॥

त्रुटक—आदि असंख्य अंस दृद्धिथी कहो भाग अनंतर अंश केटलां, हेठ स्थानक इम पुछत कहिए कंडक जेटला; भाग संख्यातह गुणसंख्याते असंख्य अनंतह गुण वली, तस प्रथमथी कहे अध अनंतर कंडक माने केवली ॥ २॥

भावार्थः — असंख्यात भाग वृद्धनां प्रथम संयम स्थानकथी हे उत्तमजी कहो अनंत भाग वृद्धनां है हेठलां स्थानक केटलां गयां एवीरीते कोइजीव पूछे त्यारे कहिए जे एक कंडक जेटलां गयांछे तेमाटे

113७६॥

अनंत भाग वृद्ध कंडकने अनंतर जे असंख्याता भाग वृद्धिनुं प्रथम स्थानक थयुंछे इम माटे ते संख्याता भागनां प्रथम स्थानकथी असंख्य भाग वृद्धनां स्थानक तथा संख्यात ग्रण वृद्धनां प्रथम स्थानथी संख्यात भाग वृद्धनां स्थानक तथा असंख्यात ग्रण वृद्धनां प्रथम स्थानथी संख्यात ग्रण वृद्धिनां स्थानक तथा अनंत ग्रण वृद्धिनां प्रथम स्थानकथी असंख्यात ग्रण वृद्धिनां स्थानक कोइ पुछे त्यारे सर्वत्र हेठल आंतरा रहित मार्गणाये कंडक प्रमाणे संयमस्थानक केवली कहे—यदुक्तं (पंचसंग्रहे) सवासं वृद्धिणं कंडक मेत्ता अनंतरा वृंड्डीइ—अनंतर मार्गणा हवइ ॥ २ ॥

गाथा—एकांतर रे मार्गणा सुणो सिव संतरे, भागे संख्याते रे मूल स्थानकथी तंतरे; हेठे स्थानक रे भाग अनंतनी भाखीए, एक कंडक रे कंडक वर्ग ते दाखीए॥३॥

भावार्थः—हे सर्व संतो ? एकांतर मार्गणा तमे सांभलो एकांतर मार्गणा ते एकवृद्धि विचाले मुकीने पूछवो–संख्यात भाग वृद्धनां मूल स्थानकथी प्रथम स्थानकथी हेठल अनंत भाग वृद्धिनां अर्थ सहित

११९६॥

स्थानक केटलां गयां एम कोइ एकांतरे पूछे ते वारे एम प्रकाशीये—एक कंडक अने कंडकवर्ग प्रमाण जे माटे हेठल असंख्य भाग वृद्धिनां स्थानक कंडक मात्र गयांछे—अने एक एक असंख्य भाग वृद्धिनां स्थानने हेठल एक एक अनंत भाग वृद्धनुं कंडक गयुंछे असंख्यात भाग वृद्धनां स्थान कंडक ॥ ३॥

त्रुटक—दाखीए ग्रण संख्यातथी वली असंख्य अनंत गुणथी तथा, पढम ठाणथी एक अंतर कंडकवर्ग कंडक यथा; ''इत्येकांतर मार्गणा" एक अंतर मार्गणा कही सुणो इयंतर मार्गणा, संख्यात गुणथी हेठे स्थानक अनंत भागनां ग्रुभमना ॥ ४ ॥

भावार्थः—एमवली संख्यातगुण वृद्धनां स्थानकथी असंख्यातभाग वृद्धनां स्थानक तथा असं ख्यातगुण तथा अनंतगुण वृद्धिनां प्रथम स्थांनकथी हेठल संख्यातभाग वृद्धिनां तथा संख्यातगुण वृद्धिनां स्थानक एकांतरमार्गए केटला पामीये एम कोइ पूछे ते वारे एम कहीएजे कंडक वर्ग अने अर्थ सहित

110011

उपर एक कंडक जेम पूर्वे कह्यांछे तेम समजवा. इति एकांतर मार्गणा ॥ यदुक्तं पञ्चसंप्रहे—एगंत राओ बुद्धिए, वग्गो कंडस्स कंडंच ॥ ए रीते एकांतर मार्गणा कही, हवे झ्यंतर मार्गणा सांभलो स्तवनम् हिंदांतरमार्गणा ते बेग्न्छ बिचाले मुकीने पूछीए संख्यात ग्रुणनां प्रथम स्थानकथी अनंत भाग वृद्धिनां स्थानक केटलां ते हे ग्रुभमन ? कहीए छीए ॥ ४ ॥

गाथा-कंडक घनरे कंडक वर्ग दुगुण करो, एक कंडक रे तस संख्या मनमां धरो दग अंतर रे असंख्य अनंत गुणथी लह्यां, अधः स्थानक रे पूरव परे जाणो कह्यां॥ ५॥

भावार्थ कंडक घरना कंडकवर्ग २ इहां संख्यात ग्रण वृद्धनां प्रथम स्थानकथी हेठल प्रत्येके एक एक संख्याता भाग वृद्ध स्थानक ने हेठल प्रत्येके एक एक कंडक अधिक कंडक वर्ग अने एक कंडक पामीए-ए सर्व भेला करतां संख्या थाय ते मनमां धरो एकवर्ग अनंत भाग वृद्ध स्थानकनो पामीए अने संख्यात भाग वृद्धि स्थानक कंडक प्रमाणछे ते वास्ते कंडक वर्ग जे वारे एक कंडक-साथे ग्रुणीए ते वारे कंडक घन थाय अने एक कंडक छे तेने कंडक साथे ग्रुणीए ते वारे कंडक

वर्ग थाय अने संख्यात भाग वृद्ध स्थानक हेठल कंडक वर्ग १ ? अने एक कंडक पामीए ए सर्व भेला करतां सूत्रोक्त प्रमाण थाय इम आगल दुगंतर मार्गणाये असंख्यात गुण वृद्धनां प्रथम स्थान कथी तथा अनंत गुण वृद्धना प्रथम स्थानकथी यथाक्रमें हेठल असंख्यात भाग वृद्धनां तथा संख्यात भाग वृद्धनां संयम स्थानक पूर्वे जेम कह्यांछे तेम जाणो यदुक्तं पंचसंग्रहे—कंड कंडस्स घनोवग्गो—दुगुणो दुगं तराएउ ॥ इति इयंतर मार्गणा ॥ ५ ॥

त्रुटक-त्रिके अंतर कोइ पूछे आदि असंख्य गुण वृद्धिथी, हेठे भाग अनंत केरां ठाण कहो गुरु वयणथी; कंडक वर्गनो वर्ग कीजे कंडक घन त्रिक उपरे, कंडक वर्ग त्रिक एक कंडक होय ते मनमां धरे ॥ ६ ॥

भावार्थ—हवे त्रीकांतर मार्गणाए कोइ पूछे एटले त्रण वृद्धि विचाले मूकीने प्रथम जे असंख्य गुण वृद्धनुं स्थानक तेहथी हेठल अनंत भाग वृद्धनां स्थानक केटला गया ते कहो सुविहित गीतार्थ अर्थ सहित

गुरुनां वचन जाण्या होय ते एक कंडक वर्ग वर्ग एटले जेम असत् कल्पनाए चारआंकने कंडक स्थापी तेनो वर्ग करतां सोल थाय तेनो वर्ग करता २५६ थाय ए रीते असंख्यातानुं समजवुं-उपर वली कंडक घन त्रिण ३ तथा वली कंडक वर्ग ३ त्रिण वली उपर एक कंडक होय ते सर्व उत्तम श्रद्धा सहित मनमां राखे ए संख्या केम जाणीये जे माटे प्रथम असंख्य गुण वृद्धनां स्थानकथी हेठल संख्यात गुण वृद्धनां स्थानक कंडक माने गयाछे–तिहां एक एक स्थानक्रने हेठल प्रत्येके अनंत भाग वृद्धनां स्थानक कंडक घन १ कंडक वर्ग २ कंडक प्रमाण पामीए ते माटे पर्वने कंडक ग्रुणा करीने सर-वालो करी राखीए संख्यात गुणा वृद्ध कंडकने उपर कंडक घन १ कंडक वर्ग २ एक कंडक छे ते पूर्व राशिमां प्रक्षेपीए तेवारे यथोक्त मान थाय यदुक्तं पञ्चसंग्रहे "कंडस्सवग्ग वग्गो घण व ग्गाति ग्रणिया कंडं" इति ॥ ६ ॥

गाया–छठा वृद्धिनारे पहेलां ठाणथी हेठलां, बीअवृद्धिनारे स्थानक पूरव जेटलां;

अर्थ सहित

इति त्रिकांतर मार्गणा ॥ चउरंतररे अनंत गुणादिम ठामथी, हेठे स्थानकरे भाग अणंतना मानशी ॥ ७ ॥

भावार्थः—इम छठी अनंत ग्रण दृद्धना पहेलां स्थानकथी हेठल बीजा दृद्धना असंख्यात भाग दृद्धना स्थानक पण पूर्वे जेटलां एटले त्रिकांतर ( दृद्ध ) मार्गणानां अनंतर कर्यांछे तेटलां जाणवा इति त्रिकांतर मार्गणा—चउरंतर मार्गणाने विषे अनंत ग्रण दृद्धनां आदिम कहेतां प्रथम स्थान कथी हेठलां स्थानक अनंत भाग दृद्धनां प्रमाणथी केटलां छे ते आगल कहे छे॥ ७॥

त्रृटक—परिमाणथी ते अष्ट कंडक वर्ग वर्गा षड् ठाणा, चार कंडक वर्ग आगल एक कंडक सोभना; इति चतुरंतर मार्गणा ॥ पर्यवशाननी मार्गणा ते षट्स्था-नक पूरें करे, मूलथी संयम ठाण फरसी वीरविभृ केवल वरे ॥ ८ ॥

भावार्थः—ते परिमाणथी आठ कंडक वर्ग कंडक संज्ञा ४ ने तहुणो वर्गः १६ वर्ग कंडक ग्रुणोघनः

अर्थ सहित संयम-श्रेणीनुं स्तवनम् ॥१७९॥ ६४ वर्ग वर्गो २५६ घन कंडक ग्रुणोपि २५६ यथोचित स्थानके संख्या करवी—वर्ग ८ तथा छ कंडक घन ६ तथा चार कंडक वर्ग ४ तथा उपर एक कंडक १ शोभन संयम परिणाम रूप छे ए केम जाणीए जे माटे अनंत ग्रुण वृद्ध प्रथम स्थानकथी हेठल असंख्य ग्रुण वृद्धनां स्थानक कंडक प्रमाण गयाछे अने असंख्यगुणनां एक एक स्थानकने हेठल अनंत भाग वृद्धनां स्थानक कंडक वर्ग १ कंडक घन ३ कंडक वर्ग ३ कंडक १ प्रमाण पामीचे ते माटे ए सर्वने कंडक ग्रणा करी जे थाय ते सरवालो करी राखीए असंख्य ग्रुणवृद्धने उपर कंडक वर्ग १ कंडक वर्ग ३ कंडक १

पामीए ते पूर्व राशिमां प्रक्षेपीए त्यारे यथोक्त मानथाय यदुक्तं-पंचसंग्रहे-''अड कंडक वग्गा, चत्तारि वग्ग छग्घना कंडं; चउ अंतर बुढ्ढीए, हेठठाण परूवणाए १ ॥" इति चतुरंतर मार्गणा ॥ हवे पर्यवशाननी मार्गणा कहेछे पर्यवसान एटले छेहडो तेनी मार्गणा ते षट्ट स्थानक पूरे थये जाणवी मूळथी कहेतां धुरथी संयम स्थानक फरसी वीर परमेश्वर जगतनां नायक केवळ ज्ञान वरे॥८॥

अर्थ सहित

गाथा-उपर मध्यथीरे संयम स्थानक जे भजे, ते नियमारे हेठ उत्तरी पुनरिप सजे अंतर्मुहूर्त्तनीरे बुढ्ढी हानि ठाणमां, हुए मुनिनेरे ज्ञानी देखे ज्ञानमां ॥ ९ ॥ भावार्थः -- उपरलां संयम स्थान तथा वचला संयम स्थानक अनुक्रमे फरसे ते निश्चये करीने हेठो उतरीने कालांतरे पुनरिप वली सजे सावधान थइ संयम श्रेणि पामे यदुक्तं-''अंतो मुहुत्त मित्तंपि, फासियं हुज जेहिं सम्मत्तं; तेसिं अवह पुग्गल, परिअद्दो चेव संसारोँ ॥ १ ॥ तो संयम पाम्यानुं स्युं कहेवुं अंतर्मुहूर्त्त काल प्रमाणे अथस्तन संयम स्थानकथी उपरितन संयम स्थानारोह रूप वृद्धि तथा उपरितन स्थान थकी अधस्तन स्थानावरोह रूप हानि मुनिने थाय हे ज्ञानवान् वीर परमेश्वर ते तमे देखोछो यदुक्तम्—कल्पभाष्ये गाथा द्रयम् "एयं चरित्त सेढिं, पडिवजङ्ग हेठ कोइ उवरिंव; जे हेठा पडिवजइ, सिष्नइ णियमा जहा भरहो ॥ १ ॥ मन्ने वा उवरिंवा, नियमा गमणं तु हेठि मंठाणं; अंतो मुद्धुत्त बुड्डी, हाणि विते हेव नायव ॥ २ ॥ इति ॥ ९ ॥ त्रुटक-अप्पबहुअ विचार करतां अनंत गुणना थोअडा, तेहथी गुणह

अर्थ सहित

1196011

किरां कंडक वर्ग कंडक भलां; पाछानुपूबिं बुढ्ढिं उत्तर एहनां भावीए, खिमाविजय जिन दिल्ला उत्तम भक्ति भावे पावीए॥ १०॥

भावार्थः—अल्प बहुत्वनो विचार करतां अनंत गुण दृद्धिनां संयम स्थानक सर्वथी थोडा जाणवा तेथी असंख्यात गुण दृद्धनां संयम स्थानक कंडक वर्ग अने कंडक जेटलां एटले परमार्थे असं ख्यात गुणा पश्चानुपूर्वीए दृद्ध आगल आगल एरीते भावीए ए सर्वत्र अनंतर दृद्धि स्थान असंख्यात गुणा भाव इति खिमाविजय जिन कहेतां श्री वीर परमेश्वर तेनां चरण कमलनी उत्तम विधियुक्त भक्तिना महिमाथी पामीए संयम श्रेणि भव निस्तार थइए ॥ १० ॥

सर्वगाथा-४०-

कल्डा—राग धन्याश्री—गायो गायोरे भलें वीर जगत गुरु गायो ॥ ए आंकणी ॥ संयम श्रेणि स्थानक षड्विध, ठवणा यंत्र बनायो; अहठाण प्ररूपणा करतां, मनुज जनम फल पायोरे—भलें० ॥ १ ॥ अर्थ सहित

भावार्थः—संयम श्रेणिनां स्तवननी संग्रह गाथा कहेतां कलश रचीये छीये तेमां प्रथम ढाले संयम श्रेणिनी षड्स्थानक प्ररूपणा बीजी ढाले यंत्र स्थापना त्रीजीढाले अहठाण प्ररूपणा करतां मनुष्यजन्मनो फल प्राप्त कर्यो ॥ १ ॥

गाथा–शुद्ध निरंजन अलख अगोचर, एहिज साध्य सुहायो; ज्ञानिक्रया अवलंबि फरस्यो, अनुभव सिद्ध उपायोरे–भले०॥ २॥

भावार्थः—ग्रुद्ध निरावर्ण निरंजन राग द्वेष अंजन रहित अलखक० लिपि अंगोचर जे स्वरूप चरम चक्षुये जणाय नहीं एहवो परमात्मा स्वरूपानंद विलासी परभाव उदासी तेहिज अमारो स्वरूप अमने साध्य सुहायो रूच्युं हे आत्मन् ! हे जीव ? ज्ञानिकया समय्रज्ञान सम्यग् क्रिया अवलं-बीने फरस्युं पाम्युं स्व स्वरूपना विचारमां मन विश्वराम पामे अने अपूर्वरस स्वाद उपजे एहवो जे अनुभव ते सिद्धनो उपायछे "नाण किरियाहि मुक्को" इति वचनात् ॥ २ ॥

अर्थ सहित

शां. ३१

गाथा–श्रद्धा ज्ञान छह्यांछे तो पण, जो नवि जाय पमायो; वंध्य तरु उपम ते पामे, संयम ठाण जो नायोरे–भछे०॥३॥

भावार्थ—हवे संयम श्रेणिनो महिमा कहीए छीए. सम्यग्दर्शन अने सम्यग्ज्ञान पाम्याछे तो पण जो प्रमाद स्थानक न जाय तो वांझीयां फल रहित वृक्षनी उपमां पामेछे. ( राजा श्रेणिकनी पेठे अथवा सत्यकी विद्याधरनी पेठे जो संयम स्थानके न आव्यो होय तो )॥ ३॥ गाथा—जिम खर चंद्रन भारनो वाहक, भारतो भोगी कहायो; तिणिपरे ज्ञानी

गाथा—जिम खर चंद्रन भारनो वाहक, भारतो भोगी कहायो; तिणिपरे ज्ञानी संयम हीनो, सद्गति ए निव जायोरे—भले०॥ ४॥ भावार्थः—जेम गर्दभक—गधेडो चंद्रननो भार धारण करतो छतो भारनोज भोगी कहेवायछे. किंतु ते चंद्रननी सुगंध तेने प्राप्त थती नथी. तेवीज रीते संयमथकी हीन ज्ञानी पण सद्गतिए जइ शकतो नथी. अर्थात् चारित्र विना एकला ज्ञानीने पण सद्गति प्राप्त थती नथी. यदुक्तम्—

अर्थ सहित

।।१८१॥

"जहा खरो चंदण भारवाही, भारस्सभागी नहु चंदणस्स; एवं खु नाणी चरणेण हीणो, नाणस्स

गाथां–आश्रव त्यागे संवर परिणत, अविरति सरव उठायो; स्व स्वरूपमां स्थिरता तेहिज, संयम ग्रुद्ध ठरायोरे–भले० ॥ ५ ॥

भावार्थः—संयमनुं मूळ खरूप कहीए छीए पंच आश्रवने त्यागे पंच संवर परिणत अविरति १२ ''मणकरणा नियमा छजिय वहो" ए बार अविरति अभावे खक–पोतानां खरुपमां स्थिरता रमण निश्चलता तेज शुद्ध संयम वीतराग आगममां ठरायोछे ॥ ५ ॥

गाथा–अनुभव सुरतरु फलने काजे, कीजे आतम अमायो; सन्मुख भावे जेह प्रव-र्त्तन, तेह निवर्त्तन दायोरे–भले०॥६॥

भावार्थः—अनुभव रूप जे कल्पवृक्ष तेनुं फल जे मोक्ष तेने माटे आत्मा माया रहित करवो. अथवा अनुभव सुखी जीवन मुक्तछे. यदुक्तम्—"निर्जितमदमदनानां, वाकायमनोविकार अर्थ सहित

11१८२॥

रिहितानां; विनिवृत्त पराशाना, मिहैव मोक्षः सुविहितानां ॥१॥"मोक्षने सन्मुख भावे प्रभु मार्गानुसारी के प्रवर्त्तन तेज भव निवर्त्तननो उपायछे ॥ ६ ॥

गाथा—ज्ञानिकया दुग चक्रे शोभित, संयम रथ सुखदायो; अनुभव धोरीयुत शिव नगरे; जातां विघ्न न थायोरे–भले०॥ ७॥

भावार्थः—ज्ञान क्रियारूपजे चक्र क० पैडुं तेणे करीने शोभित संयमरुपी रथ सुखदायीछे. अनुभवरुपी घोरीये जोडवो तदारुढक० त्यारे ते आत्मा चिदानंद शिवनगरे जतां निरावरण थतां विघ्न अंतराय न थाय ॥ ७ ॥

गाथा-राय सिद्धारथ वंश विभूषण, त्रिशला राणी जायो; अजअजरामर सहजा नंदी, ध्यानभुवनमां ध्यायोरे-भले०॥ ८॥

भावार्थः—उदितोदितराजा सिद्धारथना वंशनो विभूषण शोभावनहार शील सम्यक्त्व देश-विरति त्रिशला राणीए जन्म्यो. अपुनरायत्तिए योनि निर्गम थयां. हवे सिद्धावस्था कहीये छीये. अर्थ सहित

जन्म जरा मरण रहित सहज अक्तित्रम ख खरूपानंदी एवा श्री वीर परमात्मा हे भव्यो ! तमें ध्यान रुप भाव घरमां ध्यावो ॥ ८ ॥

गाथा-संवत् नंदन निधि मुनिचंद्रे, देव दयाकर पायो; प्रथम जिनेश्वर पारणदिवसे, स्तवना कलशचढायोरे-भले०॥९॥

भावार्थः—नंदक० नव, ९ निधिनव, ९ मुनि सात ७, चंद्र १ आंकना वामतउगित रिति वच-नात्–एटले संवत् १७९९ नां वर्षे देवदयानो करणहार पाम्यो अर्थात् तेनां शासनने पाम्या. प्रथम जिनेश्वर श्रीआदिनाथे वरसी तपनुं पारणुं इक्षुरसे श्रेयांसने हाथे कीधुं ते दिवसे संयम श्रेणि गर्भित श्री वीरप्रभुनां स्तवनरूप प्रासादे कलश चढाव्यो एटले पूरुं कीधुं. हवे आगली गाथामां ग्रुह्मी परंपरा जणावे छे.॥ ९॥

गाथा–विजय देव सूरीश पटोघर, विजयसिंह सवायो; सत्य शिष्यधर कपूरविजय विबुध, खिमाविजय पुण्य पायोरे–भले०॥ १०॥ अर्थ सहित

भावार्थः—श्री वीर स्वामीना पंचम गणधर अने पहेलां पटोधर श्रीसुधर्मस्वामीथी आठपाट हुं लगी निग्रंथ विरुद्ध धारी १ नवमेपाटे सूरीमंत्र कोटीवार जप्या माटे कोटिक बिरुद्ध धारी २ पनरमे पाटे चंद्रसूरी चंद्रवत् सघछुं सौम्यथाय तेमाटे त्रीजो चंद्रगच्छ कहेवाणो ३ सोलमे पाटे सामंत भद्राचार्य घणा निर्मम थयां. वनवासे रह्यां माटे वनवासी बिरुद ४ छत्रीशमे पाटे सर्व देवसूरि थया. वडतले आचार्य पद दीधुं. अने तेना साधु वडशाखा परिवारे तथा तेमनी साची ब्रहणिशक्षा आसेवनाशिक्षा धारी. अर्थात् पं० श्री सत्यविजयगणि गच्छ नायकनी आज्ञामागी कीया उद्धारकीधो. श्रीआनंदघनजीनी संघाते वनवासे रही अनेक तप कीर्धा. अनुक्रमे दृद्धाव-वस्थाजाणी अणहीलुपुर पाटणमां रहेतां धर्मोपदेश देतां देतां शिष्य थयां पं० श्री कर्पूरविजय पं० श्री कुशल विजय ए वे थयां तेमां पं० श्रीकर्पूरविजयगणि अर्हत् प्रतिमा प्रतिष्ठादि अनेक धर्म-कार्य करी प्रभावकथया. देश—नगर पुर पाटण विहार करतां करतां पं० श्रीवृद्धि विजय गणि— पं० खिमा विजयगणि ए वे शिष्य थयां. तेमांहि पं० श्री खीमा विजय गणि शिष्य.

अर्थ सहित

॥१८३।

गाथा–सूरत मांहिं सूरय मंडण, श्रीजिनविजय पसायो; विजय दयासूरी राजे जग-पति, उत्तमविजय मह्लायोरे–भले वीर०॥ ११॥

भावार्थः-श्रीसूरत बंदिरे श्रीसूर्यमंडण पार्श्वनाथनी स्मृति-प्रणति-महिमाए तथा पं० श्री खीमा विजय गणिशिष्य रत्न संप्रति वंद्यमान चिरंजीवी परमोपकारी पं० जिन विजयगणिए उद्यमकरी प्रथम अभ्यास कराव्यो. जेम मातिपता बालकने प्रथम पग मंडावे तथा बोलतां शिखवे तेम ग्रुरु आदिए उपगार कीधो श्रीतपागच्छाधिराज भद्दारक श्री विजय जगपित विजयदया-सूरीराजे जगपित जगत् परमेश्वर श्री वीरखामी मुनी उत्तमविजये मह्लाव्यो. गायो स्तवन गोचर कीधो. ए स्तवन अमछरी गीतार्थ सरणहोजो जे कोइ भणे अथवा भणतां भणावतां तेहने संयम श्री भूषित थइ सहजानंद मोक्ष सुखने पामे ॥ ११ ॥ सर्वगाथा-५१ ॥

"इति श्री सयमश्रेणि गर्भित श्रीवीरजिन स्तवन सम्पूर्ण"

अर्थ सहित श्री देवलोक ॥१८०॥

### ''अथ श्रीदेवलोक स्तवन"

दुहा—सरस वचन ये सरस्रति, लाग्रं सुग्रुस्के पायः देवलोक ते बारना, जिनबिंब चैल कहेवाय ॥१॥ सौधर्म देवलोक प्रथम, बीजुं इशानिक सारः सनत्कुमार त्रीजुं कह्यं, चोथुं माहेंद्र अपार ॥२॥ ब्रह्म देवलोक पांचमे, छ्रहे लांतिक जाणः सातमें शुक्र देवलोकछे, सहस्रार आठमें प्रमाण॥३॥ आनत नवमुं जाणीए, प्राणत दशमें स्वामः आरण इग्यारमे सहि, अच्युत बारमुं ठाम॥४॥ इत्यादिक बारे कह्या, देवलोक सुलकारः तेहनी रचना हवे स्तवुं, ते सुणजो भवि सार ॥५॥ ढाल-१-पहेली॥ नदीयमुनाके तीर उडे दोय पंखीया-ए देशी॥

सौधर्म देवलोक प्रथम कह्युं, जिनराज ए, बत्रीशलाख विमान प्रभुजीना सार ए; वली बत्री-शलाख प्रासाद सुहंकरु, लाख बत्रीश घंटा ते नादे अतिखरु ॥ १ ॥ क्रोड सत्तावन्न बिंब जिन-जीना कहुं, साठलाख उपर ते शाश्वता जिन लहुं; ए पहेला देवलोकनी संख्या सवि कही, हवे स्तवनम्

श्री देवलोक

बीजानुं वर्णन कहुं हुं ते सिह ॥ २ ॥ लाख अट्टावीस विमान प्रभु मुखे कह्या, लाख अट्टावीस प्रासाद सिव सुखे लह्या; क्रोड पंचास विंब छे शाश्वता एहवां, लाख चाळीश उपर ते मेरु जेहवां ॥ ३ ॥ बारलाख विमान त्रीजा देव लोकना, प्रासाद बारलाख कह्यां जिनराजना; एकवीश क्रोड ने साठलाख जिनवरा, बारलाख घंटा ते वाजे भिलपरा ॥ ४ ॥ आठलाख प्रासाद विमान पण आणीए, आठलाख घंटा ते भिवका जाणीए; चौदकोडी जिनविंब च्यालीस लाख उपरे, ए चोथा माहेंद्रंनी संख्या एणीपरे ॥ ४ ॥

ढाल-२-बीजी ॥ गोकुल मथुरारे वाला-ए देशी ॥

पंचमुं ब्रह्म देवलोक, भवि वंदो नरनारीना थोक; च्यार लाख विमान, लखच्यार घंटा तेह सयान–जिनजीने वंदो रे भविका ॥ ए टेक ॥ ॥ १ ॥ लखच्यार प्रासाद जाणो, जिनबिंब सात-कोड तेह प्रमाणो; वीशलाख उपर सार, संख्या कही छे अतिह उदार ॥ जिनजीने ॥ २ ॥ छठुं लांतिक अपार, सहस्सपचाश ते जाणो सार; प्रासाद पण इणीरीते, नेउलाख ने जिन बिंब जितो स्तवनम्

श्री देवलोव ॥१८५॥

॥ जिनजीने ॥ ३ ॥ शुक्र देवलोक सातमे, सहस्स चालीश विमानछे तेहमें; घंटा चालीश हजार, लाख बहोंतेर बिंब विस्तार ॥ जिनजीने ॥ ४ ॥ सहस्सार आठमुं कहीए, छ हजार विमान ते लहीए; जिन प्रासाद छ हजार, दशलाख सहस्स एंसि सार ॥ जिनजीने ॥ ५ ॥ ॥ ढाल-३-त्रीजी ॥ एकवार वच्छदेश आवजो जिणंदजी-एकवार ॥ ए देशी ॥ एकवार दरिशण दीजीए जिणंदजी,एकवार दरिशण दीजीए॥ देवलोकनां सुख दीजीए जिणंदजी॥ एकवार ॥ ए टेक॥ नवमुं आनतदेवलोक जाणो,तिहां बस्ये विमानछे जिणंदजी; प्रासाद बस्ये छे अति-मोटा, सहस्स छत्तीस जिणंद छे जिणंदजी॥ एकवार॥१॥ दशमें प्राणतछे ए भलेहं, बस्यें विमान ते सारछे जिणंदजी ॥ प्रासाद पण एहवी रीते, विंब छत्तीस हजारछे जिणंदजी ॥एकवार॥२॥ इग्यारमें आरणदेवलोके, दोढसो विमान अभंगछे जिणंदजी ॥ चैत्यादिक एणिविध जाणो, बिंब सहस्स पित्र सत्तावीस रंगछे जिणंदजी ॥ एकवार ॥ ३ ॥

स्तवताः

॥१८५॥

#### ढाल-४-चोथी॥ क्षण क्षण सांभरो शांति सल्लुणा-ए देशी॥

घडी घडी सांभरो देव सल्लुणा, जस करे सुरनर सेव सल्लुणा ॥ घडी घडी ॥ ए टेक ॥ बारमं अच्युत देवलोक जाणो, ते मांहे सुखकार सल्लुणा० ॥ दोढसो विमान ते राजे, दोढसो चैत्य जुहार सञ्जुणा ॥ घडी घडी ॥ १ ॥ सहस्स सत्तावीश जिनर्विब पूजो, दोढसो घंटा वाजे सञ्जुणा० ॥ चैत्य मध्यें जिनराजजी बेठा, वंदो जिनजीने राजे सल्लुणा० ॥ घडी घडी ॥ २ ॥ सर्व देवलोक बार मलीने, संख्या प्रासादनी कहुं सल्लुणा० ॥ चोरासी लाख ने छन्नुंहजार, सातसें प्रासाद ते लहुं सञ्जुणा० ॥ घडी घडी ॥ ३ ॥ प्रासाद्दिठ शतएंसि प्रतिमा, सर्वे मली कहुं सार सञ्जुणा० ॥ एक-सोकोड ने बावन्नकोड, लाख चोराणुं छ हजार सल्लुणा०॥ घडी घडी ॥ ४॥ इत्यादिक जिनव-रनी संख्या, कही सूत्र तणे अनुसंत सळुणा० ॥ पंडीत फत्तेहसागर तणोरे, पामे चतुर सुख अनंत सळ्ळणा० ॥ घडी घडी ॥ ५ ॥

स्तवनम्

श्री देवलोक ॥१८६॥

# ढाल-५-पांचमी॥ भमरा भुधरस्ये नाव्यो-ए देशी॥

पहेला घैवेयकनी संख्या, विमानसाडत्रीश आख्या; प्रासाद साडत्रीश भाख्या ॥ भिव जिव वंदिए जिनवरने० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तिहां जिनविंब सहस्स च्यार, उपर चारसेंछे प्यार; चालीस जिनवर सार भिव० ॥ २ ॥ सुद्र्शननी संख्या कही, बिजुं सुप्रभ नामे सिहः त्रिजुं मनोरम नामे लिह ॥ भिव० ॥ ३ ॥ ए त्रिकनी संख्या कहुं, एकसो इंग्यार विमान लहुं; एकसो इंग्यार प्रासाद सहु ॥ भिव० ॥ ४ ॥ तेरहजार जिन प्रमाणो, त्रणसें उपर वीश जाणी; एत्रीकनी संख्या आणी ॥ भिव० ॥ ४ ॥ सर्वतोभद्र चोथुं खामि, छत्रीस विमान ते शिवगामी; प्रासाद छत्रीश विसरामि ॥ भिव० ॥ ६ ॥ जिनवर सहस्स चार प्रतिमा, बसेंएंसि हर्षेष्ठं दिलमां; ए वर्णवता चतुर सूत्रमां ॥ भिव० ॥ ७ ॥

ढाल-६-छट्टी ॥ मारुजीनी ॥ बेडली नेणा बीच घूल रही-ए देशी ॥ जिनजी विशाल नामे पांचमुं कह्युं, तिहां पांत्रीश विमान हो जिणंदराया ॥ जिनजी ॥ पांत्रीस

स्तवनम्

श्री देवलोक

प्रासाद सुहंकर, चार सहस्स जिनमान हो जिणंदराया०॥१॥ जिनजी बसें जिन उपर जाणजो, पंचम प्रैवेयकनी सारहो जिणंदराया॥ जिनजी छट्टं सौम्यनामे प्रैवेयक भट्टं, विमान छत्रीश प्यारहो जिणंदराया॥२॥ जिणजी छत्रीश प्रासाद दीपता, चार सहस्स जिनराज हो जिणंद-राया॥ जिनजी त्रिक सयवीस जिन सार छे, छट्टा सौम्यनुं साज हो जिणंदराया॥३॥ जिनजी सौमनस नामे सातमुं, आठमुं प्रीतिकर जाण हो जिणंदराया॥ जिनजी आदित्य प्रैवेयक सुंदरुं, ए त्रिकनी संख्या आण हो जिणंदराया ॥ ४ ॥ जिनजी ए त्रिकनी संख्या कटुं, एकसो विमान सुखकार हो जिणंदराया ॥ जिनजी एकसो प्रासाद दीपतां, जिन विंब बारहजार हो जिणंदराया ॥ ५ ॥ जिनजी नवप्रैवेयकनी संख्या कहुं, त्रणसें अढार विमान हो जिणंदराया ॥ जिनजी त्रणसें अढार प्रासाद छे, एकसो वीश जिनमान हो जिणंदराया ॥ ६ ॥ जिनजी सर्व मली जिन बिंब कहुं, सहस्स अडत्तीस सार हो जिणंदराया ॥ जिनजी एकसो साठ पडिमा कही, फत्ते चतुर वारंवार हो जिणंदराया ॥ ७ ॥

स्तवनम

शां. ३२

ढाल-७-सातमी-न जाउंरे जमुना घाट एणी एणी वाटडीए-ए देशी॥ पहेळुं विजयविमान-भवि तुमे वंदोरे,जिम पामो सुख अपार-एहने नंदोरे॥ ए आंकणी॥ विजयंत विमान ते बीजुं जाणो, त्रीजुं जयंत ते साररे; अपराजित चोथुं कह्युं रे, सर्वारथ ते प्यार भवि० जिम १। ए पांचे विमान ते जाणी, पंच प्रासाद सुहावेरे; चैलदिठ एकसोवीश प्रतिमा, देखी आनंद पावे भवि० जिम ॥ २ ॥ हवे पांचे प्रासाद मळीने, बसें जिनबिंव जाणोरे; बार देवलोक ने नव यैवेयक, पांच अनुत्तर आण भवि०जिम॥३॥ लख चौराशी सहस सत्ताणुं, तेवीश प्रासाद साररे; ए सर्वे प्रासादनी संख्या, कहि सूत्रतणे अनुसार भवि० जिम ॥ ४ ॥ बावन्न सत्तकोड ने लख चोराणुं, सहस्स चुमाली प्रसिद्धरे; सातसें उपर साठ जाणो, जिनबिंब भवि सिद्ध भवि० जिम ॥ ५ ॥ इत्यादिकै जैनागममांहि, ए विवरों रसालरे; पंडित फत्ते सागर तणोरे, चतुर वचन टंकशाल भवि० जिम ॥ ६ ॥

कलञा—इम सयल सुखकर दुरित दुःखहर विमान चैत्य में गाइया, ग्ररु फत्ते सागर पसायथी

स्तवनम्

में जिह्वातणुं फल पाइया; धर्मवंत जडाव बाइ कहेणथी ए स्तव कर्युं, इम चतुर कहे ए स्तवनथी में भवतणुं पातिक हर्युं ॥ १ ॥

''इति श्री देवलोक स्तवनम् संपूर्णम्''

"अथ श्री वैमानिक जिन स्तवनम्"

ढाल-१-पहेली ॥ परमातमरेचिदानंदघनसारए ॥ ए-देशी ॥

सुखदायीरे सरसह जिणंद दयालरे, प्रेमे प्रणमीरे चउद भुवन भूपालरे; देवलोकेरे देवविमान संख्या भणुं, जिनमंदिररे जिनप्रतिमा तिहां संथुणुं;

त्रूटक—संथुणु सुधर्म देवलोके विमान बत्रीश लाख ए, बत्रीश लाख प्रासाद सुंदर घंट नाद कि दिस्त विमान कि दिस्त विमा

स्तवनम्

1135611

तेटलारे घंटानाद सुहामणा; पंचाश कोडीरे चालीशलाख बिंब मान ए, सनस्कुमार त्रीजेरे बार-लाख विमान ए ॥ त्रूटक—विमानमां बारलाख जिनघर बारलाख घंटानाद ए, एकवीसकोडीः साठीलाख जिनबिंब पूजे परमानंद ए; धनुष्य पंचशत देह उन्नत सप्तकर तनुमान ए, बेठा पद्मा-सन्न पंचरंग देहवान भगवान ए॥२॥ ढाल पूर्वली—माहेंद्र चोथेरे विमान तिहां आठलाखरे, प्रासाद तेटलारे घंटानाद जिन भाखीए; चौदकोडीरे चालीसलाख जिनवर तणी, मोहन मूरतिरे सुरत अति सोहामणी ॥ त्रुटक—सोहामणी ब्रह्मदेवलोके चार लाख विमान ए, प्रासाद चारलाख घंटानादा चारलाख सुजाण ए; सातकोडी वली वीसलाख जिनपडिमा जयकार ए, छट्टे लांतक विमान पंचास सहस्र संख्या धार ए ॥ ३ ॥ ढाल पूर्वली—जिनधामरे पंचास सहस्र वखाणीए, घंटानाद्रे सहस्र पंचास मन आणीए; नेउ लाखरे जिन पडिमा परमाणरे, ऋषभ चंद्राननरे वारिषेण वर्द्धमानरे ॥ त्रृटक—विमान सातमें शुक्रकल्पे, चाळीससहस्र सुरधाम ए, चाळीस सहस्र प्रासाद संख्या घंटानाद अभिराम ए; वहोंतेरलाख जिनबिंब मान आठमें सहस्रार ए,

स्तवनम्

विमान जिनग्रह घंट दीपे प्रत्येकें षट्रहजार ए ४ ॥ ढाल पूर्वली—एक लाखरे एंसी सहस्र जिन-बिंब ए, धरो ध्यानरे श्री जिननां अविलंब ए; आनत प्राणतरे सुरग्रह घंटला, प्रतिचारसें बहोंतेर सहस्र जिनवर भला ॥ त्रूटक—भला आरण अच्युते तिम विमान त्रणसें चित्तधरो, प्रासाद घंटा नाद त्रणसें प्रत्येकें पातिक हरो; चउपन सहस्र जिनराज प्रतिमा शाश्वित सूत्रे लही, प्रैवेयकादि विमान संख्या सांभलो कहीशुं सही ॥ ५ ॥

ढाल-२-बीजी ॥ नींदरडी वेरण हुइ रही-ए देशी ॥

नव प्रैवेयके सांभलो, पंचानुत्तर हो असमान विमान के—सुदंसण सुप्रबुद्ध मनोरम, प्रथम त्रिकें हो तस ए अभिधान के ॥ शाश्वत जिन चित्तमां धरो ॥ अंतरजामी हो आतम आधार के शाश्वत० अंतर० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विमान प्रासाद घंट रणझणे, प्रत्येकें हो एकशत इग्यार के ॥ तेरसहस त्रणसें वीश, जिनपडिमा हो पहेले त्रिक सार के ॥शाश्वत० अंतर० ॥ २ ॥ सर्वतोभद्र सुविशाल ए, धन्य सुमनस हो द्वितीयत्रिक एह के ॥ एकशत सात विमानमां, प्रासाद घंटला स्तवनम्

हो एकशत सात तेह के ॥ शाश्वत० अंतर० ॥ ३ ॥ बार हजारने आठसें, उपर चालीश हो जिन विंब उदार के ॥ सोमनस प्रीतिकर आदित्य, प्रैवेयके हो त्रितीय त्रिक सार के ॥ शाश्वत० अंतर० ॥ ४ ॥ सुरविमान घंटानाद ए, प्रासाद हो एकशत मनोहार के ॥ बार सहस्स जिनरा जनां, बिंब दीपें हो सुंदर श्रृंगार के ॥ शाश्वत० अंतर० ॥ ५ ॥ विजय विमान अवधारीए, बीजुं पभणुं हो विजयंत विमान के ॥ विजयंत अपराजित, सर्वार्थ सिद्ध हो पंचम अभिधान के ॥ शाश्वत० अंतर० ॥ ६ ॥ पंचविमान पंचानुत्तरें, प्रासाद घंटला हो पंच पंच विख्यात के ॥ षट्रशत जिनबिंब भेटीए, प्रह उठी हो निर्मल हुइ गावतो ॥ शाश्वत० अंतर० ॥ ৩ ॥ पंचसभा नहि जिनघरें, प्रैवेयके हो पंचानुत्तर ठामके ॥ एकसो वीश पिडमा तिहां, प्रतिचैत्यें हो पूजो सुखधाम के ॥ शाश्वत० अंतर० ॥ ८ ॥

ढाल-३-त्रीजी ॥ थाहरा मोहोला उपर मेह, झरुखेवीजली हो लाल-ए देशी दोलत दायक नायक श्री जिन सेवीएं हो लाल के श्री जिन सेवीए, उर्द्वलोके जिनमंदिर भावना स्तवनम्

भावीए हो लाल के भावना॥ लाख चोराशी सहससत्ताणुं उपरे हो लाल के०सत्ता०, त्रेवीश जिन-ग्रह शाश्वता भाख्या जिनवरे हो लाल के० भाख्या॥ १॥ एकसो आठ जिनविंव गभारे मूलगें हो लालके० गभारे० स्तूपत्रिक तिहां द्वाद्श तेजे झगमगे हो लालके० तेजे ॥पंच सभाए साठ तित्थंकर वंदना हो लालके० तित्थंकर, चैत्यअक्रेके एकसोएंसी जिन वंदना हो लाल के० एंसी ॥२॥ सो कोड बावन्न-कोड चोराणुंलाख मली हो लाल के॰ चोराणुं, सहस चुंआलीस सातसें साठ बिंब सवि मली हो हाल के० साठ ॥ उर्द्धलोके जिनपडिमा वंदन आचरो हो लाल के० वंदन, ऋषभादिक च्यारनाम संभारी चित्त ठरो हो लाल के० संभारी ॥३॥ शिर छत्रधर एक दो चामर धरा हो लाल के० दो,नाग जक्षभूत कुंडधर दो दो सुरवरा हो लाल के॰ दो दो॥जल कुंभसाही उभा मूलविंब आगलें हो लालके॰ मूल॥ एकाद्श सुरपडिमा प्रणमें परिकरे हो लाल के॰ प्रणमें ॥ ४ ॥ सकल कुशल सुरवेलि घनवन जल-एकाद्द्रा सुरपिंडमा प्रणमें परिकरे हो लाल के॰ प्रणमें ॥ ४ ॥ सकल कुराल सुरवेलि घनवन जल-धरु हो लालके॰ घनवन,सेवकजन मनवंछित पूरण सुरतरु हो लालके॰ पूरण॥श्री नाभिनरेसर नंदन वन अलज्यो हो लाल के० वनके० नीरागी निकलंक निरंजन तुं जयो हो लाल के० निरंजन ॥५॥ 🥻

स्तवनम्

श्ची वैमा निकजिन ॥१९०॥

गरीबनीवाजमहाराज अरज दिलमां धरो हो लाल के० अरज, सेवक जाणी आपणो प्रभु करुणा करो हो लाल के॰ प्रभु ॥ मात सहोदर साहिब माहरा हो लाल के॰ माहरा, तार तार भवसायरिज सुरजन ताहरा हो लाल के॰ सुरजन ॥६॥ बारिजामंडण आदिजिणंद सुपसाउले हो लाल के॰ जिणंद, वैमानिक जिन संयुण्या बहु उमाहले हो लाल के० बहु० ॥ संकट विकट दुःख दोहग दुरित दुरे टले हो लालके० दुरित, ऋदि सिद्धि धनवृद्धि सदा आवीमलें हो लाल के० सदा ॥ ७ ॥ कल्ठ्या—इय त्रिजगनायक सुखदायक बारेजापुर मंडणो, श्री रिसहेसर प्रथम जिनवर दुःख दोहग खंडणो ॥ संवत् विधुमुनि जलिध नगयुत पौसद्युदि बीज सुरग्ररो, कवि संघविजय बुध दिसी विनयी नेमी विजय मंगल करो ॥ १ ॥

॥ इति श्री वैमानिक जिनराज स्तवनं संपूर्णम् ॥

स्तवनम्

।।१९०॥

श्रीआठ कर्मप्र-कृति "अथ श्री आठ कर्मप्रकृति बोलविचारस्तवनम् लिख्यते"

दुहा—सकल मनोरथ पूरणो, वांछीत फल दातार; वीर जिणेसर नायको, जय जय जगदा २॥ शासननायक जगधणी, वीनतडी अवधार; बालक बुद्धे जे करुं, तुज आगल सुवीचार ॥ ३ ॥ तुज दरिशण विणु वीरजी, चउद राज मोझार; भमतां मुजने तुं मल्यो, हवे भवपार उतार ॥ ४॥ भमवाना कारण भणुं, तुं जाणे जिनरायः मुळ प्रकृति आठें अवर, अहावनसो थाय ॥ ५॥ 🖫 सत्तावन हेतें करी, कर्मबंध सुवीचार; बंधण बांध्यों चोर जिम, भमीओ जीव अपार ॥ ६ ॥ कर्म विपाक तणुं घणुं, अर्थ कह्यों ते जेह; गुरुमुखे श्रवणे सुण्यो, सुणजो भवीयण तेह ॥ ७ ॥ ढाल–१–प्रथम ॥ सारद् बुध दाइनी॥निज राक्तिने सारुं–उजमणुं करो वारु ॥ ए देशी। पहेळुं नाणावरणह-भेद पंचय मन आणुं, मतिश्चत अवधि तथा-वळी मनपज्जव जाणुं; केवळ नाणावरण-जेम लोयण पडिबीजें, नवभेद दर्शनावरण बीजुं ए पभणीजें ॥ १ ॥ त्रृटकः

बोलवि-चार स्तवनम् श्रीआठ कर्मप्र-कृति ॥१९१॥

अचक्खु अविष् तेम—केवल ए च्यार, द्रशननुं आवरण जेह—पण निद्दा विचार; निद्रासुख जागंतां जाणि—दुक्कों निद्रा निद्रा, प्रचला बेठा तेम कही—उभां जेह निद्रा॥२॥ हाल पूर्वली—प्रचला प्रचला तिम—सही चालंतां जेह, थीणद्धी निद्रातणुं—बल माण मुणेह; वासुदेवथी अरधुं—कहुं इम निद्रा- एंच, नवभेद द्रशणना—वरणवुं एहसंच ॥३॥ त्रूटक—सामने देखीउं जेह,द्रिशण पभणीजे,विशेषथी जाणीजे जेह, ते ज्ञान कहीजे; मधु खरडी असिधारा लिहन—समवेदनी कर्म, साता असाता दोयभेद जाणुं सहु मर्म ॥ ४ ॥

ढाल-२-बीजी ॥ पामी सुगुरु पसायरे दोत्रुंजा धणी-ए देशी ॥
हवे मोहनीय विचाररे, दिशण चारित्र; बिहुं भेद जिन ते कह्युं ए ॥ १ ॥ समिकत मिथ्या त्वरे, दिशण मोहनी; त्रिहुं भेदें इम जाणीएं ए ॥ २ ॥ क्रोध मान तिम जाण रे, माया लोभ ए; अनंतानु बंधी भणुं ए ॥ ३ ॥ तेम अप्रत्याख्यानरे, प्रत्याख्यान ए; संजलना चउ चउ गणुं ए ॥६॥ जावजीव तिम जाणरे, वच्छर चउमास; पखवाडो स्थिती तेहनी ए ॥ ४ ॥ पहिले समिकत घातरे,

बोलवि-चार स्तवनम्

देशविरती तेम; सर्व विरती त्रीजुं हणे ए ॥ ६ ॥ यथाख्यातनुं घातरे, चउथो तिम करे; ए गती च्यार तस् वरणवुं ए॥ ७॥ नरग तिरीय नरदेवरे, पदवी पामीए; जिहांथी जिण वलतुं भणेए ॥ ८ ॥ सोलभेद ए जाणरे, हास्य अरतीरती; सोग भय दुगंछासही ए ॥९॥ थीनर कीचह तिनरे, वेद सहीत इम; पचवीश चारीत्र मोहनी ए ॥ १० ॥ दरिशण चारीत्र दोयरे, मीलि कर मोहनी; प्रकृति अहावीश थइ ए ॥ ११ ॥ आउतणा चउ भेदरे, नरय तिरिय तिम; मानव देवता सुणो ए ॥ १२ ॥ तिरिय मनुष्यनुं आयरे, जघन्य थकी कहुं; अंतरमुहुर्तनुं सही ए ॥ १३ ॥ पल्योपम त्रण जाणरे, अती अधिकुं घणुं; देवता नारकीनुं कहीए ॥१४॥ वर्षे सहस दश मानरे, जघन्यथकी तिम; तेत्रीश सागर अति घणुंए ॥ १५ ॥ आउकर्म इम जाणरे, एकसो त्रण भेद; नाम कर्मनां सांभलो ए ॥ १६ ॥

ढाल-३-त्रीजी साहेबजी श्री विमलाचल भेटीएं हो लाल-ए देशी ॥ नरय तिरीयनर देव तणी गति जाणीएंरे, इग बीति चउ पणजाइ; पंचयर पंचयर देह सरुप बोलवि-चार स्तवनम् श्रीआठ कर्मप्र-कृति ॥१९२॥ 🌠 वखाणीएं रे ॥ १ ॥ औदारीक तिम वैकीय आहारक तैजपसुंरे, कार्मण पंच शरीर; जाणुंरे जाणुंरे तीन शरीरतणा वलीरे ॥ २ ॥ करचरणादिक तीन उपांग मनोहरुरे, पन्नर बंधन जोडी; बोल्लंरे बोछुंरे औदारीक औदारीककुंरे ॥३॥ औदारीक तैजस तिम कार्मण दो वलीरे, वैकीय वैकीय जोइ; वैकीरे वैकीरे तैजस कार्मण दो भलीरे ॥ ४ ॥ आहारक आहारक नामे बंधन जाणजोरे, आहारक तैजस भेद; आहारकरे आहारकरे कार्मणसाथे दो सहीरे॥ ५॥ तैजस तैजस कार्मण बंधनुंरे कार्मण कार्मण भेद; पनरसरे पनरसरे बंधन श्री जिन ते कह्योरे ॥ ६ ॥ औदारीक पुद्गल बांध्या बांधतांरे, मेळे जीव संघात; बंधनरे बंधनरे लीख समोवडि जाणज्योरे ॥ ७ ॥ दंतालीमेळे तृण तिम संघातनुरे, पुर्गल मेलें जीव; पंचयर पंचयर औदारीक वैकीय तथारे ॥ ८ ॥ आहारक तैजस कार्मण संघातन कह्यांरे, छ संघयण वीचार; पहिछुंरे पहिछुंरे वज्र ऋषभ नाराचकुंरे ॥ ९ ॥ बीजो 🖔 त्रीजो ऋषभनाराचकुंरे, चोथो अर्धनाराच; किछीकारे किछीकारे छेवट्ट छट्टं कह्युंरे ॥ १० ॥ हाडतणुं छडु संघयण वखाणीएरे, हवे संस्थान वीचार; जाणुंरे जाणुंरे समचउरंस भछुं सदारे॥ ११॥ 🥻

बोलवि-चार स्तवनम्

।।१९२॥

श्रीआठ कर्मप्र-कृति न्यमोध सादि क्रुब्ज वामण हुंडककुंरे, वरणपंच मनआण; कालुंरे कालुंरे नीलो रातो पीयलोरे ॥१२॥ धोलुं तिम दोगंध सुगंध दोगंधकुंरे, रसय पंचनुं मेल; तिखुंरे तिखुंरे कटुक कषाय तथा सुणोरे ॥ १३ ॥ खादुं मीतुं आठ फर्ष विवरु गुणोरे, ग्रुरु लघु मृदु खरजोइ; टाढुंरे टाढुंरे उष्ण लुखो चोपडोरे ॥ १४ ॥

ढाल-४-चोथी ॥ सुरती मासनी-धीरपुरे एक शेठने पर्वदिने व्यवहार-ए देशी ॥
नरक तिरय नरदेवनी-आनुपुर्वी ए च्यार, बलद राश जिम खेंचीएं-जीव तथा सुवीचार;
वृषभ गजादीक ग्रुभगती-अग्रुभ उंटादीक होइ, पराघात उसास-आतप उद्योत दोय ॥१॥ अग्रुरुल हु तीर्थंकर-नीरमाणने उपघात, त्रस बादर पर्याता-प्रत्येक थीर श्रुभवात; सुभग सुसर जग्र आदेय-थावर सुक्षिम नाम, अपजत्त साधारण अथिर अश्रुभनुं ठाम॥२॥ दुभग दुसर अनादेय-अजग्र थइ सुतीत, नाम कर्म पयडी कही-गोत्रदोय में कीन; पूजादीक जिहां पामीएं उंच गोत्र ते होय, जिहां हेळादिक अतीघणुं-नीचगोत्र ते होय॥ ३॥ अंतराय पंचय सुणो-छते न दीजें बोलवि-चार स्तवनम्

शां, ३३

श्रीआठ कमेप्र-कृति ॥१९३॥ दान, छतां भोग निव भोगवे–भोगांतराय निदान; अंतराय लाभह तणुं–जिहां निवलाभ संजोग, हि उपभोग अंतराय करेनहीं–अनंगनादिक भोग ॥४॥ बलवीर्य जन फोरवे–ते वीरजअंतराय,अंतराय अंतराय लक्षण–रायभंडारी भाय; प्रत्यनीक नीन्हवपणे–अंतराय उपघात,अत्याशातनथी करे–दो आव-रण विख्यात ॥ ५ दृढधर्मी गुरु भक्ति-दानरुची अकषाय, करुणा व्रतयुत बांधे-साय अवर असाय; ग्रुद्ध मारगने ओलवे-खोटो मार्ग दिखाय, देवद्रव्य हरवें करी-दंसण मोह कहाय ॥ ६ ॥ कषाय हास्यादिकें करी- दोय चरण मोहबंध, माहारंभादिक कारणे—नरका युष्य बंध; शल्य सहीत मांजीशठ-तिरियाउ बंधेइ, सहजें अल्प कषायें-दानरुची संघेइं॥ ७॥ मनुष्यतणुं आयुतिम-देवतणुं हवे जोय, अकाम बाल तपसी कहुं-अविरतीयादीक होयें; सरलरस रिद्धि शाता-गारव हितवखाणी, नाम कर्म ग्रुभवांघें–अवर अशुभ तीम जाणी ॥ ८ ॥ ग्रुणपेह मद् नविकरे–भणे भणावें जेह, उंचगोत्र ते बांधे-नीच अवर ग्रण तेह; जिनपूजादीक विष्ठकर-हिंसादीक पर होय। अंतराय कर्म बांधे ते-तेहथी भवीयण सोय ॥ ९ ॥

बोछवि-चार स्तवनम्

॥१९३॥

श्रीआट कर्मप्र कृति

## ढाल-५-पांचमी-भमर भुली-ए देशी॥

अट्ठावनसय परीकही सा भमरुली, आठ कर्मनो बंध सा नवरंगी; आठ कर्मनो बंध, सत्तावन हेतें करी सा भ० लेइ पुद्गल बंध सा नव० आठ०॥ ए आंकणी॥१॥ ते सत्तावन सांभलो सा भ० जाणुं पंच मिथ्यात्व सा नव० अभिगहिया णिभिगहिय सुणुं सा भ० अभिनिवेशनी वात सा नव० आठ॥२॥ संशय अन्नाणु भणुं सा भ० अविरत बार विचार सा नव० छ काय मन इंद्रीय पंच सा भ० मोर्केल पणुं तिवार सा नव० आठ० ॥ ३ ॥ कषाय पंचवीश कह्यां, सा भ०जोग पनर तीम जोइ सा नव० चार चार मन वचनना साभ० सात शरीरनां होय सा नव० आठ०॥ ४॥ इम सत्तावन हेतुएं करी सा भ० बांध्यां कर्म अनेकसा नव० ते बंधनथी छोडव्यों साभ० श्री जिननायक छेक सा नव० आठ० ॥ ५ ॥ चउराशीलख जीवाजोनी सा भ० भमीयो वार अनंत सा नव० आठ कर्म बंधन करी सा भ० ते छोडो भगवंत सा नव० आठ०॥ ६॥ श्री जिनवीरजिणेसरु सा भ० तुं बांधव तुं नाथ सा नव० माय बाप तुं ठाकरुं सा भ० मुक्ति तणो तुं साथ सा नव० आठ०॥ ७॥ तुं चिंतामण

बोलवि-चार स्तवनम् श्री रोहिणी

1132811

सुरतरु सा भ० तुं सुरवेळी देव सा नव० मनवंछीत सुख संपदा सा भ०पामीजें तुज सेव सा नव० आठ०॥ ८॥

कुछरा—इम वीर जिनवर सयल सुखकर नयर वडली मंडणो, में थुण्यो भक्तें परम जुक्ते रोगशोग विहंडणो ॥ तपगच्छ निर्मल गयणदिणयर श्रीविजयसेन सुरीसरो, कवी कुशलवर्धन शीष्य पभणें नगागणी मंगल करो ॥ १ ॥

"इति श्री आठकर्म प्रकृति बोल विचार स्तवन सम्पूर्ण"

"अथ श्री उजमणा निमित्त रोहिणी स्तवन छिख्यते"
ढाळ-१-पहेळी ॥ सुरतीमासनी ॥ नरक तिरय नरदेवनी आनुपूर्वी ए च्यार ॥
शासनदेवतासामिनी ए मुज सान्निध्यकीजें ॥ भूल्यो अक्षर भगवती ए समाजाइ दीजें॥ मोटो
तप रोहिणीतणो ए तेहना ग्रणगाउं॥ जिम सुखसोहग संपदा ए वांछित फळ पाउं॥१॥ दक्षिण-

स्तवनम्

ાાકે કેઠા

श्री रोहिणी

भरते अंगदेश ए जिहां चंपानयरी॥ मघवा राजा राज्य करे ए जिणे जीत्यां वयरी॥ पटराणी रूपें रूअडी ए ठक्ष्मी इण नामें ॥ आठ पुत्र जायातिणे ए मनमें सुखपामे ॥ २ ॥ रोहिण नामें पुत्रिका ए सबकुं सुखकारी ॥ आठांपुत्रा उपरे ए तिणे लागे प्यारी ॥ वाघे चंद्रतणी कला ए जिमपक्ष अजुवाले ॥ तिण ते पांचे धायमाय सहु ते प्रतिपालें ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूअडी ए घर आंगण बेठी ॥ दीठी राजा खेलती ए चित्त चिंता पेठी ॥ तीन भुवन नहीं एहवी ए निव दुजी नारी ॥ रंभा पउमा गवरी ए इण आगले हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीसे एहवो ए तिणने परणाउं ॥ आंख्यां आगळ साळ वधे ए मन चैन न पाउं ॥ देश देशना राजवी ए तत्क्षिण तेडाव्यां ॥ सबल सझाइ साथ करी ए नर पंडित आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए ऐसो क्रमर सोभागी ॥ कन्या केरी आंखडी ए तिणसेती लागी ॥ उभां देखे सकल लोक ए चढीया के पाला ॥ चित्र-सेनरे कंठे ठवी ए कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवांगना ए जपे जय जय कार ॥ रलिया-यत देखीथया ए सारो संसार ॥ करजोडी कहे लोक ए वखत कन्यानो जोडो ॥ वीतशोक क्रमर

श्री रोहिणी ॥१९५॥ थयो ए शिर उपर लाडो ॥ ७ ॥ इम वीवाह थयो भलो ए दीयां दान अपार ॥ घरआया परणी करी ए हरख्यो परीवार ॥ वीतशोक निजपुत्र भणी ए आपणो पाट दीधो ॥ आपण संजम आदर्यो ए जगमें जशलीधो ॥ ८ ॥

ढाल-२-बीजी ॥ हवे भवीयणरे पांचम उजमणो सुणो-ए देशी ॥

तिण नयरीरे चित्रसेन राजाथयो ॥ सुख मांहिरे केटलो काल वहीगयों ॥ इण अवसररे आठ पुत्रजाया भला ॥ चढतें पखरे चंदजिसी चढती कला ॥ त्रूटक—चढतीकला हवे रायबेटो पास वेटी रोहिणी ॥ सातमें छातें कंतसेती करे कीडा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद उपर रंगर्युं राणीलीयो ॥ पुत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हीयो ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली—एक कामि-नीरे गोखे चढी दृष्टि पडी ॥ तडफडतीरे रोवे रीषें बापडी ॥ बुढापणरे मनगमतो बालक मुओ ॥ हुंतो एकजरे तिण अधिकेरो दुःख हुओ ॥ त्रूटक—दुःखहुओ अधिको देखी रोहिणी हवे कहें प्रीतम भणी ॥ ए नारी नाचे अने कुदे किम कहो मोटाधणी ॥ एहवो नाटक आज तांइमें कदी

स्तवनम्

॥१९५॥

ंश्री रोहिणी

देख्यो नही ॥ मुजने तमासो आज हासो देखतां आवेसही ॥ २ ॥ ढाळ पूर्वळी–इण अवसरेरे रीसाणो राजा कहे ॥ तुं पापणरे परनी पीडा नविल्रहें ॥ एह दुखणीरे पुत्र मुए तडफड करे ॥ जब वीतेरे वेदन जाणी जेतरे ॥ त्रूटक—न जाणे वेदन तुंह परनी गरवगहेली कामिनी ॥ इम कही राजा हाथ घाल्यो तेहना बालक भणी ॥ सातमी भूमिथी तले नाख्यो तिसे हाहाकार थयो ॥ रोहिणी हस्ती कहे प्रीतमनें पुत्रनीचो किमगयो ॥ ३ ॥ ढाल पूर्वली–हवे राजारे पुत्रतणे शोकें करी ॥ थयो मुर्छितरे रोवेछे आंख्यां भरी ॥ पडतो सुतरे शासनदेवी झालीयो ॥ कंचनमेंरे सिंघासण बेसारीयो ॥ त्रुटक-करजोडी आगळ बैसे सिंघासण करे नाटक देवता ॥ गोद खिळावे अने हसावे पाद्पंकज सेवता ॥ उपन्यो भूपतिने अचंभो देखीये कारण किस्यो ॥ जे कोइ ज्ञानी ग्रुरु पधारे पूछीये संशय इस्यो ॥ ४ ॥ ढाळ पूर्वळी—चिंतवतारे चारण आयाछे इसे ॥ राजा पणरे पोहतो वंदनने तिसे ॥ सुणी देशनारे पूछे प्रश्न सुहामणो ॥ कहो स्वामीरे पूरवभव

श्री रोहिणी ॥१९६॥ अने राजानो वली ॥ सुहग्रह भाखे पाछले भव रोहिणी तप आद्यों ॥ तपतणी शक्ते साधु भक्ते तुमे भवसायर तयों ॥ ५ ॥ ढाल पूर्वली—कहे राजारे किम रोहिण तप कीजीये ॥ विधि भाखोरे जिम तुम्ह पासे लीजीयें ॥ तव मुनिवररे विधि रोहिणी तपतणी ॥ इम जंपेरे चित्रसेनराजा भणी ॥ त्रूटक—राजाभणी विधि एह जंपे चित्रसेन मन भाव ए ॥ उपवास कीजे लाभ लीजे भली भावना भाव ए ॥ बारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजीएं मन रंगर्श्वं ॥ सातवर्षा लगे कीजे तजी भली आलस अंगर्श्वं ॥ ६ ॥

ढाल-३-त्रीजी ॥ साहेल्यां हे आंबो मोरीयो-ए देशी ॥

तप करीएं रोहिण तणो ॥ वली करीये हो उजमणो सारके ॥ तप करतां आर्ति टले ॥ तिण करीएं हो तिणसेती प्यारके ॥ तप करीयें रोहिण तणो ॥ ए आंकणी ॥१॥ देव जुहारो देहरे ॥ जिन आगल हो पूजो दृक्ष अशोककें ॥ ग्रणणुं बारमा जिनतणुं ॥ भला नैवेच हो धरीये सहु थोकके ॥ तप करीयें रोहिण तणो ॥ २ ॥ केशरचंदन चरचीये ॥ कीजे आगे हो आठे मंगलीक स्तवनम्

॥१९६॥

श्री के ॥ विधिश्युं पुस्तक पूजीये ॥ तो लहीये हो शिवपुर तहतीककें ॥ तप करीयें रोहिण तणो ॥३॥ रोहिणी सेवा कीजे साधुनी ॥ वली दीजे हो मुह मांग्या दानके ॥ संतोषीजे साहमी ॥ मनरंगें हो करीयें पकवान्नके ॥ तप करीयें रोहिण तणो ॥ ४ ॥ पाटीपोथी पूछणो ॥ मसी लेखण हो झिलमिल सुजगीशके ॥ नवकारवाली वीटणा ॥ गुरु आगल हो धरीये सत्तावीसके ॥ तप करीयें रोहिण तणो ॥ ५॥ चोथुंत्रत पण तिणदिने ॥ इम पाले हो मन धरीय विवेकके ॥ इण विधि रोहिण आदरें ॥ ते पामें हो आणंद अनेकके ॥ तप करीयें रोहिण तणो ॥ ६॥

ढाल-४-चोथी॥ शील कहे जग हुं वडो-ए देशी॥

इम महिमा रोहिण तणो ॥ श्री ज्ञानीग्रुरु प्रकाशेरे ॥ चित्रसेन तप आदर्यो ॥ वासुपूज्य तीर्थं कर पासेरे ॥ इम महिमा रोहिण तणो ॥ ए आंकणी ॥१॥ इण परें रोहिण आदरी ॥ उपर उजमणुं 🔀 कीधुं रे ॥ चित्रसेन ने रोहिणी ॥ मनशुद्धे संजम लीधुंरे ॥ इम महिमा रोहिण तणो ॥२॥ आठे पुत्रे आदरी ॥ दिक्षा बारमा जिनवर आगेरे ॥ वली नानाविधि तपकरे ॥ जिनधर्म तणी मति जागेरे

श्री मौन हैं ॥ ३ ॥ करी अणसण आराधना ॥ वली केवल शीवपद पायोरे ॥ जिन वाणी आणी हिये ॥ प्रभु प्रकादशि चरणे चित्त लायोरे ॥ इम महिमा रोहिण तणो ॥ ४ ॥ मनमोहन महिमा वध्यो ॥ में स्तव्यो शिवपुर गामीरे ॥ मनमान्या साहिब तणी ॥ हवे पुण्ये सेवा पामीरे ॥ इम महिमा रोहिण तणो ॥ १ ॥ अश्वरा—इम गगन दुय मुनिचंद वर्षे चोथ श्रावण शुदि तणी ॥ में कह्यो रोहिण तणो हैं महिमा सुग्रह जिम मुखमें सुण्यो ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रसन्न चित्तनी चिंता टली ॥ 🗱 श्रीसार जिनगुण गावत्तां हवे सकल मंगल आशा फली ॥ १ ॥ ''इति श्री रोहिणी स्तवनं सम्पूर्णम्"

> "श्री मौन एकाद्शि महात्मे सुत्रत सेठ वर्णन नाम स्तवनम्" ढाल-१-पहेली ॥ चंद्राउलानी जंबु द्वीपना भरतमारे-ए देशी ॥ द्वारीका नगरिं समोसस्थारे, बावीसमा जिन चंद; बे कर जोडि भावसुंरे, पूछे कृष्ण नरिंद ॥

1188011

श्री मौन एकाद्शि

त्रृटक–पूछे कृष्ण नरिंद् विवेके, स्वामि इग्यारस मानि अनेके; तेहतणो कारण मुज भाषो, महीमा तिथिनो थीरकरी दाखो ॥ जी जीणंद जीजीरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ढाळ पूर्वेळी—नेम कहे केशव सुणोरे, पर्व वडुं छे तेण; कल्याणक जिननां कह्यां रे, दोढसो ईणदिण जेण ॥ त्रूटक-दोढसो इण दिन सूत्र प्रसीधा, कल्याणक दश क्षेत्रना लीधा; अतित अनागतने वर्त्तमान, सर्व मली दोढसो तसमान ॥ जी जीणंद जीजीरे ॥ २ ॥ ढाल पूर्वली—कल्पवृक्ष तरुमा वडोरे, देव-माहिं अरिहंत; चक्रवृत्ति नृपमां वडोरे, तिथिमा तेम ए हुंत ॥ त्रृटक–तिथिमां तेम ए हुंत वडेरो, भेदे कर्म सुभटनो घेरो; मौन आराध्युं शिवपद आपे, संकट वेल तणा मूल कापे ॥ जीणंद जीजीरे ॥ ३ ॥ ढाल पूर्वली-अहोरतो पोसह करीरे, मौन तप उपवास; इग्यार वर्ष आराधियेरे, वली इंग्यारे मास ॥ त्रूटक—वली इंग्यारे मास जे सांघे, मन वच काया सूद्ध आराघे; भव भव सुर्खीया ते नर थासे, सुव्रत सेठ परे गवरासे ॥ जी जीणंद जीजीरे ॥ ४ ॥ ढाल पूर्वली—

श्री मौन एकाद्दि ॥१९८॥

कृष्ण कहे सुव्रत कीस्योरे, किम पाम्यो सुख सात; नेम कहे केशव सुणोरे, सुव्रतना अवदात ॥ त्रूटक—सुव्रतनां अवदात वखाणुं, घातिकखंड विजयपुर जाणुं; पृथवीपाल तिहां राजा बीराजे, चंद्रावित राणी तस छाजे ॥ जी जीणंद जीजीरे ॥ ५ ॥ ढाल पूर्वली—वास वसें व्यवहारियोरे, सुर नामे तिहां एक; सुगुरु मुखे एक दिन यहेरे, इग्यारस सुविवेक ॥ त्रूटक—इग्यारस सुविवेक लिधि, रुडी उजमणा विधि कीधि; पेट ग्रुलथी मरण लहीनें, पहोतो इग्यारमें स्वर्ग वहीनें ॥ जी जीणंद जीजीरे ॥ ६ ॥ ढाळ पूर्वेळी—एकवीस सागर तणोरे, पाळी नीरुपम आय; उपन्यो जीहां ते कहुंरे, सुणजो यादवराय ॥ त्रूटक—सुणजो यादव राय एक चीत्ते, सौरिपुर वसे सेठ समृध दत्ते; प्रीतीमती तस घरणी पेटे, पुत्रपणे उपन्यो पुन्य भेटे॥ जी जीणंद जीजीरे॥ ७॥ ढाल पूर्वली—जन्म समयें प्रगट हुओरे, भूमीथी सबल निधान; उच्चीत जाणी तस स्थापीयोरे, सुवत नाम प्रधान ॥ त्रूटक—सुवत नाम ठब्युं मायताये, वाध्यो कुमर कलानिधि थाय; कन्या

स्तवनम्

1129511

श्री मौन एकाद्**शि**  🔏 इंग्यार वस्त्रो समजोडी, इंग्यार होय घर सोवन कोडी ॥ जी जीणंद जीजीरे ॥ ८ ॥ ढाल पूर्वली— वीलसे सुख संसारनारे, दोग्रंदुक सुर जेम; अन्य दिवस सुग्रुरु मुखेरे, देशना निसुणी एम ॥ त्रुटक—देशना निसुणी एम महातम, बीज प्रमुख तिथिनो अति उत्तम; सांभलीने इहापो करते, जातिसमरण लखुं ग्रणवंते ॥ जी जीणंद जीजीरे ॥ ९ ॥ ढाल पूर्वली–कर जोडी सुव्रत भणेरे, वर्ष दिवसमा सार; दिवस एक मुज भाषीयेंरे, जेहथी होय भवपार ॥ त्रूटक—जेहथी होय भव-पार ते दाखो, ग्रुरु कहे मौन एकादशी राखो; तहत्त करि विधसुं आराधे, मृगशिर ग्रुदि एका-दिश साधे ॥ जी जीणंद जीजीरे ॥ १० ॥ ढाल पूर्वली—सेठने सुखीयो देखीनेरे, जन कहे ए धर्मसार; प्रेम सहित आराधियेंरे, कांति विजय जयकार ॥ त्रूटक—कांति विजय जयकार सदाये, नित नित संपत होय सवाइ; एह तिथि सकल तणे मन भावी, पहेली ढाल थइ सुखदाइ॥ जी जीणंद जीजीरे॥ ११॥

स्तवसम

जां. ३४

श्री मौन एकाद्दि ॥१९९॥

## ढाल-२-बीजी ॥ एकवीसानी ॥ पांच पोथीरे ॥ ए देशी॥

एक दिवसरे सेठ सुत्रत पोसह करि, सहु कुटंबेरे रयणी समें काउस्सग्ग करि; तव आंव्योरे चोर छेवा धन आंगणे, कसी बांधीरे धनिन गांठडि तत्क्षीणे ॥ त्रूटक—तत्क्षीणे बाधें द्रव्य बहुछो, शिर उपाडि संचरे; तव देवी सासन तेणे थंभ्या, चीत्त चिंता अतिकरे; दीठा प्रभाते कोटवास्रे, बांधि सुंप्या रायने; वध हुकम दीधो राय तव तिहां, सेठ आव्या धाइनें ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली—नृप आग लेरे सेठ मुकिने भेटणो, छोडाव्यारे चोर सहुनां बंधणो; जगमां वाध्योरे महिमा श्रीजिन धर्मनो, केइ छांडेरे मिथ्यात्व मार्ग भर्मनो ॥ त्रूटक-मीथ्यात्व मार्ग तजिय पुरिजन, जैन धर्म अंगीकरे; एक दिवस धिग्र् धिग् करत उद्भट, अग्नि लागि तिणपुरें; बाले ते मंदिर हाट सुंदर, लोक हैं नाहठा धसमसी; सहुकुदुंब पौसध सहित तिणदिन, सेठ बेठा समरसी ॥ २ ॥ ढाल पूर्वली-🕍 जन बोछेरे सेठ सळूणा सांभलो, हठ न करोरे नासो अग्निमां कांबलो; सेठ चिंतेरे ए परिसह

स्तवनम्

॥१९९॥

श्री मौन एकादशि

सहसुं सही, व्रत खंडणरे इण अवसर करसुं नही ॥ त्रूटक—नही जुगतुं मुजनें व्रत विलोपन, रह्यो इम द्रढता यही; पुर बल्युं सघलुं सेठना, घर हाट ते उगस्वां सही; पुरलोक अचरीज देखी सबलो, अति प्रसंसे टढपणुं; हवें सेठने घरे करे सबलो, उजमणुं करवा तणुं॥३॥ढाल पूर्वली— मुक्ताफलरे मणि माणीकने हीरला, पीरोजारे विद्वम गोलक अतिभला; खर्णादिकरे सप्त धातुमेली 🖟 रूळी, खीरोदकरे प्रमुख विविध अंबर वली; त्रूटक—वली धानने पकान्न बहु विध, फूल फल मन उज्जले; इग्यार संख्या एक एकनी, ठवे श्रीजिन आगलें; जिन भक्तिमंडे दुरित खंडे, लाभ लहे नरभव तणो; महीमा वधारे सुविधा धारे, तप सुधारे आपणो ॥ ४ ॥ ढाल पूर्वली—सात क्षेत्रेरे खरचे धन मन उछसी, संघ पूजारे साहमी भक्ति करे हसी; दीये मुनिनेरे ज्ञानोपगरण सुभमने, इग्यारसरे एम उजवी तेणे सुव्रते ॥ त्रूटक—तेणें सुव्रते एक दिवसे, वांद्या श्री जयसेखर ग्रह; सुणी धर्म अनुमत मांगी सुतनी, लीचे संजम सुखकरु; इंग्यार तरुणी यहे संयम, तपतपी अति नीरमछुं; ते लही केवल मुगते पहोता; लहो सुख धन उज्ञछुं ॥ ५ ॥ ढाल पूर्वली–दोयसें छट्टरे

श्री मौन एकादशि

एकसो अट्टम साररे, षट्मासीरे एक चौमासी च्याररे; इत्यादिकरे सुव्रत मुनिवर तपकरे, इग्या-रसरे तिथिसेवे मुनि मनखरे ॥ त्रूटक—मनखरे पाले सूद्ध संयम, एक दिवस ए रुषितणे; थइ उदर पीडा तेणे दिवसे, अछे सुव्रत व्रतपणे; एक देव वयिर पूर्व भवनो, चलावा आव्यो तिहां; मुनिराज सुव्रत तणे अंगे, वेदना किथि जीहां ॥ ६ ॥ ढाल पूर्वली—समता धरीरे नीश्चल मेरुपरें रह्यो, सुर परिसहरे धीर थइने सांसह्यो; निव लोपेरे मौन सुव्रत मुनि राजीओ, औषध पिणरे सुर दाख्यो पिण नवीकियो ॥ त्रृष्टक—नवी कियो औषध रोगहेते, असुर अतिकोपें चड्यो; पाटु प्रहारें हणे तिवारे, मीथ्यामत पापे मट्यो; रुषि क्षपकश्रेणि चढिय केवल, ग्यानलही सुगते गयो; इम ढाल बीजी कांति भणतां, सकल सुख मंगल थयो ॥ ७॥

ढाल-३-त्रीजी ॥ ज्ञीता होसथी ज्ञीताकहो सुणिराम ॥ अथवा ॥ दीठीहो प्रभु दीठी जगगुरु तुज-ए देशी ॥ भाषीहो जिन भाषी नेम जीणंद, इणीपरेंहो जिन इणिपरें सुवतनी कथाजी; सद्दहेहो जिन स्तवनम्

112001

不大公共公共人公共公共

ौन द्शि

सहहे कृष्ण नरिंद, छेदनहो प्रभु छेदन भव भयनी व्यथाजी ॥ १ ॥ पर्षदाहो जिन पर्षदा लोक तीवार, भावेंहो तिहां भावें इग्यारस उचरेजी; एहथीहो जीन एहथी भवीक अपार, सहेजेहो भव सहेजें भव सायर तरेजी ॥२॥ तारकहो जिन तारक भवथी तार, मुजनेहो जिन मुज नीरगुणने हित करिजी; साचीहो जिन साची चीत्त अवधार, किथीहो जिन किथि ताहरी चाकरीजी ॥ ३॥ करसुंहो जिन करसुं जो तप साथ, तुमचीहो जिन तुमची तिहां मोटीम कीसीजी; देइसहो जिन देइस तुंही समाध, एवडिहो जिन एवडि गाढिम कांइसीजी ॥ ४ ॥ छेहडोहो जिन छेहडोँ साह्यो आज, महोटी हो जिन महोटी में आस्याकरिजी; दिधाहो जिन दिधा विण माहराज, छूटीसहो जिन छूटीस किमविण दुख हरिजी ॥ ५ ॥ भव भव हो जिन भव भव सरणो तुज, तुजने हो जीन तुजनें कहुं केतु वलीजी; देज्यो हो जिन देज्यो सेवा मुज, रंगेहो जिन रंगे प्रणमुं लली ललीजी ॥६॥ त्रिजीहो जिन त्रीजी पूरी ढाल, प्रेमेंहो जिन प्रेमें कांतिविजय कहेजी; नमताहो जिन नमता नेमी दयालु, मंगलहो जिन मंगल माला महमहे जी॥ ७॥

श्री मौन एकाद्दि। ॥२०१॥

कलश-इम सयल सुलकर दुरीत दुखहर-भनीक तरु नन जलधरु, भनताप नारक जगत तारक-जयो जिनपित जगग्रुरु; सत्तरसें ओगणोत्तरा वर्षे-रही डभोइ चोमासप, ग्रुद मास मृग-शिर तिथि इग्यारस-रच्या ग्रुण सुनीलासए॥१॥ इम थोइ मंगल कोड भननां-पाप रज दुरेहरे, जयनाद आपे कीर्ति स्थापे-सुजस देसोदेस नीस्तरे; तप गच्छ नायक निजयप्रभ ग्रुरु-शिष्य प्रेम-निजय तणो, कहे कांति थुणता भनीक भणता-पामीए मंगल अतिघणो॥२॥ "इति श्री मौन एकादशी माहात्म्ये सुन्नतसेठवर्णननाम स्तवनम् संपूर्णम्"

"श्री महावीर तप, नमस्कार"
नव चौमासि तपकछां, त्रणमाशि कछां दोय; दोय दोय अढीमासि तिम, डोढमासि होय॥१॥
बहोतेर पास क्षमणकछा, मास क्षमण कछां बार; पर्मासितिम आदछां, बार अठम तपसार ॥२॥
पर्मासि एक तिम कछो, पणदिन उण पर्मास; बसो ओगणत्रिस छठभछा, दिक्षा दीन एक खास॥३॥
भद्र प्रतिमा दोय तिम, पारण दिन जास; द्रव्याहार पानक कछो, त्रणसे ओगण पंचास॥४॥
छग्नस्थे इणिपरे रह्यां, सह्यां परिसह घोर; श्रुक्क ध्यान अनले किर, बाल्यां कर्मक कठोर॥ ५, क्रिन अप अन् अक्ष ध्यान अंतर रह्याए, पाम्या केवल नाण; पद्मविजय कहे प्रणमता, लहिए नित्य कल्याण विकास कर्यां भारती कर्यां स्थान अंतर रह्यां सहां परिसह चीरनमस्कार—समपूर्णम्—समासः॥"

स्तवनम्

।।२०१॥